Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



कर्म विपाक संहिता

(अभिनव हिन्दी टीका)



अनुवादक ।

ज्योतिर्विद आचार्य चन्द्रप्रकाश

एम. ए. (हिन्दी) एम. ए. (संस्कृत)



प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, वेदनगर, बरेली–२४३००३ (उ. प्र.)

फोन : ७४२४२

प्रकाशक :

डॉ० चमनलाल गौतम

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, (वेद नगर),

बरेली २४३००३ (उ० प्र०)

फोन : ७४२४२



अनुवादक :

आचार्य चन्द्रप्रकाश एम. ए.





प्रथम संस्करण

१९९०



मुद्रक :

कान्ता प्रिंटिंग प्रेस

जनरलगंज मथुरा



मूल्य ५५ रु.

55.00

भूमिका



चक्रवत् चलते, संरक्षण करते इस संसार में प्राणी स्वकर्मों से भाग्य निर्माता एवं सुख-दुख का भोक्ता बनता है, नाना योनियों में उत्पन्न होता है, जीवन-मरण के चक्र में भ्रमण करता है।

स्वयं शिवजी की उक्ति है—

मर्त्याः सर्वे जगज्जाता कर्म कुर्वन्ति सर्वदा ।
स्वकर्माणि ततो देवि भुज्यन्ते देव मानुषैः ॥

सभी को पाप पुण्य भोगने पड़ते हैं, भोगने से ही इनका क्षय होता है—

पुण्यापुण्ये हि पुरुषः पर्यायेण समश्नुते ।
भुञ्जतश्च क्षयं याति पापं पुण्यम थापिवा ॥

मानव यात्रा तीन कर्मों प्रारब्ध, संचित एवं क्रियमाण के साथ चलती है। इन कर्मों से ही तीन प्रकार के फल भी मिलते हैं।

शंकर जी की उक्ति है—

त्रिविधं प्राणितो कर्मं नृणां चैव स्वभावजम् ।
अनिष्टं मिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ॥

ज्योतिष शास्त्र भूत, भविष्य, वर्तमान का दर्शक एवं उद्घाटक है। प्रस्तुत ग्रन्थ 'कर्म विपाक संहिता' में शिव पार्वती जी के सम्वाद के माध्यम से कर्मों की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है। पाप-पुण्य की परिभाषा भी यहाँ वर्णित है। प्रत्येक राशि एवं प्रत्येक नक्षत्र में उत्पन्न जातक के पूर्व जन्म के कर्मों का उद्घाटन कथा प्रसंग के माध्यम से किया गया है। साथ ही उस पाप के दोष शमन का उपाय भी स्वयं भाग्य विधाता शंकर जी द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

मेरा ये पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ के अवलोक से, अध्ययन एवं मनन से भावुक, धर्म प्राण प्राणी की पापों से, दुष्कर्मों से, अरुचि हो जायेगी, उसे उनसे विरक्ति हो जायेगी। वह सुपथगामी, धर्मावलम्बी एवं सदाचारी बन देश एवं राष्ट्र का परम उपयोगी अंग सिद्ध हो सकेगा। साथ ही ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता महानुभाव भी इस ग्रन्थ के उपयोग करने पर प्रभाव एवं लाभ की उपलब्धि कर सकेंगे।

इस महान ग्रन्थ की टीका का मेरा यह प्रयास प्रभु की, गुरुजनों की, विद्वद्-जनों की कृपा से ही सम्भव हो सका है। इसमें यदि किसी प्रकार की कोई त्रुटि रह गई हो तो विद्वद्जन उसे क्षमा करेंगे एवं अपने अमूल्य सुझाव देकर अपनी उदारता का, महानता का परिचय देकर मुझे अनुग्रहीत करने की कृपा करेंगे।

आपका अपना ही
चन्द्रप्रकाश आचार्य

कर्म विपाक संहिता

की

विषयानुक्रमणिका



॥ इति श्री ॥

।। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ।।



कर्म विपाक संहिता



प्रथम अध्याय

मंगलाचरणम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्त्या यः संस्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।।१

ब्रह्मादयो यत्कृतसेतुपाला
यत्कारणं विश्वमिदं च माया ।
आज्ञाकारी तस्य पिशाचचर्या
अहो शिवं तं सततं नमामि ।।२

गौरी पुत्र गणेश को प्रणाम कर, भक्ति पूर्वक आयु एवं कामना की सिद्धि के हेतु स्मरण करना चाहिये ।।१।। ब्रह्मादि जिनकी आज्ञा का पालन करते हैं, जो जगत के कारण हैं, माया जिनकी आज्ञानुवर्तिनी हैं, पिशाचगण जिनकी सेवा करते हैं, ऐसे भगवान शिव को मैं सदैव प्रणाम करता हूँ ।।२।।

प्रश्न विधि

रविवारे च संक्रान्तौ शुभयोगे यथाविधि ।
वैधृतौ च व्यतीपाते विप्राणां च गृहे तथा ।।
देवतायतने चैव नद्यां व सङ्गमोत्तमे ।
अथवा स्वगृहे चैव शुभे स्थाने विशेषतः ।।३-४
स्नानं समाचरेद्रोगी मृतपुत्रः सपुत्रकः ।
कर्मणा पीडितो योऽसौ नारी वा पुरुषोऽथवा ।।५

धात्रीफलानि लोध्रञ्च गोमयं तिलसर्षपान् ।
मृत्तिकाः सप्त कर्पूरमुशीरं मुस्तसंयुतम् ॥६

रविवार के दिन, शुभ योग एवं संक्रान्ति में व्यतिपात एवं वैधृति योग में ब्राह्मण के घर पर देवालय में, नदी संगम पर, अपने घर पर या शुभ स्थान में प्रश्न कर्त्ता प्रश्न करे। रोगी, जिसका पुत्र मर गया हो, जिसका पुत्र जीवित हो, कर्मों से पीड़ित नारी या पुरुष हो तो प्रश्न से पूर्व आँवले, लोध्र, गोबर, तिल, सरसों, सात स्थानों की मिट्टी (गौ के नीचे की, घोड़े के नीचे की, हाथी के नीचे की, वमई की संगम की, राजद्वार की एवं तालाब की) में कपूर, खस एवं नागरमोथा मिला कर स्नान करे ॥३-६॥

एवं सर्वविधिं कृत्वा संकल्पं कारयेत्ततः ।
अद्येत्यादिप्राचीनसंचितकर्मविलोकनार्थं मनःकामना-
सिद्ध्यर्थं शिवपूजनपूर्वकं कर्मविपाकपुस्तकपूजनमहं
करिष्ये ॥७

अङ्गन्यासपूर्वकं षोडशोपचारपूजासंकल्पः वैश्वदेवं श्राद्धं च । अत्रान्तरे देहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणांतर्गत्वेन गोमिथुनदानं कुम्भदानं च प्रजापतिसंतुष्टये षोडश ब्राह्मणान्भोजयेत् । भोजनानन्तरं प्रार्थनाऽऽचार्यस्य ॥८

ब्राह्मण त्वं महाभाग भूमिदेव द्विजोत्तम ।
यथाविधि प्रतिज्ञाय प्राचीनं च शुभाशुभम् ॥
कथं मे कथयामाशु कृपां कृत्वा ममोपरि ।
एवं तु ब्राह्मणाचार्यं नमस्कृत्यं प्रसादयेत् ॥९-१०
दश पञ्च तथा विप्रानुपदेश्य प्रयत्नतः ।
तेषामनुज्ञया सर्वं प्रायश्चित्तमुपक्रमेत् ॥११

इस प्रकार विधि पूर्वक स्नान करके फिर संकल्प करे कि मैं आज अपने प्राचीन संचित कर्मों को देखने के लिए, मनोकामना की सिद्धि हेतु शिवजी का पूजन कर 'कर्म विपाक' पुस्तक की मैं पूजा करता हूँ ॥७॥ फिर अगन्यास, षोड शोपचार पूजन, संकल्प, वलि वैश्व देव एवं श्राद्ध करे। इसके बाद देह शुद्धयर्थ पुरश्चरण के अंग रूप में गौ का जोड़ा, घड़ा दान करे तथा प्रजापति की सन्तुष्टि के हेतु सोलह

ब्राह्मण भोजन कराये। भोजनोपरान्त आचार्य की प्रार्थना करे ।।८।। हे ब्राह्मण देव, हे भूमि देव, हे द्विजोत्तम हे महानुभाव, मेरे प्राचीन शुभ एवं अशुभ कर्मो को जानकर, मेरे ऊपर कृपा करके, यथा विधि मुझसे कहिए। इस प्रकार आचार्य ब्राह्मण को नमस्कार कर प्रसन्न करे ।।१०।। फिर दस-पांच ब्राह्मणों को बैठाकर उनकी आज्ञा से प्रायश्चित करे ।।११।।

वस्त्रालङ्कारणै आचार्यं पूजयित्वा प्रजापतिस्वरूपं गुरुं प्रार्थयेत् ।

प्रजापते महाबाहो वेदवेदाङ्गपारगः ।
पुत्रकामसमृद्धयर्थं पूजां गृहणामि ते नमः ।।१२
विष्णो त्वं पुण्डरीकाक्षं भुवनानां च पालकः ।
लक्ष्म्या सह हृषीकेश पूजां गृह्णामि ते नमः ।।१३
रुद्र त्वं दैत्यनाशाय सदा भस्मांगधारकः ।
नागहारोपवीती च पूजां गृह्णामि ते नमः ।।१४

वस्त्रालंकारों से आचार्य की पूजा करके, प्रजापति स्वरूप गुरु की प्रार्थना करे। हे वेदवेदांग के ज्ञाता, प्रजापति स्वरूप, महाबाहु, पुत्र एवं समस्त कामनाओं की सिद्धि के हेतु, मेरी पूजा स्वीकार कीजिये, आपको प्रणाम है ।।१२।। हे पुंडरीकाक्ष, भुवनों के पालक, हे विष्णु जी लक्षमी सहित आप मेरी पूजा स्वीकार करें, आपको मेरा नमस्कार है ।।१३।। हे रुद्रदेव ! दैत्यों के विनाश के लिए आप सदैव भस्म धारण करते हैं, नागों का उपवीत धारण करते हैं, मेरी पूजा आप स्वीकार करें, आपको मेरा प्रणाम है ।।१४।।

स्वर्गे सुरश्च गन्धर्वाः पाताले पन्नगादयः ।
मृत्युलोके मनुष्याश्च सर्वे ध्यायन्ति भास्करम् ।।१५
महायज्ञादिकं चैव अग्निहोत्रादिकर्म च ।
तीर्थस्नानं तथा ध्यानं वर्त्तते भास्करोदयात् ।।१६
ब्रह्मा विष्णुः शिवः शक्तिर्देवदेवो मुनीश्वराः ।
ध्यायन्ति भास्करं देवं साक्षीभूतं जगत्त्रये ।।१७
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः ।
त्वंमग्निस्त्वं वषट्कारस्त्वांमाहुः सर्वसाक्षिणम् ।।१८

योगिनां प्रथमो ध्येयो यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ।
आधि-व्याधिश्च कर्ता त्वं सर्वपापक्षयं कुरु ॥१९
दीनानां कृपणानाञ्च सर्वेषां व्याधिनाशनम् ।
एवं च भास्करं ध्यात्वा नमस्कृत्य प्रसादयेत् ॥२०

स्वर्ग में देव और गंधर्व, पाताल में नागादि और मृत्यु लोक में मनुष्य सभी सूर्य की उपासना करते हैं ॥१५॥ सूर्य देव के उदय से ही महायज्ञादि कार्य और अग्नि होत्र कर्म, तीर्थ स्नान एवं ध्यान संपन्न होते हैं ॥१६॥ तीनों लोकों के भूत भगवान भुवन भास्कर का ध्यान ब्रह्मा, विष्णु शिव, शक्ति, अन्यान्य देवगण एवं मुनिगण किया करते हैं ॥१७॥ हे सूर्यदेव ! तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम रुद्र हो, प्रजापति व अग्नि हो, तुम्हीं वषट्कार एवं सबके साक्षी हो ॥१८॥ यतियों, ब्रह्मचारियों और योगियों के द्वारा ध्येय हो, आधि-व्याधि के कर्त्ता एवं सभी पापों के क्षय करने वाले हो ॥१९॥ दीनों, कृपणों एवं सभी मानवों की व्याधि का नाश करने वाले हो, इस प्रकार भगवान भुवन भास्कर की प्रार्थना कर, नमस्कार कर उन्हें प्रसन्न करे ॥२०॥

पृच्छक प्रार्थना

पापी चैव दुराचारी परनिन्दापरो जनः ।
ब्रह्महा हेमहारी च सुरापी गुरुतल्पगः ॥२१
स्त्रीहन्ता बालघाती च अगम्यागमनं तथा ।
एवमादिकपापानि मया वै पूर्वजन्मनि ॥२२
कृतानि विबुधान्येव सर्वाणि माष्टु मर्हसि ।
शरणं तव संप्राप्तस्त्वं मामुद्धर्तुमर्हसि ॥२३
ममोपरि कृपां कृत्वा कर्म मे कथय प्रभो ।
लग्न तात्कालिकं कृत्वा जन्मपत्रं निरीक्ष्य च ॥२४
लग्नं ग्रहविचारेण ज्ञातव्यं कर्म मामकम् ।
ग्रहलग्नविचारेण कर्म जानन्ति पण्डिताः ॥२५

हे देव ! मैं पापी, दुराचारी, परनिन्दक, ब्रह्म हत्यारा, स्वर्ण की चोरी करने वाला, सुरापान करने वाला, गुरु पत्नी से व्यभिचार करने वाला, स्त्री की हत्या करने वाला, बालकों की हत्या करने वाला, अगम्या गमन करने वाला अर्थात् पर स्त्री एवं स्व वर्ण, स्व धर्म से भिन्न स्त्री से भोग करने वाला जो भी ऐसे पूर्व जन्म के मेरे पाप हैं और जो विविध प्रकार के पाप मैंने किये हैं उन सबको आप धोने में

समर्थ हैं। मैं आपकी शरण हूँ, आप मेरा उद्धार करें। आप मेरे ऊपर कृपा करके, तात्कालिक लग्न को देख, जन्म पत्र को देख मेरे कर्मों का वर्णन कीजिये। लग्न से ग्रह विचार से मेरे कर्मों को आप जानिये। क्योंकि पंडित जन ग्रह एवं लग्न के विचार से कर्मों को जान जाते हैं ॥२१-२५॥

सूत उवाच

कैलासशिखरे रम्ये सुखासीनं महेश्वरम् ।
प्रणम्य पार्वती भक्त्या पप्रच्छ च सदाशिवम् ॥२६

सूत जी बोले—सुन्दर कैलाश पर्वत की शिखर पर सुख पूर्वक बैठे हुए भगवान् शंकर से, पार्वती जी ने भक्ति पूर्वक, प्रणाम करके पूछा ॥२६॥

पार्वती उवाच

देवदेव जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकः ।
लोकोपकारकं प्रश्नं वदं मे परमेश्वरः ॥२७

पार्वती जी बोलीं—हे देवाधि देव, हे जगन्नाथ, हे भक्तों पर अनुग्रह करने करने वाले, हे परमेश्वर ! संसार के कल्याण करने वाले मेरे इस प्रश्न का उत्तर देने की कृपा कीजिये ॥२७॥

कलौ च मानवास्तुच्छाः पापमोहसमन्विताः ।
महामोहग्रहग्रस्ताः पुत्रकन्याविवर्जिताः ॥२८
कुत्सिता रूपविभ्रष्टा मृतवत्सा नपुंसकाः ।
नारीणां पुरुषाणां च पूर्वकर्म च यत्प्रभो ॥२९
तत्सर्वं वद मे स्वामिन् सर्वज्ञोऽसि मतो मम ।
तच्छ्रुत्वा वचो देव्याः प्रीतिमान् स महेश्वरः ॥३०
प्रहस्य जगतामीशो वल्लभां प्रीतिसंयुताम् ।
उवाच प्रश्नं तद्गूढं त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम् ॥३१

कलि काल में मानव तुच्छ होंगे, पाप एवं मोह से युक्त होंगे, महामोह से ग्रस्त होंगे, पुत्र एवं कन्याओं से रहित होंगे, कुत्सित, कुरूप होंगे, बच्चे इनके होकर मर जायेंगे, नपुंसक होंगे, अतः नारियों एवं पुरुषों के पूर्व कर्मों के बारे में मैं सम्यक् रीति से जानना चाहती हूँ। हे देवाधि देव ! आप सर्वज्ञ हैं, आप मेरे प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करें। इसे सुन शंकर जी अति प्रसन्न हुए और हँसकर जगदीश प्रेम पूर्वक बोले कि तुम्हारा ये प्रश्न त्रिलोकी में अति दुर्लभ है ॥२८-३१॥

शिव उवाच

शृणु त्वं गिरिजे देवि नृणां कर्म विशेषतः।
कथयामि न सन्देहो भक्तो मनसि वर्त्तते ॥३२
मर्त्याः सर्वे जगज्जाताः कर्म कुर्वन्ति सर्वदा।
स्वकर्माणि ततो देवि भुज्यन्ते देवमानुषः ॥३३
पुण्यापुण्ये हि पुरुषः पर्यायेण समश्नुते।
भुञ्जतश्च क्षयं याति पापं पुण्यमथापि वा ॥३४
न तु भोगादृते पुण्यं किंचिद्वा कर्म मानवम्।
पावकं वा पुनात्याशु क्षयो भोगात्प्रजायते ॥३५

शिवजी बोले—हे गिरिजा! मैं मानवों के कर्मों का वर्णन करता हूँ ताकि तुम्हारे मनमें किसी प्रकार का संशय न रहे। सभी प्राणी, जो जगत में जन्म लेते हैं, सदा कर्म करते हैं। अतः देव एवं मनुष्य अपने कर्मों का भागते हैं। पाप एवं पुण्य पुरुष को भोगने पड़ते हैं। पाप हो या पुण्य सभी भोगने से नष्ट होते हैं। भोग के बिना मानव के पाप या पुण्य नष्ट नहीं होते। जैसे पावक में वस्तु क्षय हो जाती है एवं पावन हो जाती है तद्वत् भोग से ही पाप-पुण्य का क्षय होता है ॥३२-३५॥

परित्यजति भोगाच्च पुण्यापुण्य निबोध मे।
दुर्भिक्षादेव दुर्भिक्षं क्लेशात् क्लेशं भयाद्भयम् ॥३६
मृतेभ्यः प्रमृता यान्ति दरिद्राः पापकर्मिणाः।
गतिं नानाविधां यान्ति जन्तवः कर्मबन्धनात् ॥३७
उत्सवादुत्सव यान्ति स्वर्गात्स्वर्ग सुखात्सुखम्।
श्रद्धधानश्च शान्तश्च धनदाः शुभकारणिः ॥३८
सुगन्धिमाल्यासद्वस्त्रसाधुपानासनाशनाः।
स्तूयमानाः सदा यान्ति पुण्यै पुण्याटवीष्वपि ॥३९

मेरी समझ में पुण्य एवं पाप भोग से ही समाप्त होते हैं। दुर्भिक्ष से दुर्भिक्ष, क्लेश से क्लेश एवं भय से भय होता है। दरिद्री, पाप कर्मी मर कर भी मरता है, कर्म बन्धन के कारण प्राणी अनेक प्रकार की गतियों को प्राप्त करता है। श्रद्धालु, शान्त, दानी एवं शुभ कर्म करने वाले उत्सव से उत्सव, स्वर्ग से स्वर्ग और सुख से

सुख प्राप्त करते हैं। पुण्यवान सुगंधित मालाओं से, सुन्दर वस्त्रों से, सुन्दर पेय पदर्थों से, सुन्दर खाद्य पदार्थों से युक्त, सदैव दूसरों के द्वारा स्तुति किये जाते हुए पवित्र मार्गों में विचरण करते हैं ।।३६-३९।।

अनेकशतसहस्रजन्मसंचयसंचितम् ।
पुण्यापुण्यं नृणां तद्वत् सुखदुःखंकुरोद्भवम् ।।४०
मानवस्तु विशेषेण सुखदुःखादिकं च यत् ।
कर्मत्रयं च सर्वेषां तन्मध्ये संचितं च यत् ।।४१
वक्तव्यं नात्र संदेहो यत्कृत्वा फलमाप्नुयात् ।
प्रारब्धं विस्तरं कर्मं वर्तमानं च दृश्यते ।।४२
आश्विन्यादिकनक्षत्रे सर्वेषां जन्म जायते ।
तदापि पादभेदेन ज्ञातव्यं च शुभाशुभम् ।।४३

सैकड़ों एवं हजारों जन्म जन्मान्तरों के पुण्यों एवम् पापों से मानव के सुख दुःख के अंकुर उत्पन्न होते हैं। मानव को जो सुख दुःख होता है वह तीन कर्मों (प्रारब्ध, संचित, वर्तमान में किये जाते हुए) का फल है। इसमें जो संचित कर्म हैं उसके सम्बन्ध में ही मैं कहूँगा, जिसे करने पर फल मिलता है। प्रारब्ध विस्तृत कर्म श्रृंखला है और वर्तमान दिखलाई देता ही है। सभी मानवों का जन्म अश्विनी आदि नक्षत्रों में होता है फिर भी पाद भेद से शुभ एवम् अशुभ कर्मों के बारे में जानना चाहिए ।।४०-४३।।

।। पूजन विधि नामक प्रथम अध्याय सम्पूर्ण ।।

— . —

द्वितीय अध्याय

आश्विन्याः प्रथमे पादे यदा जन्म प्रजायते ।
तदा ब्राह्मणवर्णोऽयं मध्यदेशसमुद्भवः ।।१
द्वितीयचरणे देवि पुरा क्षत्री न चान्यथा ।
अयोध्यापुरतः पूर्वं पुत्रकन्याविवर्जितः ।।२
तृतीयचरणे देवि वैश्यवर्णसमुद्भवः ।
रोगी कुत्सितवर्णोऽयं मृतवत्सो नपुंसकः ।।३

चतुर्थचरणे देवि यदा भवति मानवः ।
तदा शूद्रं विजानीयाद्रोगवान् मृतवत्सकः ।
श्यामलः पुष्टदेहश्च कुष्ठरोगेण पीडितः ॥४

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने वाले जातक को पूर्व जन्म में मध्य देश में उत्पन्न, ब्राह्मण वर्ण का कहना चाहिए ॥१॥ द्वितीय चरण में जन्मे जातक को अयोध्या के पूर्व में उत्पन्न, क्षत्री वर्ण एवम् सन्तान हीन व्यक्ति कहना चाहिए ॥२॥ तृतीय चरण में जन्मे जातक को वैश्य वर्ण में उत्पन्न रोगी, कुत्सित-एवम् मृत वत्स तथा नपुंसक कहना चाहिये ॥३॥ चतुर्थ चरण के व्यक्ति को शूद्र, रोगी, मृतवत्स, श्यामल रंग, पुष्ट देह एवम् कुष्ठ रोग से पीड़ित कहना चाहिए ॥१-४

शिव उवाच

अथ कर्म प्रवक्ष्यामि यत्कृतं ब्राह्मणादिभिः ।
एको ब्राह्मणवेदज्ञो गुणरूपसमन्वितः ॥५
तस्य पत्नी विशालाक्षी पुंश्चली क्षत्रवंशजा ।
तस्यां पुत्रोऽभवेद्देवि नाम्ना नरहरिस्तदा ॥६
ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो व्याधिभिः पीडितः सदा ।
तस्य मित्रो द्विजोऽप्येको धनपुत्रैश्च संयुतः ॥७
नामतो लग्नशर्मेति निकटे तस्य चागतः ।
आदरं वहुधा कृत्वा स्वर्णं दृष्ट्वा प्रहर्षितः ॥८
स्वर्णलोभेन तं विप्रं हतवान् पुत्रसंयुतम् ।
स्वर्णं सर्वं हृतं देवि व्ययं कृत्वा दिने दिने ॥९

शिवजी बोले—ब्राह्मण आदि वर्णों ने जो कर्म किये हैं, उनके विषय में कहता हूँ वेदज्ञ, गुण रूप समन्वित एक ब्राह्मण था। उसकी पत्नी क्षत्रिय, विशाल नेत्रों वाली और चरित्र हीन थी। उनके नरहरि नामक एक पुत्र हुआ। वह ब्राह्मण धर्म से भ्रष्ट एवं व्याधियों से पीड़ित था। उसका एक मित्र ब्राह्मण था वह धनवान एवं पुत्रवान था। उसका नाम लग्न शर्मा था। वह उसके पास आया, आदर किया, उसका धन देख वह प्रसन्न हुआ। हे देवि ! उस ब्राह्मण पुत्र ने स्वर्ण के लोभ से लग्न शर्मा का पुत्रों सहित वध कर दिया, उसके सारे स्वर्ण का हरण कर लिया और प्रतिदिन उसका व्यय करने लगा ॥५-९॥

षण्ड्शैर्गुप्तदानं च गङ्गायमुनासङ्गमे ।
चकार तद्धनैर्भक्त्या विष्णुप्रीतिकरं तदा ॥१०

एवं बहुगते काले पत्नी तस्य मृता पुरा ।
पश्चात्सोऽपि ग्रहग्रस्तो मृत्युं प्राप्नोति दुर्जनः ॥११
निक्षिप्तो नरके घोरे यमदूतैर्यमाज्ञया ।
युगसप्ततिपर्यन्तं भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥१२
नरकान्निःसृतो देवि शृगालो गहने वने ।
तत्स्थो निजफलं भुक्त्वा कृमियोनौबभूत्पुनः ॥१३

उसने उस हृत धन में से षडांश गंगा यमुना के संगम पर, भक्ति पूर्वक विष्णु के प्रसन्नार्थ, दान किया। बहुत दिनों बाद पहिले उसकी पत्नी मरी फिर ग्रह ग्रस्त ये दुर्जन भी मर गया। यम की आशा से दूतों ने उसे घोर नरक में डाल दिया। सत्तर युग तक नरक की यातना भोग, नरक से बाहर आ एक गहन वन में स्यार हुआ। वहाँ अपने कर्मों का फल भोग फिर कृमि योनि में उत्पन्न हुआ ॥१०-१३॥

पुनर्मानुषायोनिः स पूर्ण च प्रथिते कुले ।
मध्यदेशे शुभे ग्रामे मृतवत्सो ह्यपुत्रकः ॥१४
रुग्णो बहुधनाढ्यश्च गौडो मांसप्रियः सदा ।
तस्य भार्या महालुब्धा पुरा लोकमती च या ॥१५
पुनर्विवाहिता देवि पूर्वजन्मप्रसङ्गतः ।
मासि पुष्पं भवेद् स्याः सन्तानं नैव वा भवेत् ॥१६
सज्वरा दीर्घनेत्रा सा कुक्षिरोगेण पीड़िता ।
इति श्रुत्वा वचस्तस्य महादेवप्रिया शिवा ॥१७
प्रणम्य पार्वती देवी शङ्करं परमेश्वरम् ।
उवाच वचनं देवं चराचरगुरुं परम् ॥१८

फिर मध्य देश के एक सुन्दर गांव में, अच्छे कुल में, मानव योनि में उत्पन्न हुआ। परन्तु उसकी सन्तान मर जाती थीं, उसके पुत्र न था। धनवान था, गौड़ जाति में उत्पन्न वह रोगी एवम् मांस भक्षक था। पूर्व जन्म में लोकमती नाम से प्रसिद्ध उसकी पत्नी अत्यन्त लोभी थी। पूर्व जन्म के प्रसंग से पुनः इस जन्म में उसका विवाह उसके साथ हुआ। वह प्रति मास मासिक धर्म से तो होती परन्तु उसके सन्तान नहीं होती थी। वह दीर्घ नेत्रों वाली ज्वर से एवम् उदर रोग से

पीड़ित रहती थी। शिवजी के ऐसे वचनों को सुनकर पार्वती जी शिवजी को प्रणाम करके, चराचर के गुरु शंकर से बोली—

प्राणिनां केवलं कर्म तव मायाविचेष्टितम्।
शुभमेवाशुभं चैव कथं जानामि पूर्वजम्।
तत्सर्वं कृपया देव वद मे परमेश्वरः ॥१९

हे देव ! प्राणियों के शुभ एवम् अशुभ कर्म सब तुम्हारी माया से सम्पन्न होते हैं। उन पूर्व जन्म के कर्मों को कैसे जाना जाय ? हे परमेश्वर ! कृपा पूर्वक वह सब मुझे बतलाइये ॥१९॥

शिव उवाच

त्रिविधं प्राणिनां कर्म नृणां चैव स्वभावजम्।
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् ॥२०
अनिष्टं नागलोके च नरके विविधे तथा।
इष्टं स्वर्गे फलं देवि मिश्रं मर्त्ये प्रजायते ॥२१
रोगतश्चेष्टया देवि ज्ञेयं सर्वं शुभाशुभम्।
राजरोगी भवेद्यस्तु ब्रह्महा पूर्वजन्मनि ॥२२
पुत्रकन्याविहीनो यो गोत्रहा गुरुहा भवेत्।
पाण्डुरोगी नरो यस्तु देवपूजनवर्जितः ॥२३

शिव बोले—प्राणियों के स्वाभाविक तीन प्रकार के कर्म होते हैं और उन कर्मों के अनिष्ट, इष्ट एवम् मिश्र ये तीन फल होते हैं। अनिष्ट फल से नाग लोक में एवम् नरक में फल भोगने पड़ते हैं। इष्ट का फल स्वर्ग में एवम् मिश्र फल की प्राप्ति मृत्यु लोक में होती है। हे देवि ! रोग से एवम् चेष्टाओं से शुभ एवम् अशुभ कर्मों का ज्ञान करना चाहिये। जो राजयक्ष्मा से पीड़ित हो तो उसे पूर्व जन्म का ब्रह्म हत्यारा समझना चाहिये। पुत्र एवम् कन्या से रहित प्राणी पूर्व जन्म में गुरु हत्यारा एवम् सगोत्री जनों का बध कर्त्ता होता है। देव पूजन से विहीन व्यक्ति वर्तमान जन्म में पाण्डु रोग जलोदर से पीड़ित होता है ॥२०-२३॥

कन्यापत्यं भवेद्यस्य वेदनिन्दा कृता तदा।
कन्य घाती पक्षिघाती तस्य भार्या न जीवति ॥२४
भ्रातृहा यः पुरा देवि स ज्वरेण प्रपीडितः।

घण्टावादित्रहारी च कर रोगी नरो भवेत् ।।२५
भगिनीनाशनं देवि कृतं यैः पूर्वजन्मनि ।
तेन पापेन भो देवि ते ज्वरेण प्रपीडिताः ।।२६
मित्रद्रोही बालघाती पशुघाती तथैव च ।
तत्फलेन महादेवि मृतवत्सश्च रोगवान् ।।२७

पूर्व जन्म में वेदनिंदक के कन्यायें अधिक होती हैं । कन्या घाती एवम् पक्षि घाती की पत्नी जीवित नहीं रहती ।।२४।। पूर्व जन्म में भाइयों का हत्यारा सदैव ज्वर से पीड़ित रहता है । मन्दिर के घंटा एवम् वाधों का हरण कर्त्ता हाथ की पीड़ा से युक्त होता है ।।२५।। हे देवि ! जो पूर्व जन्म में अपनी बहिन का विनाश करते हैं वे उस पाप से सदैव ज्वर से पीड़ित रहते हैं ।।२६।। हे महादेवि ! पूर्व जन्म के मित्र द्रोही, बाल घाती, पशु घाती इस जन्म में मृत सन्तान (सन्तान हो एवम् मर जाये) एवम् रोगी होते हैं ।।२७।।

कायाघाती गर्भपाती धनपुस्तकहारकः ।
जन्मान्धो जायते देवि नात्र कार्या विचारणा ।।२८
वस्त्रहा भूमिहारी च परनिन्दापरस्तथा ।
तेन पापेन भो देवि दरिद्रो जायते नरः ।।२९
गोदारापहारी च दीर्घरोगी भवेन्नरः ।
महिषीपुत्रघाती च कम्परोगी प्रजायते ।।३०
निर्बीजं वृषभ यो वै प्रकरोति नराधमः ।
षण्ढस्संजायते देवि मूत्रकृच्छ्री भवेत्ततः ।।३१

हे देवि ! आत्महत्या करने वाले, गर्भ पातक करने वाले, धन एवम् पुस्तक को चुराने वाले जन्मान्ध होते हैं ।।२८।। वस्त्र चुराने वाले, भूमि का हरण करने वाले, पर निन्दा करने वाले इस पाप से पीड़ित दरिद्री होते हैं ।।२९।। गो एवम् पर दारा (पत्नी) का हरण करने वाला व्यक्ति दीर्घ रोगी होता है । भैंस एवम् पुत्र की हत्या करने वाला कम्प रोग से पीड़ित होता है ।।३०।। जो बैल को बधिया करते हैं वे अधम मानव नपुंसक एवम् मूत्र रोगी होते हैं ।।३१।।

मातृहा पितृहा देवि महाकुष्ठी नरो भवेत् ।
आगम्यागमनं यस्तु वीरयोषागमं तथा ।।३२

करोति योऽधर्मस्तस्य शरीरं ज्वरपीडितम् ।
गोवधी जायते देवि श्वेतकुष्ठी नरः सदा ॥३३
कन्यकागमनं यस्तु करोति हठतः पुरा ।
तेन पापेन भो देवि रोगबन्धनवर्जितः ॥३४
पुष्पगन्धापहारी च मुखे तस्य विगन्धता ।
घृतहारी भवेत्कुष्ठी तस्माद्भ्रष्टः कृमिर्भवेत् ॥३५

हे देवि ! माता-पिता का हत्यारा महान कोढ़ी होता है। अगम्यागमन (अपने वर्ण से हीन नारी के साथ भोग करने वाला, (पर) वीर नारी के साथ भोग करने वाला, सदैव ज्वर से पीड़ित रहता है। तथा गौ वध करने वाला सफेद कोढ़ से युक्त होता है। पूर्व जन्म में जबर्दस्ती कन्या से भोग करने वाला रोगी एवम् अति दरिद्री होता है। पुष्प एवम् सुगन्धित पदार्थों की चोरी करने वाले के मुख से सदैव दुर्गंध आती है ॥३२-३५॥

वृक्षगन्धापहारी च काकः संजायते नरः ।
वापीकूपापहारी च दद्रुरोगी भवेन्नरः ॥३६
देवयात्रापहारी च कण्ठरोगी भवेन्नरः ।
सारङ्गगीतघाती च वने दावाग्निदाहकः ॥३७
अक्षिरोगी नासिकायां व्रणी कृमिसमाकुलः ।
तैलहारी भवेत्तैली गुडहारी ज्वरी सदा ॥३८
स्वर्णरौप्यापहारी च नरो भवति पुत्रहा ।
दासदासीहरो यस्तु नरो भवति कर्णरुक् ॥३९

वृक्षों एवम् पुष्पों का चुराने वाला कौआ होता है। दूसरों के बावड़ी, कूआ आदि जलस्थानों को नष्ट करने वाला दाद रोग से पीड़ित होता है। देव यात्रा पहारी (अर्थात् प्रभु यात्रा में चोरी करने वाला, प्रभु यात्रा में बाधक) कंठ रोगी होता है। सारंग हिरन, मोर, चातक, सर्प आदि को मारने वाला, वनों में आग लगाने वाला आँख का रोगी होता है और उसकी नाक में घाव होता है जिसमें कीड़े भी पड़ जाते हैं। तेल चुराने वाला तेली, गुड़ चुराने वाला बुखार से पीड़ित होता है। सोना-चाँदी चुराने वाला अपने पुत्र को ही नष्ट करने वाला होता है। दास-दासियों का हरण करने वाला कान का रोगी होता है ॥३६-३९॥

लोहमूल्यापहारी च पाण्डुरोगी भवेन्नरः ।
दधिदुग्धहरो यस्तु कुक्षिरोगी भवेन्नरः ।।४०
मार्गग्राही वस्त्रहारी बाहुरोगी प्रजायते ।
मयूरकुक्कुटानां च कच्छपानां च बाधकः ।।४१
वात रोगी च खञ्जश्च जन्म जन्म नपुंसकः ।
मद्यपो मांसभोजी च मत्स्यभोजी तथैव च ।।४२
तेन पापप्रभावेण चर्मकारो हि जायते ।
अन्नहा जलहा चैव दन्तरोगी भवेन्नरः ।।४३

लोहे का मूल्य न चुकाने वाला पान्डु रोगी, दही-दूध को चुराने वाला कुक्षि (पेट) रोगी होता है। मार्ग का अधिग्रहण करने वाला, वस्त्रों का चोर बाहु-रोग से पीड़ित होता है। मोर, मुर्गा कछुओं का मारने वाला वायु रोग से पीड़ित लंगड़ा एवम् अनेक जन्मों तक नपुंसक होता है। शराबी, माँस खाने वाला, मछली खाने वाला चर्मकार होता है। अन्न एवम् जल को चुराने वाला दाँतों का रोगी होता है ।।४०-४३।।

ब्राह्मणस्य गृहं यस्तु धनधान्यसमन्वितम् ।
हरणं तस्य वै कुर्यान्मृगीरोगी भवेन्नरः ।।४४
एवं बहुविधो रोगी नाराणां चैव जायते ।
पूर्वकर्मफलं चैव भुज्यते खलु मानवैः ।।४५

जो व्यक्ति धन धान्य से समन्वित ब्राह्मण के घर का हरण करता है वह मिरगी रोग से पीड़ित होता है ।।४४।। इस प्रकार मनुष्यों में पूर्व जन्म के कर्मों के फलानुसार अनेक प्रकार के रोग होते हैं ।।४५।।

इति कर्म विपाक संहिता में पार्वती- शिव संवाद में "कृत कर्म योग" नामक द्वितीय अध्याय सम्पूर्ण



तृतीय अध्याय

शिव उवाच

श्रृणु देवि प्रक्ष्यामि यत्प्रश्नं भुवि जायते ।
प्रायश्चित्तं नराणां च मेषराशिक्रमाबनु ।।१

शिवजी बोले—हे देवि ! पाप सम्बन्धी जितने भी प्रश्न हैं, उनका मैं प्रायश्चित मेष आदि राशियों के क्रम से कहता हूँ ।।१।।

ब्राह्मणं स्वर्णलोभेन हत्वा चैव सपुत्रकम् ।
स्वर्ण भुक्तं सदारेण तत्पापात् पुत्रवर्जितः ।।२

स्वर्ण के लोभ से जो फल सहित ब्राह्मण की हत्या करता है एवम् उसके धन एवम् स्त्री का भोग करता है, इस पाप से व्यक्ति पुत्र रहित होता है ।

प्रायश्चितं जपं देवि गायत्री त्र्यम्बकं ततः ।
पञ्चलक्षप्रमाणेन ततः पापात् प्रमुच्यते ।।३
ब्राह्मणस्य सपुत्रस्य प्रतिमां कारयेद्बुधः ।
स्वर्ण दशपलस्यैव तां सम्पूज्य प्रयत्नतः ।।४
कुण्डं कृत्वा ततो देवि चतुरस्रं प्रसन्नधीः ।
प्रतिमां पूजयेच्चैव मन्त्रेणानेन भो प्रिये ।।५

इस पाप का प्रायश्चित ये है कि गायत्री एवम् शिव मन्त्र (त्रयम्बक) का पाँच लाख जप कराये तो वह पाप से छूटता है । पुत्र सहित ब्राह्मण की दश पल (पचास तोले) की स्वर्ण प्रतिमा बनावे उसकी विधिवत् पूजा करे । प्रसन्न होकर चतुष्कोण कुण्ड का निर्माण करावे एवम् निम्नलिखित मन्त्र से हे प्रिये उस प्रतिमा का पूजन करे ।।३-५।।

ॐ नमो गणाधिपतये गन्धपुष्पादिबलिं समर्पयामि नमः ।। ॐ इन्द्राय नमः ।। ॐअग्नये नमः ।। ॐयमाय नमः ।। ॐ निर्ऋतये नमः ।। ॐ वरुणाय नमः ।। ॐ कुवेराय नमः ।। ॐकालाय नमः ।। ॐशिवाय नमः ।। ॐब्रह्मणे नमः ।। ॐअनन्ताय नमः ।। ॐ गरुडवाहनाय नमः ।। ॐ विष्णवे नमः ।। ॐजयाय नमः ।। ॐविजयायनमः ।। ॐपुण्यशीलायनमः ।। ॐसुशीलायनमः ।।

ॐ सर्वे देवास्तथा दैत्या ब्रह्मविष्णुमहेश्वरः ।
मत्पापं यत्पुरा जातं तत्सर्वं क्षम्यतां सदा ।।६

श्री गणेश जी को गन्ध पुष्पादि वाले समर्पित हैं । इन्द्र को नमस्कार है, अग्नि को नमस्कार है, यम को, निर्ऋत को, वरुण को, कुबेर को, काल को, शिव को, ब्रह्मा को नमस्कार है । अनन्त को, गरुड़ वाहन को, विष्णु को, जय को, विजय

को, पुण्य शील को एवम् सुशील को नमस्कार है। सभी देव, दैत्य, ब्रह्मा, विष्णु एवम् महेश सभी पूर्व जन्म में किये हुए मेरे पापों को नष्ट करें ॥६॥

इमां पूजां गृहाणैवं मम पुत्रं प्रयच्छतु ।
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥७
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रयच्छ शरणं मम ।
ततो नवग्रहाः सर्वे दिक्पालाश्चाप्युपग्रहाः ॥८
सर्वं ममापराधान्यौ क्षम्यतां पूर्वजन्मनः ।
एवं सर्वं यथान्यायं पूजां कृत्वा विचारतै ॥९
ततो होमं प्रकुर्वीत तिलधान्यादितन्दुलः ।
दशांशं होमयोद्देवि तर्पणं मार्जनं तथा ॥१०

हे देवि ! मेरी इस पूजा को स्वीकार करो, मुझे पुत्र सतंति प्रदान करो। मैंने पूर्व जन्म में अज्ञान से या प्रमाद से जो भी पाप किये हैं, उन्हें आप क्षमा करें। मैं आपकी शरण हूँ।" (इसके उपरान्त) हे नव ग्रहो, सभी दिग्पालो, सभी उपग्रहों सभी मेरे जन्म के अपराधों को क्षमा करो।" इस प्रकार सबकी विधिवत पूजा करके, तिल, जौ, चावल से दशांश हवन करे, उसके दशांश से तर्पण एवम् मार्जन करे ॥७-१०॥

गोदानं च ततः कुर्याद्दशवर्णं विशेषतः ।
वृषमेकं प्रदातव्यं स्वर्णश्रृङ्गं सहाम्बरम् ॥११
ततो वै ब्राह्मणान्देवि भोजयेद्विधिपूर्वकम् ।
भोजनान्ते ततो दानं सुवर्णं दक्षिणां ततः ॥१२
प्रतिमालंकृता देवि ! वाचकाय प्रदापयेत् ।
एवंकृते महादेवि वंशो भवति नान्यथा ॥१३
एकादशीव्रतं चैव सप्तमी रविसंयुताम् ।
यावत्स्वमरणं देवि कुर्यात्सत्ययुतो नरः ॥१४
पूर्वपापविशुद्धिःस्याद् व्याधिरेवं विनश्यति ॥१५

इसके उपरान्त गौ दान करे, विशेष कर दशवर्णी गौ हो। एक बैल, सोने से सींग मढ़कर, वस्त्र पहनाकर दान करे। हे देवि ! इसके उपरान्त विधि पूर्वक ब्राह्मणों को भोजन करावे। भोजनोपरान्त स्वर्ण दान एवम् दक्षिणा प्रदान करे।

उस स्वर्ण प्रतिमा को जिसका कि पूजन किया था। उसे वाचक 'आचार्य' को प्रदान करे। हे महादेवि ! ऐसे कार्य करने से निश्चय ही वंश चलता है। हे देवि ! जीवन पर्यन्त एकादशी का व्रत एवम् रविवार में जिसमें सप्तमी तिथि पड़ती हो उसका व्रत रखे। इस प्रकार करने से मानव के पूर्व कृत पाप नष्ट हो जाते हैं एवम् व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं ॥११-१५॥

॥ इति श्री अश्विनी क्षेत्र के प्रथम पाद का 'प्रायश्चित कथन" नामक तृतीय अध्याय सम्पूर्ण



चतुर्थ अध्याय

शिव उवाच

अथ द्वितीये वक्ष्यामि प्रायश्चित्तं तथाम्बिके।
आश्विन्यां जायते देवि पूर्वकर्मविपाकतः ॥१

शिव बोले—देवि ! अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए जातक के, पूर्व कर्म विपाक से हुए पापों का प्रायश्चित कहता हूँ ॥१॥

अयोध्या पुरतो देवि पूर्वे क्रोश चतुष्टये।
सरयू निकटे चैव वर्णसंकरक्षत्रियः ॥२
नामतः श्वेतवर्मेति पुत्रदारसमन्वितः।
एकदा मातुलो देवि पुत्रेण सह संयुतः ॥३
आगतो निकटे देवि स्वर्णकोटिसमन्वितः।
आदरं बहुधा कृत्वा गृहे वासं ददौ च सः ॥४

हे देवि ! अयोध्या के पूर्व में चार कोस की दूरी पर सरयू नदी के किनारे एक वर्ण संकर क्षत्री था। उसका नाम श्वेत वर्मा था, स्त्री-पुत्रों से युक्त था। एक दिन उसका मामा अपने पुत्र के साथ उसके घर आया। उसके पास एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा थीं। श्वेत वर्मा ने उसका अति आदर किया और घर में वास दिया ॥२-४॥

तस्य पत्नी गुणवती रूपयौवनसंयुता।
मासमेकं तदा देवि प्रत्यहं भगिनीगृहे ॥५
भुज्यते सह पुत्रेण चामिषं विविधं तथा।
मासान्ते चावधीद्रात्रौ मातुलं सह पुत्रकम् ॥६

भूमिमध्ये शिवं ताभ्यां यत्नतः स्थापितं तदा ।
स्वर्णकोटिं प्रजग्राह पापात्मा गुरुघातकः ॥७

उसकी पत्नी गुणवान एवम् रूप यौवन से सम्पन्न थी । वह अपनी बहिन के घर (भानजे के पास) एक माह तक रहा । पुत्र सहित अनेक प्रकार के मांस खाता हुआ वह वहाँ रहा । माह के अन्त में उस श्वेत वर्मा ने पुत्र के सहित मामा का वध कर दिया । उन दोनों के शव को यत्न पूर्वक भूमि में गाढ़ दिया । उस पापी ने गुरु घाती ने एक करोड़ स्वर्ण मुद्राओं को ग्रहण कर लिया ॥५-७॥

पत्न्या सह ततो द्रव्यं व्ययं कुर्वन् दिने दिने ।
एवं बहुगते काले क्षत्री कालवशोऽभवत् ॥८
पश्चान्मृता ततः पत्नी निर्जने गहने वने ।
कर्दमे नरके घोरे यमदूतैर्यमाज्ञया ॥९
निक्षिप्य महतीं पीडां तयोर्दत्त्वा ततः प्रिये ।
युगमेकं वरारोहे भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥१०
नरकान्निःसृतो देवि गर्दभत्वमजायत ।
पुनः सरटयोनिं तु भुक्त्वा मर्त्यस्ततोऽभवत् ॥११

उसने पत्नी के साथ उस द्रव्य का व्यय किया । बहुत समय बाद वह क्षत्री मर गया । इसके बाद निर्जन गहन वन में उसकी पत्नी भी मर गई । तब यम की आज्ञा से यम दूतों ने उन दोनों को कर्दम नामक घोर नरक में डाल दिया । और उन्हें महान पीड़ा प्रदान की । हे प्रिये ! एक युग तक उस नरक यातना को भोग, नरक से निकल, गधे बने, फिर गिरगिट बने, इस योनि को भोग वे मनुष्य बने ।८-११।

हतोऽनेन पुरा देवि मातुलः पुत्रसंयुतः ।
तत्पापफलतो देवि वंशच्छेदश्च जायते ॥१२
रोगयुक्ताऽभवद्देवि पत्नी वै पूर्वजन्मनि ।
ततो विवाहिता जाता पुनर्वै पूर्वकर्मतः ॥१३
कासश्वाससमायुक्तो विषमज्वरपीडितः ।
प्रायश्चित्तं ततस्तस्य प्रवक्ष्यामि वरानने ॥१४

हे देवि ! पूर्व में इसने पुत्र सहित मामा का वध किया था । उस पाप के फल से वंश-छेद हो गया अर्थात् वंश नहीं चला । पूर्व जन्म के प्रभाव से पत्नी रोगी

हुई पूर्व जन्म के प्रभाव से उसी पुरुष के साथ इसका विवाह हुआ। वह भी श्वास खाँसी एवं विषम ज्वर से पीड़ित रहता। हे सुन्दर मुख वाली पार्वती ! अब मैं उसका प्रायश्चित कहता हूँ ॥१२-१४॥

प्रत्यहं ब्राह्मणे दानं भक्तिपूर्वं वरानने।
दशधेनुं प्रयत्नेन हरिवंशश्रुतिं तथा ॥१५
सुवर्णप्रतिमां कृत्वा पलं पञ्चस्य च।
वर्तुलाकारकुण्डे वै होमं कृत्वा प्रसन्नधीः ॥१६
गायत्रीलक्षजाप्यं च कारयेत् प्रयत्नतः।
दशांशहोमं कर्तव्यो विप्राणां भोजनं तथा।
शय्यादानं विशेषेण प्रतिमां पूजयेत्ततः ॥१७

हे वरानने ! उसे नित्यप्रति भक्तिपूर्वक ब्राह्मण को दान देना चाहिये। दश पुण्य करे एवम् हरिवंश पुराण का श्रवण करे। पन्द्रह पल की स्वर्ण प्रतिमा बनावे प्रसन्न होकर गोलाकार यज्ञ कुन्ड बनवावे, एक लाख गायत्री का जप करावे, उसके दशांश का हवन करे ब्राह्मण भोजन करावे, शय्या दान दे तथा प्रतिमा का विशेष पूजन करे ॥१५-१७॥

अथ प्रतिमा पूजनम्

षोडशांगुलिका वेदी मृत्तिकासप्तसंयुता।
चतुरस्रा विचित्रा च गन्धपुष्पसमन्विता।
तत्रैव प्रतिमा कृत्वा स्थापितां पूजयेत्ततः ॥१८

सात स्थान की मिट्टी से, सोलह अंगुल प्रमाण की चतुष्कोण वेदी, गन्ध-पुष्प से सज्जित कर बनावे। उस स्वर्ण प्रतिमा को प्रतिष्ठित कर इस प्रकार पूजन करे ॥१०॥

ॐ चक्रधराय नमः ॥ ॐ गदाधराय नमः ॥ ॐ शार्ङ्गिणे नमः ॥ ॐगरुडाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥ ॐ सर्वेश्वराय नमः ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥

देवदेव महादेव शंखचक्रगदाधर।
मम पूर्वं कृतं पापं हर त्वं धरणीधर ॥१९

ॐ चन्द्रधर को प्रणाम है, गदाधर को प्रणाम है, शारंग को, गरुड़ को, विष्णु को, शिव को, ब्रह्मा को, प्रजापति को, सर्वेश्वर को एवम् लक्ष्मी जी को प्रणाम है।

हे देव देव, हे महादेव, शंख, चक्र एवम् गदा को धारण करने वाले, हे धरणीधर तुम मेरे पूर्वकृत पापों को नष्ट करो ॥१९॥

एवं पूजा समाप्तै प्रतिमां तां च दापयेत् ।
आचार्या तदा देवि सुवर्णं दक्षिणां ततः ॥२०
ततः प्रदक्षिणां कृत्वा ब्राह्मणं व्यासरूपिणै ।
माघे मासि प्रयागे तु स्नानं पत्नीसमन्वितः ॥२१
एवं कृते सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं वन्ध्यात्वञ्च विनश्यति ॥२२
रोगी च मुच्यते रोगात् कन्यका नव जायते ॥२३

इस प्रकार विधि पूर्वक पूजा समाप्त कर ब्राह्मण को उस प्रतिमा को प्रदान करे। फिर स्वर्ण दक्षिणा प्रदान करे और उस व्यास रूप उस ब्राह्मण की पत्नी सहित परिक्रमा करे। माघ मास में सपत्नीक संगम स्नान करे। ऐसा करने से वन्श वृद्धि होती है। जिसके सन्तान होकर मर जाती हो, उसकी सन्तान जीवित होने लगती है जो बांझ हो उसका बांझपन छूट जाता है। रोगी रोग से छूट जाता है, कभी कन्या फिर उसके यहां नहीं उत्पन्न होती ॥२०-२३॥

॥ इति श्री "अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय पाद विमर्श" नामक चौथा अध्याय सम्पूर्ण ॥

— ६ —

पञ्चम अध्याय

शिव उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि नक्षत्रतुरगस्य तु ।
तृतीयस्य ततो देवि प्रायश्चित्तमतः शृणु ॥१

शिवजी बोले—हे देवि ! अब मैं आपसे अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए जातक के प्रायश्चित कहता हूँ, तुम ध्यान से सुनो ॥१॥

अयोध्यापुरतो देवि दक्षिणे पूर्वदिशागते ।

नारायणे रम्यो च राजपुत्रोऽभवत्तदा ।।२
स्वकर्मनिरतो दान्तः प्रजापोषणतत्परः ।
नामतश्चोलसिंहेति तस्य पत्नी प्रभावती ।।३
तस्य मित्रं द्विजोऽप्येकः स्वकर्मपरिवर्जितः ।
एकदा मृगयां यातो राजपुत्रः स ब्राह्मणः ।।४

अयोध्या से दक्षिण-पूर्व में एक सुन्दर नारायण पुर नामक नगर में एक राजपुत्र था। वह उदार, प्रजापालक एवम् कर्त्तव्य परायण था। उसका नाम चालसिंह और उसकी पत्नी का नाम प्रभावती था। उसका एक ब्राह्मण मित्र था जो अपने कर्मों से विहीन था। एक दिन वह ब्राह्मण उस राजपुत्र के साथ शिकार के लिये गया ।।२-४।।

मृगं हत्वा वरारोहे जग्मातुर्गहने वने ।
मांसस्य देवि भागार्थं कलहो हि महानभूत् ।।५
ततः स ब्राह्मणो दुष्टः क्रोधेनैवापि च द्विषन् ।
मरण तस्य भो देवि बभूव गहने वने ।।६
ततश्चिन्तापरीतात्मा राजपुत्रो गृहं ययौ ।
गृहे च कारयामास तस्य कर्म यथाविधि ।।७

हिरन को मार कर वे दोनों एक गहन वन में चले गये। मांस विभाजन में दोनों में कलह हो गया। क्रोध के कारण, उस द्वेषी ब्राह्मण का गहन वन में मरण हो गया। तब चिन्तायुक्त राज पुत्र अपने घर आया। उस ब्राह्मण पुत्र की समस्त क्रिया उसने घर पर कीं ।।५-७।।

ततो बहु गते काले प्रयागे मकरे मुदा ।
शरीरं त्यक्तवान् देवि भार्यया सहितस्तदा ।।८
स्वर्गं भुक्त्वा युगान् सप्त ततः पुण्यक्षये सति ।
मर्त्यलोकेऽभवज्जन्मं धनधान्यसमन्वितः ।।९
भार्यया सहितो देवि मध्यदेशे वरानने ।
पुत्रो न जायते देवि पूर्वकर्मविपाकतः ।।१०

बहुत समय उपरान्त प्रयाग में, मकर संक्रान्ति के दिन पत्नी सहित उसने शरीर त्याग किया। सात युग तक स्वर्ग भोग कर, पुण्यों के समाप्त होने पर उसका

जन्म मृत्यु लोक में, धन धान्य से सम्पन्न घर में हुआ। पत्नी सहित वह मध्य देश में रहता था लेकिन हे देवि ! पूर्व जन्म के कर्म विपाक से उसके पुत्र नहीं होता था ॥८-१०॥

ब्रह्महत्याफलेनैव मृतवत्सोऽपि वा भवेत्।
तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि यतः पुत्रः प्रजायते ॥११

ब्रह्म हत्या के कारण उसकी सन्तानें नष्ट हो जाती थीं। अब मैं उसकी शुद्धि कहता हूँ जिससे पुत्र उत्पन्न हो ॥११॥

तदुद्देशेन कर्तव्यस्तडागो वापिका पथि।
हरिवंशश्रवणं देवि विधिपूर्वमतः शिवे ॥१२
दशवर्णाः प्रदातव्याः स्वर्णयुक्ताः सहाम्बराः।
एवं कृते न सन्देहो वंशस्तस्य प्रजायते ॥१३
सा स्त्री स्यात्सुखिनी देवि सत्यमेव न संशयः।
काकवन्ध्यात्वमुक्तास्यात् मृतवत्सा सुखावहा ॥१४
व्याधिनाशो भवेद्देवि नात्रकार्या विचारणा ॥१५

हे पार्वती ! पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से उसे मार्ग में कूआ, तालाब या बावड़ी बनवाने चाहिये एवम् विधिपूर्वक हरिवंश पुराण का श्रवण करे। स्वर्ण युक्त, सवस्त्रा, अनेक वर्णों को गायें दान करे। ऐसा दान करने से उसके वंश की वृद्धि होती है, इसमें संशय नहीं है। वह स्त्री सुखों का भोग करती है। ये सत्य है इसमें सन्देह नहीं है। यदि काव्य बन्ध्या हो या मृत वत्सा हो तो उसके ये दोष छूट जाते हैं, उसे सुख की प्राप्ति होती है। उसकी समस्त व्याधियों का नाश हो जाता है। इस कार्य में सन्देह नहीं करना चाहिये ॥१२-१५॥

॥ इति श्री अश्विनी नक्षत्र तृतीय पाद विमर्श नामक पांचवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



षष्ठम अध्याय

शिव उवाच

शृणु देवि वरारोहे नृणां कर्मविपाकजम्।
तदहं संप्रवक्ष्यामि यथाकर्मानुसारतः ॥१

शिवजी बोले—हे वरारोहे। कर्म के अनुसार मानवों को जन्मान्तर में जो फल मिलते हैं, उन्हें मैं आपसे कहता हूँ ॥१॥

पुत्रा बहुविधा देविलौक्किका वै विचक्षणाः।
जायन्ते नात्र सन्देहस्तत्सर्वं शृणु वल्लभे ॥२
प्रथमः वण्यसम्बन्धो मातृपितृप्रियः सदा।
सुसेवादिरतो नित्ये पितुर्मातुश्च यत्नतः ॥३
आजन्ममरणाद्देवि पितुराज्ञां करोति च।
मरणे पितृमात्रोश्च श्राद्धं कुर्यादिने दिने ॥४
पितृश्राद्धं विना देवि भोजन न करोति हि।
द्वितीयः शत्रुसम्बन्धी तस्य चेष्टाञ्च मे शृणु ॥५

हे देवि! मानवों के अनेक प्रकार के पुत्र पैदा होते हैं कुछ लौकिक कुछ चतुर, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। उन सबके बारे में हे प्रिये सुनो! प्रथम प्रकार का पुत्र पुण्य सम्बन्धों से युक्त होता है। माता-पिता का प्रिय होता है एवं यत्न पूर्वक माता-पिता की सेवा में रत रहता है। जन्म से मरण तक वह माता-पिता की आज्ञा का पालन करता है और माता-पिता के मरणोपरान्त वह समय पर, तिथि पर श्राद्ध करता है। वह पितृ-श्राद्ध के बिना वह भोजन भी नहीं करता।

दूसरा पुत्र वह होता है जो शत्रुओं के से काम करता है। उसकी चेष्टाओं को सुनो ॥२-५॥

पूर्वजन्मप्रसङ्गेन शत्रुः पुत्रः प्रजायते।
जन्मतः शत्रुरूपेण मातृपित्रोर्विरोधकृत् ॥६
तत्कर्म कुरुते येन तयोः क्लेशोऽभिजायते।
तृतीयो ऋणंसम्बन्धान्मत्तः शृणु वरानने ॥७
ऋणं यस्य गृहीतस्तु न दत्तं हठतः प्रिये।
तदा पुत्रत्वमाप्नोति द्रव्यदाता न संशयः ॥८
पितृद्रव्यं प्रयत्नेन गृह्णाति हठतः प्रिये।
द्यूतवेश्याप्रदानेना व्ययं कुर्याद्दिने दिने ॥९
यदा द्रव्यविहीनश्च पिता भवति वै प्रिये।

तदा मृत्युमवाप्नोति युवारूपो न संशयः ।।१०

पूर्व जन्म के प्रसंग से मानव के शत्रु पुत्र पैदा होता है। जन्म से ही वह शत्रु रूप होता है, माता-पिता का वह विरोध करता है। वह ऐसे काम करता है जिससे उन्हें क्लेश होता है।

तीसरे प्रकार का पुत्र ऋण सम्बन्ध से होता है, उसके बारे में हे सुमुखी सुनो। जिससे ऋण लिया हो और प्रिये! हठ पूर्वक उसे दिया न हो तो वह द्रव्य दाता उसके दूसरे जन्म में पुत्र रूप में प्रकट होता है। वह पिता के धन को प्रयत्न पूर्वक, हठ के साथ ग्रहण करता है। उस धन को वह जूआ एवं वेश्यागमन में प्रतिदिन नष्ट करता है। जब उसका पिता धन हीन हो जाता है तो वह निःसन्देह युवावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।।६-१०।।

चतुर्थो मित्ररूपेण पुत्रो जायते पार्वती ।
स्थापितं द्रव्यमन्यस्य न दत्तं पूर्वजन्मनि ।।११
तत्सबन्धस्वरूपेण पुत्रो जातस्तदा शिवे ।
बहुप्रीति पितृभ्याञ्च पितृव्ये गोत्रजे तथा ।।१२
बहूद्यमो गुणी भोक्ता पितुः शिक्षासु तत्परः ।
यत्करोति गृहे कर्म सुखदं जायते हि तत् ।।१३
पूर्वरूपो यदा देवि पत्नी पुत्रसमन्वितः ।
ततः शरीरं वै त्यक्त्वा धनं गृह्य ततः प्रिये ।।१४

हे पार्वती! चतुर्थ प्रकार का पुत्र मित्र के समान होता है। पूर्व जन्म में जिस अन्य व्यक्ति का धन लिया हो लेकिन नहीं दिया हो तो इस सम्बन्ध से वह पुत्र रूप में प्रकट होता है, वह माता-पिता से, चाचा से, गोत्र बन्धुओं से बहुत प्रीति करने वाला होता है। वह उद्यमी, गुणी, भोक्ता एवं पिता की आज्ञा में तत्पर रहता है। घर में जो भी वह कार्य करता है वह सुखप्रद होता है। ऐसा पुत्र जब पत्नी, पुत्र से युक्त होता है तब युवावस्था में ग्राह्य धन को देकर, शरीर को त्याग कर चला जाता है ।।११-१४।।

अथ वक्ष्यामि ते देवि चतुर्थचरणं शिवे ।
नक्षत्रतुरगस्यैव प्राणिनां नियतं शृणु ।।१५

हे शिवे! अब मैं तुमसे अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रकटे जातक के भाग्य फल को कहता हूँ उसे सुनो ।।१५।।

कौशलापुरतो देवि सरयू उत्तरे तटे ।
तत्र क्षत्री वसत्येको नगरे नन्दने तदा ॥१६
स च धर्मविहीनस्तु लक्ष्मणेति च नामतः ।
तस्य भार्या विशालाक्षी कल्याणीनाम सा प्रिये ॥१७
कुलटा यौवनोन्मत्ता परपुंसि रता सदा ।
व्यापारं कारयामास वस्त्रहेमादिकस्य हि ॥१८

हे देवि ! कौशल पुरी से उत्तर की ओर सरयू के किनारे नन्दन नामक नगर में एक क्षत्री रहता था । वह धर्म हीन था । उसका नाम लक्ष्मण था । उसकी पत्नी का नाम कल्याणी था । उसके सुन्दर बड़े बड़े नेत्र थे । वह यौवनोन्मत्त थी, कुलटा थी, पर पुरुष में सदा रत रहती थी । इसका पति लक्ष्मण वस्त्र एवं स्वर्णादि का व्यापार करता था ॥१६-१८॥

उद्यमं बहुधा कृत्वा द्विजैः सह वरानने ।
एवं बहुतिथे काले विप्रद्रव्यं तु चोरितम् ॥१९
ततः शोकेन विप्रस्तु शीघ्रं पञ्चत्वमागतः ।
ततो बहुतिथे काले राजपुत्रस्य पञ्चता ॥२०
गतः स नरकं घोरं निरुच्छ्वासं सुदारुणम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥२१
नरकान्निःसृतो देवि बृषयोनिः पुराभवत् ।
ततो वै राजसस्तु मानुषत्वमुपागतः ॥२२

हे वरानने ! वह ब्राह्मणों के साथ व्यापार करता था, उद्यम करता था । बहुत समय बीत जाने पर उसने ब्राह्मण का धन चुरा लिया । धन के शोक में ब्राह्मण मर गया । कुछ समय बाद वह राजपुत्र भी मर गया । वह घोर नरक में पड़ा । साठ हजार वर्ष तक उसने नरक यातना भोगी । नरक से निकलकर वह बैल बना । फिर वह राजपुत्र मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ ॥१९-२२॥

पुरा तु यत्कृतं पापं तदिहैव प्रभुज्यते ।
मित्रस्य वञ्चनाद्देवि पुत्रस्यैव च पञ्चता ॥२३
कोकवन्ध्या भवेत्पत्नी दुःखशोकसमन्विता ।

तस्य पुण्यं प्रवक्ष्यामि पूर्वपापस्य निग्रहम् ॥२४

पूर्व काल में जो इसने पाप किया था उसे यहाँ भोगना पड़ता है। मित्र द्रोह के कारण इसका पुत्र मर गया। उसकी पत्नी काक वन्ध्या हुई, दुःख शोक से युक्त हुई। पूर्व जन्म के पापों को दूर करने को मैं पुण्य को कहता हूँ ॥२३-२४॥

गायत्रीलक्षजाप्येन सर्वं पापं प्रणश्यति।
कूष्माण्डं नारिकेलं वा स्वर्णयुक्तं सहाम्बरम् ॥२५
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं सन्तानार्थं वरानने।
वर्तुलाकारकुण्डे च होमं यत्नेन कारयेत् ॥२६
स्वर्णश्रृङ्गी रौप्यखुरां पटवस्त्रसमन्विताम्।
आचार्याय प्रदद्यात्तु सपात्रां विधिवत् प्रिये ॥२७
एवं कृते न सन्देहो वन्ध्यात्वञ्च प्रणश्यति।
पुत्रपौत्राश्च वर्द्धन्ते न सन्देहो वरानने ॥२८

एक लाख गायत्री जाप से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। पेठा, नारियल, स्वर्ण, एवं वस्त्र गंगा के बीच में खड़े होकर सन्तान के हेतु देने चाहिये। वर्तुलाकार कुंड बनाकर यत्न पूर्वक विधि पूर्वक हवन कराना चाहिये। सोने के सींग, चाँदी के खुर, कपड़ों से युक्त, दोहन पात्र के साथ आचार्य गाय प्रदान करे। ऐसा करने से बांझपन छूट जाता है एवं पुत्र पौत्र की परिवार में वृद्धि होती है।

॥ इति श्री अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन समाप्त ॥



सप्तम अध्याय

पार्वत्युवाच

देवदेव महादेव सृष्टिस्थितिलयात्मकः।
स्त्रीणां च कर्म सम्ब्रूहि दयां कृत्वा ममोपरि ॥१

पार्वती बोलीं—हे देव देव, हे महादेव, सृष्टि के, स्थिति एवं लय के कारण मेरे ऊपर कृपा करके स्त्रियों के कर्मों के विषय में कहिये ॥१॥

ईश्वर उवाच

नारीणां श्रृणु मे सर्वं यत्कृतं पूर्वजन्मनि।
ततोऽहं सम्प्रवक्ष्यामि समासेन वरानने ॥२

भगवान शिव बोले- –हे सुमुखी ! नारियों ने जो पूर्व जन्म में कर्म किये हैं उनके बारे में मैं तुमसे संक्षेप में कहता हूँ ।।२।।

पूर्वजन्मनि या नारी पतिनिन्दा चकार ह ।
तेन पापेन भो देवि न स्त्री पुष्पवती भवेत् ।।३
यदा रौप्यस्य वै वृक्षं स्वांगुष्ठपरिमाणकम् ।
पलपंचमिदं देवि दद्याद्वेदविदे प्रिये ।।४

हे देवि ! पूर्व जन्म में जो नारी अपने पति की निन्दक होती है, वह उस पाप के प्रभाव से रजस्वला नहीं होती । उसके प्रायश्चित हेतु जब इस जन्म में पांच पल चाँदी का, अपने अगूठे के बराबर का एक वृक्ष बनवावे एवं वेदज्ञ ब्राह्मण को दान दे ।।३-४।।

तदा पुष्पं भवेद्देवि नात्र कार्या विचारणा: ।
पतिं सुप्तं परित्यज्य परपुंसि रता भवेत् ।।५
तेन पापेन भो देवि वन्ध्या नारी प्रजायते ।
सुवर्णस्य कृतं वृक्षं फलपुष्पसमन्वितम् ।।६
दद्याद्वेदविदे नारी पतिसेवासु तत्परा ।
ततः पुत्रं प्रसूयेत् सुवर्णपलतो दश ।।७

तब नारी रजस्वला होती है । इस कार्य में विचार नहीं करना चाहिये । जो नारी पति को सोता हुआ छोड़कर पर पुरुष से रमण करने चली जाती है तो उस पाप के परिणाम स्वरूप वह बांझ होती है । इसके प्रायश्चित हेतु फल पुष्प से युक्त एक १० पल स्वर्ण का वृक्ष बनवावे, पति सेवा में तत्पर होकर वेदज्ञ ब्राह्मण को दे तो उसके पुत्र उत्पन्न होता है ।।५-७।।

परपुंसि रता नारी स्वपतिं मिष्ठवादिनी ।
तेन पापेन भो देवि कन्यापत्यञ्च जायते ।।८
रौप्यस्यैव कृतं लिङ्गं पलपंचदशेन तु ।
पूजयित्वा प्रयत्नेन दद्याद्विप्राय श्रोत्रिणे ।।९
ततः कन्या तु न भवेत्शुभं पुत्रं प्रसूयते ।
सततं वै यदा नारी कुलटा धर्मचारिणी ।।१०
तेन कर्मविपाकेन नारी गर्भं विनाशयति ।

ततः प्रपूजयेद्देवं शंखचक्रगदाधरम् ।।११

हे देवि ! जो स्त्री अपने पति से तो मीठी बोले एवम् पर पुरुष में रत रहे तो इस पाप के परिणाम स्वरूप इस जन्म में वह अधिक कन्याओं को जन्म देती है। इसके प्रायश्चित हेतु १५ पल चाँदी का शिव लिंग बनवावे, विधिवत् पूजन कर वेदज्ञ ब्राह्मण को दान दे तो फिर उसके कन्या नहीं होती और सुन्दर पुत्र प्रकट होता है।

जो नारी सदैव कुलटा होती है एवम् धार्मिक होती है तो इस पाप से इस जन्म में नारी के गर्भ का नाश हो जाता है। इसके प्रायश्चित हेतु उसे शंख-चक्र गदाधारी विष्णु की पूजा करनी चाहिये ।।८-११।।

प्रयागे मकरे स्नानं पतिना तु सहाचरेत् ।
स्वर्णश्रृङ्गं रौप्यखुरं मुक्तालांगूलग्रन्थितम् ।।१२
दद्यात्सदक्षिणं देवि वृषभं विदुषे तथा ।
या पतिं दुर्बलं त्यक्त्वा परेण सह संगता ।।१३
तेन पापेन भो देवि दरिद्रा पुत्रवर्जिता ।
ततः कुमारीं सम्पूज्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।।१४
पूजयेदब्दमेकन्तु प्रत्यहं नियता प्रिये ।
वर्षे पूर्णे ततस्तस्यै वस्त्रं दत्त्वा विसर्जयेत् ।।१५
व्रतं सूर्यस्य वै कुर्यात्प्रणम्य प्रतिवासरम् ।
तदा नारी सर्वपापं दहत्येव न संशयः ।।१६

उसे मकर संक्रान्ति के अवसर पर पति सहित प्रयाग स्नान करना चाहिये। तथा सोने की सींग वाला, चांदी के खुर वाला, मोती की पूँछ वाला बैल विद्वान् ब्राह्मण को दान दे, तथा दक्षिणा दे।

जो नारी अपने दुर्बल पति को छोड़, दूसरे के साथ चली जाती है, उस पाप से वह दूसरे जन्म में दरिद्रा एवम् पुत्र रहित होती है। तब उसे देवी, ब्रह्मा, विष्णु और महेश का पूजन विधिवत् करना चाहिये। एक वर्ष के पूर्ण होने पर उस कन्या को वस्त्र देकर विदा करे। प्रति रविवार को सूर्य का व्रत करे तब नारी के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।।१२-१६।।

मिष्ठं भुंक्ते तु या नारी पत्युर्मिष्ठं ददाति न ।
तेन पापेन सा नारी मुखे दौर्गन्ध्यधारिणी ।।१७

गुडं वा मधु वा खण्डं विप्राय प्रियता सदा ।
प्रयच्छंति यदा देवि मुखे शुद्धिश्च जायते ॥१८

जो नारी स्वयं मीठा खा लेती है तथा अपने पति को नहीं देती, उस पाप से इस जन्म में उस नारी के मुख से दुर्गन्ध आती है। इसके प्रायश्चित हेतु जो गुड़, मधु, खांड प्रेम पूर्वक ब्राह्मण को दे तो उसकी मुख शुद्धि होती है ॥१७-१८॥

स्वपतिघ्नी च या नारी राण्डं भवति नान्यथा ।
तया नित्यं प्रपूज्या च तुलसी भक्तिभावतः ॥१९
ऊर्जे माघे च वैशाखे प्रातः स्नानं समाचरेत् ।
एकादशीव्रतं नित्यं द्वादशाक्षरविद्यया ॥२०
जपं कृत्वा प्रयत्नेन पतिरूपाय विष्णवे ।
समर्पणं ततः कुर्यात् शीघ्रं पापं प्रणश्यति ॥२१

पूर्व जन्म में पति घातिनी इस जन्म में विधवा होती है। इसमें सन्देह नहीं है। इसके प्रायश्चित हेतु उसे नित्य प्रति तुलसी का पूजन करना चाहिए। कार्तिक माघ एवम् वैशाख स्नान करना चाहिए। एकादशी व्रत रखना चाहिये और द्वादशाक्षर (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः) इस मन्त्र का जप करना चाहिये। जप करके पति रूप विष्णु को समर्पित करे तो शीघ्र ही पूर्व जन्म के पापों का विनाश होता है ॥१९-२१॥

यदा पापयुता नारी गर्भपातं च कारयेत् ।
तेन दुश्चरितेनेह ज्वरकुक्षिप्रपीडनम् ॥२२
योनिशूलं भवेद्देवि गुदारोगो भगन्दरः ।
तदा कुर्यात् प्रयत्नेन ब्राह्मणो ब्राह्मणं तथा ॥२३
रौप्यस्य च महादेवि दशनिष्कस्य भक्तितः ।
प्रत्यहं पूजयेद्देवि पत्युराज्ञां समाचरेत् ॥२४
भोजयेद्विविधैश्चान्नैर्घृतखण्डसमन्वितः ।
गोदानं च ततः कुर्यात् भक्त्या विद्योपजीविने ॥२५

जब नारी पाप युक्त हो, पूर्व जन्म में गर्भपात कराती है तो उस पाप से इस जन्म में वह ज्वर एवम् कोख रोग से पीड़ित होती है। उसके योनि में शूल होता है, बवासीर एवम् भगन्दर भी होता है। इसके प्रायश्चित स्वरूप १० निष्क

की चाँदी की ब्राह्मण एवम् ब्राह्मणी की प्रतिमा बनावे, उसकी नित्य प्रति सेवा करे पति की आज्ञा में एवम् सेवा में रहे। विविध प्रकार के पकवान बनाकर, घी एवं खांड़ से युक्त विद्योपजीवी को भोजन करावे तथा विद्योपजीवी ब्राह्मण को गो-दान दे ॥२२-२५॥

यदा नारी च दुष्टात्मा स्वपतौ दुर्वचो वदेत् ।
तदा कंठे भवेद्रोगो नासिकायां च पीनसम् ॥२६
वातगुल्मं शिवे वापि श्वेतपुष्पं प्रजायते ।
रौप्यपुष्पयुतां देवि सुवर्णेन समन्वितम् ॥२७
दद्याद्विप्राय विदुषे तदा सप्तपलं शुभे ।
कन्यकां कलहा दुष्टा हन्ति नारी यदा हठात् ॥२८
तदा कुण्ठं भवेद्देवि जन्मजन्मदरिद्रता ।
सूर्यस्य पूजनं कान्तां सदा नारी व्रतं चरेत् ॥२९
मासे मासे शनौ वारे वृक्षे विष्णुस्वरूपिणिम् ।
विधिवत्पूजनं कुर्यात् पूर्वपापं विशुद्धयति ॥३०

पूर्व जन्म में जब नारी दुष्टात्मा होती है अपने पति से दुर्वचन बोलती है तो इस जन्म में कंठ रोग एवम् उसके नाक में पीनस रोग होता है। उसे वायु गोला एवम् श्वेत-पुष्प (सफेद दाग) की बीमारी हो जाती है। इसके प्रायश्चित रूप में सात पल सोने-चाँदी का एक वृक्ष, फल-फूलों से युक्त बनवावे और उसे विधिवत विद्वान ब्राह्मण को दान में दे।

यदि कोई नारी जबर्दस्ती, कलह पूर्वक एवम् दुष्टतापूर्वक कन्या को मारती हो तो ऐसी नारी के दूसरे जन्म में कोढ़ होता है तथा वह अनेक जन्म तक रोगिणी होती है। इसके प्रायश्चित रूप में सूर्य का पूजन करे तथा नारी व्रत (वट-सावित्री) रखे, प्रतिमास शनिवार को विष्णु रूप पीपल के पेड़ की पूजा करे तो उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं ॥२६-३०॥

सासं च ससुरं चैव नित्यं क्रूरवचो वदेत् ।
तेन पापेन भो देवि श्वेतपुष्प ततो भवेत् ॥३१
सूर्यस्य प्रतिमा देवि सुवर्णत्रिपलस्य च ।
दद्याद्वेदविदे देवि सूर्यस्यैव व्रतं चरेत् ॥३२

हे देवी ! जो नारी सास-ससुर से नित्य प्रति कठोर वचन बोलती रहे तो इस पाप के स्वरूप दूसरे जन्म में उसके श्वेत पुष्प रोग होता है। तो इसके प्रायश्चित स्वरूप तीन पल को सोने की प्रतिमा बनाकर वेदज्ञ ब्राह्मण को प्रदान करे तथा सूर्य का व्रत रखे ॥३१-३२॥

॥ इति श्री 'स्त्री कर्म कथन' नामक सप्तम अध्याय सम्पूर्ण ॥



अष्ठम अध्याय

शिव उवाच

भरणी प्रथमे पादे नीलकण्ठोऽभवद्द्विजः।
ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टः काकुत्स्थनगरे शुभे ॥१
वैश्येन सहमित्रत्वं क्रयं कृत्वा दिने दिने।
ब्राह्मणी तत्र वृद्धासीत्पतिपुत्रविवर्जिता ॥२
तस्या द्रव्यं गृहीतं च विक्रयार्थं द्विजेन तु।
ततो बहुदिनं यातं तस्या द्रव्यं न दत्तवान् ॥३
एवं बहुतिथे काले तस्य मृत्युरजायत।
ब्रह्मकर्म परिभ्रंशान्नरके पतनं प्रिये ॥४

शिवजी बोले—भरणी नक्षत्र के प्रथम पाद में, काकुत्स्थ नगर में, ब्रह्म कर्म से च्युत एक नील कंठ नामक ब्राह्मण हुआ था। एक वैश्य के साथ उसकी मित्रता थी। उसीके साथ वह व्यापार करता था। वहीं एक ब्राह्मणी थी, वृद्धा थी एवं पति पुत्र से रहित थी। उस ब्राह्मण ने इस ब्राह्मणी का धन व्यापार हेतु लिया। बहुत दिन बीत गये परन्तु उसका धन नहीं लौटाया। बहुत समय बाद उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई। ब्रह्म कर्म से भ्रष्ट होने के कारण हे प्रिये ! वह नरक गामी हुआ ॥१-४॥

नरकान्निःसृतो देवि सर्पयोनिरजायत।
सर्पयोनिफलं भुक्त्वा गर्दभत्वमुपागतः ॥५
पुनः संप्राप्तवान् देवि मध्यदेशे च मानुषम्।
धनधान्यसमायुक्तः पुत्रकन्याविवर्जितः ॥६

नरक से निकलने के बाद वह सर्प बना। सर्प योनि को भोग वह गदहा

बना। फिर मध्य देश में मानव रूप में हुआ। इसके धन धान्य था परन्तु कन्या एवं पुत्र नहीं थे ॥५-६॥

ततो बहुतिथे काले तदा कन्याभवत्प्रिये।
स्वर्णपूर्वं वृतं देवि स्वर्णसम्बन्धजा सुता ॥७
ततः सा वर्द्धिता कन्या विवाहश्चाभवत्खलु।
पितृमातृप्रिया नित्यं युवती तु यदाभवत ॥८
तदा सा विधवा जाता मातापित्रोश्च दुःखदा।
पनः पुत्रविहिनत्वं प्रायश्चित्तमतः श्रृणु ॥९

बहुत समय उपरान्त इसके एक लड़की उत्पन्न हुई। जिस स्त्री का पूर्व में इसने धन हरण किया था। उसी स्वर्ण संबन्ध से ये लड़की हुई। कन्या बड़ी हुई, माता-पिता की प्यारी जब ये युवती हुई तो इसका विवाह हुआ। फिर ये विधवा हो गई। माता-पिता को अति दुःख हुआ। पुत्र विहीन तो थे ही। अब इसका प्रायश्चित सुनो ॥७-९॥

सूर्यमन्त्रस्य जाप्येन लक्षमेकं वरानने।
पार्थिवस्यार्चनं सम्यक् त्र्यम्बकेति ततो जपेत् ॥१०
होमं च कारयेद्धीमान् शतब्राह्मण भोजनम्।
पायसं शर्करायुक्तं कारयेद्विधिपूर्वकम् ॥११
ततः कूपतडागौ च वापिकाञ्च महापथे।
एवंकृते न संदेहो वंशलाभो वरानने ॥१२
यदा न क्रियते देवि तदा वंशो न जायते ॥१३

हे वरानने! एक लाख सूर्य मन्त्र का जप करे। पार्थिव पूजन करे, त्र्यम्ब के मन्त्र का जप करे (या करावे), योग्य ब्राह्मणों से हवन कराये सौ ब्राह्मणों को भोजन खीर-खाँड से युक्त विधि पूर्वक कराये। राजमार्ग में कूआ, तालाब एवं बाँवड़ी बनवावे तो ऐसा करने से निश्चित ही वंश का लाभ होता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। यदि ये प्रायश्चित नहीं किया जाता तो वंश नहीं चलता ॥१०-१३॥

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती. शिव संवाद में भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित वर्णन नामक आठवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



नवम अध्याय

शिव उवाच

अथ द्वितीये वक्ष्यामि भरणीश्चरणे प्रिये।
तस्य सर्वं प्रवक्ष्यामि यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥१

शिवजी बोले—हे प्रिये ! भरणी नक्षत्र के दूसरे चरण में उत्पन्न हुए जातक के पूर्व जन्म के कर्मों का मैं वर्णन करता हूँ ॥१॥

अयोध्यापुरतो देवि कोशमात्रे प्रदक्षिणे।
जानकीनगरे रम्यो द्विजश्चासीत्स तस्करः ॥२
ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो मद्यपानरतः सदा।
स वेश्यानिरतो नित्यं पत्नी तस्य पतिव्रता ॥३
पति भक्तिरता नित्यं देवपूजासु तत्परा।
एकदा ब्राह्मणोऽप्येकः क्षुधार्तो दुर्बलः प्रिये ॥४
अन्नं च याचयामास लम्पटं प्रति वत्सले।
दुर्वचश्चावदद्देवि भिक्षुकं प्रति दुर्बलम् ॥५
आत्मघातः कृतस्तेन दुर्बलब्राह्मणेन च।
ततो बहुतिथे काले मरणं तस्य चाभवत् ॥६

अयोध्या से आगे एक कोस दूरी पर दक्षिण की ओर, जानकी नगर में एक तस्कर ब्राह्मण रहता था। वह ब्रह्म कर्म से च्युत एवं मद्य पान में रत रहता था। वेश्या गामी भी था लेकिन उसकी पत्नी पतिव्रता थी। पति भक्ति एवं भव पूजा में वह रत रहती थी। हे प्रिये ! एक दिन एक भूखा, प्यासा दुर्बल ब्राह्मण उसके यहाँ आया। उस तस्कर से उसने भोजन मांगा। उस दुर्बल भिक्षुक से उस तस्कर ने अत्यन्त कठोर दुर्वचन कहे। इससे पीड़ित हो उस दुर्बल ब्राह्मण ने आत्महत्या कर ली। बहुत समय बाद उस तस्कर ब्राह्मण की मृत्यु होगई ॥२-६॥

पातिव्रत्येन तत्पत्न्याः सत्यलोकं जगाम सः।
बहुवर्षसहस्राणि स्वर्गे वासोऽभवत्प्रिये ॥७
ततः पुण्यक्षये जातो मर्त्यलोके स मानुषः।
पूर्वपापफलाद्देवि पुत्रकन्याविवर्जितः ॥८

तदुद्दशेन मरणं ब्राह्मणस्याऽभवत् पुरा ।
मद्यपानं कृतं तेन ततः कुष्ठो प्रजायते ॥९

अपनी पत्नी के पतिव्रत धर्म के प्रभाव से वह स्वर्ग गया। कई हजार वर्ष तक वह स्वर्ग में रहा। पुण्यों के क्षय हो जाने पर मृत्यु लोक में मनुष्य रूप में प्रकट हुआ। पूर्व पाप के फल से वह पुत्र-कन्या से रहित संतान हीन हुआ। इसी उद्देश्य से पहिले उसका मरण हुआ। मद्यपान करने के कारण उसके कोढ़ हुआ।७-९।

तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि यतः पापात्प्रमुच्यते ।
गायत्रीमूलमंत्रेण लक्षजाप्यं प्रयत्नतः ॥१०
दशांशहोमः कर्तव्यो विप्राणां भोजनं शतम् ।
विधिवत्पूजयेद्देवि कपिलां स्वर्णभूषिताम् ॥११
दद्याद्विप्राय तां देवि विदुषे ज्ञानरूपिण ।
अतः पुत्रः प्रजायेत रोगनाशो भवेदनु ॥१२

अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ जिससे सम्पूर्ण पापों से मुक्ति होती है। यत्न पूर्वक गायत्री के एक लाख जप करे, दशांश हवन करे, सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे, विधिवत पूजा करे तथा स्वर्ण से अलंकृत कपिला गाय को विद्वान, ज्ञान स्वरूप ब्राह्मण को प्रदान करे तो इसके पश्चात् उसके पुत्र उत्पन्न होगा और उसके समस्त रोगों का नाश होगा।१०-१२।

॥ इति श्री भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण के पाप और प्रायश्चित कथन नामक नवम् अध्याय सम्पूर्ण ॥



दशम् अध्याय

शिव उवाच

एको वणिग्जनो देवि काकुत्स्थनगरे शुभे ।
अग्निकोणे शिवपुरे योजनार्द्ध प्रमाणके ॥१
धनाढ्यो ह्यवसेद्देवि वैश्यवृत्तिरतस्सदा ।
विक्रयं कुरुते देवि गुडमन्नं रसादिकम् ॥२

शिवजी बोले—काशी से दो कोस दूर, अग्निकोण में एक काकुत्स्थ नामक नगर था। वहाँ एक धनवान वैश्य, व्यापारी रहता था। वह गुड़, अन्न एवं रसों (घी-तेल) का व्यापार करता था।१-२।

एकस्मिन् समये देवि गुडमादाय चाध्वनि।
वृषभं भारसम्पन्नां करोति स वरानने ॥३
भारेण पीडितोऽनड्वान् स वै पथिगतः शिवे।
न ज्ञातं तेन वै पापं वृषभातिसमुद्भवम् ॥४
एवं बहुतिथे काले विल्वमङ्गलके पुरे।
वैश्यस्य मरणं जातं सरयू सह भार्यया ॥५

हे सुमुखी ! एक दिन वह वैश्य बैल पर गुड़ लाद कर ले जा रहा था। गुड़ के भार से वह बैल बड़ा पीड़ित हो रहा था परन्तु बैल की इस पीड़ा को उस वैश्य ने नहीं जाना। बहुत समय बाद बिल्व मंगलपुर में, जो सरयू के किनारे है, उसमें पति एवं पत्नी का देहान्त हो गया।३-५।

स्वर्गलोके गतौ द्वौ च तौ तु क्षेत्रभावतः।
षष्टि वर्षसहस्राणि स्वर्गे भुक्तं शुभं फलम् ॥६
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके वरानने।
अवन्तीनगरे जातौ धनधान्यसमन्वितौ ॥७
मध्यदेशे विशालाक्षि पूर्वकफलेन हि।
पुत्रो न जायते देवि गर्भपातस्तथा शिवे ॥८
कन्यका वै प्रजायेत वारं वारं वरानने।
शरीरे च ज्वरोत्पत्तिर्मध्यमा च प्रजायते ॥९

उस क्षेत्र के प्रभाव से वे दोनों स्वर्गगामी हुए तथा साठ हजार वर्ष तक स्वर्ग सुख भोगा। पुण्यों के समाप्त होने पर मृत्यु लोक में उनका जन्म हुआ। अवन्तीपुरी में धन धान्य से सम्पन्न घर में जन्म हुआ। हे विशालाक्षि ! पूर्व कर्मफल से जन्म मध्य देश में हुआ तथा पुत्र पैदा नहीं होता था, गर्भपात हो जाता था बार-बार कन्या होती थी। शरीर में ज्वर रहा करता था।६-९।

प्रायश्चित्तं प्रवक्ष्यामि पूर्वपापविशुद्धये।
सुवर्णस्य वृषं शुभ्रं पलपञ्चमितं तथा ॥१०

प्रतिमां कारयेद्देवि वृषमेकं विभूषितम् ।
प्रपूज्य शिवमंत्रेण वदिकेन यथाविधि ॥११
प्रदद्याद्विदुषे तस्मै ज्ञानिने शुद्धबुद्धये ।
नमः शिवाय मन्त्रेण लक्षजाप्यं प्रयत्नतः ॥१२
रोगतो मुच्यते देवि नात्र कार्या विचारणाः ॥१३

अब मैं इस पूर्व पाप की शुद्धि का प्रायश्चित कहता हूँ। पाँच पल का सोने का सुन्दर बैल बनवाये, उसे अलंकृत करे। शिव मन्त्र से वैदिक रीति से उसकी पूजा करे, उसे शुद्धि मति, ज्ञानी, विद्वान् ब्राह्मण को प्रदान करे। 'नमः शिवाय, इस मंत्र का एक लाख जप करे तो सभी रोगों से वह मुक्त हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है।१०-१३।

॥ इति श्री 'भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक दसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

एकादश अध्याय

शिव उवाच

श्रृणु देवि वरारोहे नृणां कर्मविपाकजम् ।
प्रवक्ष्यामि न सन्देहो यदि ते श्रवणे मतिः ॥१
उत्तरे चाप्ययोध्यायस्ततः क्रोशत्रयोपरि ।
तत्र तस्थौ च भो देवि लोकशर्मेति नामतः ॥२

शिवजी बोले—हे देवि ! यदि तुम्हारी सुनने में रुचि हो तो मैं पूर्व जन्म के कर्मों एवं फलों को कहता हूँ। अयोध्या से तीन कोस दूर उत्तर में एक लोक शर्मा नामक ब्राह्मण रहता था।१-२।

तस्य पत्नी शुभाङ्गी वै लीलानाम्नीति विश्रुताः ।
ब्राह्मणः कर्मविभ्रष्टो व्याधरूपो वरानने ॥३
मृगान् सबालकान् हत्वा पक्षिणो विविधानपि ।
बुभुजे पत्नीयुक्तस्तु तुतोष बहुधा तदा ॥४

उसकी पत्नी 'लीला' नामक थी, सुन्दरी थी। वह ब्राह्मण कर्म से भ्रष्ट एवं

व्याध रूप था। शावकों सहित मृगों को एवं अनेक प्रकार के पक्षियों का वह वध किया करता था। पत्नी सहित उस मांस का भक्षण करता एवं प्रसन्न रहता था।३-४।

तस्य पत्नी महादुष्टा मुखरा चञ्चला तथा।
परपुंसि रता नित्यं धर्मकर्मविवर्जिता ॥५
एवं सर्वं वयो जातं बृद्धे सति वरानने !।
मरणं तस्य वै देवि स्वपुरे सर्पतस्तथा ॥६

उसकी पत्नी महान दुष्ट, मुखर एवं चंचल थी। वह धर्म-कर्म से रहित एवं पर पुरुष में रत थी। इस प्रकार समस्त आयु व्यतीत हो गई, वृद्धावस्था आई। चलते फिरते, अपने नगर में ही लोक शर्मा का देहान्त हो गया।५-६।

पत्नी चैव तदा तस्य दुष्टा वै व्यभिचारिणी।
उभौ च नरकं यातौ स्वकर्मवशतः प्रिये ! ॥७
कुम्भीपाके महाघोरे नाना नरकयातनाम्।
भुक्त्वा बहु सहस्राणि पुनर्जातश्च सूकरः ॥८
योनिं च सूकरीं भुक्त्वा विडालत्वं पुनः प्रिये !।
ततो विडालयोनिं च भुक्त्वा गृध्रस्ततोऽभवत् ॥९

बाद में उसकी दुष्ट पत्नी भी मर गई। अपने कर्म के वश से दोनों नरक में गये। हजारों वर्ष तक महाघोर कुंभीपाक नरक में घोर यातना सहन कर फिर सूअर बने। सूअर की योनि भोग, बिल्ली की योनि प्राप्त की फिर इस योनि को भोग गीध हुए।७-८।

पुनः कर्मवशाद्देवि ! मानुषत्वं ततोऽभवत्।
इह लोके वरारोहे ! पूर्वकर्मप्रभावतः ॥१०
मृतवत्सा भवेन्नारी पुत्रश्चैव न जीवति।
बहुरोगो भवेद्देवि ! ज्वरेवणै प्रपीडिता ॥११
पूर्वजन्मकृतं पापंमिह जन्मनि भुज्यते।
इह लोके कृतं कर्म जन्मजन्मनि भुज्यते ॥१२

हे देवि ! फिर कर्मवश वे मनुष्य हुए। उसकी स्त्री मृतवत्सा हुई, उसके पुत्र जीवित नहीं रहते थे। अनेक रोगों से ग्रस्त एवं ज्वर से पीड़ित रहती। पूर्व

जन्म के पाप इस जन्म में भोगने पड़ते हैं तथा इस लोक में किये गये कर्मों को आगे के जन्म जन्मान्तरों में भोगना पड़ता है ।१०-१२।

अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणुत्वं गिरिजे ! मम ।
वंशगोपालमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ! ॥१३
दशांशहोमः कर्तव्यो विप्राणां भोजनं शतम् ।
मन्त्रं च सम्प्रवक्ष्यामि येन पुत्रमवाप्स्यसि ॥१४
मन्त्र-ॐदेवकीसुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत्पते ! ।
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ॥१५

हे गिरजा ! अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ । एक लाख वंश गोपाल मन्त्र का जाप करे । दशांश होम करे, सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे । उस मन्त्र को बताता हूँ जिससे पुत्र की प्राप्ति होती है— हे देवकी सुत, हे गोविन्द, वासुदेव, जगत्पते, हे कृष्ण आप मुझे पुत्र दो, मैं तुम्हारी शरण में हूँ। १३-१५ ।

ततो वै स मृगान् कृत्वा मृगबालान् सपक्षिणः ।
स्वर्णपञ्चपलेनैव मृगान् कृत्वा सबालकान् ॥१६
रौप्यस्यैव वरारोहे ! पक्षिणः पञ्च कारयेत् ।
पूजनं विधिवत् कृत्वा सम्प्रार्थ्य परमेश्वरम् ॥१७

इसके उपरान्त पाँच पल सोने के बच्चों सहित मृग एवं पक्षी बनवावे, पाँच पक्षी चाँदी के बनावे, विधिवत उनका पूजन करे एवं प्रार्थना करे ।१६-१७।

स्रष्टा त्वं सर्वलोकानां सर्वकामप्रदः सताम् ।
देवदेव ! जगन्नाथ ! शरणागतवत्सल ! ॥१८
त्राहि मां कृपया देव ! पूर्वकर्मविपाकतः ।
एवं सम्पूज्यं देवेशं ततो विप्रं प्रपूजयेत् ॥१९

हे देव देव ! हे जगन्नाथ ! हे शरणागत वत्सल ! तुम सब लोकों के सृष्टा हो, सज्जनों की समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाले हो । मैं आपकी शरण हूँ, आप मेरी रक्षा करो । इस प्रकार प्रभु की पूजा कर फिर ब्राह्मण की पूजा करे ।१८-१९।

सुवर्णेन वरारोहे ! अश्वादिवाहनेन वै ।
प्रतिमामर्पयेद्देवि ! विप्राय ज्ञानरूपिणे ॥२०

वापिकां कूपखातं च पथि मध्ये वरानने ! ।
प्रकारोति यदा देवि तदा पुत्रः प्रजायते ॥
रोगात्प्रमुच्यते देवि ! जीवेत् पुत्रो न संशयः ॥२१

अश्व आदि वाहन के साथ, स्वर्ण एवं प्रतिमा को इस ज्ञान रूप ब्राह्मण को प्रदान करे। रास्ते में कुआ, बावड़ी बनवावे तो निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है, रोगों का विनाश होता है एवं पुत्र जीवित रहता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।२०-२१।

।: इति श्री 'भरणी के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक ग्यारहवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

— ❁ —

द्वादश अध्याय

शिव उवाच

कृत्तिकायां वरारोहे ! प्रथमे चरणे तथा ।
यो जायेत् नरो देवि ! तस्य वक्ष्ये शुभाशुभम् ॥

शिव बोले—हे सुमुखि ! कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुए जातक के शुभाशुभ कहता हूँ ।१।

ईशानेऽपि महादेवि ! कौशलापुरतोऽनघे ! ।
राजपुत्रोऽवसत्कश्चिन्नगरे गूढसंज्ञके ॥२
नामतश्चाहिवर्म्मेति तस्य पत्नी कला शुभां ।
धनधान्यसमायुक्तो रूपवान् मन्मथो यथा ॥३

हे महादेव ! कौशलपुर से ईशान कोण में एक गूढ़ नामक नगर में एक राजपुत्र रहता था। उसका नाम अहिवर्मा और उसकी पत्नी का नाम कला था। वह धनवान् था एवं सौन्दर्य में कामदेव के समान था ।२-३।

याति चाखेटकं नित्यं मृगीं हत्वा च गर्भिणीम् ।
प्रत्यहं मृगमांसेन पोषयेत्स्वतनुं तथा ॥४
शरीरे वृद्धता जाता दया तस्य न चाभवत् ।
ततो वै मरणाद्देवि ! सती भार्या ततोऽभवत् ॥५

सत्यलोकं गतस्तेन भार्यायाः सुकृतेन तु ।
भुक्तं कल्पमितं पुण्यं सत्यलोके वरानने ! ॥६

वह नित्य प्रति शिकार करता था गर्भिणी मृगी मारकर उस मृगमांस से शरीर को पालता था। शरीर के वृद्ध हो जाने पर भी उसके हृदय में दया नहीं उत्पन्न हुई। फिर उसके मरते समय उसकी पत्नी सती हो गई। पत्नी के पुण्य से वे सत्यलोक गये। एक कल्प तक सत्य लोक में सुख भोग किया।५-६।

पुनः पुण्यक्षये जाते मानुषत्वमुपागतः ।
पत्न्या सह ततो देवि ! कुले महति पूजिते ॥७
पूर्वजन्मविपाकेन मृतवत्सत्वमाप्नुयात् ।
मृगीं सगर्भां हतवान् पूर्वजन्मनि सुव्रते ! ।८
तेन कर्मविपाकेन मर्त्यलोके ह्यपुत्रकः ।
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि यतः पुत्रः प्रजायते ॥९

फिर पुण्यों के समाप्त होने पर पत्नी सहित, अच्छे कुल में मनुष्य योनि में प्रकटे। पूर्व जन्म के पाप के परिणाम स्वरूप मृत वतसता (बच्चे होकर मर जांय) को प्राप्त हुए क्योंकि पूर्व जन्म में गर्भिणी हिरनी मारी थी। उसे कर्म के फल से मृत्यु लोक में अपुत्री हुए। मैं उसकी शान्ति कहता हूँ जिससे पुत्र हो।७-९।

गायत्रीजातवेदाभ्यां लक्षमेकं जपं तथा ।
दशांशहोमः कर्त्तव्यो विप्राणां भोजनं ततः ॥१०
सौवर्णेन मृगीं कृत्वा मृगबालं तथैव च ।
पूजयित्वा विधानेन कपिला च ततः प्रिये ! ॥११
प्रदद्याद्वेदविदुषे ब्राह्मणाय सुतेजसे ।
हरिवंशस्य श्रवणं चण्डीपाठं शिवार्चनम् ॥१२
एवं कृत्वा विधानेन शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ।
कन्यका न भवेत्तस्य गर्भपातो न जायते ॥१३
रोगात्प्रमुच्यते रोगी सर्वकामः प्रजायते ॥१४

'जात वेद से इस मन्त्र के साथ एक लाख गायत्री मन्त्र का जप करे, उसके दशांश का हवन करे फिर ब्राह्मण भोजन करावे। स्वर्ण की बच्चे सहित हिरनी बनावे और गाय ले, विधि विधस से उनकी पूजा करे फिर तेजवान, विद्वान ब्राह्मण को उसे

दान दे। हरि वंश पुराण का श्रवण करे, दुर्गा पाठ कराये तथा शिव पूजन कराये। इस सभी कार्य को विधि विधान से करने से शीघ्र पुत्र होता है। उसके कन्या नहीं होती और न कभी गर्भपात होता है। रोगी रोग से छूट जाता है तथा संपूर्ण कामनाओं की पूर्ति होती है ॥१०-१४॥

इति श्री 'कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक बारहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



त्रयोदश अध्याय

शिव उवाच

नराणां पुण्यशीलानामिह जन्मसमुद्भवम्।
सुखं वक्ष्याम्यहं देवि ! पूर्वकर्मफलं यतः ॥१

हे देवि ! पुण्य शालियों के जिन पूर्व जन्म के कर्मों के फल से सुख उत्पन्न होता है, वह मैं तुमसे कहता हूँ ॥१॥

येन दत्तं पुरा दानं गोसुवर्णगजादिकम्।
तत्फलेन महादेवि ! इह तस्मात् सुखं भवेत् ॥२
शरीरे जन्मतः कान्तिर्लक्ष्मीवान् गुणवानपि।
सौख्यं प्रभुज्यते नित्यं पुत्रतो धनतस्तथा ॥३
न रोगी जायते देवि ! दुःखं नैव कदाचन।
इहलोके सुखं भुक्त्वा कीर्तिमान् सुखमेधते ॥४

हे महादेवि ! जिसने पूर्व जन्म में गौ, स्वर्ण एवं गज का दान किया हो, उस दान से इस जन्म में सुख प्राप्त होता है। जन्म से ही शरीर में कान्ति होती है, वह जातक लक्ष्मीवान एवं गुणवान होता है। धन एवं पुत्र का नित्य सुख भोगता है। हे देवि ! वह कभी रोगी नहीं होता, उसे कभी दुःख नहीं होता। इस लोक में सुख पाता है, कीर्ति एवं सुख भोगता है ॥२-४॥

अथ वक्ष्याम्यहं देवि ! नक्षत्र कृत्तिकाह्वये।
द्वितीयचरणे देवि ! पूर्वं यत् फलमुच्यते ॥५

हे देवि ! अब मैं कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्मे जातक के, पूर्व जन्म के फल को कहता हूँ ॥५॥

कान्यकुब्जो द्विजः कश्चिदिन्द्रशर्मेति नामतः ।
पत्नी रुद्रमती देवि ! कुशीला कलहप्रिया ।।६
वेदपाठरतो नित्यं षडङ्गस्य च पाठकः ।
एकदा तत्र वै देशे कश्चित् क्षत्री नराधिपः ।।७
मरणे तस्य वै याते तद्विप्रस्य निमन्त्रणम् ।
भुक्तं तेन तदा देवि ! क्षत्रियस्य क्रियासु च ।।८
गृहीतं तस्य वै दानं चैव गजादिकम् ।
सर्वं गृह्य गृहं गत्वा भुक्तं वहुदिनं प्रिये ! ।९

हे देवि ! इन्द्र शर्मा नामक एक कान्य कुब्ज ब्राह्मण था । उसकी पत्नी का नाम रूद्रमती था, वह बुरे स्वभाव की एव कलह प्रिय थी । वह इन्द्र शर्मा षडांग वेदपाठी था । एक बार उपदेश में कोई क्षत्री राजा मर गया । इस ब्राह्मण के लिये निमन्त्रण आया । इस ब्राह्मण ने उस राजा की क्रिया में भोजन किया । उसका शैय्या दान, गज दान भी लिया । उस सब दान को लेकर वह घर आया । उसका उसने बहुत दिन तक भोग किया ।।६-९।।

ततो बहुगते काले तस्य विप्रस्य पञ्चता ।
स यतो यमलोके वै नरके च सुदारुणे ।।१०
भुक्तं स्वकर्मजं दुःखं युगमेकं वरानने ! ।
गजव्याघ्रकृमेर्योनिं ततो भुंक्ते पृथक् पृथक् ।।११

बहुत समय बाद वह इन्द्र शर्मा मरा, वह यमलोक गया, नरक में दारुण कष्ट भोगे । एक युग तक अपने कर्मानुसार कष्टों को भोग हाथी, व्यघ्र एवं कृमि योनि को उसने अलग-अलग भोगा ।।१०-११।।

मनुष्यत्वं ततः प्राप्तः पूर्वकर्मविपाकतः ।
पुत्रो न जायते देवि ! कन्यका विविधास्तथा ।।१२
मृतवत्सा भवेन्नारी रोगाश्च विविधाः प्रिये ! ।
शान्तिं तस्य प्रवक्ष्यामि यतः पुत्रमवाप्स्यते ।।१३

पूर्व कर्म के फल से फिर उसे मनुष्य योनि मिली परन्तु उसके पुत्र नहीं होता था, अनेक कन्याएं उत्पन्न हुईं । उसकी पत्नी मृतवत्सा हुई तथा अनेक प्रकार के रोगों से युक्त हुई । अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ जिससे पुत्र उत्पन्न हो ।१२-१३।

गायत्रीलक्षजाप्येन त्र्यम्बकेण तथा प्रिये ! ।
होमं च कारयामास षडंगं दानमेवच ॥१४
दशवर्णाश्च गो दद्याद्विधिवद् ब्राह्मणाय वै ।
भोजयेन्शतसंख्यं च ब्राह्मणं वेदपारगम् ॥१५
एवंकृतेन भो देवि ! पुत्रश्चैव प्रजायते ।
रोगाणां च निवृत्तिः स्यात् पूर्वपापक्षयो भवेत् ॥१६

गायत्री मन्त्र का लाख जप एवं त्र्यम्बक मन्त्र का एक लाख जप करे। दशांश का हवन एवं षडांश का दान करे । दश वर्णी गाय विधिवत ब्राह्मण को दे । वेद में पारंगत सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे । हे देवि ! इस प्रकार करने से पुत्र की प्राप्ति होती है, रोगों की निवृत्ति होती है एवं पूर्व के पापों का क्षय होता है ॥१४-१६॥

॥ इति श्री 'कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन" नामक तेरहवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

चतुर्दश अध्याय

शिव उवाच

तृतीयं तस्य वै देवि ! चरणं वदतः शृणु ।
कान्यकुब्जकुले कश्चिन्नगरे सूर्यसंज्ञके ॥१
उद्योतशर्मा विख्यातस्तस्य स्त्री गिरिजाभवत् ।
वेदपाठरतो नित्यं दारिद्रदेणैव पीडितः ॥२
कर्कशा भामिनी तस्य निष्ठुरं वदती स्मृताः ।
एकदा सूर्यग्रहणं तैलकारस्तदागतः ॥३

शिवजी बोले—हे देवि ! कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण के विषय में सुनो ! किसी सूर्यपुर नामक नगर में, कान्य कुब्ज ब्राह्मण वंश में उद्योत शर्मा नामक व्यक्ति था । उसकी पत्नी का नाम गिरिजा था । वह दैनिक वेद पाठी था परन्तु दारिद्र से पीड़ित था । उसकी पत्नी कर्कशा थी, सदैव कठोर वचन बोलती थी। एक बार सूर्य ग्रहण के अवसर पर कोई तेली वहाँ आ गया ।१—३।

गङ्गामध्ये ततो दानं तस्मै विप्राय वै शिवे ।

प्रददौ लक्षसंख्यां वै स्वर्णमुद्रां तु दक्षिणाम् ॥४
प्रतिगृह्य ततो दानं गृहं गत्वा द्विजस्तदा ।
व्ययं करोति स्म तदा भार्यापुत्रेण चैव हि ॥५
वेदपाठं ततस्त्यक्त्वा प्रत्यहं ससुखं प्रिये ।
मरणं वृद्धसमये गृहे शय्योपरिस्थिते ॥६
स्वर्णमध्ये च दानं वै न दत्तं गिरिनन्दिनि ! ।
स गतो नरके घोरे यमराजेन प्रेरितः ॥७

हे पार्वती ! उसने गंगा के मध्य खड़े होकर एक लाख स्वर्ण मुद्रा उस ब्राह्मण को दान में दीं। दान लेकर ब्राह्मण अपने घर आया। भर्या एवं पुत्रादि के साथ धन को व्यय करने लगा। वह वेद पाठ को त्यागकर नित्य प्रति भोग विलास में रत हो गया। वृद्धावस्था आई मरण उसका शैय्या पर ही हो गया। हे पार्वती ! लोभ के कारण उस स्वर्ण में से उसने दान नहीं किया। अतः यमराज से प्रेरित वह घोर नरक में गया ।४—७।

भुंक्ते नरकजं दुःखं स्त्रीपुत्रेण संयुतः ।
युगमेकं वरारोहे ! प्रेतत्वं काकतां गतः ॥८
ततः शृगालयोनिं च मानुषत्वं ततो गतः ।
पूर्वजन्मकृतं कर्म इह लोके प्रभुज्यते ॥९

हे देवि ! स्त्री पुत्रों के साथ उसने एक युग तक नरक की यातना भोगी फिर प्रेत बना, कौआ की योनि मिली। फिर स्यार की योनि मिली फिर मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ। पूर्व जन्म का फल इस लोक में भोगना पड़ता है।८— ९।

पाठयामास वै वेदान् ब्राह्मणेभ्यो वरानने ! ।
तत्सञ्चितफलाद्देवी ! महदैश्वर्यमाप्नुयात् ॥१०
भार्या मृता ततः पुत्रो द्वितीया च विवाहिता ।
शरीरे बहवो रोगाः सुखं तस्य न जायते ॥११
वृद्धे सति वरारोहे पुत्रः शत्रुर्भवेदिति ।
मृतवत्सा भवेन्नारी पूर्वजन्मविपाकतः ॥१२

हे सुमुखी ! ब्राह्मणों को वेद पढ़ाने के कारण, उसके संचित फल के प्रभाव

से वह महान ऐश्वर्यवान हुआ। उसकी पत्नी मर गई, फिर पुत्र भी मर गया। उसने दूसरा विवाह किया उसके शरीर में अनेक रोग हो गये थे अतः सुख की प्राप्ति नहीं हो रही थी। वृद्ध होने पर पुत्र शत्रु हो गया। स्त्री पूर्व जन्म के फल के कारण मृत वत्सा हो।१०—१२।

तस्य पुण्यमहं वक्ष्ये ततो रोगो निवर्तते।
पुनः पुत्रो भवद्देवि ! कन्यका नैव जायते ॥१३
जातवेदादिमंत्रेण जपं वै कारयेत् बुधः।
लक्षत्रयं प्रयत्नेन ततो होमं तिलादिभिः ॥१४
चतुरस्रे शुभे कुण्डे हरिवंशश्रवणं ततः।
भूदानं विधिवत्कुर्याच्छय्यां पात्राय दापयेत् ॥१५
एवं कृते न संदेहो रोगनाशो भविष्यति।
पुत्रश्च जायते देवि ! नात्र कार्या विचारणा ॥१६

मैं अब उस पुण्य को कहता हूँ जिससे रोग मुक्ति हो। उसके पुत्र हो तथा कन्या उत्पन्न न हो। जात वेद से—मन्त्र का तीन लाख जप कराये, तिल आदि सामग्री से हवन करे, चतुष्कोणी वेदी बनावे, हरिवंश पुराण का श्रवण करे, भूमिदान करे तथा छाया-पात्र दान करे। ऐसा करने से हे देवी ! रोग का विनाश होगा, पुत्र भी होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।१३—१६।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौदहवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

पञ्चदश अध्याय

शिव उवाच

कान्यकुब्जो द्विजः कश्चिन्नर्मदादक्षिणे तटे।
माहिष्मत्यां वसत्येको द्विजः परमवैष्णवः ॥१
नामतो योधशर्मेति तस्य भार्या तु दानवी।
प्रत्यहं वैश्यवृत्तिस्तु विक्रयं चाकरोत्सदा ॥२

शिव जी बोले—नर्वदा में दक्षिणी तट पर माहिष्मती नामक नगरी में कोई

परम वैष्णव, कान्य कुब्ज ब्राह्मण रहता था। उसका नाम योध शर्मा था। उसकी स्त्री दानवी थी। सदैव वैश्य वृत्ति, क्रय विक्रय करता था।१—२।

तत्र वैश्य उवासैको धनधान्यसमन्वितः।
वैश्यतस्तेन विप्रेण स्वर्णं सीतमृणं बहुः॥
ततो बहुतिथे काले स विप्रो मृत्युमागतः।
ऋणं तस्मै न दत्तं वैवैश्याय तु स्वकर्मके॥३-४

वहीं एक धन-धान्य से समन्वित एक वैश्य रहता था। इस योध शर्मा ने उस वैश्य से बहुत सी स्वर्ण मुद्रा ऋण रूप में ली थीं। समय बीतने पर ब्राह्मण की मृत्यु हो गई और वह उस वैश्य का ऋण न चुका सका।३—४।

मरणे सति विप्रस्तु रौरवं नरकं गतः।
वैश्यकर्म कृतं तेन स्वकर्मं परिमुच्यते॥५
विंशद्वर्षसहस्राणि यमलोके वसत्यसौ।
नरकान्निःसृतो देवि ! यातो वृषभशूकरौ॥६
योनिद्वयफलं भुक्त्वा मनुष्यत्वमवाप्नुयात्।
धनधान्यसमायुक्तस्तत्पुण्यस्य प्रभावतः॥७

मरने के बाद उस ब्राह्मण को रौरव नरक मिला। उसने अपने कर्म का त्याग कर वैश्य कर्म किया था। बीस हजार वर्ष तक वह यम लोक में रहा। नरक से निकल कर वह बैल फिर सूअर की योनि में गया। दोनों योनियों का फल भोग मनुष्य हुआ। पुण्य प्रभाव से उसके धन सम्पत्ति भी हुई।५-७।

ऋणसंबन्धतो देवि वैश्यः पुत्रत्वमागतः।
प्रत्यहं तस्य वै द्रव्यं कुर्याद्दिने दिने॥८
मद्यवेश्याप्रदानेन धनं सर्वं व्ययं कृतम्।
यदा पुत्रः समुत्पन्नो युवा तस्य भवेत्प्रिये॥९
तदामृत्युमवाप्नोति शोकं दत्वा तयोस्तदा।
पुनः पुत्रो न जातो वै पूर्वजन्मविपाकत॥१०

हे देवि ! पूर्व ऋण सम्बन्ध से वह वैश्य इस ब्राह्मण का पुत्र बना। प्रतिदिन इसके धन को व्यय करता। मद्यपान एवं वेश्यागमन में समस्त धन को व्यय

कर दिया । युवावस्था को प्राप्त होकर वह पुत्र, माता-पिता को कष्ट दे, मर गया । पूर्व जन्म के फल के कारण फिर इनके पुत्र नहीं हुआ ।—१०।

प्रायश्चितं प्रवक्ष्यामि पूर्वपाप विशुद्धये ।
गायत्रीलक्षजाप्येन तदर्थं वाटिका पथि ।।११
कूपं प्रयत्नतः कुर्यात्तडागाः विधिपूर्वकम् ।
होमं वैं कारयेत्चैव विधिपूर्वं वरानने ! ।।१२
पलपञ्चसुवर्णस्य दानं दद्याद्विशेषतः ।
दशवर्णाः प्रदातव्याः स्वर्णयुक्ताः सहाम्बरा ।।१३
भोजयेत्शतविप्रांस्तु यथाशक्ति सदक्षिणान् ।
एवं कृते न सन्देहो रोगनाशो भवेदनु ।।१४
पुत्राःपौत्र विवर्द्धन्ते मम वाक्यं न चाऽन्यथा ।। १५

पूर्व पाप की शुद्धि के लिए अब मैं प्रायश्चित कहता हूँ । गायत्री का एक लाख जप करे । मार्ग में वाटिका बनवाये । कूए एवं तालाब विधि पूर्वक बनवाये तथा विधि पूर्वक हवन कराये । पांच पल सोने का विशेष दान दे । दशवर्णी गौ, स्वर्ण युक्त एवं वस्त्रों सहित दान में दे । सौ ब्राह्मण भोजन कराये तथा यथा शक्ति दक्षिणा दे । ऐसा करने से निश्चय ही रोग नाश होगा और पुत्र-पौत्रादि भी होंगे । मेरे वाक्य कभी अन्यथा नहीं होते ।।११—१५।

।। इति श्री 'कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक पन्द्रहवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

षोडश अध्याय

शिव उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मनक्षत्रजं फलम् ।
रोहिण्याः प्रथमे पादे यस्य जन्म च जायते ।।१

शिव जी बोले—रोहिणी के प्रथम पाद में जन्मे जातक के फल को मैं तुमसे कहता हूँ ।।१।।

तस्य कर्म पुरा देवि ! सञ्चितं संब्रवीम्य ।

अन्तर्वेद्यां द्विजः कश्चिद्भोपनामावसत्प्रिये ॥२
ब्रह्मकर्मविहीनश्च चौरकर्मरतस्तदा ।
सार्द्धं चौरेण भो देवि ! बहु द्रव्यमुपार्जितम् ॥३
परस्त्रीलम्पटो देवि ! स्वां भार्या परिमुच्य च ।
एवं बहुगते काले कालवश्यस्ततोऽभवत् ॥४

कोई भोप नामक द्विज संगम प्रदेश के पास पूर्व जन्म के संचित कर्मों से रहता था। मैं उसके बारे में बताता हूँ। ये ब्रह्म कर्म विहीन एवं सदैव चोर कर्म में लगा रहता था। चोरों के साहचर्य से बहुत धन कमाया था। हे देवि पार्वती। वह अपनी पत्नी को त्याग, पर स्त्री गमन करता था। इस प्रकार बहुत समय बीतने पर वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।२—४।

यमः कर्मप्रभावेण नरके नामकर्दमे ।
वासयामास भो देवि ! षष्टिवर्षसहस्रकम् ॥५
नरकान्निःसृतो देवि ! कुक्कुटत्वं प्रजायते ।
ततो यातो महादेवि ! नरयोनिं च दुर्लभम् ॥६
पाण्डुरोगेण संयुक्तः पुत्रो नैव प्रजायते ।
वेश्याः कन्याःप्रजायन्ते पुत्रस्य मरणं भवेत् ॥७

हे देवि ! कर्म के प्रभाव से यमन उस कर्दम नामक नरक में डाल दिया। वहाँ साठ हजार वर्ष रहा। नरक से निकलने के बाद वह मुर्गे की योनि में गया। इसके बाद उसने मानव योनि प्राप्त की। तब इसके शरीर में पाण्डु रोग हो गया। इसके पुत्र नहीं होता था। वेश्या कन्या उत्पन्न होती थीं। पुत्र होकर मर जाता था।५—७।

तस्योपदानं वक्ष्यामि तत्सर्वं श्रृणु हे प्रिये ! ।
ॐनमः शिवाय मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ॥८
पार्थिवं तिलपिष्टेन गोमयेन तथा प्रिये ! ।
पूजयामास विधिवद्भक्तियुक्तेन चेतसा ॥९
होमं वै कारयेद्देवि ! षडंगं दक्षिणां ततः ।
आचार्याय सुवर्णं च पूर्वपापविशुद्धये ॥१०

कूपखातं ततो देवि ! वाटिकाँ चैव कारयेत् ।
एवं कृते न सन्देहो रोगनाशो भवेदनु ॥११
कन्यका न भवेद्देवि ! पुत्रश्चैव प्रजायते ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१२

हे प्रिये ! उसका उपचार कहता हूँ । 'ॐ नमः शिवाय' का एक लाख जप करे । तिल की पिट्टी का शिव लिंग या गोबर का शिवलिंग बनाकर विधिवत् भक्ति पूर्वक पूजा करे । हवन करे, उसके षडांश की दक्षिणा दे । सभी पापों की शुद्धि हेतु ब्राह्मण को स्वर्ण की दक्षिणा दे । कूआ एवं बावड़ी बनवाये । हे देवि ! ऐसा करने से रोगों का नाश होता है, इसमें सन्देह नहीं हैं । उसके कन्या नहीं होतीं, पुत्र होते हैं । मृतवत्सा को भी चिरजीव पुत्र की प्राप्ति होती है ।८—१२।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन नामक सोलहवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

सप्तदश अध्याय

शिव उवाच

द्वितीयचरणं देवि ! रोहिण्याः शृणु विस्तरम् ।
गङ्गाया उत्तरे कूले परं वैमानिकं शुभम् ॥१
वासुदेवश्च नाम्ना हि ब्राह्मणो वेदपारगः ।
लीलावती पवित्रा च तस्य पत्नी शुभा तथा ॥२

शिवजी बोले—रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म जातक का शुभाशुभ फल हे देवि ! सुनो ! गंगा के उत्तरी तट पर वैमानिक नामक एक गांव था । वहाँ वासुदेव नामक वेदज्ञ एक ब्राह्मण रहता था । उसकी पत्नी बड़ी पवित्र एवं सुन्दरी थी जिसका नाम लीलावती था ।१—२।

युवती रूपसम्पन्ना स्वैरिणी च सदा प्रिये ! ।
बहुद्रव्यं तथा लब्धं परपुंसः प्रसङ्गतः ॥३
पापादुपार्जितं द्रव्यं भुज्यते पतिना सह ।
गङ्गायां मरणं तस्य विप्रस्य भार्यया सह ॥४

स्वर्गवासी हि दम्पत्योः षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके वरानने ! ॥५

हे प्रिये ! वह लीलावती युवती, रूप सम्पन्न एवं स्वेच्छाचारिणी थी । उसने दूसरों पुरुषों के साहचर्य से बहुत धन प्राप्त किया । पाप से उपार्जित द्रव्य को वह पति के साथ भोगती थी । उस ब्राह्मण का अपनी पत्नी सहित एक समय गंगा में मरण हो गया । साठ हजार वर्ष तक दंपति ने स्वर्ग भोगा । फिर पुण्यों के क्षय होने पर मृत्यु लोक में जन्म हुआ ।३—५।

धनधान्यसमायुक्तो धर्मे मतिरथाधिका ।
पुत्राश्च बहवस्तेषां मरणं चैव जायते ॥६
कन्यका विविधास्तासां मृत्युश्चैव प्रजायते ।
पुनश्च तस्य हानिश्च बहुरोगः प्रजायते ॥७

इनके धन धान्य खूब था, धर्म में मति थी । उसके अनेक पुत्र हुए परन्तु उनकी मृत्यु हो जाती । कन्यायें भी अनेक हुई परन्तु उनकी भी मृत्यु हो जाती थी । उसे धन की हानि भी हुई एवं अनेक रोग भी उसके हो गये ।६—७।

तस्य शान्तिं प्रवक्ष्यामि यत्कृतं पूर्वजन्म ।
त्र्यम्बकेति च मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ॥८
देवस्य प्रतिमां कृत्वा पूजयेच्चैव शास्त्रतः ।
सुवर्णस्य शिवं कुर्यात् पलपञ्चप्रमाणकम् ।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्मन्त्रेणाऽनेन पूजयेत् ॥९

अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ जो पाप इसने पूर्व जन्म में किये थे । 'त्र्यम्बक' मंत्र का एक लाख जप कराये, शंकर जी की प्रतिमा बनाकर विधिवत पूजा करे । पांच पल के स्वर्ण के शिव बनाये । धूप-दीप और नैवेद्य से उसकी पूजा करे ।८-९।

ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः हराय नमः । इति प्रतिमास्थापनं रौप्यपात्रे । ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः महेश्वराय नमः इति धूपम् । ॐ ह्रौं ह्रीं जूँ सः पिनाकधृते नमः इति प्रतिमा सस्पृश्यावाहनम् ।

आवाहये महादेवं देवदेव सनातन ! ।
इमां पूजां गृहाण त्वं मम पापं व्यपोहतु ॥१०

ॐ हौं ह्रीं जूं सः हराय नमः। ऐसा कह चांदी के पात्र में मूर्ति स्थापित करें। ॐ हौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः" ऐसा कह धूप दें ॐ हौं ह्रीं जूं सः पिनाकधृते नः। ऐसा कह प्रतिमा का स्पर्श करे फिर आवाहन करें—'हे देव देव, हे महादेव, हे सनातन प्रभो! मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ। आप मेरी इस पूजा को स्वीकार करें तथा मेरे पापों को दूर करें।१०।

ॐ हौं ह्रीं जूँ सः यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ सोऽहं शङ्करस्य सर्वेन्द्रिय-वाङ्-मनश्चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राणा इहागत्य, इह जीवस्थितिं सुखं चिरं तिष्ठन्तु। इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, शिवं ध्यायन् पूजयेत्। ॐ हौं ह्रीं जूँ सः पशुपतये नमः-इति पञ्चामृतेन स्नानम्। ॐ हौं ह्रीं जूँ सः शिवाय नमः-इति चन्दनादिभिः विसर्जनम्।

ॐ हौं ह्रीं "तिष्ठन्तु' तक बोल कर प्राण प्रतिष्ठा करे शिव का ध्यान कर पूजन करे। ॐ हौं ....नमः' मन्त्र से पंचामृत स्नान करायें। ॐ हौं ह्रीं जूं ....नमः 'कह चंदन आदि से पूजन करें। ॐ हौं ....नमः" कह विसर्जन करें।

गोदानं च ततः कुर्यात् कृष्णां च कपिलां ततः।
विप्रायः वेदविदुषे सुवर्णं दक्षिणां ततः ॥११
प्रदक्षिणां ततः कुर्याद्विप्रस्येशानरूपिणः।
शतसंख्यद्विजांश्चैव भोजयित्वा विसर्जयेत् ॥१२

इसके उपरान्त कपिला एवं कृष्णा गाय को वेदज्ञ ब्राह्मण को दें तथा स्वर्ण दक्षिणा दें। शंकर स्वरूप उस ब्राह्मण की परिक्रमा करें तथा सौ ब्राह्मणों को भोजन करावें।११—१२।

प्रयागे मकरे माघे पत्न्या सह वरानने!।
स्नानं कुर्याच्च भो देवि! व्रतमेकादशी चरेत् ॥१३
एवं कृते न सन्देहो रोगनाशश्च जायते।
पुत्रं चापि लभेद्देवि! चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१४
यद्येवं च प्रकुरुते सप्तजन्म सः-पुलकक्षः ॥१५

हे देवि! प्रयाग में मकर संक्रान्ति के अवसर पर सपत्नीक स्नान करे।

एकादशी का व्रत रखे। ऐसा करने से निश्चय ही रोगों का नाश हो जाता है। तथा चिरंजीव पुत्र की भी प्राप्ति होती है। जो ऐसा करता है उसे सात जन्म तक पुत्र सुख प्राप्त होता है।१३—१५।

॥ इति श्री रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित
कथन नामक सत्रहवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—☆—

अष्टादश अध्याय

शिव उवाच

गोमत्या उत्तरे कूले कोशद्वयप्रमाणतः ।
विष्णुदासेति विख्यातो देवीपुत्रो वरानने ! ॥१
शङ्करे वै पुरे रम्ये तस्य भार्या च सुन्दरी ।
कर्कशा कुलटा सा वै पतिविद्वेषकारिणी ॥२

शिवजी बोले—हे सुमुखी ! गोमती नदी के उत्तरी तट से दो कोस दूर देवी पुत्र, विष्णुदास नाम से प्रसिद्ध था। शंकर जी की पुरी में वह उत्पन्न हुआ था। उसकी पत्नी सुन्दरी कर्कशा, कुलटा एवं पति से द्वेष करने वाली थी।१–२।

शुश्रूषां कुरुते नैव श्वश्रुवोश्चैव वरानने ! ।
स्वधर्मनिरतो नित्यं शिवभक्तिपरायणः ॥३
कृषिं वै सोऽकरोच्चैव विप्राणां चैव सेवकः ।
पित्रोश्च परमो दासः सदा च प्रियभाषणः ॥४

वह नारी सास—श्वसुर की सेवा नहीं करती थी। पुरुष अपने धर्म में निरत एवं शिव भक्ति में लीन रहता था। वह कृषि कर्म करता था, ब्राह्मणों की सेवा करता, मात-पिता की सेवा करता एवं मृदु भाषण करता था।३–४।

एतस्मिन्नगरे देवि ! व्रती कश्चित्समागतः ।
भिक्षार्थमागतो द्वारे तया भिक्षां ददे न च ॥५
अपभ्रंशमवोचत्सा भिक्षुकं प्रति सुन्दरी ।
विष्णुदासो गृहे नाऽऽसीत्तद्दिने कुत्रचिद्गतः ॥६

हे देवि ! उस समय कोई व्रती इस नगर में आया। वह भिक्षा के हेतु इसके

द्वार पर आया, उस स्त्री ने उसे भिक्षा नहीं दी अपितु भिक्षुक से उसने कटु वचन कहे। उस दिन विष्णु दास घर पर नहीं था, वह कहीं बाहर गया था।५-६।

एवं बहुगते काले तस्य मृत्युर्बभूव ह।
भक्तत्वान्मम भो देवि ! यज्ञलोके गतः स वै ॥७
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि यक्षेण सह भोगवान्।
तस्य भार्या मृता क्रूरा श्वश्रूणां दुःखदायिनी ॥८

हे देवि ! बहुत समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। वह विष्णुदास मेरा भक्त होने के कारण यज्ञ लोक में गया। उसने तीस हजार वर्ष यज्ञ लोक में सुख भोगा। सास-ससुरों को कष्ट देने वाली उसकी पत्नी मरी।७-८।

सा गता नरके घोरे रौरवे नाम्नि भामिनि।
भुक्त्वा नरकजं दुखं पुनर्व्याघ्री बभूव ह ॥९
पुनः शृगाली वै जाता मानुषी च ततोऽभवत्।
पुनर्विवाहिता सा वै मर्त्यलोके वरानने ! ॥१०
वन्ध्या चैव विशालाक्षि ! पूर्वजन्मविपाकतः।
रोगो बहुभवेद्देवि ! सुखं नैवोपजायते ॥११

हे भामिनि ! वह नारी घोर रौरवनरक में गई। नरक के दु:खों को प्राप्त कर वह व्याघ्रनी बनी। फिर स्यारनी बनीं, फिर वह मानव योनि को प्राप्त हुई। फिर मृत्यु लोक में उसका विवाह हुआ। पूर्व जन्म के फल से वह बांझ हुई। हे देवि ! उसे अनेक रोग हुए। उसे सुख नहीं मिला।९-११।

तस्याः पुण्यं प्रवक्ष्यामि पूर्वपापप्रणाशनम्।
स्वपतिं प्रत्यहं माघे स्नापयेदुष्णवारिणा ॥१२
श्वशुराच्चरणयोः प्रातर्नमस्कुर्यात् प्रयत्नतः।
अलाबुं नैव खादेत्तु षोडशाब्दप्रमाणतः ॥१३

अब मैं उसके पूर्व पापों के विनाश हेतु पुण्य कार्य बतलाता हूँ। वह माघ मास में अपने पति को नित्य गर्म जल से स्नान कराये। सास-ससुर के चरणों में नित्य प्रणाम करे। सोलह वर्ष तक लौकी न खाये।१२-१३।

माघे नियमतो देवि ! पतिना सह सुव्रते।
स्नानं प्रतिदिनं कुर्याद्दीपं दद्याद्यथाविधि ॥१४

ततः कृत्वा सुवर्णस्य वृक्षं वै द्विपलस्य च ।
रौप्यां दशपलां देवि ! वेदीं शुभ्रां च कारयेत् ॥१५
वृक्षं तस्यां च संस्थाप्य कल्पवृक्षस्वरूपिणम् ।
पूजयित्वा ततो देवं शंख-चक्र-गदाधरम् ॥१६
सगणं देवदेवेशं बृषकेतुं वरप्रदम् ।
ततो वै पूजयेद्देवि ! विधिवच्चारुरूपिणम् ॥१७

हे देवि ! माघ मास में प्रति दिन पति के साथ स्नान करे और यथाविधि दीप दान करे । फिर दो पल स्वर्ण का वृक्ष बनावे, दस पल चाँदी की वेदी बनावे उस कल्प वृक्ष रूपी वृक्ष को वेदी पर स्थापित करे । फिर शंख-चक्र गदाधा विष्णु की पूजा करे। फिर देव देवेश, वृश केतु शंकर की पूजा करे ।१४-१७।

वस्त्र-काञ्चन-केयूरं कुण्डलाभ्यां विशेषतः ।
तद् वृक्षं वेदिकायुक्तं तस्मै विप्राय दापयेत् ॥१८
अन्यान् विप्रान् वरारोहे ! भोजयेद्विविधै रथैः ।
पायसैर्मोदकैः शुभ्रैः षट्षष्टिप्रमितान् प्रिये ! ॥१९

फिर वस्त्राभूषण एवं कुन्डलों से युक्त उस अलंकृत वेदी सहित वृक्ष ब्राह्मण को दे । फिर ६६ अन्य ब्राह्मणों को विविध पक्वान्न लड्डू एव खी आदि से भोजन करावे ।१८--१९।

ततो गां कपिलां दद्यात् स्वर्णश्रृङ्गीं स-नूपुराम् ।
सप्तभ्यां रवियुक्तायां व्रतं कुर्यान्मम प्रिये ! ॥२०
गोपालस्य च मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ॥२१
एवं कृते न सन्देहः शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ।
कन्यका नैव जायन्ते रोगश्चैव निवर्त्तते ॥२२

फिर स्वर्ण के सींग एवं नूपुरों से युक्त गाय ब्राह्मण को दे तथा सप्त रविवार के व्रत रखे ! एक लाख गोपाल मन्त्र के जाप करे । दशांश का हव मार्जन एवं तर्पण करे । ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है । कन्या कभी नहीं होतीं और सभी रोग दूर हो जाते हैं ।२०--२२।

॥इति श्री कर्म विपाक संहिता में 'रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक अठारहवाँ अध्याय संपूर्ण ॥

— ✯ —

एकोनविंश अध्याय

शिव उवाच

रोहिण्याश्चरणं देवि ! चतुर्थं साम्प्रतं शृणु ।
सत्कृतं सञ्चितं पूर्वमिह जन्मनि तत्फलम् ॥१

शिवजी बोले—इस समय हे देवि ! तुम रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे जातक के पूर्व जन्म के एवं यहाँ के कार्यों एवं फल के विषय में सुनो ।१।

बुद्धिशर्मा द्विजः कश्चिदन्तर्वेद्यां बभूव ह ।
पुरोहितो महाभ्रष्टः परपाके सदा रतः ॥२
भार्या पररता तस्य चञ्चला चपला सदा ।
धनं च संचितं तेन प्रतिग्रहप्रसङ्गतः ॥३

अन्तर भूमि (मध्य प्रदेश) में बुद्धि शर्मा नामक एक ब्राह्मण पुरोहित था । वह महा भ्रष्ट था तथा दूसरों की रसोई बनाता था । उसकी पत्नी दूसरों से प्रेम करने वाली, चंचल एवं चपल थी । दूसरों से दान लेकर उसने काफी धन एकत्र किया ।२—३।

मरणं तस्य वै जातं पश्चाद्भार्या मृता तु सा ।
गतोऽसौ नरके घोरे पूर्वजन्मविपाकतः ॥४
युगमेकं वरारोहे ! भुक्त्वा नरकयातनाम् ।
वृषयोनिं च सम्प्राप्तो रासभत्वं ततोऽलभत् ॥५

ब्राह्मण की पहिले फिर उसकी पत्नी की मृत्यु हुई । वे दोनों पूर्व जन्म के प्रभाव से घोर नरक में पड़े । एक युग तक उन्होंने नरक यातना भोगी । फिर बैल की योनि और इसके बाद गदहे की योनि प्राप्ति की ।४—५।

मानुषत्वं पुनर्यातिं मध्यदेशे वरानने ! ।
अपुत्रता भवेद्देवि ! कन्यका चैव जायते ॥६
शरीरे रोगमुत्पन्नं सुखं नैव प्रजायते ।
प्रायश्चित्तं ततो देवि ! प्रवक्ष्यामि वरानने ! ॥७

हे सुमुखी ! फिर मध्य देश में मानव योनि प्राप्ति की । ये अपुत्री बने एवं कन्या ही उनके हुई । शरीर में रोग हुए । कभी सुख नहीं मिला । अब मैं उसके प्रायश्चित्त कहता हूँ ।६—७।

आकृष्णेति जपेन्मन्त्रं लक्षं वै विधिवत् प्रिये।
होमं कुर्यात् प्रयत्नेन तिला-ऽऽज्य मधुना सह ॥८
कुण्डे वै वर्तुलाकारे दशांशं तर्पणं तथा।
मार्जनं तु विशेषेण ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥९

'आकृष्णोन रजसा' इस मन्त्र से सूर्य के एक लाख जप करे। तिल, घी, मधु के साथ प्रयत्न पूर्वक हवन करे। वर्तुलाकार कुंड बनावे। दशांश से तर्पण, मार्जन करे फिर ब्राह्मण भोजन करावे।८—९।

दशवर्णा प्रदातव्या गुडधेनुस्तथा प्रिये!।
शय्यां दद्यात् प्रयत्नेन विधिवद् ब्राह्मणाय च ॥१०
भोजयेद्ब्राह्मन्शुद्धान् वेदपाठरतान् प्रिये!।
सप्तसप्ततिसंख्यान् वै दीक्षितान्शुद्धमानसान् ॥११

हे प्रिये! फिर दशवर्णी गौ का दान करे, गुड़ दे विधिवत् ब्राह्मण को शैया दान दे। "शुद्ध, वेद पाठी दीक्षित एवं शुद्ध मन वाले ब्राह्मणों को भोजन करावे।१०—११।

प्रयागे माघमासे वै प्रातः स्नानं स-भार्यया।
एवं कृते न सन्देहः पुत्रस्तस्य प्रजायते ॥१२
रोगः प्रमुच्यते तस्य वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति।
मृतवत्सा लभेत् पुत्रं कन्यका नैव जायते ॥१३

पत्नी सहित, माघ मास में प्रयाग में स्नान करे। ऐसा करने से निःसन्देह पुत्र की प्राप्ति होती है। रोग नष्ट हो जाते हैं तथा पत्नी का बांझपन छूट जाता है। मृत वत्सा को पुत्र प्राप्त होता है, कन्या नहीं उत्पन्न होती।१२—१३।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में रोहिणी नक्षत्र के
चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक
उन्नीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण।

—०—

विंश अध्याय

शिव उवाच

अथ वक्ष्ये महादेवि ! चन्द्रनक्षत्रजं फलम् ।
यत्कृतं मानुषैः पूर्वं तच्छृणुष्व वरानने ॥१

शिव जी बोले—हे महादेवि ! मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक के पूर्व जन्म के फलों के विषय में कहता हूँ ।१।

मध्यदेशे पुरे शुभ्रे वसत्येको द्विजः खलु ।
ब्रह्मकर्मरतो नित्यं वेदवेदाङ्गपारगः ॥२
प्रत्यहं पाठयामास चतुर्वेदान् स-विस्तरान् ।
वेदशर्मा द्विजः ख्यातस्तस्य पत्नी सुशीलिका ॥३

मध्य देश में ब्रह्म कर्म में रत, वेद वेदांग में पारंगत एक ब्राह्मण रहता था। वह विस्तार पूर्वक चारों वेदों को नित्य प्रति पढ़ाया करता था। उसका नाम वेदशर्मा था, उसकी पत्नी सुशीला थी ।२—३।

प्रत्यहं पाठयेद्वेदं जीविकार्थं वरानने ! ।
लोहकारस्य मरणं तत्पुरेऽभूद्वरानने ! ॥४
न दत्तं तस्य वै स्वर्णं लोहकारस्य संस्थितम् ।
तत्स्वर्णं प्रत्यहं देवि ! बुभोज सह भार्यया ॥५

हे वरानन ! वह जीविका हेतु वेद पढ़ाया करता था। उसी नगर में एक लुहार का मरण हो गया। लुहार का जो स्वर्ण इस ब्राह्मण पर था, वह इसने नहीं दिया। वह पत्नी सहित उस धन को खर्च करता था ।४—५,

एवं बहुगते काले मरणं ब्राह्मणस्य वै ।
सूर्य लोकेऽभवेद्देवि ! यतः सूर्यस्य सेवकः ॥६
विंशद्वर्षसहस्राणि सूर्यलोकेऽवसत् प्रिये ! ।
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके च मानवः ॥७

हे देवि ! बहुत समय बाद उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई। वह सूर्य लोक में गया। बीस हजार वर्ष तक सूर्य लोक में रहा। पुण्यों के क्षय होने पर मृत्यु लोक में मनुष्य हुआ ।६—७।

पुत्रकन्याविहीनस्तु धनधान्यसमन्वितः ।
लोहकारस्य स्वर्णं हि गृहीतं नैन दत्तवान् ॥८
तेन कर्म विपाकेन लोहकारः सुतोऽभवत् ।
प्रीतिमांश्चैव सर्वेषां पितृमातृप्रियङ्कर ॥९

इसने लुहार का जो धन लेकर नहीं दिया था इस कारण वह सन्तान रहित हुआ और धन धान्य से मुक्त हुआ। इस कर्म विपाक से वह लुहार इसका बेटा हुआ। वह सबका प्रिय था एवं माता-पिता का भक्त था।८—९।

युवारूपसमान्नस्तदा मृत्युर्भवेदनु ।
पुनः पुत्रस्य चाऽभावः कन्या चैव प्रजायते ॥१०
तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तमतः शृणु ।
गायत्रीलक्षजाप्येन दुर्गायाः पूजनेन च ॥११
दशवर्णापदानेन भूमिदानेन पार्वति ! ।
सर्वं पापं क्षयं याति पूर्वजन्मसमुद्भवम् ॥१२

वह युवा एवं रूप सम्पन्न था। तभी उस पुत्र की मृत्यु हो गई। फिर उसके पुत्र नहीं हुआ। कन्या ही उत्पन्न हुई। इसके पाप की शुद्धि के हेतु प्रायश्चित सुनो। गायत्री के एक लाख जप से और दुर्गा के पूजन से, दशवर्णी गौ के दान से, भूमि दान से पूर्व जन्म के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।१०—१२।

गयाश्राद्धं प्रयत्नेन तदर्थं नियतः प्रिये ! ।
प्रयागे मकरे मासि स्नानं कुर्यात् प्रयत्नतः ॥१३
ततः पापं क्षयं याति पुनः पुत्रश्च जीवति ।
रोगाः सर्वेक्षयं यान्ति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥१४

हे प्रिये ! उसके लिये प्रयत्न पूर्वक गया श्राद्ध करे। माघ मास में प्रयाग में प्रयत्न पूर्वक स्नान करे। इससे पाप नष्ट हो जाते हैं, पुत्र जीवित रहता है। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये।१३—१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक बीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०

एकविंश अध्याय

शिव उवाच

कान्यकुब्जे शुभे देशे कश्चिन्न नन्दने पुरे ।
बोधशर्मा द्विजश्चाऽऽसीत् भिक्षुवृत्तिस्तु निर्धनः ॥१
परान्नं भुज्यते नित्यं परप्रेष्यरतः सदा ।
तस्य पत्नी समाख्याता बाधमा नाम वै पुरा ॥२

शिव जी बोले—कन्यकुब्ज देश में नन्दनपुर नामक नगर में एक बोध शर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। वह निर्धन था एवं भिक्षा वृत्ति करता था वह परान्न भोजी एवं पर जन सेवी था। उसकी पत्नी का नाम बाधम था।१—२।

जन्मतो मरणं यावत् परान्नं भुज्यते च वै ॥
नरके पतनं तेन तयोर्जातं प्रतिग्रहात् ॥३
बहुवर्षसहस्राणि प्रवासो नरऽभवत् ।
नरकान्निःसृतो देवि ! काकश्चैव मृगोऽभवत् ॥४

जन्म से मरण पर्यंन्त परान्न खाने के कारण और दान लेने के कारण वे पति-पत्नी नरक में गये। हजारों वर्ष तक नरक में रहने के बाद कौआ बने फिर मृग बने।३—४।

पुनर्वै मेषयोनिश्च पूर्वकर्मविपाकतः ।
ततोवै मानुषो जातो मध्यदेशे वरानने ! ॥५
रोगवान्नृत्यशीलश्च पुत्र-कन्याविवर्जितः ।
परान्नं प्रत्यहं भुङ्क्ते श्राद्धं नैव कृतं पुरा ॥६

पूर्व जन्म के प्रभाव से वह मेंढ़ा बना फिर मध्य प्रदेश में मनुष्य बना। रोगी, नृत्य कला में निपुण एवं पुत्र तथा कन्या से रहित हुआ। रोजाना परान्न खाता एवं कभी भी श्राद्ध नहीं किया।५—६।

अतो वंशस्य वै छेदः फलञ्चैव तु पूर्वजम् ।
शान्ति तस्य प्रवक्ष्यामि पूर्वपापक्षयपततः ॥७
गायत्री जातवेदाभ्यां द्विलक्षं जापयेद्दिने ! ।
ततः पापविशुद्धिः स्याद्दशांशहवनं यदा ॥८

पूर्व जन्म के परिणाम से वंश छेद हुआ। पूर्व पाप क्षय हेतु अब शान्ति कहता हूँ। गायत्री मन्त्र एवं 'जात वेद से' मंत्र के दो लाख जप कराये। दशांश का हवन करे तो पाप शुद्धि हो।७—८।

तर्पणं मार्जनं देवि ! ब्राह्मणणान् भोजयेत्ततः।
शतसंख्यामिताशुद्धान् गृहस्थानतिभक्तितः ॥९
वृषमेकं प्रदद्यात्तु नीलवर्णं विभूषितम् ॥
एवं कृते न सन्देहो रोगनाशो भवेद् ध्रुवम्।
पुत्रस्तु जायते देवि ! वन्ध्यात्वं च प्रणष्यति ॥१०

हे देवि ! फिर तर्पण मार्जन करे फिर सौ शुद्ध, भक्तिवान, गृहस्थी ब्राह्मणों को भोजन करावे। नील वर्ण बैल को अलंकृत करके दे। ऐसा करने से रोग नाश निश्चित होता है, पुत्र उत्पन्न होता है एवं बाँझपन छूट जाता है।९—१०।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में मृगशिरा नक्षत्र के
द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक
इक्कीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

द्वाविंश अध्याय

शिव उवाच

नर्मदादक्षिणे तीरे पुरीका नाम वै पुरी।
तस्यां पुर्यां विशालाक्षि ! कुलालो धनवानपि ॥१
कुलालकर्मतो देवि ! बहुद्रव्यमुपार्जितम्।
कर्मचन्द्र इति ख्यातस्तस्य पत्नी च देवकी ॥२

शिव जी बोले—हे विशालाक्षि ! नर्मदा के दक्षिणी तीर पर 'पुरीका' नामक एक पुरी थी। वहाँ एक धनिक कुम्हार था। उसने कुलाल कर्म द्वारा बहुत धन उपार्जित किया। उसका नाम कर्मचन्द्र एवं पत्नी का नाम देवकी था।१—२।

स्वकर्मनिरतो नित्यं पात्रं कृत्वा दिने दिने।
एवं सर्वं वयो जातं वृद्धत्वं च ततोऽभवत् ॥३
वृद्धे जाते तदा देवि ! दारिद्रयत्वं प्रजायते।
सूपकारस्य वै द्रव्यं व्यवहारे गृहीतवान् ॥४

अपने कर्म में लगे ही समय चला गया, बुढ़ापा आ गया। बुढ़ापे के आते ही गरीबी आ गई तब सूर्पकार (घरकार) से उसने धन ग्रहण किया।३—४।

शतसंख्यामितं स्वर्णं व्ययं सर्वं कृतं शिवे!।
कुलालस्याऽभवन्मृत्युः पत्नी तस्य मृता पुरा॥५
नर्मदायां महादेवि! तावुभौ मृत्युमापतुः।
तत्तीर्थस्य फलाद्देवि! स्वर्गलोकं गतावुभौ॥६

हे पार्वती जी! उसने सौ स्वर्ण मुद्रा उधार लीं, सब खर्च कर दीं। उस कुम्हार की पत्नी पहिले मर गई फिर कुम्हार भी मर गया। नर्बदा तीर पर दोनों की मृत्यु हुई उस फल के कारण वे दोनों स्वर्ग गये।५—६।

बहुवर्षसहस्राणि ताभ्यां भुक्तं फलं शुभम्।
ततः पुण्यक्षये जाते मृत्युलोके च जायते॥७
मानुषेऽपि शुभं जन्म धन-धान्यसमन्वितः।
पुनर्विवाहिता नारी पूर्वजन्मप्रसङ्गतः॥८

अनेक वर्षों तक स्वर्ग सुख भोग, पुण्यों के क्षय होने पर वे मृत्युलोक में उत्पन्न हुये मनुष्य योनि में भी शुभ जन्म हुआ, धन धान्य से समन्वित हुए। पूर्व जन्म प्रसंग से उस नारी से विवाह हुआ।७—८।

ऋणसम्बन्धतो देवि! पुत्रो जातस्तदा शिवे।
सूर्पकारो महादेवि! वैरुद्ध्यं बालतःकृतम्॥९
प्रत्यहं वसु बल्लब्धं तत्सर्वं च व्ययं तथा।
द्यूतवेश्याप्रदानेन धनं सर्वं व्ययं गतम्॥१०
युवा जातो यदा देवि पुत्रकन्यासमन्वितः।
मरणं तस्य वै जात पुनः पुत्रो न जायते॥११

हे देवि! ऋण सम्बन्ध के कारण वह सूर्पकार उसके पुत्र रूप में प्रकट हुआ, बचपन से विरुद्ध आचरण करने लगा। नित्य प्रति जो धन प्राप्त होता उसे वह जूआ, वेश्या आदि में समाप्त कर देता। पुत्र कन्या से युक्त जवान होने पर वह मर गया। उसके मरने पर उसके कोई पुत्र नहीं हुआ।९—११।

अथ शान्तिं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वं वरानने!।
गायत्रीलक्षजाप्येन हवनकेन तथा प्रिये!॥१२

कर्तव्यं कुण्डमुच्चैस्तु त्रिकोणं विधिवत्प्रिये !।
होमं च कारयेद्देवि ! दशांशं तर्पणं ततः ॥१३

हे सुमुखी ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ। गायत्री मंत्र एवं 'त्र्यम्बकं भजामहे' इस मन्त्र का एक लाख जप करावे। त्रिकोण कुंड बनावे, विधिवत होम करे। दशांश का तर्पण करे।१२-१३।

ततो वै कपिलां दद्यात्हेमश्रृङ्गी सहाम्बराम्।
एवं कृत्वा वरारोहे ! पुनः पुत्रः प्रजायते ॥१४
सूर्पकारस्य प्रतिमां पलसप्तदशस्य तु।
सुवर्णस्यैव भो देवि ! रचितां वस्त्रच्छादिताम् ॥१५
सूर्पं रौप्यस्य वै कुर्यात् पलषष्टिप्रमाणतः।
प्रदद्याद्वेदविदुषे ब्राह्मणाय सुतेजसे ॥१६
तस्योद्देशेन भो देवि ! ऋणबन्धात् प्रमुच्यते।
पुत्रश्च जायते देवि ! नाऽत्रकार्या विचारणा ॥१७

इसके उपरान्त गाय दान दे। उसके सींग सोने से मढ़े, वस्त्र पहना कर दे तो फिर पुत्र उत्पन्न हो। सत्रह पल स्वर्ण की सूर्पकार की प्रतिमा का निर्माण करावे। उसे वस्त्र पहिनावे। साठ पल चाँदी का सूप बनवावे फिर किसी वेदज्ञ, तेजस्वी विद्वान्, ब्राह्मण के लिये उसे दान में दे। इस दान के करने से हे देवि ! वह व्यक्ति ऋण के बंधन से छूट जाता है। उसके फिर पुत्र भी उत्पन्न होता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।१४—१७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक बाईसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—•—

अथ त्रयोविंश अध्याय

शिव उवाच

अथ वक्ष्याम्यहं देवि ! चतुर्थचरणं तथा।
मृगशिरो नाम नक्षत्रंतस्य पूर्वं च सञ्चितम् ॥१

शिव जी बोले—हे देवि ! मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए जातक के पूर्व जन्म के संचित कर्मों के विषय में कहता हूँ।१।

अवन्तीपुरतो देवि ! दक्षिणे कोशपञ्चके।
पुरं तच्चैव विख्यातं केशवं नाम शोभनम् ॥२
वसत्येको हि देवेशि ! ब्राह्मणो वेदपारगः।
किशोरशर्मा विख्यातो मृतगेहे प्रभुज्यते ॥३

अवन्तीपुरी के दक्षिण में पांच कोस की दूरी पर प्रसिद्ध केशव नामक नगर है वहाँ एक वेदों का ज्ञाता किशोर शर्मा नामक प्रसिद्ध ब्राह्मण रहता था, जो श्राद्धों में भोजन करता था।२—३।

कष्टेनैव महादेवि ! व्ययं कुर्याद्दिने दिने।
धनं च बहुधा कृत्वा पुण्यकार्यं न कारयेत् ॥४
ततो भ्रातुः कनिष्ठस्य भागं नैवं ददौ च सः।
त्रिकोटिप्रमितं द्रव्यं स्वगृहे चैव सञ्चितम् ॥५

हे देवि ! वह बड़ी कठिनता से व्यय करता था। कभी भी पुण्य कार्य में धन व्यय नहीं करता था। उसने अपने छोटे भाई के हिस्से को भी नहीं दिया एवं तीन करोड़ की राशि को स्वयं ही घर में रख लिया।४—५।

द्रव्यस्यैव विभागाय मरणं ब्राह्मणोपरि।
कृतं भ्राता कनिष्ठेन द्रव्यं तस्मै न दत्तवान् ॥६
एवं बहुतिथे काले किशोरः स मृतस्तु वै।
गतो वै नरके घोरे युगमेकोनविंशतिम् ॥७

धन विभाजन को लेकर, छोटे भाई ने आत्म हत्या करली फिर भी उसने नहीं दिया। बहुत समय बीत जाने पर किशोर शर्मा की मृत्यु हो गई। उन्नीस युग तक उसने कठोर नरक यातना भोगी।६—७।

पुनः कर्मवशाद्देवि ! गर्दभत्वं च जायते ।
वृषयोनिस्ततो जातो मानुषत्वं भवेत्पुनः ॥८
मध्यदेशे वरारोहे ! पुत्रो नैव प्रजायते ।
कन्यका बहवो गर्भा विनश्यन्ति वरानने ! ।९

हे देवि ! कर्मवश नरक के बाद गर्दभ योनि प्राप्त हुई । इसके बाद वृष योनि फिर उसे मनुष्य योनि मिली । वह मध्य देश में उत्पन्न हुआ । उसके पुत्र नहीं हुआ । बहुत सी कन्याएँ हुईं तथा उसके गर्भ भी नष्ट हो जाते थे । ८–९।

पूर्वजन्मकृतं कर्म भुज्यते देवि ! मानवैः ।
इहलोके वरारोहे ! पुण्यं पापमनन्तकम् ॥१०
भ्रातुस्तस्य कनिष्ठस्य मरणं पूर्वजन्मनि ।
तदुद्देशेन भोदेवि ! तस्माद् रोगं च जायते ॥११

हे देवि ! मनुष्य जन्म के कर्म भोगने पड़ते हैं । पुण्य या पाप इसी लोक में भोगने पड़ते हैं । पूर्व जन्म में जो इसका छोटा भाई मर गया था, इस कारण इसे रोग होते थे ।१०—११।

तस्य पापस्य शुद्धिं च शृणु देवि ! प्रयत्नतः ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ॥१२
गृहवित्तषडंशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्रीजातवेदेन त्र्यम्बकेन तथैव च ॥१३
लक्षत्रयं जपं चैव दशवर्णाः प्रदापयेत् ।
हवनं विधिवत् कुर्यात् तर्पणं मार्जनं तथा ॥१४

हे देवि ! अब मैं उस पाप की शुद्धि के हेतु प्रायश्चित कहता हूँ । गायत्री मूल मन्त्र का एक लाख जप कराय । घर में स्थित धन के षडांश को पुण्य कार्य में लगा दे । गायत्री मन्त्र और त्र्यम्बकं मन्त्र से तीन लाख जप करावे । दशवर्णी गाय दान दे । विधिवत हवन करे तर्पण तथा माजन करे ।१२—१४।

सौवर्णस्य वरारोहे ! सूर्यं कुर्यात् प्रयत्नतः ।
पलपञ्चप्रमाणेन द्विगुणं चन्द्रमेव च ॥१५
रौप्यस्यै प्रकुर्यात्तु यथाशास्त्रं प्रपूजयेत् ।

मन्त्रेणाऽनेन भो देवि ! दद्याद्विप्राय तद्द्वयम् ।।१६

हे सुमुखी ! पाँच पल स्वर्ण के सूर्य बनावे, दश पल के चन्द्रमा बनावे अथवा चांदी में चन्द्रमा बनावे, शास्त्रोक्त विधि से पूजा करे । निम्न लिखित मन्त्र से पूजा करके दोनों मूर्तियों को ब्राह्मण को दे दें ।१५ – १६।

"ॐ ह्रीं मार्तण्डाय स्वाहा"

सूर्यदेव ! महाभाग ! त्रैलोक्यतिमिरापह ! ।
मम पूर्वकृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर ! ।।१७

"ॐ सोमाय स्वाहा"

ॐ सौम्यरूप ! महाभाग ! मन्त्रराज ! द्विजोत्तम ! ।
पूर्वजन्मकृतं पापमोषधीश ! क्षमस्व मे ।।१८

ॐ ह्रीं मार्तण्डाय स्वाहा' ये सूर्य मन्त्र है । हे सूर्य देव, हे महाभाग, तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करने वाले, जो मैंने पूर्व जन्म में पाप किये हैं उन्हें तुम क्षमा करो । ॐ सोमाय स्वाहा' ये चन्द्रमा का मन्त्र है । हे सौम्य रूप हे महाभाग, हे मन्त्रराज, हे द्विजोतम, हे औषधीश ! जो भी मैंने पूर्व जन्म में पाप किये हैं, उन्हें तुम क्षमा करो ।१७–१८।

ततश्च ब्राह्मणान्पूज्य भोजयित्वा विसर्जयेत् ।
एवं कृते न सन्देहो विद्वान् पुत्रोऽभिजायते ।।१९
रोगाःसर्वेक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ।।२९

इसके उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन करावे तथा विसर्जन करे । ऐसा करने से विद्वान पुत्र उत्पन्न होता है, इसमें सन्देह नहीं है । तथा सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें कुछ भी विचार नहीं करे । १९—२०।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तेईसवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



चतुर्विंश अध्याय

शिव उवाच

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि रौद्रनक्षत्रजं फलम् ।
येन कर्मविपाकेन मृत्युलोके च भुज्यते ॥१

शिव जी बोले— अब मैं आप से आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक के फल को कहता हूँ। जिन कर्म विपाक को वह मृत्युलोक में भोगता है ।१।

अवन्तीपुर्यां भो देवि । रङ्गकारश्च तिष्ठति ।
वस्त्राणि रङ्गयन्नित्यं स्वधर्मं पालयेत् सदा ॥२
कुबेर इति तन्नाम लीलानाम्नी च तत्प्रिया ।
पतिव्रता च सा देवि ! रङ्गकारस्च तां त्यजन् ॥३

हे देवि ! अवन्ती नगरी में एक रंगरेज था । वस्त्रों को रंगता हुआ वह स्व-धर्म पालन में रहता था । उसका नाम कुवेर था तथा उसकी पत्नी का नाम लीला था । उसकी पत्नी लीला पतिव्रता थी, रंगरेज ने किसी कारण से उसका परित्याग कर दिया ।२—३।

ब्राह्मणीं रमते चैकां पापप्रीतिं समुद्वहन् ।
त्यक्त्वा पतिव्रतां भार्यां ब्राह्मणीं प्रीतितोऽभवत् ॥४
द्रव्यं च सञ्चितं तेन रङ्गकारेण वै शिवे ! ।
भूमिमध्ये च तद्द्रव्यं कृतं तेन च सुन्दरि ! ॥५

अपनी पतिव्रता नारी का परित्याग कर वह रंगरेज एक ब्राह्मणी से प्रेम सम्बन्ध कर रमण करने लगा । उस रंगरेज ने काफी द्रव्य अर्जित किया, उसे उसने पृथ्वी में गाढ़ दिया ।४-५।

किञ्चिद्दत्तं कृतं तेन गङ्गायमुनासङ्गमे ।
मरणं तस्य वै जातं सा च भार्या विवाहिता ॥६
तत्पुरे च सती जाता लीलानाम पतिव्रता ।
सत्यलोकं गतः सोऽपि लक्षद्वयमितं प्रिये ! ॥७

उसने गंगा यमुना के संगम पर कुछ दान दिया था । उसका एवं उसकी पत्नी का थोड़े दिन बाद देहान्त हो गया । उसकी सती लीला पतिव्रता मरकर स्वर्ग गई एवं दो लाख वर्ष तक स्वर्ग भोगा ।६—७।

मन्त्रेणाऽनेन भो देवि ! दद्याद्विप्राय तद्द्वयम् ॥१६

हे सुमुखी ! पाँच पल स्वर्ण के सूर्य बनावे, दश पल के चन्द्रमा बनावे अथवा चांदी में चन्द्रमा बनावे, शास्त्रोक्त विधि से पूजा करे । निम्न लिखित मन्त्र से पूजा करके दोनों मूर्तियों को ब्राह्मण को दे दें ।१५–१६।

"ॐ ह्रीं मार्तण्डाय स्वाहा"

सूर्यदेव ! महाभाग ! त्रैलोक्यतिमिरापह ! ।
मम पूर्वकृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर ! ॥१७

"ॐ सोमाय स्वाहा"

ॐ सौम्यरूप ! महाभाग ! मन्त्रराज ! द्विजोत्तम ! ।
पूर्वजन्मकृतं पापमोषधीश ! क्षमस्व मे ॥१८

ॐ ह्रीं मार्तण्डाय स्वाहा' ये सूर्य मन्त्र है । हे सूर्य देव, हे महाभाग, तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करने वाले, जो मैंने पूर्व जन्म में पाप किये हैं उन्हें तुम क्षमा करो । ॐ सोमाय स्वाहा' ये चन्द्रमा का मन्त्र है । हे सौम्य रूप हे महाभाग, हे मन्त्रराज, हे द्विजोतम, हे औषधीश ! जो भी मैंने पूर्व जन्म में पाप किये हैं, उन्हें तुम क्षमा करो ।१७–१८।

ततश्च ब्राह्मणान्पूज्य भोजयित्वा विसर्जयेत् ।
एवं कृते न सन्देहो विद्वान् पुत्रोऽभिजायते ॥१९
रोगाःसर्वेक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥२९

इसके उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन करावे तथा विसर्जन करें । ऐसा करने से विद्वान पुत्र उत्पन्न होता है, इसमें सन्देह नहीं है । तथा सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें कुछ भी विचार नहीं करे । १९—२०।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में मृगाशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तेईसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



चतुर्विंश अध्याय

शिव उवाच

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि रौद्रनक्षत्रजं फलम् ।
येन कर्मविपाकेन मृत्युलोके च भुज्यते ॥१

शिव जी बोले—अब मैं आप से आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न हुए जातक के फल को कहता हूँ। जिन कर्म विपाक को वह मृत्युलोक में भोगता है।१।

अवन्तीपुर्यां भो देवि। रङ्गकारश्च तिष्ठति।
वस्त्राणि रङ्गयन्नित्यं स्वधर्मं पालयेत् सदा ॥२
कुबेर इति तन्नाम लीलानाम्नी च तत्प्रिया।
पतिव्रता च सा देवि! रङ्गकारस्च तां त्यजन् ॥३

हे देवि! अवन्ती नगरी में एक रंगरेज था। वस्त्रों को रंगता हुआ वह स्व-धर्म पालन में रहता था। उसका नाम कुवेर था तथा उसकी पत्नी का नाम लीला था। उसकी पत्नी लीला पतिव्रता थी, रंगरेज ने किसी कारण से उसका परित्याग कर दिया।२—३।

ब्राह्मणीं रमते चैकां पापप्रीतिं समुद्वहन् ।
त्यक्त्वा पतिव्रतां भार्यां ब्राह्मणीं प्रीतितोऽभवत् ॥४
द्रव्यं च सञ्चितं तेन रङ्गकारेण वै शिवे!।
भूमिमध्ये च तद्द्रव्यं कृतं तेन च सुन्दरि! ॥५

अपनी पतिव्रता नारी का परित्याग कर वह रंगरेज एक ब्राह्मणी से प्रेम सम्बन्ध कर रमण करने लगा। उस रंगरेज ने काफी द्रव्य अर्जित किया, उसे उसने पृथ्वी में गाढ़ दिया।४-५।

किञ्चिद्दानं कृतं तेन गङ्गायमुनासङ्गमे।
मरणं तस्य वै जातं सा च भार्या विवाहिता ॥६
तत्पुरे च सती जाता लीलानाम पतिव्रता।
सत्यलोकं गतः सोऽपि लक्षद्वयमितं प्रिये ! ॥७

उसने गंगा यमुना के संगम पर कुछ दान दिया था। उसका एवं उसकी पत्नी का थोड़े दिन बाद देहान्त हो गया। उसकी सती लीला पतिव्रता मरकर स्वर्ग गई एवं दो लाख वर्ष तक स्वर्ग भोगा।६—७।

पुनः पुण्यक्षये जाते मनुष्योऽभूत्तदा शिवे ! ।
मध्यलोके च विख्यातो धन-धान्यसमन्वितः ॥८
पुत्राश्च बहवो जातःकोऽपि तेषु न जीवति ।
शरीर च ज्वरोत्पत्तिः खंजत्वं चरणे तथा ॥६

हे शिवे ! पुण्यों के समाप्त हो जाने पर मानव योनि प्राप्त हुई। मध्य लोक में, धन-धान्य से सम्पन्न परिवार में जन्म हुआ अनेक उसके पुत्र हुए परन्तु कोई जीवित नहीं रहता था। शरीर में ज्वर एवं पैर से वह लंगड़ा था।८—६।

ब्राह्मणीगमनं देवि ! पूर्वजन्मनि वै कृतम् ।
तेन पापेन भो देवि ! पुत्रस्तस्य न जीवति ॥१०
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि तां शृणुष्व वरानने ! ।
दशायुतं जपेद्देवि ! गायत्री वेदमातरम् ॥११

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने ब्राह्मणी के साथ गमन किया था अतः उस पाप के कारण उसके पुत्र जीवित नहीं रहते थे। मैं उसकी शान्ति कहता हूँ। वेदमाता गायत्री का दश हजार जप करावे।१०—११।

हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ।
षडंशं चैव दानं वै दद्याद्वेदविदे शिवे ! ॥१२
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात्शर्कशपायसेन च ।
गामेकं विधिवद्दद्याद्धेमवर्णां सुभूषिताम् ॥१३
एवं कृते न सन्देहो बहुपुत्रश्च जायते ।
रोगस्यैव विमुक्तिः स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा ॥१४

उसके दशांश का हवन, तर्पण एवं मार्जन करावे। और वेदज्ञ ब्राह्मण को षडाँश दान दे। इसके बाद खीर-बूरा से ब्राह्मण भोजन करावे तथा हेमवर्णी, आभूषणों से सज्जित एक गाय दान दे। ऐसा करने से अनेक पुत्रों की प्राप्ति होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। तथा रोगों की भी समाप्ति हो जाती है।१२—१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में
रौद्र नक्षत्र (आर्द्रा) के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक चौवीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

पंचविंश अध्याय

शिव उवाच

श्रृणु देवि ! वरारोहे नृणां वै पूर्वजन्मनि ।
यत्कृतेन महाघोरे नरके परिपच्यते ॥१
अवन्ती पश्चिमे द्वारे वैश्यो वसति भाग्यवान् ।
धन-धान्यसमायुक्तः स्वधर्मनिरतः सदा ॥२

शिव जी बोले—हे देवि ! मानवों के पूर्व जन्म के मैं उन कार्मों को कहता हूँ जिनके कारण महान नरक की यातना सहनी पड़ती है। अवन्ती (उज्जैन) के पश्चिमी द्वार पर एक भाग्यवान धन धान्य से सम्पन्न, अपने धर्म में रत एक वैश्य रहता था ।१—२।

एवमर्द्धं वयो जातं दरिद्रत्वं ततोऽभवत् ।
व्ययाऽर्थं वैततौ देवि ! विप्रस्वर्णं गृहीतवान् ॥३
पलविंशप्रमाणं तद्व्ययं जातं वरानने ! ।
ततो वैश्यस्य मृत्युर्वं भार्यया सहितोऽभवत् ॥४

हे देवी ! आधी उम्र बीत जाने पर वह गरीब हो गया। उसने व्यय हेतु एक ब्राह्मण से सोना (स्वर्ण) लिया । बीस पल स्वर्ण समाप्त हो गया। उधर वैश्य की पत्नी सहित मृत्यु भी हो गई ।३—४।

स्वर्गं जातं ततो देवि ! नर्मदामरणादपि ।
षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गस्यैव फलं शुभम् ॥५
भुक्तं बहुविधं देवि ! भार्यया सहितेन वै ।
ततः पुण्यक्षये जाते पुनर्मर्त्यौ बभूवतुः ॥६

नर्वदा तट पर मृत्यु होने के कारण वह स्वर्ग गया । साठ हजार वर्ष तक स्वर्ग का शुभ फल पत्नी सहित भोगा। पुण्यों के क्षय हो जाने पर वह मनुष्य योनि में आया ।५—६।

धन-धान्यसमायुक्तौ पुत्रकन्याविवर्जितौ ।
रुग्णौदुर्बलगात्रौ च पूर्वकर्मफलेनतु ॥७

ऋणसम्बन्धतो देवि ! विप्रः पुत्रोऽभवत्तदा ।
ऋणं यावत्प्रमाणं वै गृहीतं पूर्वजन्मनि ॥८

वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ परन्तु पुत्र कन्याओं से रहित हुआ । पूर्व कर्म फल से वह रुग्ण एवं दुर्बल हुआ । ऋण सम्बन्ध के कारण वह ब्राह्मण पुत्र रूप में हुआ । जितना धन पूर्व जन्म में लिया था ।७—८।

तावन्मात्रं गृहीत्वा तु ततो वै मरणं भवेत् ।
पुनः पुत्रो न तस्यैव विंशद्वर्षे गते सति ॥९
तस्य दानं शृणुत्वादौ पूर्वपापक्षयो यतः ।
गृह वित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥१०

उतना धन लेकर उसकी (पुत्र की) मृत्यु हो गई । फिर बीस वर्ष तक उसके पुत्र नहीं हुआ अब मैं उस पूर्व पाप क्षय हेतु दान कहता हूँ, उसे सुनो । घर में संचित धन का आठवां भाग ब्राह्मण को दान दे ।९—१०।

स्वर्णपंचपलेनैव पुष्यं च मकराकृतम् ।
प्रदद्याद्वेद विदुषे पूर्वपापक्षयो भवेत् ॥११
गायत्र्याश्च जपं कुर्यात् लक्षमेकं वरानने ! ।
होमं च तद्दशांशेन मार्जनं च तथाविधम् ॥१२
गामेकां स्वर्ण शृङ्गी च वत्स-वस्त्रविभूषिताम् ।
दद्याद्वेदविदे देवि ! ब्राह्मणाय तदा भवेत् ॥१३
पुनः पुत्र प्रसूयेत नाऽत्र कार्या विचारणा ॥१४

पांच पल स्वर्ण का मकराकृत आभूषण बनावे, वेदज्ञ ब्राह्मण को दान दे ताकि पूर्व कृत पापों का क्षय हो सके । एक लाख गायत्री जाप करावे, उसके दशांश का होम एवं मार्जन विधिवत करावे । सोने के सींग वाली, बछड़े वाली, वस्त्रों से भूषित एक गाय वेदज्ञ ब्राह्मण को दें । तो फिर पुत्र की प्राप्ति हो, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।११—१४ ।

॥ इति श्री 'रौद्र नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित्त कथन' नामक पच्चीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



षड्विंश अध्याय

शिव उवाच

अवन्ती नगरी नाम्ना ततः कोशद्वयोपरि ।
अग्निकोणे महादेवि ! मङ्गलं नाम वै पुरम् ॥१
तस्मिन् ग्रामे वसत्येको ब्राह्मणो द्यूततत्परः ।
अन्ये तु बहवस्तत्र वसन्ति सुद्विजो मम ॥२

हे महादेवि ! अवन्ती नगरी से दो कोस दूरी पर अग्नि कोण में एक मंगलपुर नामक स्थान था। उस गाँव में एक जुआरी ब्राह्मण रहता था। अन्य भी अनेक श्रेष्ठ ब्राह्मण वहाँ रहते थे।१--२।

मद्यपानरतो नित्यं चौरविद्यासु तत्परः ।
परस्त्री लम्पटो देवि ! वेश्यायां निरतः सदा ॥३
प्रत्यहं स च भो देवि ! द्विजरूपो नराधमः ।
चौरत्वाद् द्रव्यमुत्पाद्य नैव दानं समाचरेत् ॥४
एवं बहुदिने याते तस्य मृत्युर्बभूव ह ।
नरके पातयामास यमदूतो यमाज्ञया ॥५

हे देवि ! वह ब्राह्मण मद्यपान, चोर कर्म, पर स्त्री गमन, वेश्या गमन में रहता था। उस द्विज रूप नराधम ने चोरी से बहुत धन प्राप्त किया परन्तु कभी दान नहीं किया बहुत दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। यम की आज्ञा से यमदूतों ने उसे नरक में डाल दिया।३--५।

सप्ततिर्वै सहस्राणि रौरवे परिपच्यते ।
महाकष्टं लभेद्देवि ! कृमिसूचीमुखादिभिः ॥६
पुनः कर्मवशाद्देवि ! नरकान्निर्गतो यदा ।
विडाल-काक-योनिं च तदा प्राप्तौ द्वयं हि च ॥७

सत्तर हजार वर्ष तक वह रौरव नरक में रहा। कृमि एवं सूई पीड़ा के महान् कष्ट उसने भोगे। कर्म वश जब नरक से बाहर आया तो पहिले बिलाव फिर काक योनि को उसने प्राप्त किया।६--७।

योनिद्वयभलं भुक्तं मनुष्यत्वं ततो लभेत् ।
मध्यदेशे वरारोहे ! ततः पीडा मत्यपि ॥८
वंशच्छेदो भवेद्देवि ! पूर्वकर्मविपाकतः ।
तस्योपरि विशालाक्षि ! शान्ति शृणु वरानने ! ॥९

दोनों योनियों को भोग उसने मानव योनि को प्राप्त किया फिर भी अनेक पीड़ा मिलीं । पूर्व कर्म पाप से वंमच्छेद हुआ । अब हे विशलाक्षि उसकी शान्ति सुनो ।८—९।

गायत्री-जातवेदाभ्यां त्र्यम्बकेण यथाविधि ।
जपं वै कारयामास हवनं तर्पणं तथा ॥१०
लक्षत्रयं जपेद्देवि ! पूर्वपापविशुद्धये ।
ततो वै पूजयेद्देवि ! तुलसी विष्णुरूपिणीम् ॥११

गायत्री, 'जात वेद से' मन्त्र, त्र्यम्वक, मन्त्र के यथा विधि जप कराये, यथा-विधि हवन, तर्पण कराये । पूर्व पाप शुद्धि हेतु तीन लाख जप कराये फिर विष्णु स्वरूपिणी तुलसी की पूजन करे ।१०—११।

पूजयेद्विविधैश्चाऽन्यैर्धूपनैवेद्य-दीपकैः ।
भूमिदानं ततो देवि यथाशक्ति प्रदापयेत् ॥१२
एवं कृते महादेवि ! सर्वरोगक्षयो भवेत् ।
पुत्रश्च जायते देवि ! वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ॥१३

विविध अन्न, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करे तथा यथा शक्ति भूमिदान करे । हे महादेवि ! ऐसा करने से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं । पुत्र की प्राप्ति होती है तथा वांझपन भी छूट जाता है ।१२—१३।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'रौद्र नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक छब्बीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



सप्तविंश अध्याय

शिव उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि चतुर्थचरणं शिवे ! ।
कृतं नरेण यद्देवि ! पूर्वजन्मनि किल्विषम् ॥१

शिव जी बोले—हे शिवे ! अब मैं आपको आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए जातक के पूर्व जन्म के पापों के बारे में कहता हूँ ।१।

अवन्तिपुर्यामवासीत् शुद्र एको महाधनः ।
विक्रयं क्रियते छागमेषयोगृहवासिनः ॥२
गजमश्वं तथा रत्नं वस्त्राणि विविधानि च ।
एकदा सूर्यग्रहणं दृष्टं तेन वरानने ! ॥३

अवन्तीपुरी में एक धनवान शुद्र रहता था । घर पर रहकर ही वह बकरी एवं भेड़ों का, हाथी और घोड़ों का, रत्नों और वस्त्रों का व्यापार किया करता था। एक बार उसने सूर्य ग्रहण देखा ।२—३।

गोसहस्त्रं कृतं दानं भार्यया सहितेन वै ।
नर्मदायां विशालाक्षि ! स्वर्णवस्त्रयुतं तथा ॥४
तत्रैव चाऽभवत् पीडा मृत्युलोकसमुद्भवा ।
स्वर्णकारस्य वै द्रव्यं व्यवहारनिमित्तकम् ॥५

उसने पत्नी के साथ स्वर्ण एवं वस्त्रों से भूषित हजारों गायों का दान नर्वदा नदी के किनारे दिया । वहीं उसे पीड़ा हुई । व्यवहार के लिये उसने एक स्वर्णकार का धन लिया ।४—५।

गृहीतं चैव नो दत्तं ततः शृणु वरानने ।
ततो बहुगते काले शूद्रस्य मरणं ह्यभूत् ॥६
ततोऽसौ नरके घोरे वर्षलक्षद्वयं तथा ।
तत्रैव बहुधा पीडां मुक्त्वा चैव स्वकर्मतः ॥७
पुनर्जातो मर्त्यलोके काकश्च महिषो वकः ।
मानुषत्वं ततो देवि ! कुले महति वै शुभे ॥८

हे सुमुखी ! उसने धन ले लिया परन्तु दिया नहीं, बहुत समय बाद उस शूद्र की मृत्यु हो गई। अपने कर्मानुसार दो लाख वर्ष तक, स्वकर्मानुसार घोर नरक यातना सही। फिर मृत्यु लोक में जन्म हुआ। काक योनि, फिर महर्षि योनि फिर बक योनि मिली। इसके बाद श्रेष्ठ कुल में मानव शरीर मिला।६—८।

युवारूपो यदा जातो व्याधिग्रस्ततनुस्तदा ।
देहार्द्धं वातरोगश्च पुत्रस्य मरणं ततः ॥९
स्वर्णकारस्य द्रव्यं वै गृहीतं पूर्वजन्मनि ।
न दत्तं वै ऋणं देवि !, पुत्रस्य मरणं ततः ॥१०

जब वह युवक हुआ तो शरीर में अनेक व्याधियां लग गईं। आधे शरीर में वात रोग एवं बाद में पुत्र की मृत्यु हो गई। पूर्व जन्म में स्वर्णकार का धन लेकर न देने के कारण उसके पुत्र की मृत्यु हो गई।९—१०।

भार्याद्वयसमायुक्त एका प्रीतिमती भवेत् ।
पूर्वजन्मनि यत्कर्म पुण्यं पापं शरीरतः ॥११
मृत्युलोके मनुष्येण भुज्यते नाऽत्र संशयः ।
अथातः संप्रवक्ष्यामि पापनिग्रहहेतवे ॥१२

उसके दो पत्नियां थीं। उनमें से एक विशेष प्रेम करती थी। पूर्व जन्म में शरीर से जो कर्म पाप एवं पुण्य होता है, मृत्यु लोक में मनुष्य के द्वारा भोगना पड़ता है, इसमें संशय नहीं है। अब मैं तुमसे पाप का निग्रह कहता हूँ।११—१२।

गायत्रीलक्षजाप्येन हरिवंशश्रुतेन च ।
रथाऽश्व-वस्त्रदानेन ग्रामदानेन वै तथा ॥१३
तिलधेनुप्रदानेन सर्वपापक्षयो भवेत् ।
स्वर्णमुद्रासहस्रस्य प्रतिमां कारयेत् बुधः ॥१४

एक लाख गायत्री का जप से एवं हरिवंश के सुनने से, रथ अश्व, वस्त्र एवं गांव दान करने से, तिल, एवं गाय के दान से सारे पाप समाप्त हो जाते हैं। हजार स्वर्ण मुद्राओं की प्रतिमा बनावे।१३—१४।

पूर्वोक्तेन विधानेन पूजयित्वा प्रदापयेत् ।
पार्थिवं पूजयेत्शम्भुं तथा गोमयनिर्मितम् ॥१५

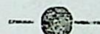
प्रक्षत्रयं प्रमाणं च पञ्चगव्येन पूजयेत् ।
पञ्चामृतेन भो देवि ! गोदुग्धेनेव पूजयेत् ॥१६

पूर्वोक्त विधान से प्रतिमा पूजन करे, गोमय के शिव का पूजन करे। तीन लाख के प्रमाण का पंच गव्य से, पंचामृत से एवं गो दुग्ध से पूजन करे।१५—१६।

तथा च विविधैर्मन्त्रैः षडङ्गैर्वेदसम्भवैः ।
मुच्यतेऽर्द्धाङ्गरोगेण नाऽत्रकार्या विचारणा ॥१७
बन्ध्यात्वं प्रशमं याति लभेत्पुत्रं न संशय ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरजीविनमुत्तमम् ॥१८

वेदोक्त मन्त्रों से पूजा करे तो अर्द्धांग रोग से मुक्ति मिलती है इसमें कोई संशय नहीं है। बन्ध्यापन समाप्त हो जाता है निःसन्देह पुत्र प्राप्ति होती है। मृतवत्सा को भी चिरंजीव पुत्र प्राप्त होता है।१७–१८।

कर्म विपाक संहिता में रौद्र नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक सत्ताईसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



अष्टाविंश अध्याय

शिव उवाच

ये नराश्च परद्रव्यं हरन्ति सततं प्रिये ! ।
ते नरादुःखिता यान्ति रोगेण च प्रपीडिताः ॥१
ऋणं यस्य गृहीतं वै तत्ऋणं न ददाति च ।
ऋणसम्बन्धतो देवि ! पुत्रो भवति दारुणः ॥२
गृहीतद्रव्यं वै भग्नं धातुभग्नस्तथा नरः ।
कन्याघातात्तु पूर्वं हि फलं भवति तादृशम् ॥३

शिव जी बोले—हे प्रिये ! जो मनुष्य सदैव दूसरे के धन का हरण करते हैं, वे दुःखी होते हैं और रोग से पीड़ित होते हैं। जिससे ऋण ले और उसे लौटाकर न दे तो इस ऋण सम्बन्ध से दुःखदायी पुत्र उत्पन्न होता है। संचित सम्पूर्ण धन नष्ट हो जाय, धातु क्षीणता का रोग हो तो पूर्व जन्म में कन्या का घात किया हो, उसका फल वैसा ही होता है।१—३।

अवन्तीपुरतो देवि ! ख्यातं चैव सुशोभनम् ।
कोशमात्रं ततो देवि ! चोत्तरे नगरे तथा ॥४
वसन्तपुरित्याख्याते वसन्ति बहवो जनाः ।
नाम्ना तन्मध्य आभीरो नन्दनो वसति प्रिये ! ॥५

हे देवि ! सुन्दर प्रसिद्ध अवन्ती नगरी से एक कोस दूरी पर उत्तर दिशा में वसन्तपुर नामक एक नगर था वहाँ बहुत से मनुष्य रहते थे। वहाँ एक नन्दन नामक अहीर था।४—५।

तस्य भार्या तु विख्याता नाम्ना वै सुन्दरी प्रिये !।
सर्वथा च महादेवि ! कृपणः सह भार्यया ॥६
मित्रं तस्य महादेवि ! ब्राह्मणो वेदपारगः ।
स तिष्ठति पुरीमध्ये धनं तस्य स्थितं बहु ॥७

हे प्रिये ! उसकी पत्नी 'सुन्दरी' नाम से प्रसिद्ध थी। वे पति-पत्नी बड़े कंजूस थे। उसका मित्र वेदों का पंडित एक ब्राह्मण था। वह उस नगरी में रहता था, उसके पास बहुत धन था।६—७।

प्रत्यहं च परान्नेन भोजनं कुरुते स तु ।
यदा बृद्धत्वमायातः पुरी चैव तदाऽत्यजत् ॥८
आगतो मित्रपार्श्वे वै वसन्ते व पुरे शुभे ।
आभीरेण गृहे वासं मित्रत्वाद्दत्तवान् स्वयम् ॥९

वह सदैव परान्न खाता था। जब बुढ़ापा आया तो वह नगर उसने छोड़ दिया। वह मित्र के पास वसन्तपुर में आ गया। अहीर ने मित्र होने के कारण अपने ही घर में उसे वास दिया।८—९।

बहुकालमवात्सीत्स तत्प्रीत्या सुरसुन्दरि ! ।
आभीरस्तु ततो देवि ! स्वर्णं दृष्ट्वा प्रहर्षित ॥१०
तस्य स्वर्णं समाहृत्य स्वगृहे स्थापितं तदा ।
ब्राह्मणेन महत्कष्टं कृतं द्रव्यस्य शोकतः ॥११
महाशोकसमायुक्तः काश्यां चैव समागतः ।
शरीरं चापि तत्याज स्वर्णशोकेन वै द्विजः ॥१२

हे देवि, सुन्दरि ! उसके प्रेम के कारण वह बहुत दिन तक वहाँ रहा। अहीर उसके धन को देखकर बड़ा सन्त हुआ। उसके स्वर्ण को लेकर उसने घर में रख लिया। ब्राह्मण ने उस धन के लिए बड़ा कष्ट एवं शोक किया। महाशोकाकुल हो वह काशी आया, उस स्वर्ण के शोक में उसने शरीर त्याग दिया।१०—१२।

शूद्रेणव महादेवि ! तस्य स्वर्णं प्रभुज्यते ।
ततो बहुगते काले मरणं तस्य चाऽभवत् ।।१३
नरके पातयामासुर्यमदूता यमाज्ञया ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।।१४

हे महादेवि ! शूद्र भी उस स्वर्ण का उपभोग करता, बहुत समय बाद उसका मरण हो गया। यम की आज्ञा से यमदूतों ने नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक नरक यातना को उसने भोगा।१३--१४।

ततस्तेन तु प्रेतत्वं भुक्तमब्दसहस्रकम् ।
उलूकत्वं वरारोहे ! कौशिक्या निकटे ततः ।१५

इसके बाद हजार वर्ष तक वह प्रेत योनि में रहा। इसके बाद कौशिकी नदी के किनारे वह उल्लू बना।१५।

सरयू उत्तरे कूले मानुषत्वं ततोऽभवत् ।
मध्यदेशे च भो देवि ! पत्न्या सह वरानने ।।१६
धन-धान्यसमायुक्तो राजसेवासु तत्परः ।
जातः पुनर्वसोर्देवि ! प्रथमे चरणे खलु ।।१७

हे देवि ! इसके उपरान्त सरयू के उत्तरी तट पर मानव योनि में आया। मध्यदेश में पत्नी के साथ रहते। धन धान्य से युक्त वह राज सेवा में रत रहता। उसका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ था।१६—१७।

पूर्वजन्मनि भो देवि ! यतो गोशतमदात्सः ।
भूपतित्वं ततो देवि ! धनढ्यत्वं भवेत् खलु ।।१८
ब्राह्मणस्य हृतं स्वर्णं स्वयं चौर्येण यत्पुरा ।
तेन पापेन भो देवि ! पुत्रस्य मरणं खलु ।।१९

पूर्व जन्म में उसने सौ गायों का दान दिया था अतः वह धन धान्य से संपन्न

राजा हुआ। चोरी से जो ब्राह्मण का स्वर्ण चुराया था, उसके पाप से पुत्र का मरण हुआ।१८—१९।

तस्य शान्तिं प्रवक्ष्यामि तत्सर्वं शृणु पार्वति ! ।
गृहवित्ताष्टमं भागैः पुण्यकार्यं च कारेत् ॥२०
गायत्रीजातवेदाभ्यां याः फलेति तथा प्रिये ! ।
लक्षत्रयं जपं कुर्याद्दशांशहवनं ततः ॥२१

हे पार्वती ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ, सो सुनो। घर के धन में से आठवां भाग पुण्य कार्यों में लगाये ! गायत्री मन्त्र, 'जात वेद से मन्त्र या 'फला' मंत्र के तीन लाख जप करावे दशांश का हवन करे।२०—२१।

तर्पणं मार्जनं चैव दशांशः क्रमतस्तथा ।
हरिवंशस्य श्रवणं चण्डिकार्चनमेव च ॥२२
शिवार्चनमशेषेण वापिकां चैव कारयेत् ।
कूपं चैव तडागं च पथि मध्ये कारयेत् ॥२३

दशांश क्रम से तर्पण एवं मार्जन करे। हरिवंश पुराण का श्रवण करे, चंडिका का अर्चन करे। शिवार्चन करे, मार्ग में कूआ, तालाब एवं बावड़ी बनवावे।२२-२३।

कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ।
गंगामध्ये प्रदातव्यं शनौ चाऽश्वत्थपूजनम् ॥२४
पलसप्तदशेनैव प्रतिमां कारयेद् बुधः ।
चतुष्कोणगतां वेदीं रौप्यैर्दशपलान्वितैः ॥२५

कंचन रत्नों से युक्त पेठा एवं नारियल का दान गंगा के बीच में करे तथा शनिवार को पीपल का पूजन करे। सत्रह पल स्वर्ण की प्रतिमा बनवावे, दशपल चांदी की चतुष्कोण वेदी बनवावे।२४—२५।

तन्मध्ये प्रतिमां स्थाप्य सपुत्रस्य द्विजस्य तु ।
पूजां कुर्यात्त वै भक्तयामन्त्रेणानेन वै शिवे ! ॥२६
वासुदेवादिदशभिर्मन्त्रैरेभिः पृथक् पृथक् ।
पूजयेत्प्रतिमां तां तु ततो दद्याद् द्विजन्मने ॥२७

हे शिवे ! उसके बीच में पुत्र सहित ब्राह्मण की प्रतिमा स्थापित करे। इस

मंत्र से भक्ति युक्त ही पूजा करे। वासुदेव आदि के दश मन्त्रों से अलग-अलग प्रतिमा का पूजन करे और श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे।२६—२७।

पूजयेद्देवदेवेशं सर्वपापात्प्रमुक्तये।
ततः सम्प्रार्थ्य देवेशं शंखचक्रगदाधरम् ॥२८
पीताम्बरं चतुर्बाहुं पुण्डरीकनिभेक्षणम्।
वासुदेवं जगन्नाथं धराधर गुरो! हरे! ॥२९

सभी पापों के उद्धार हेतु देवदेवेश का पूजन करे। फिर शंख चक्र धरी गदाधर प्रभु की प्रार्थना करे। हे पीताम्बर! चार भुजा वाले, कमलनयन, वासुदेव, जगन्नाथ धराधर, गुरु, हे हरि।२८—२९।

मम पूर्वकृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर!।
ततो गां कपिलां दद्यात्स्वर्ण शृङ्गीं सनूपुराम् ॥३०
विधिवद्वेदविदुषे ब्राह्मणाय तपस्विने।
दशवर्णास्ततो दद्यात् ब्राह्मणान् भोजयेततः ॥३१

हे परमेश्वर! मेरे पूर्वकृत पापों को क्षमा करो। फिर नूपुरों एवं सोने के सींगों से युक्त दशवर्णी गाय को विद्वान् ब्राह्मण को विधिवत् दान में दे। इसके उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन करावे।३०—३१।

भूमिदानं ततो दद्याद्विप्राय विदुषे ततः।
एवं कृते न सन्देहः पूर्वपापं विनश्यति ॥३२
सन्तानो जायते देवि! रोगाणां संक्षयस्ततः।
कन्यका नैव जायन्ते वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ॥३३

फिर विद्वान् ब्राह्मण के लिए भूमिदान दे। ऐसा करने से सभी पूर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। सन्तान होती है रोगों का नाश होता है, कन्या कभी उत्पन्न नहीं होतीं एवं वंध्यापन समाप्त हो जाता है।३२—३३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पुनर्वसु नक्षत्र के
प्रथम चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक
अट्ठाईसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—○—

एकोनत्रिंश अध्याय

शिव उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि यत्कृतं पूर्वजन्मनि ।
अवन्तीपुरतो देवि ! पूर्वं कोश प्रमाणतः ॥१
लक्ष्मणस्य पुर ख्यातं तत्रैव बहवो जनाः ।
वसन्ति वैष्णवाः सर्वे वेदकर्मविचक्षणाः ॥२

हे देवि ! पूर्व जन्म में जो किया है, उसके सम्बन्ध में मैं कहता हूँ । अवन्तीपुरी के पूर्व में एक कोस की दूरी पर एक प्रसिद्ध नगर लक्ष्मणपुर है । वहाँ अनेक वैष्णव, वेदज्ञ रहते थे ।१—२।

स्वर्णकारो वसत्येकः स्वकर्मनिरतः सदा ।
दामोदर इति ख्यातस्तस्य पत्नी प्रभावती ॥३
विष्णुभक्तिरतः शान्तः सज्जनानां च सेवकः ।
पत्नी पतिव्रता तस्य पतिशुश्रूषणे रता ॥४

वहाँ एक दामोदर नामक स्वर्णकार, अपने कार्य में रत रहा करता था उसकी पत्नी का नाम प्रभावती था । वह विष्णुभक्त, शान्त एवं सज्जनों का सेवक था उसकी पत्नी पतिव्रता एवं पति सेवा परायण थी। ३—४।

तस्य पुत्रद्वयं जातं गुणज्ञं पितृसेवकम् ।
एका च वल्लवी तत्र निवासःय तदाऽऽगता ॥५
पुत्रद्वयसमायुक्ता बहुगोधनसंयुता ।
एको द्यूतरतः पुत्रो द्वितीयश्चौरसम्मतः ॥६

उस स्वर्णकार के दो पुत्र गुणज्ञ एवं पितृ सेवा परायण थे। वहाँ एक वल्लवी (अहीर-स्त्री) निवास हेतु आई । उसके दो पुत्र थे तथा बहुत-सा धन एवं गायें उसके पास थीं । उन पुत्रों में एक जुआरी एवं दूसरा चोर था ।५-६।

उपार्जितां महिषीस्वं गोधनं बहुधा तथा ।
चौर-द्यूतोपचाराभ्यां धनाढ्यत्वमजायत् ॥७

उसने बहुत-सी भैंसें एवं गायें एकत्र कीं, चोरी एवं जुए से वह धनाढ्य हो गया ।७।

दुग्धादिकं महादेवि ! भुज्यते प्रत्यहं तथा ।
स्वर्णकारो महाद्रव्याआहीरीं सर्वसंयुताम् ॥८
आनीतवान् स्वगेहे तां तदा च वरवर्णिनीम् ।
ततो बहुगते काले महामारीज्वरादिना ॥९
पुत्राभ्यां सममद्राक्षीद्बल्लव्या मरणं तदा ।
द्रव्यं तस्यास्तदा देवि ! स्वर्णकारो गृहीतवान् ॥१०

हे महा देवि ! वह नित्व प्रति दूध आदि का उपयोग करता । वह स्वर्णकार धन सम्पन्ना उस अहीरिन को अपने घर ले आया । । बहुत समय बाद हमारी एवं ज्वर का प्रकोप हुआ तब उसके दोनों पुत्रों एवं अहीरिन का मरण हो गया तब उस सुनार ने उस अहीरिन का धन ले लिया ।८-१०।

भुक्तं द्रव्यं च तत्सर्वं यावत्तिष्ठति भूतले ।
भार्यया सह पुत्राभ्यां महिषीगोधनादिकम् ॥११
ततो वयोत्तरे देवि ! मृत्युस्तस्याभवत्किल ।
पत्नी तस्य मृता साध्वी ताभ्यां स्वर्गमभूत्पुरा ॥१२
पञ्चवर्षसहस्राणि स्वर्गे सुखमजीजनत् ।
पुनः पुण्यक्षये जाते मानुषत्वं भवेद्भुवि ॥१३

जब तक वह पृथ्वी पर रहा उसके धन, भैंस एवं गायों का उसने उपयोग किया । आयु समाप्त होने पर उसकी मृत्यु हो गई । उसकी साध्वी पत्नी भी मर गई । उन दोनों को स्वर्ग मिला । पाँच हजार वर्ष तक स्वर्ग में सुख प्राप्त किया फिर पुण्यों की समाप्ति पर मानव योनि मिली ।१२-१३।

अयोध्यानगरीद्देवि ! सरयू उत्तरे तटे ।
कोशद्वये विशालाक्षि ! पुरे देहलसंज्ञके ॥१४
स्वकर्मनिरतः प्राज्ञः स्वविद्यार्थां विचक्षणः ।
स्वदेशे चैव विख्यातः शत्रूणां च विमर्दनः ॥१५

हे देव ! अयोध्या नगरी से दो कोस की दूरी पर, सरयू के उत्तरी तट पर देहल नामक एक गाँव में, स्वकर्मरत, विद्वान्, अपनी विद्या में प्रवीण अपने देश में प्रसिद्ध, शत्रुओं का विनाश करने वाला एक व्यक्ति था ।१४-१५।

पुनर्विवाहिता पत्नी साध्वी या पूर्वजन्मनि ।
तस्य नेत्रे विशालाक्षि ! पूर्वजन्मफलाद्गते ॥१६
बाल्ये चैव तु पुत्रस्य नेत्रं वामं प्रणाशितम् ।
तेन पापेन भो देवि गतं नेत्रद्वयं शिवे ! ॥१७

हे विशालाक्षि ! पूर्व जन्म की साध्वी पत्नी से इसका विवाह हो गया पूर्व जन्म के फल से उसके नेत्र नष्ट हो गये । बचपन में पुत्र की बायीं आंख उसने नष्ट की, अतः इसके दोनों नेत्र नष्ट हो गये ।१६—१७।

भक्षितं तस्य तत्स्वर्णं न दत्तं ब्राह्मणाय वै ।
तेन पापेन भो देवि ! मृतः पुत्रो वरःशुभे ! ॥१८
मित्रसम्बन्धतः पापात् पुत्रपौत्रद्वयं मृतम् ।
पूर्वजन्मकृतं देवि शुभाशुभफलं तथा ॥१९
भुज्यते प्राणिभिः सर्वैस्तथा देवि विशेषतः ।
म्लेच्छसेवारतो नित्यं म्लेच्छस्यैव च सङ्गतिः ॥२०

उसने उसका स्वर्ण ले लिया, ब्राह्मण को उसमें से नहीं दिया उस पाप से उसके श्रेष्ठ पुत्र की मृत्यु हो गई । मित्र सम्बन्धी पाप के कारण पुत्र-पौत्र दोनों मर गये । पूर्व जन्म में किये गये शुभ-अशुभ फल इस जन्म में भोगने पड़ते हैं । वह म्लेच्छों की सेवा करता एवं म्लेच्छों की संगति में रहता ।१८—२०।

कुमार्गतो भवेद्देवि ! मर्त्यलोके जनिर्यदा ।
शान्तिं शृणुमहादेवि ! पूर्वपापप्रणाशिनीम् ॥२१

हे देवि ! कुमार्ग से जब वह मृत्यु लोक में उत्पन्न हुआ हे महादेवि अब तुम पूर्व पापों का शासन करने वाली शान्ति को सुनो ।२१।

गृहवित्ताष्टमैर्भागैः पुण्यकार्यं च कारयेत् ! ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां वाः त्र्यम्बकेण वा ॥२२
विष्णोरराट् मन्त्रेण जपं वै कारयेत् तथा ।
पञ्चलक्षप्रमाणेन यथा पापं प्रणश्यति ॥२३

घर में स्थित धन के आठवें भाग को पुण्य कार्य में लगाये । गायत्री मन्त्र या जात वेद से या त्र्यबकं का या विष्णोरराट मन्त्र पाँच लाख जप कराये तो सभी पाप नष्ट होते हैं ।२२—२३।

होमं वै कारयेद्देवि ! दशांशं विधिपूर्वकम् ।
ततो वै तर्पणं कुर्यात्मार्जनं तु विशेषतः ॥२४
प्रतिमां कारयेत्तद्विद्विष्णोश्चैव सदाशिवे ! ।
अष्टादशपलस्यैव सुवर्णस्य हरिं विभुम् ॥२५
तद्वद्वेव शिवस्यैव रजतस्य परं विभुम् ।
प्रतिमां पूजयेद्देवि ! मन्त्रेणाऽनेन सुव्रते ! ॥२६

हे देवि ! विधि पूर्वक दशांश का हवन करें, तर्पण एवं मार्जन करे। १८ पल सोने की भगवान् विष्णु की मूर्ति बनवावे; १८ पल चांदी की शंकर जी की मूर्ति बनवावे और इन मन्त्रों से उनकी पूजा करे।।२४—२६।।

ॐ गरुडध्वज ! देवेश ! चराचरगुरो ! हरे ! ।
वासुदेव ! जगन्नाथ ! पूर्वपापं विनाशय ॥२७
ॐ नन्दिकेश्वर ! भूतेश ! देवदेव सुरेश्वर ! ।
मम पूजां गृहाण त्वं पूर्वपापं प्रणाशय ॥२८

हे गरूड़ ध्वज, देवेश, चर अचर के गुरु, हे हरि, हे वासुदेव, हे जगन्नाथ ! मेरे पूर्व पापों को नष्ट करो।

हे नन्दीश्वर, हे भूतों के स्वामी, देवाधिदेव, सुरेश्वर, मेरी पूजा को ग्रहण करो तथा मेरे पूर्व पापों को नष्ट करो ॥२७-२८।

ततः इन्द्रादि-दशदिक्पालान् पूजयेत् ।
ॐ इन्द्राय नमः १ ॥ ॐ अग्नये नमः २ ॥
ॐ यमाय नमः ३ ॥ ॐ नैर्ऋतये नमः ४ ॥
ॐ वरुणाय नमः ५ ॥ ॐ वायवे नमः ६ ॥
ॐ कुबेराय नमः ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ८ ॥
ॐ ब्रह्मणे नमः ९ ॥ ॐ अनन्ताय नमः १० ॥
गन्ध-पुष्पा-ऽक्षतै सर्वान् पूजयेत् पृथक्-पृथक् ॥
ततो गां कपिलां देवि ! स्वर्णश्रृङ्गीं प्रपूजयेत् ॥२९

इसके उपरान्त इन्द्रादि दशदिक्पालों की पूजा करे—इन्द्र को नमस्कार है, अग्नि को, यम को, नैऋृत को, वरुण को नमस्कार है। वायु को, कुबेर को, ईशान

को, ब्रह्मा को, अनन्त को नमस्कार है। 'गन्ध पुष्प एवं अक्षतों से' उपर्युक्त सभी देवों की अलग-अलग पूजा करे फिर सोने की सींग वाली, गाय की पूजा करे।२९।

मन्त्रेणानेन भो देवि ! सर्वपापहरां शुभाम् ।
ॐनमोभगवते कामेश्वर्यै मम पापं व्यपोहतुस्वाहा ।।
पुरा मम कृतं पापं कामधेनो ! सुरेश्वरि ! ।
कपिले ! त्वं जगन्मातरमम कार्यं प्रसाधय ।।३०

इस मन्त्र से गाय की पूजा करे—हे सारे पापों को दूर करने वाली, शुभ कामधेनु, हे भगवती, कामेश्वरी, मेरे पापों को दूर करो, हे सुरेश्वरी, मेरे पापों को नष्ट करो। हे कपिला ! तुम जगत माता हो, मेरे कार्यों को सिद्ध करो।३०।

ततश्च दद्यात्गां देवि ! ब्राह्मणाय शिवात्मने ।
दशवर्णास्ततो दद्यात् पात्राणि विविधानि च ।।३१
वृषभं च ततो देवि ! नीलवर्णं सुसंस्कृतम् ।
ब्राह्मणाय, प्रदद्यात्तु सर्वपापस्य संक्षयः ।।३२

हे देवि ! इसके उपरान्त उस गाय को शिव भक्त किसी ब्राह्मण को दे और अनेक प्रकार के पात्र भी प्रदान करे। इसके उपरान्त नील वर्णी बैल, उसके समस्त संस्कार करके, सारे पापों को दूर करने के लिए ब्राह्मण को दे।३१-३२।

पूजयेद्विविधंरत्नैः पायसैश्च समोदकैः ।
ब्राह्मणान्शत संख्यकान् रुद्रविष्णुस्वरूपिणः ।।३३
प्रतिमां दापयेत् पश्चाद् ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणाम् ।
बन्धुभिः सह भुञ्जीत ततो विप्रविसर्जनम् ।।३४

फिर रुद्र एवं विष्णु स्वरूप सौ ब्राह्मणों को, लड्डू, खीर एवं अनेक पकवानों से युक्त भोजन करावे। फिर उस प्रतिमा को ब्राह्मणों को दे, ब्राह्मणों को दक्षिणा दे। बन्धु-बान्धवों सहित भोजन कर, ब्राह्मणों का विसर्जन करे।३३-३४।

यथाशक्त्या प्रदद्याद्वै ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणाम् ।
हरिवंशस्य श्रवणं पार्थिवस्य च पूजनम् ।।३५
भूमिदानं विशेषेण ब्राह्मणाय च दापयेत् ।
एवं कृते वरारोहे ! पूर्वजन्मसमुद्भवम् ।।३६

पापं प्रशमयेत्शीघ्रं मम वाक्यं च नाऽन्यथा ।
रोगादिविविधं दुःखं तत्सर्वं विलयं व्रजेत् ॥३७
वंशवृद्धिर्भवेद्देवि ! नाऽत्र कार्या विचारणा ॥३८

यथा शक्ति ब्राह्मणों को दक्षिणा दे, हरिवंश पुराण का श्रवण करे, शंङ्करजी की पूजा करे। ब्राह्मण को भूमि दान दे, ऐसा करने से हे पार्वती जी ! पूर्व जन्म के पाप शान्त हो जाते हैं। मेरी बात मिथ्या नहीं है ? रोगादि दुःख भी शीघ्र समाप्त हो जाते हैं। वंश की वृद्धि होती है। इन कार्यों में सन्देह की आवश्यकता नहीं है।३५-३८।

इति श्री 'पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन" नामक उन्तीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



त्रिंश अध्याय

शिव उवाच

पूर्याअवन्तिकायां वै नापितो वसति प्रिये ! ।
स्वकर्मणः परिभ्रष्टः कृषिकर्मरतः सदा ॥१
पत्नी तस्य महादेवि ! परपुंसि रता सदा ।
कर्कशा नाम विख्याता दर्दुरा नाम नामतः ॥२

शिवजी बोले-- हे प्रिये ! अवन्ती नगरी में एक नाई अपने कर्म को छोड़कर खेती का कार्य करता था। उसकी पत्नी बड़ी कर्कशा थी, उसका नाम दर्दुरा था, वह पर पुरुष में रत थी।१-२।

एकस्मिन् दिवसे ! देवि ! वैश्यो धनसमन्वितः ।
स्वर्णकोटिं च संगृह्य निकटे तस्य आगतः ॥३
नापितेन ततो देवि ! वैश्यो धनसमन्वितः ।
अर्द्धरात्रे गते काले ततः खड्गेन वै हतः ॥४

हे देवि ! एक बार धनिक वैश्य करोड़ों का स्वर्ण ले उसके पास आया। तब उस धन सम्पन्न वैश्य को, अर्द्ध रात्रि के समय नाई ने तलवार से मार दिया।३-४।

द्रव्यं सर्वं गृहीत्वा तु तां पुरीं च ततस्त्यजत् ।
सर्वं स्वर्णं व्ययीकृत्यं न दानं च कृतं क्वचित् ॥५

सारे धन को लेकर उसने उस पुरी को त्याग दिया। स्वर्ण को उसने व्यय कर दिया उसमें से दान नहीं किया ।५।

एकदा समये देवि ! नापितेन सह स्त्रिया ।
प्रयागे मकरे मासि मासमेकं निरन्तरम् ॥६
प्रत्यहं क्रियते स्नानं प्रातःकाले सदाशिवे ! ।
गोदानं च कृतं तेन वृषभं स्वर्ण भूषितम् ॥ ७

हे देवि ! एक बार उस नाई ने अपनी स्त्री के साथ माघ मास में प्रयाग में निरन्तर प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान किया। गोदान भी किया, स्वर्ण भूषित बैल भी दिया ।६-७।

ततो वै मरणं तस्य नापितस्य सुरेश्वरि ! ।
निर्जले तस्य भो देवि ! चोत्पले पथिमध्यगे ॥८
यमदूतैर्महादेवि ! नरके नामकर्दमे ।
क्षिप्तो यमाज्ञया वर्षं सहस्रं षष्टिसम्मितम् ॥९
नरकान्निर्गतो देवि ! व्याघ्रयोनिस्ततोऽभवत् ।
पुनर्महिषयोनिं च मानुषत्वं ततो गतः ॥१०

हे सुरेश्वरि ! इसके उपरान्त उस नाई की मृत्यु मार्ग में, जल हीन स्थान में हो गया। यमदूतों ने उसे कर्दम नामक नरक में यम की आज्ञा से साठ हजार वर्ष के लिये डाल दिया। नरक से निकल कर उस व्याघ्र की योनि मिली, फिर भैंसे की योनि और इसके बाद मानव योनि प्राप्त हुई ।८-१०।

ऋक्षे पुनर्वसो देवि । तृतीयचरणे वरे ।
प्रातः स्नानफलं देवि ! नृपवंशसमुद्भवम् ॥११

हे देवि ! प्रयाग स्नान के कारण, पुनर्वसु के तृतीय चरण में उसका जन्म राजवंश में हुआ ।११।

मध्यदेशे वरारोहे सरयू उत्तरे तटे ।
महाधनेन संयुक्तश्चौराणां कर्मकारकः ॥१२

पत्नी तस्य भवेद् वन्ध्या मृतवत्सा सुतायुता ।
कफरोगसमायुक्ता ज्वरेणैव प्रपीडिता ॥१३

हे वरारोहे ! मध्य देश में सरयू के उत्तर तट पर, महान धन से युक्त वह चोरी का करने वाला हुआ । उसकी पत्नी, बोझ, मृतवत्सा एवं सुताओं से युक्त हुई । वह कफ रोग से पीड़ित और ज्वर से पीड़ित रहती थी । १२-१८।

मित्रस्यैव वधः पूर्वं नापितेन यतः कृतः ।
तेन कर्मफलेनैव महारोगसमुद्भवः ॥१४
पुत्रोऽपि जायते देवि ! तस्य मृत्युर्भवेत्किल ।
शान्ति तस्य प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! समागतः ॥१५

उस नाई ने अपने मित्र का पूर्व में जो वध किया था, उसके परिणाम स्वरूप उसके महान रोग हुए । पुत्र भी उसके हुआ परन्तु उसकी मृत्यु हो गई । हे देवि ! मैं अब इसकी शान्ति कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो ।१४-१५।

गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षजपो यदा ।
तदा पापं क्षयं याति पूर्वजन्मनि यत्कृतम् ॥१६
हरिवंशस्य श्रवणं चण्डीपाठं शिवार्चनम् ।
विधिवद्देवि ! कर्तव्यं पापं सर्वं विनश्यति ॥१७

यदि गायत्री के मूल मन्त्र के पाँच लाख जप कराये तो पूर्व जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं । हरिवंश का श्रवण, चण्डी पाठ, शिवार्चन यदि विधिवत् किया जाय तो सभी पाप नष्ट हो जाते हैं ।१६-१७।

चतुरस्रं ततः कुण्डे होमं चैव तु कारयेत् ।
तिल-धान्यादिभिर्देवि दशांशजपसंख्यया ॥१८
वैश्यस्य प्रतिमां देवि ! कारयेद्वै सुवर्णतः ।
पञ्चविंशपलेनैव रचितां च प्रयत्नतः ॥१९

चतुष्कोण कुण्ड बनाकर दशांश का उसमें तिल, घी, जौ से हवन करे । प्रयत्न पूर्वक २५ पल स्वर्ण की वैश्य-प्रतिमा का निर्माण करावे ।१८-१९।

ताम्रपात्रे शुभे स्थाप्य पूजयेत् प्रतिमां ततः ।
मन्त्रेणानेन भो देवि ! गन्ध-पुष्पाऽक्षतादिभिः ॥२०
मन्त्रः—ॐ नमस्ते देवदेवेश ! शंख चक्रगदाधरः ! ।

अज्ञानाद् प्रमादाद् मया पापं कृतं पुरा।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! शरणागतवत्सले ! ॥२१

उस मूर्ति को पात्र में स्थापित करे। गन्ध, पुष्प, अक्षत से इन मन्त्रों से उस प्रतिमा का पूजन करे—हे शंख, चक्र, गदा के धारण करने वाले, अज्ञान से या प्रमाद से जो मैंने पूर्व में पाप किये हैं, उन सबको हे शरणागत वत्सल, हे देवेश क्षमा करो, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। चक्रधर को प्रणाम है, गोविन्द को, दामोदर को, कृष्ण को, हंस को, परमहंस को नमस्कार है। अच्युत को एवं हृषीकेश को नमस्कार है।२०-२१।

ॐ चक्रधराय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः।
ॐ दामोदराय नमः ॐ कृष्णाय नमः।
ॐ हंसाय नमः, परमहंसाय नमः।
ॐ अच्युताय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः।
ॐ चक्रादिनामभिश्चैतैः सर्वदिक्षु प्रपूजयेत्।
प्रतिमां पूजयित्वा तु तां विप्राय प्रदापयेत् ॥२२
ततो गां कृष्णवर्णां तु ब्राह्मणाय प्रदापयेत्।
पञ्चसंख्यामितां देवि ! प्रदद्यात्तु कुटुम्बिने ॥२३

'ॐ चक्र धराय नमः' उपरोक्त ८ नामों से आठों दिशाओं का पूजन करे, प्रतिमा का पूजन कर ब्राह्मण को दे। फिर पाँच श्यामा गाय कुटुम्बी ब्राह्मण को दे।२-२३।

ब्राह्मणान् भोजयेद्देवि ! यथासंख्यान् वरानने !।
एवंकृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ॥२४

हे वरानने ! इसके उपरान्त यथा संख्य ब्राह्मणों को भोजन कराये। ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है।२४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में 'पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



एकत्रिंश अध्याय

शिव उवाच

अवन्त्या पश्चिमे देवि ! कोशमात्रोपरि प्रिये ।
कैवर्त्तको वसत्येको नन्दने च पुरे शुभे ॥१
मनोहर इति ख्यातो धनाढ्यो जायते महान् ।
भत्ता यस्याऽभवत्पत्नी पतिसुश्रूषणे रता ॥२

शिवजी बोले हे देवि ! अवन्ती नगरी के पश्चिम में एक कोस दूरी पर, नन्दनपुर नामक गाँव में एक कैवर्त (मल्लाह) रहता था। उसका नाम मनोहर था। वह धनाढ्य था। उसकी पत्नी का नाम 'भत्ता' था, वह पति सेवा परायणा थी।१-२।

मत्स्यमांसस्य भो देवि ! विक्रयं चाऽकरोत् खलु ।
सञ्चितं बहु रत्नञ्च न दानं बहुधाकरोत् ॥३
एकदा चन्द्रग्रहणे शतस्वर्णयुतं वृषम् ।
अदाद्विप्राय विदुषे भार्यया सह भक्तितः ॥४

हे देवि मछलियों का माँस बेच उसने काफी धन एकत्र किया, परन्तु दान नहीं किया। एक बार चन्द्र ग्रहण के समय सौ स्वर्ण मुद्राओं के साथ एक बैल विद्वान ब्राह्मण को उसने दिया।३-४।

ततो मृत्युवशं यातो भार्या तस्य मृता पुरा ।
यमदूतैर्महाघोरे नरके पातितः पुरा ॥५
यमाज्ञया महादेवि ! षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
नरकान्निःसृतो देवि ! शृगालो गहने वने ॥६
पुनः काको वरारोहे ! ततो भवति मानुषः ।
गुणज्ञो देवताभक्तो वेश्यासुरततत्परः ॥७

उसकी पत्नी पहिले मृत्यु को प्राप्त हुई। फिर वह मरा, यमदूतोंने उसे घोर नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक यम की आज्ञा से नरक में रह, वह स्यार योनि में गहन वन में उत्पन्न हुआ। फिर कौआ बना फिर मनुष्य योनि को उसने प्राप्त किया। वह गुणज्ञ, देवता भक्त एवं वेश्यागामी हुआ।५-७।

रागी सूक्ष्मतनुर्वक्तो ज्ञानवान् सुतवर्जितः ।
तस्य भार्या भवेत्स्थूला कुरूपा कर्कशा तथा ॥८
पूर्वजन्मप्रसङ्गाश्च मत्स्यमांसोपभोगिना ।
मासं पुष्पं भवेद्देवि ! गर्भस्य पतनं तथा ॥६

हे प्रेमी, पतले शरीर वाला, वक्ता, ज्ञानी एवं पुत्र रहित हुआ। उसकी पत्नी मोटी, कुरूप कर्कशा हुई। पूर्व जन्म के प्रसङ्ग से, मत्स्य मांस भोगी होने से उसे मासिक धर्म होता था उसका गर्भपात हो जाता था।८-६।

तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ।
यत्कृतेन वरारोहे शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ॥१०

हे देवि ! तुम उसकी शान्ति सुनो। जिसके करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है।१०।

हरिवंशस्य श्रवणं त्रिवारं च विधानतः ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षजपं तथा ॥११
दशांशं हवनं देवि ! दशांशं चैव तर्पणम् ।
मार्जनं च विशेषेण दशांशं चैव कारयेत् ॥१२

तीन बार हरिवंश पुराण का श्रवण करे, गायत्री मूल मन्त्र का पांच लाख न करे। उसका दशांश हवन दशांश तर्पण एवं दशांश मार्जन करे।११-१२।

ततो गां कपिलां दद्याद्दशवर्णां ततः प्रिये ।
सूर्यस्य प्रतिमां देवि ! स्वर्णैर्दशपर्णैस्तथा ॥१३
भूषितां विविधैवस्त्रैः स्वर्णरौप्यविभूषणैः ।
पूजयित्वा विधानेन मन्त्रेणानेन पार्वति ॥१४

फिर कपिला गाय, दशवर्णी गाय दान दे। दशवर्ण की स्वर्ण की सूर्य प्रतिमा बनावे। सोने एवं चांदी के आभूषणों से भूषित कर इन मन्त्रों से विधान से पूजा करे।१३-१४।

मन्त्र ॐत्वंज्योतिःसर्वलोकानां पूज्यस्त्वंसर्वदेहिनाम् ।
पूर्वजन्मकृतं पापं हर मे तिमिरापहम् ॥१५

(१) ॐ श्री सूर्याय नमः (२) ॐ सवित्रे नमः (३)
ॐ साक्षिणे नमः (४) ॐ त्रिगुणात्मने नमः (५) ॐ
द्वादशात्मने नमः (६) ॐ केयूरधारिणे नमः।
(७) ॐतीक्ष्णांशुधारिणे नमः (८) ॐकाष्ठादि-
रूपिणे नमः (९) ॐ विष्णवे नमः (१०) ॐब्रह्मणे
नमः(११)ॐरुद्रायनमः(१२)ॐमार्तण्डाय नमः।
ॐ मन्त्रैद्वादिशभिर्देवि ! पूजयेत्प्रतिमां ततः।
धूपदीपादिभिश्चैव ताम्बूलैश्च विधानतः ॥१६

आप सारे लोकों की ज्योति हो, सारे प्राणियों द्वारा तुम पूजित हो, हे अंधकार को दूर करने वाले मेरे पूर्व जन्म के पापों को दूर करो। ॐ श्री सूर्य देव के प्रणाम है। सविता, साक्षी, त्रिगुणात्मा, द्वादशात्मा, केयूर धारी, तीक्ष्ण अंशु-धारी, कला काष्ठादि रूप को नमस्कार है विष्णु को, ब्रह्मा को रूद्र को मार्तन्ड को नमस्कार हैं। उपरोक्त १२ मन्त्रों से प्रतिमा का पूजन धूप, दपी, ताम्बूल आदि से विधि विधान से करे।१५-१६।

पूजितां प्रतिमां दद्याद् ब्राह्मणाय वराय च।
दासी दासं धनं धान्यं ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥१७
अश्वदानं रथं वस्त्रं पात्राणि विविधानि च।
शय्यादिकं वरारोहे ! वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥१८

प्रतिमा का पूजन कर श्रेष्ठ ब्राह्मण को प्रदान करे। दासी, दास धन-धान्य ब्राह्मण को दे। अश्व दान, रथ वस्त्र और अनेक प्रकार के पात्र, शैयादान एवं धन दान करे इसमें लोभ न करे।१७-१८।

एवं कृते न सन्देहश्चिरं जीविसुतं लभेत्।
पूर्वजन्मकृतं पापं क्षयं याति न चान्यथा॥१९
सप्तम्यां रवियुक्तायां व्रतं कुर्यात्सुरेश्वरि।
पापंव्याधिःक्षयं याति ज्वरः काऽपि न जायते॥२०

इस प्रकार करने से चिरंजीवी पुत्र प्राप्त होता है एवं पूर्व जन्म के पाप नष्ट

हो जाते हैं। रवि वासरयि सप्तमी का व्रत करे। पाप, व्याधि नष्ट हो जाते हैं तथा कभी भी ज्वर नहीं आता।१६-२०।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक इकत्तीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



द्वात्रिंश अध्याय

शिव उवाच

पापेन जायते व्याधिः पापेनैवासुतो भवेत् !
पापेन जायते मूर्खः पापेनैव दरिद्रता ॥१
पूर्वजन्मकृतं यत्तु पापं वा पुण्यमेव वा।
इह जन्मनि भो देवि ! भुज्यते सर्वदेहिभिः ॥२

शिवजी बोले—हे पार्वती ! पाप से व्याधि होती है, पाप से पुत्र नहीं होता पाप से ही मूर्ख एवं पाप से ही दरिद्री होता है। पूर्व जन्म में जो पाप या पुण्य किया है, सभी प्राणियों को इस जन्म में उसे भोगना पड़ता है।१-२।

पुण्येन जायते विद्या पुण्येन जायते सुतः।
पुण्येन सुन्दरी नारी पुण्येन लभते श्रियम् ॥३

पुण्य से ही विद्या आती है। पुण्य से ही पुत्र होता है। पुण्य से ही सुन्दर नारी मिलती है तथा पुण्य से ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है।३।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पुष्यनक्षत्रजं फलम्।
तत्सर्वं शृणु भो देवि ! यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥४

हे देवि ! अब मैं तुमसे पुष्य नक्षत्र में जन्म जातक के पूर्व जन्म के फल को कहता हूँ, उसे तुम सुनो।४।

मध्यदेशे वरारोहे ! धनाढ्यो बल्लवोऽवसत्।
हंसकेतुरिति ख्यातो भार्या तस्य तु केकयी ॥५
बहवो वृषभास्तस्य महिष्यो गास्तथाप्रिये ! ।
धर्मकर्मरतः शूद्रो विक्रयेद्गोवृषादिकम् ॥६

हे सुन्दरी ! मध्य देश में एक धनाढ्य अहीर रहता था उसका नाम हंस केतु

था, उसकी पत्नी का नाम केकभी था। उसके बहुत सी गाय, भैंस एवं बैल थे। वह धर्म में रत था तथा गाय—बैल बेचा करता था।५-६।

वृततक्रस्य भो देवि ! विक्रयं कुरुते सदा।
एको वैश्यो धनाढ्यो वै तस्य मित्रं तमोऽभवत् ॥७

वह घी एवं मठा बेचा करता था। उस समय एक धनवान वैश्य उसका मित्र हो गया।७।

महाप्रीतिस्तयोर्जाता बहुवर्षप्रमाणतः ।
एकदा तु निशायां वै शूद्रेण वणिकः प्रिये ॥८
शुभरत्नादिलाभाय कटारेण तदा हतः ।
द्रव्यं सर्वं गृहीतं तु भूमिमध्ये तथा धृतम् ॥९

हे प्रिये ! उन दोनों में बहुत समय तक अत्यन्त प्रेम रहा। एक बार रात्रि को उस शूद्र ने धन के लोभ से कटार से उस वैश्य को मार दिया। सारा धन उसका ले लिया एवं पृथ्वी में गाड़ दिया।८-९।

तन्मध्ये तु षडांशस्य व्ययं कुर्याद् दिने दिने।
बहुवर्षगते काले शूद्रो मृत्युवशोऽभवत् ॥१०
पातयामास घोरे तु यमदूतो यमाज्ञया ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥११
ततो जातो महादेवि ! राक्षसो गहने वने ।
पुनः शृगालयोनिं च मानुष्वं भवेत्पुनः ॥१२

उस धन का षडांश उसने प्रतिदिन के खर्च हेतु रखा। बहुत समय बाद वह शूद्र मर गया। यमकी आज्ञा से यमदूतों ने उसे घोर नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक घोर नरक यातना सह कर वह एक गहन वन में राक्षस हो गया। फिर स्यार योनि को प्राप्त हुआ इसके बाद मनुष्य बना।१०-१२।

धन-धान्यसमायुक्तो भार्या जाता तु या पुरा।
वन्ध्यारोगसमायुक्ता कन्यका चैव जायते ॥१३
तस्य रोगो भवेत्पश्चाद्विविधश्च वयोऽन्तरे ।
पूर्वजन्मनि भो देवि ! मित्रञ्च निहतं यतः ॥१४

तत्पापेन च भो देवि ! पुत्रो नैवोपजायते ।
बहुपुत्रप्रघातीच्च कम्परोगी प्रजायते ॥१५

वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ । पहिले वाली पत्नी इसे प्राप्त हुई । वह,वांझ हुई केवल कन्या हुई । बुढ़ापे में उसके अनेक रोग हो गये क्योंकि उसने पूर्व जन्म में मित्र का वध किया था । उसी पाप से उसके कभी पुत्र नहीं हुआ । अनेक पुत्रों का वध करने वाला कंपवाय का रोग हुआ ।१३-१५।

तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ।
षडांशं वै ततो दानं विदुषे ब्राह्मणाय च ॥१६
गां तथा महिषी दद्याद्विधिवद्भोजयेद्द्विजान् !।
गायत्रीजातवेदाभ्यां द्विलक्षं च जपं ततः ॥१७

हे सुन्दरी ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ । गृहस्थित धन का षडांश भाग ब्राह्मण को दे और गाय एवं भैंस दान में दे तथा विविध प्रकार के भोजन ब्राह्मणों को कराये गायत्री अथवा 'जात वेद से' मन्त्र के दो लाख जप कराये ।१६-१७।

कुण्डे कोणत्रये चैव होमं वै कारयेत्ततः ।
जपस्यैव दशांशेन हवनादिकमाचरेत् ॥१८
ततो वै प्रतिमां कुर्याद्वैश्यस्यैव विधानतः ।
द्वादशेन पलेनैवं सुवर्णस्य विशेषतः ॥१९

त्रिकोण कुंड में हवन कराये, दशांश का हवन आदि करे । १२ पल सोने की वैश्य की प्रतिमा बनवावे ।१८-१९।

पूजयेत्पूर्वजैर्मन्त्रैस्ततो विप्राय दापयेत् ।
एवं कृते न सन्देहः पुत्रो भवति नाऽन्यथा ॥२०
सर्वरोगः क्षयं याति नात्र कार्या विचारणा ॥२१

पूर्व मन्त्रों से उस प्रतिमा का पूजन करे उसे ब्राह्मण को दे । ऐसा करने से निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है । इसमें सन्देह नहीं है । साथ ही सभी रोग समाप्त हो जाते हैं । इसमें कुछ भी विचार नहीं करना चाहिये ।२०-२१।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक इक्तीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



त्रियस्त्रिंश अध्याय

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! विशेषतः ।
अदौ पापफलं देवि ! भुज्यते देवमानुषैः ॥१
पश्चात्पुण्यफलं देवि ! परलोक इहाऽपि वा ।
एकः शिल्पकरो देवि वसते हस्तिनापुरे ॥२

शिव जी बोले—हे प्रिये ! देव एवं मानवों में सबसे पहिले पाप का फल भोगा जाता है फिर इस लोक में एवं परलोक में पुण्य का फल भोगा जाता है । ये मैं तुम्हें बताता हूँ । हस्तिनापुर में एक शिल्पकार रहता था ।१-२।

हेमदास इति ख्यातो भार्याद्वयसमन्वितः ।
प्रत्यहं शिल्पकार्यं च करोति व्ययकारणात् ॥३
काशीतः पश्चिमे देवि ! स्वकर्मनिरतः सदा ।
अश्वत्थानां च वृक्षाणां छेदनानि चकार सः ॥४

उसका नाम हेमदास था । उसके दो पत्नियां थीं । वह जीविकोपार्जन हेतु नित्य प्रति शिल्प कर्म करता था । काशी से पश्चिम की ओर वह अपने कार्य में रत था । वह प्रायः पीपल के वृक्षों को काटता था ।३-४।

एवं बहुगते काले शिल्पकारो मृतः प्रिये ! ।
नरके तस्य पतनं षष्टिवर्षसहस्रकम् ॥५

हे प्रिये ! बहुत समय उपरान्त उस शिल्पकार की मृत्यु हो गई । वह साठ हजार वर्ष के लिए नरक में पड़ा ।५।

पत्न्या सह वरारोहे ! यातो योनिं बिडालिकाम् ।
बिडालयोनिं वै मुक्त्वा वृषयोनि ततोऽभवत् ॥६
पुनः स्यात्मानुषो देवि ! मध्यदेशे सुपूजितः ।
पूर्वजन्मनि वृक्षाणां छेदनं प्रत्यहं कृतम् ॥७
तेन पापेन भो देवि ! पुत्रो नैव प्रजायते ।
कन्यकाश्चैव सञ्जाताः स्त्रिया रोगः सुदारुणः ॥८

पत्नी सहित वह बिलाव योनि को प्राप्त हुआ इसके बाद बैल योनि में हुआ ।

इसके उपारान्त मानव योनि में मध्य देश में उत्पन्न हुआ पूर्व जन्म में वृक्षों को जो नित्य प्रति काटता था उस पाप से उसके पुत्र नहीं होता था। कन्या ही उत्पन्न होती थी। स्त्री भी भयंकर रोग से पीड़ित रहती थी।६-८।

शरीरे महती पीडा रात्रौ निद्रा न लभ्यते।
कन्यकायाश्च वैधव्यं वृक्षत्छेदनतः प्रिये! ॥९
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि ततः पापनिवर्त्तनम्।
चतुर्थांशं तु वै दानं ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥१०

उसके शरीर में भयंकर पीड़ा रहती, रात को भी नींद नहीं आती थी। वृक्षों को काटने से उसकी कन्या भी विधवा हुई। उस पाप की निवृत्ति हेतु मैं शान्ति कहता हूँ। गृह स्थित धन को चतुर्थांश का ब्राह्मण का दान दे।९-१०।

दशायुतं जपं कुर्याद्गायत्रीमूलमन्त्रतः।
पलपञ्चसुवर्णस्य वृक्षं कारयेत्ततः ॥११
पूजयित्वा यथान्यायं वृक्षं विप्राय दापयेत्।
पञ्चधेनुं तथा दद्यात् वृषं आभरणान्वितम् ॥१२

गायत्री के मूल मंत्र का दश हजार जप करावे। तथा पांच पल स्वर्ण का एक वृक्ष बनवावे। विधि पूर्वक उस वृक्ष की पूजा करे तथा उसे ब्राह्मण को दे। इसके साथ पांच गायें तथा बैल आभरणों से सज्जित कर ब्राह्मण को दान में दे।११-१२।

कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम्।
गङ्गामध्ये च दातव्यं ततः पापक्षयो भवेत् ॥१३
सर्वव्याधिः क्षयंयाति कन्यका च सुखान्विता।
पुत्रश्चैव प्रजायेत नात्र कार्या विचारणा ॥१४

पंच रत्न मिलाकर पेठा एवं नारियल गंगा के बीच में खड़ा होकर, पापों के विनाश के लिए दान में दे तो सारी व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं तथा कन्या भी सुखी होनी चाहिये।१३-१४।

इति श्री 'पुष्प नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तेतीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण।



चतुस्त्रिंश अध्याय

शिव उवाच

मध्यदेशे वरारोहे ! लोहकारश्च अस्थिवान् ।
गौरेका लोहकारेण बाल्यतः पालिता शिवे ! ॥१
एकस्मिन् दिवसे पङ्के मग्ना च गौर्वराभवत् ।
तच्छ्रुत्वा लोहकारस्तु न गतस्तत्र वै शिवे ! ॥२

शिव जी बोले—हे शिवे ! मध्य देश में एक लुहार रहता था। उसने बचपन से ही एक गौ पाल रखी थी। एक दिन वह गाय कीचड़ में फंस गई। इसे सुन कर भी वह लुहार वहाँ नहीं गया ।१-२।

मृता रात्रौ तदा देवि ! पङ्के वै मरणं तथा ।
बहुघस्त्रात्ततो देवि ! मरणं तस्य वै गृहे ॥३
तस्य पत्नी सती जाता सत्यलोकं गतौ च तौ ।
दशलक्षमितं वर्षं सत्यलोके च अस्थिवान् ॥४

हे देवि ! वह गाय उस कीचड़ में रात को मर गयी। बहुत दिन बाद वह लुहार भी मर गया। उसकी पत्नी सती हो गई। वे दोनों सत्यलोक को गये। दश लाख वर्ष तक वे सत्यलोक में रहे ।३-४।

पुनः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके तदाभवत् ।
मानुषः शुभजन्मा च धनधान्यसमन्वितः ॥५
पत्न्या सह वरारोहे ! ब्राह्मणानां च सेवकः ।
पूर्वजन्मनि देवेशि ! पङ्के मग्ना च यत्र गौः ॥६
न गतस्तत्र भो देवि ! तस्मात्पुत्रो न जायते ।
कन्या जाता पुरा देवि ! तस्या मृत्युश्च जायते ।७

पुण्यों के क्षय होने पर वे मृत्यु लोक में, मानव योनि में उत्पन्न हुये। धन धान्य से सम्पन्न हुए। पत्नी सहित वह ब्राह्मणों की सेवा करता था हे देवी ! पूर्व जन्म में जब गाय कीचड़ में फंस गई और ये नहीं गया, इस कारण इसके पुत्र नहीं हुआ। सबसे पहिले एक कन्या हुई, वह भी मर गई ।५-७।

तदर्थं वाटिकां कूपं पथि मध्ये च कारयेत् ।
कुर्याच्चैव तुलादानं पात्राणि विविधानि च ॥८
गोयुग्मं घृतकुम्भं च ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
गायत्रीमन्त्रजाप्यं च लक्षमेकं तु कारयेत् ॥९

उस पाप के प्रायश्चित हेतु मार्ग में कूआ, बावड़ी बनवाये। तुलादान करे तथा अनेक पात्रों को, गाय के जोड़े को, घी से भरा बर्तन ब्राह्मण को दान में दे। तथा एक लाख गायत्री मंत्र का जप करावे।८-९।

होमं कुर्यात्ततो देवि ! तिल-धान्यादि-तन्दुलैः ।
ब्राह्मणान्भोजयेद्देवि शतसंख्यान् वरानने ॥१०
एवं कृत्वा वरारोहे ! पुत्रो भवति नान्यथा ।
वन्ध्यात्वं नाशमायाति व्याधिनाशोभवेत्ध्रुवम् ॥११

हे देवि ! फिर तिल, जौ, चावल से हवन करना चाहिये। तथा सौ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। हे सुमुखी ! ऐसा करने से निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है। इसमें संदेह नहीं है। नारी का बांझपन छूट जाता है तथा समस्त आधि व्याधियों का विनाश हो जाता है।१०-११।

। इति श्रीकर्म विपाक संहिता में 'पुष्प नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौंतीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



पंचत्रिंशत् अध्याय

शिव उवाच

**अयोध्यानगराद्देवि ! पूर्वे कोशचतुर्दशे ।
तत्राप्येकोऽवसत्मालाकारो बैडुम्बराभिधः ॥१
चिन्ता तस्याभवत्पत्नी पतिसेवापरायणा ।
शाककारो महासाधुर्विष्णु–भक्तिरतः सदा ॥२**

शिव जी बोले—हे देवि ! अयोध्या से १४ कोस दूर पूर्व में एक माली रहता

था जिसका नाम वैडुम्बर था। उसकी पत्नी का नाम चिन्ता था। वह पति सेवा परायण थी। वह शाककार (माली) भी महासाधु एवं विष्णु भक्ति में रत था।१-२।

गुरुसेवारतो नित्यं प्रत्यहं शाक-विक्रयी।
एका मार्जारिका श्वेता पालिता तेन वै हता ॥३

वह नित्य प्रति शाक बेचता था तथा गुरु सेवा में रत रहता था। उसने एक श्वेत बिल्ली पाल रखी थी उसने उसे मार दिया।३।

प्राप्तो वै तमसातीरे तीर्थे मृत्युर्मम प्रिये!।
विष्णुभक्तिरतो यस्मात्तीर्थे मृत्युफलादपि ॥४
न गतो यमलोकं तु भुक्त्वा स्वर्गं तु चाऽभवत्।
षष्टिवर्षसहस्राणि पुनः पुण्यक्षयो यदा ॥५
तदा वृषभयोनिश्च मृत्युलोकेऽभवत् पुनः।
मानुषत्वं ततो यातो धनधान्यसमन्वितः ॥६

हे प्रिये! वह विष्णु भक्ति में रत था इस कारण उसकी मृत्यु मेरे तीर्थ तमसा के तीर पर हुई जिसके फलस्वरूप वह यमलोक नहीं गया। साठ हजार वर्ष तक स्वर्ग सुख भोग जब उसके पुण्यों का क्षय हुआ तो वह मृत्युलोक में बैल की योनि में उत्पन्न हुआ। इसके उपरान्त वह मानव योनि में आया तथा धन धान्य से सम्पन्न हुआ।४—६।

सुन्दरो विष्णुभक्तित्वात् पुत्रेण रहितः शिवे!।
गर्भाणां पतनं जातं यतो मार्जारिका हता ॥७
सगर्भा च तदा देवि! ततो गर्भो विनश्यति।
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि श्रृणु त्वं गिरिजे वरे ॥८

हे पार्वती जी! विष्णु भक्ति के कारण वह सुन्दर हुआ परन्तु पाप के कारण पुत्र रहित था। क्योंकि उसने बिल्ली मारी थी इस कारण उसकी पत्नी का गर्भ नष्ट हो जाता था। जब गर्भवती होती तभी गर्भ नष्ट हो जाता। अब मैं तुम से उसकी शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो।७-८।

गृहवित्तार्द्धभागं वै ब्राह्मणाय प्रदापयेत्।
तदा पापं क्षयं याति नात्र कार्या विचारणा ॥९

शिवार्चनं कारयित्वा रौप्यमार्जारिकां तथा ।
पलानां सप्तकैः कुर्यात् सगर्भा विमलां शुभाम् ।।१०

घर के द्रव्य में से अर्द्ध भाग ब्राह्मण को दान में दे । तब पाप नष्ट हो जाते हैं ? इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है । शिव का पूजन करायें तथा सात पल की चांदी की बिल्ली बच्चे सहित बनावें ।९–१०।

पूजयित्वा ततो देवि ! ततो दद्याद् द्विजन्मने ।
लक्षजाप्यं ततो देवि ! त्र्यम्बकेण विशेषतः ।।११
ततो भवति वै शुद्धः पूर्वपापान्न संशयः ।
पुत्रो भवति वै देवि ! रोगाणां शान्तिस्तथा ।।१२

उसकी पूजा कर ब्राह्मण को दें । 'त्र्यम्बकं यजा महे' इस मन्त्र का तीन लाख जप करायें तब पूर्व पापों की शुद्धि होती है, पुत्र भी होता है तथा रोगों की शान्ति भी होती है, इसमें संशय नहीं है ।११–१२।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में
पुष्प नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक पैंतीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।



षट्त्रिंश अध्याय

शिव उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ! ।
जातस्य सार्पनक्षत्रे प्रथमे चरणे शुभे ।।१

शिव जी बोले—हे शोभने ! अब मैं तुझ से सार्प नक्षत्र (आश्लेषा) के प्रथम चरण में जन्मे जातक का शुभाऽशुभ कहता हूँ ।१।

पुरी काशी समाख्याता त्रैलोक्ये देवि ! पूजिता ।
तस्यास्तु पश्चिमे भागे क्रोशे पञ्चदशे मिते ।।२
माण्डव्यस्य पुरे शुभ्रे वसन्ति बहवो जनाः ।
तन्मध्ये शूद्र एको हि प्राकरोल्लवणं सदा ।।३

त्रिलोकी में पूजित, काशीपुरी के पश्चिमी भाग में पन्द्रह कोस की दूरी पर

एक माण्डव्य नामक पुर है वहाँ वहुत से मनुष्य रहते थे। उनमें एक शूद्र भी था जो सदैव नमक तैयार किया करता था।२-३।

डिण्डिमेति समाख्यातो गौरी तस्य वराङ्गना।
बह्वर्थं सञ्चितं तेन न दानमकरोत् क्वचित् ॥४
एकदा दैवयोगेन ब्राह्मणानां निमन्त्रणम्।
भोजनं प्रददौ कृत्वा दक्षिणां वै समर्पयेत् ॥५

उसका नाम डिंडिम था तथा गौरी उसकी पत्नी का नाम था। उसने बहुत सा धन एकत्र किया था परन्तु दान कभी नहीं दिया। एक दिन दैव योग से उसने ब्राह्मणों को निमंत्रण दिया, भोजन कराकर दक्षिणा भी दी।४—५।

गामेकां कपिलां दत्त्वा भूषितां स्वपुरोधसे।
ब्राह्मणोऽकथयत् कश्चित् शूद्रं प्रति तदा प्रिये ! ॥६
अहं ग्रामस्य वै पूज्यो मदीया गौः कथं प्रभो !।
पुरोहिताय दत्ताऽसि प्राणं ते च ददाम्यहम् ॥७
इति श्रुत्वा वचस्तस्य सोऽवदद् ब्राह्मणं प्रति।
क्रोधेन महता देवि ! ब्राह्मणाय तदाधमः ॥८

उसने एक अलंकृत गाय अपने पुरोहित को दान में दी। फिर किसी एक ब्राह्मण ने आकर शूद्र से कहा—मैं इस गाँव का पूज्य हूँ, गाय मेरी होती है, तुमने गाय पुरोहित को क्यों दे दी। अब मैं तुम्हारे ऊपर प्राणों को दूंगा। ब्राह्मण के इन वचनों को सुन उस शूद्र ने क्रोध से उस ब्राह्मण से कहा।६—८।

तदा क्रोधेन महता स शूद्रोऽताडयद् द्विजम्।
मरणं तस्य वै जातं तद्धस्ताद्वै वरानने ! ॥९
ततो बहुतिथे काले सस्त्रीकः प्रमृतः खलः।
पतनं तस्य वै जातं कर्मपाके तदा खलु ॥१०

तब क्रोध से उस शूद्र ने ब्राह्मण को मारा, मारने से उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई। बहुत समय बाद वह पत्नी सहित मर गया। कर्म विपाक से उसे नरक में जाना पड़ा।९—१०।

निक्षिप्य यमदूतेन तत्रैव च यमाज्ञया।
पञ्चलक्षं ततो वर्षं कष्टं हतं मुहुर्मुहुः ॥११

तत्र जाता महापीडा नरकाग्नि:सृतस्ततः ।
सर्पयोनिं स वै यातो गृध्रयोनिस्ततोऽभवत् ॥१२

यम की आज्ञा से यम दूतों ने उसे नरक में डाल दिया। पांच लाख वर्ष तक उसे घोर कष्ट दिये। नरक यातना भोगने के बाद उसे सर्प योनि मिली फिर गिद्ध योनि मिली ।११-१२।

मानुषत्वं ततो लब्धं मध्यदेशे वरानने ! ।
पूर्वपापाच्च भो देवि ! पुत्रो नैव प्रजायते ॥१३
शरीरे रोग उत्पन्नो विग्रहस्तु वरानने ! ।
प्रयश्चित्तं प्रवक्ष्यामि पूर्वकिल्विषशान्तये ॥१४

हे वरानने ! मध्य देश में इसे फिर मानव योनि मिली। पूर्व पाप से उसके पुत्र नहीं हुआ। शरीर में अनेक रोग हो गये। घर में कलह रहता। पूर्व पाप की शान्ति हेतु मैं अब प्रायश्चित कहता हूँ ।१३—१४।

गायत्री-सूर्यमन्त्राभ्यां पञ्चलक्षजपं शिवे ! ।
करोतु विधिवद्भक्त्या तदा वै वरवर्णिनि ॥१५
होमं कारयित्वातुआज्यं कुण्डे चाष्टदले तथा ।
दशांशतर्पणं तस्य मार्जनं तद्दशांशतः ॥१६

हे सुन्दरी ! गायत्री एवं सूर्य मंत्र के पाँच लाख जप विधिवत कराये या करे तथा अष्ट दल हवन कुंड बनाकर आज्य (घी) हवन करे। दशांश क्रम से तर्पण, एवं मार्जन करे ।१५–१६।

प्रतिमां रुचिरां कृत्वा सुवर्णस्य महेश्वरि ! ।
पलषष्टधाः प्रयत्नेन पूजयित्वा यथाविधि ॥१७
मन्त्रेणणानेन विधिना गन्ध-धूपादिभिस्तथा ।
दुर्गे ! देवि नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदेश्वरि ! ॥१८
इमां पूजां गृहीत्वा तु मम कार्यं प्रसाधय ॥१९

हे महेश्वरि ! स्वर्ण की प्रतिमा छै: पल की सुन्दर प्रयत्न पूर्वक बनवाये, यथाविधि पूजन करे । मंत्र से गंध—पुष्प—धूप दीपादि से अर्चना करे।

हे दुर्गे, सर्व सिद्धि प्रदायिनी तुम्हें नमस्कार है। इस पूजा को ग्रहण कर तुम मेरा कार्य सिद्ध करो।१७–१९।

मन्त्रः–ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः। । ॐ दुर्गायै
नमः। ॐ सर्वकामप्रदे नमः। ॐ ईश्वरायनमः।
ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ ब्राह्मणे नमः। ॐ विष्णवे
नमः। ॐ सर्वेश्वराय नमः। ॐ भैरवाय नमः।
ॐ मार्त्तण्डाय नमः॥

एतैश्च दशभिर्मन्त्रैः प्रतिमां पूजयेत् प्रिये!।
ब्राह्मणाय ततो दद्याद्भक्तियुक्तेन चेतसा ॥२०

ॐ ह्रीं माहेश्वरी को प्रणाम है, दुर्गा जी को, सर्व काम प्रदायिनी को नमस्कार है। ईश्वरी को, त्र्यम्बक को, ब्राह्मा को, विष्णु को नमस्कार है। सर्वेश्वर को, एवं मार्तन्ड्र को नमस्कार है।

इन उपर्युक्त दश मंत्रों से प्रतिमा का पूजन करें। फिर भक्ति भावना के साथ उस प्रतिमा को ब्राह्मण को दे।२०।

पञ्चपात्रं ततो दद्यात् तादुद्देशेन पार्वति!।
तिलदानं ततो दद्याद्वस्त्रदानं यथाविधि ॥२१

हे पार्वती! उद्देश्य की पूर्ति हेतु पंचपात्र दान में दे। तिल दान तथा वस्त्र दान भी यथा विधि करे।२१।

कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम्।
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं पूर्वपापप्रणाशनम् ॥२२
रोगात्प्रमुच्यते देवि! वन्ध्यापि पुत्रामाप्नुयात्।२३

पंचरत्नों से युक्त पेठा एवं नारियल का फल गंगा के बीच में स्थित हो, सारे पापों की शान्ति हेतु देने चाहिये। इस कार्य से समस्त रोगों से मुक्ति मिलती है तथा बंध्या को भी पुत्र प्राप्त हो जाता है।२२—२३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक छत्तीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

सप्तत्रिंश अध्याय

शिव उवाच

अलर्कस्य पुरे देवि ! शूद्र एकोऽवसत्पुरा ।
शूद्राचाररतो नित्यं विक्रयं कुरुते सदा ॥१
गोमहिष्यादिव्यापारैर्व्ययं कुर्याद्दिने दिने ।
गोधनानि बहून्येव तेषां रक्षा न जायते ॥२

शिव जी बोले हे देवि ! अलर्क नामक पुर में एक शूद्र रहता था जो सदैव व्यापार करता था । गाय, भैंस के व्यापार में प्रतिदिन वह व्यय करता था । उसके गायें बहुत थीं, परन्तु उनकी रक्षा नहीं हो पाती थी ।१–२।

दुर्लभ इति विख्यातो तत्राज्ञानी सदावसत् ।
एकदा तस्य गोवृन्दे वने तिष्ठति भोऽनघे ! ॥३
वृष्टिस्तत्र महा जाता गावाश्च पीडिता भृशम् ।
तासां मध्ये भूरि गावो वर्षणेन मृताः पुरा ॥४
रक्षां शूद्रो नाकरोत्स तृणै आच्छादनादिभिः ।
एवं बहुगते काले शूद्रः पापी मृतो यदा ॥५

वहां दुर्लभ नाम से प्रसिद्ध एक अज्ञानी रहता था । एक बार उसकी गायें जब वन में थीं तब भयंकर वर्षा हुई, गायें अत्यन्त पीड़ित हुईं । घोर वर्षा के कारण उनमें से अनेक गायें मर गईं । घास में, बैठने की व्यवस्था घिरक आदि से वह शूद्र उन गायों की रक्षा न कर सका । इस प्रकार बहुत समय बीतने पर वह पापी शूद्र भी मर गया ।३–५।

नरके पातयामास यमदूतो यमाज्ञया ।
बहुवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकजं फलम् ॥६
नरकान्निर्गतो देवि ! गजयोनिमवाप्तवान् ।
गजयोनिं ततो भुक्त्वा मानुषत्वं ततोऽगमत् ॥७

यम की आज्ञा से यम दूतों ने उसे नरक में डाल दिया । हजारों वर्ष तक नरक की यातना भोग, नरक से आकर उसने हाथी की योनि प्राप्त की, गजयोनि को भोग फिर मनुष्य योनि प्राप्त की ।६—७।

स्वकर्मणा परित्यागं यतोऽकार्षीद्गतां पुरा ।
ततः कर्मफलाद्देवि ! नैव पुत्रः प्रजायते ॥८

प्राचीन काल में पूर्व में उसने अपने कर्म का परित्याग किया, इस कारण उसके पुत्र नहीं हुआ ।८।

कृतं दानं पुरा देवि ! सर्वपर्वणि चाञ्जसा ।
तेन पुण्येन भो देवि ! धनधान्यगजादिकम् ॥९

उसने पूर्व जन्म में प्रत्येक पर्व पर दान किया था, उस पुण्य के कारण उसके धन, धान्य, गज आदि हुए ।९।

गोसंग्रहः कृतः पूर्वं मृतास्तृणकणं विना ।
तेन पापेन भो देवि ! महाव्याधिः प्रजायते ॥१०

उसने पूर्व जन्मों में गायों का संग्रह किया था परन्तु घास एवं दाने के अभाव में वे मर गईं इस पाप के कारण उसके महान् रोग हुए ।१०।

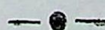
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ! ।
ब्राह्मणाय दशांशं च दानं दद्यात्सुतप्रिये ॥११
गायत्रीलक्ष्यजाप्येन जपं कुर्यात्प्रसन्नधीः ।
दशांशं हवनं देवि ! मार्जनं तर्पणं तथा ॥१२

हे शोभने ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ । अपने धन का दशांश ब्राह्मण दान में दे । प्रसन्न होकर गायत्री का एक लाख जप करायें, दशांश क्रम से हवन, मार्जन, तर्पण करे ।११-१२।

दशवर्षां स्ततो दद्याद्ब्राह्मणाय वरानने ! ।
एवं कृते न संदेहो वरः पुत्रः प्रजायते ॥१३
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥१४

हे सुनो ! दशवर्षी गाय ब्राह्मण को दान दे । ऐसा करने से श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति होती है तथा समस्त रोगों का नाश हो जाता है । इसमें कोई भी सन्देह नहीं है ।१३-१४।

॥इति श्री कर्म विपाक संहिता में अश्लेषा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सैंतीसवाँ अध्याय संपूर्ण ॥



अष्टात्रिंश अध्याय

शिव उवाच

गङ्गाया उत्तरे कूले मालाकारोऽवसत्पुरा ।
डेलचन्द्रेति विख्यातो महाज्ञानीगुणाकरः ॥१
स्वकर्मनिरतो नित्यं द्विजसेवासु तत्परः ।
तस्य पत्नी विशालाक्षि ! नाम्ना चन्द्रावती शुभा ॥२

शिवजी बोले--गंगा के उत्तरी तट पर प्राचीन काल में एक माली रहता था उसका नाम डेल चन्द्र था। वह महारानी एवं गुणवान या वह सदैव अपने में रत रहता था, द्विज सेवा में तत्पर था। उसकी पत्नी का नाम चन्द्रावती था १-२।

गुरुदास इति ख्यातो वैश्यवर्णेषु पूजितः ।
आसीत्तस्मै तदा तेन स्वर्णं दत्तं प्रियाय वै ॥३

वैश्यों में शाजैत एक गुरु दास नामक प्रसिद्ध वैश्य वहाँ रहता था। उसने प्रेम से उस माली को बहुत सा स्वर्ण दिया।३।

लक्षत्रयं स्थितं स्वर्णं तस्य वैश्यपतेः प्रिये ! ।
मालाकारेण तत्सर्वं भूमौ स्थाप्य तदा प्रिये ! ॥४
स्वयं गतः स वैश्येन सार्द्धं वेण्यां तदा प्रिये ! ।
मावे नियमतः स्नानं कृतं ताभ्यां यथाविधि ॥५

हे प्रिये ! उस वैश्य के पास तीन लाख का सोना था। उस माली ने उस सबको पृथ्वी में गाड़ दिया। वह स्वयं वैश्व के साथ त्रिवेणी स्नान के लिए गया। उन दोनों ने यथाविधि माघ मास में नियमित स्नान किया।४-५।

शूद्रस्तु प्राप्तो स्वगृहं वैश्यः काश्यां समागतः ।
तत्र काश्यां विशालाक्षि ! मरणं तस्य चाभवत् ॥६

स्नान के उपरान्त शूद्र अपने घर आ गया, वैश्य बनारस चला गया। उस वैश्य का बनारस में निधन हो गया।६।

अविमुक्तमहातीर्थे देवदानवपूजिते ।
मम पार्श्वे समायातो धर्मक्षेत्रप्रभावतः ॥७

देव दानवों द्वारा पूजित, मुक्ति प्रदाता उस महातीर्थ में मरने के कारण वह मेरे पास, मेरे लोक में आया ।७।

मालाकारस्तु तत्स्वर्णं भुक्त्वा पुत्रस्त्रिया युतः ।
बहुवर्षगते काले मरणं तस्य चाभवत् ।।८

माली ने भी उस धन का स्त्री-पुत्रों सहित बहुत काल तक भोग किया । बहुत समय बाद उसकी मृत्यु हो गई ।८।

तदा गन्धर्वनगरे बहुवर्षसहस्रकम् ।
पत्न्या सह वरारोहे भुक्तं वै स्वर्गजं फलम् ।।९
ततो बहुगते काले मानुषत्वमवाप्तवान् ।
धनाढ्यो गुणवान्भोक्ता देवब्राह्मणतत्परः ।।१०

तब गंधर्व लोक, में हजारों वर्ष तक पत्नी के साथ स्वर्ग के फलों को भोग बहुत समय बाद मानव योनि को प्राप्त किया । वह धनवान, गुणवान, भोगों एवं देव ब्राह्मणों की सेवा में रत रहा ९–१०।

तस्य पत्नी विशालाक्षि ! पूर्वजन्मप्रसङ्गतः ।
पुर्नविवाहिता देवि ! पतिसेवासु तत्पराः ।।११
पुष्पं च जायते देवि ! मासि मासि निरन्तरम् ।
पुर्नविवाहिता देवि ! कन्यका खलु जायते ।
यतो वैश्यस्य वै स्वर्णं न दत्तं पूर्व जन्मनि ।।१२

हे विशाक्षि पार्वती ! पूर्व जन्म के प्रसंग से उसे वही पत्नी मिली । वह पति सेवा में तत्पर रहती थी । उसे प्रतिमास मासिक धर्म तो होता था, पुत्री तो होती थीं परन्तु पुत्र नहीं होता था । क्योंकि उसने पूर्व जन्म में वैश्य का स्वर्ण नहीं दिया था ।११–१२।

तत्कर्मणः फलाद्देवि ! पुत्रो नैव प्रजायते ।
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि यथार्थतः ।।१३

उसी कर्म के प्रभाव से उसके पुत्र नहीं होता था । हे देवि ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ, उसे तुम सुनो ।१३।

गृहद्रव्यषण्डांशेन पुण्यं कार्यं च कारयेत् ।
हेम्नो दशपलस्यापि वैश्यं कृत्वा प्रयत्नतः ।।१४

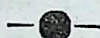
पूजयित्वा विधानेन ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
षण्डाङ्गजातवेदानां पाठं वै कारयेत्ततः ।।१५

अपने गृह स्थित द्रव्य का षडांश पुण्य कार्यों में व्यय करे। दश पल स्वर्ण की वैश्व प्रतिमा बनावे। विधि विधान से उसकी पूजा कर उसे ब्राह्मण को दे। वेदों का अंग सहित पाठ करावे।१४–१५।

जीर्णोद्धारं ततो देवि ! वापिकां कूपमेव च ।
एवं कृते न सन्देहः पुत्रो भवति नान्यथा ।।१६
रोगस्तस्य निवर्तेत धनं च बहु जायते ।।१७

कूआ एवं बावड़ी जीर्णोद्धार कराये। ऐसा करने से निःसन्देह पुत्र की प्राप्ति होती है। रोगों की निवृत्ति हो जाती है, घर में वहुत धन भी हो जाता है। इस में सन्देह नहीं है। इसे अन्यथा नहीं समझना चाहिये।१६–१७।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में अश्लेषा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक अड़तीसवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



एकोनचत्वारिंश अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यानगरी श्रेष्ठा सर्वदेवसुपूजिता ।
यस्यां प्रवेशमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१

शिवजी बोले—सभी देवों से पूजित, श्रेष्ठ अयोध्या नगरी है। जिसमें प्रवेश करने से सभी पापों का विनाश हो जाता है।१।

तस्यास्तु पश्चिमे देवि ! योजनानां दशोपरि ।
लक्ष्मणाख्यं पुरं यत्र वसन्ति बहवो जनाः ।।२
तन्मध्ये शूद्र एको हि कैवर्तो धनधान्यवान् ।
डालेति नाम विख्यातस्तस्य पत्नी च केशवी ।।३

उस अयोध्या के पश्चिम में, दश योजना की दूरी पर, लक्ष्मणपुर नामक नगर

था, वहाँ बहुत से मनुष्य रहते थे। उनमें एक शूद्र कैवर्त (मल्लाह) भी था। वह धन-धान्य से सम्पन्न था। उसका नाम डाल था तथा उसकी पत्नी का नाम केशवी था।२-३।

तेन व्यापारतो देवि ! धनं च बहु संस्थितम् ।
मांसं प्रभुज्यते नित्यं मांसं हि बहुधा प्रियम् ।।४
निर्दयः सर्वजन्तुनां कच्छपानां विशेषतः ।
एवं बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल ।।५

हे देवि ! उसने व्यापार से बहुत धन कमाया था। वह मांस का प्रेमी था, नित्य प्रति मांस खाता था। वह निर्दयी सभी जन्तुओं का माँस खाता था पर विशेष रूप से कछुओं का। इस प्रकार बहुत समय बीत जाने पर उसकी मृत्यु हो गई।४-५।

यमदूतैर्महाघोरे निक्षिप्तश्च यमाज्ञया ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।।६

यम की आज्ञा से यमदूतों ने उसे महान् घोर नरक में डाल दिया साठ हजार वर्ष तक नरक यातना भोगी।६।

नरकान्निःसृतो देवि ! दर्दुरत्वं तथाः गताः ।
ऋक्षत्वं च ततो देवि ! मानुषत्वं ततोऽलभेत् ।।७

हे देवि ! नरक से निकल कर मेंढक की योनि मिली। फिर भालू की योनि इसके बाद मानव योनि उसे मिली।७।

पाण्डुरोगेण संयुक्तो वंशो नैव तु जीवति ।
कन्याश्च बहवो जाता विधवा व्यभिचारिणिः ।।८

उसे पाण्डु रोग हुआ। सन्तान जीवत नहीं रहती थी। उसके कन्याएँ अनेक हुईं वे विधवा एवं व्यभिचारिणी हुईं।८।

अपत्यानां निरोधश्च पुत्रत्वसमये सति ।
अस्य पुण्यं प्रवक्ष्यामि यथा पापात्प्रमुच्यते ।।९

सन्तान का विरोध एवं पुत्र का अभाव हो गया। अब मैं इसके पुण्य को कहता हूँ जिससे पाप से मुक्ति हो जाय।९।

षण्डांशं ब्राह्मणं दानं श्रीविष्णोः पूजनं तथा ।
विष्णोरराट्मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।।१०

एवंकृते न सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ।
रोगाश्च विलयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥११

गृह स्थित धन का षडांश दान दे। श्री विष्णु का यथाविधि पूजन करे। 'विष्णो रराट' मन्त्र से एक लाख जप कराये। ऐसा करने से वंश वृद्धि होती है। रोगों की समाप्ति होती है। इसमें शंका एवं विचार नहीं करना चाहिये।१०-११

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में 'आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक ऊन्तालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



चत्वारिंश अध्याय

शिव उवाच

पुरा देवि शुभं ख्यातं पुरं मङ्गलनामकम् ।
तत्र वैश्यो वसत्येको धनधान्यसमन्वितः ॥१

शिव जी बोले--हे पार्वती ! प्राचीन काल में एक मंगलपुर नामक स्थान था। वहाँ एक धन धान्य से सम्पन्न एक वैश्य रहता था।१।

तस्य नाम समाख्यातं मङ्गलं देवि ! वै शुभम् ।
तस्य पत्नी विशालाक्षी सुन्दरी सुखदायिनी ॥२
विष्णुभक्तिरतो नित्यं गुरुब्राह्मणेसेवकः ।
आचारो नियतश्चैव क्रयविक्रयतत्परः ॥३

उसका नाम मंगल था। उसकी पत्नी सुन्दर, बड़े नेत्रों वाली एवं सुख दायिनी थी। वह वैश्य विष्णु भक्ति परायण एवं गुरु ब्राह्मणों का सेवक था। सदैव सदाचार में रहता तथा क्रय-विक्रय किया करता था।२-३।

एकदा तु गृहे देवि ! मित्रं तस्य समागतम् ।
आदरं बहुधा कृत्वा भोजयामास शास्त्रतः ॥४

हे देवि ! एक बार उसका मित्र उसके घर आया। उसका उसने बहुत आदर किया तथा शास्त्रविधि अनुसार उसे भोजन कराया।४।

स्वर्णदानं ततो लक्षमुद्रादानं तु तत्प्रिये ! ।
दत्तं वैश्येन भो देवि ! ब्राह्मणाय स्वशान्तये ॥५

हे प्रिये ! उसने लगभग एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान किया ।

ब्राह्मणेनापि तत्सर्वं स्थापितं तस्य वै गृहे ।
ततोऽगात्तीर्थयात्रार्थं वाराणस्यां वरानने ! ॥६

ब्राह्मण ने भी उस सब धन को, जो उसने दान में दिया था, उसी के घर रख वह तीर्थ यात्रा के लिये बनारस चला गया ।६।

तस्य मृत्युरभूद्देवि ! काश्यां चैव स्वकर्मतः ।
बहुकाले गते देवि ! वैश्यो दारिद्रयपीडितः ॥७

हे देवि ! स्वकर्मानुसार उसकी मृत्यु काशी में हो गई । बहुत समय बाद वह वैश्य दरिद्री हो गया ।७।

पुत्रदारैश्च संयुक्तस्तस्य द्रव्यं तदा प्रिये ।
भुक्तं सर्वं तदा देवि स्वदत्तं चैव पुण्यदम् ॥८
वृद्धत्वे च पुनर्जाते तस्य मृत्युरभूत्किल ।
अयोध्यामरणांत्तस्य स्वर्गवासस्ततोऽभवत् ॥९

अपने दिये हुए धन का ही उस वैश्य ने पुत्र-पत्नी सहित उस द्रव्य का भोग किया । वृद्धावस्था आने पर वह मृत्यु को प्राप्त हो गया । उसका मरण अयोध्या में हुआ था अतः उसे स्वर्ग मिला ।८–९।

बहुवर्षसहस्राणि विष्णुलोके वरानने ! ।
भुक्त्वा बहुविधं भोगं ततः पुण्यक्षयेऽनघे ॥१०
मृत्युलोके भवेज्जन्म धनधान्यसमन्वितः ।
विष्णुपूजारतो नित्यं ब्राह्मणो भक्तिरुत्तमाः ॥११

विष्णु लोक में बहुत वर्षों तक सुख भोग करके, पुण्यों के समाप्त होने पर उसका जन्म मृत्यु लोक में हुआ । वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ । वह विष्णु पूजा में रत, ब्राह्मणों का सेवक एवं भक्ति परायण हुआ ।१०–११।

मित्रद्रव्यं स्वयं दत्तं भुक्तं तेन ततः प्रिये ! ।
पुत्रोत्पत्तिः प्रथमतस्तस्य वै मरणं भवेत् ॥१२

हे प्रिये ! अपने स्वयं मित्र को दिये गये धन का उसने उपयोग स्वयं कर लिया अतः उसके प्रारम्भ में पुत्र हुआ फिर उसका मरण हो गया।१२।

पुनः पुत्रो न जायेत काकवन्ध्या ततः प्रिये ! ।
शरीरे कफवातादिरोगाश्च विविधा ।।१३
वृद्धत्वं तथा तस्य जायते नात्र संशयःस्तथा ।
तत्पापशमनार्थं च पुण्यं शृणु वरानने ! ।।१४

उसके फिर कोई पुत्र नहीं हुआ। वह काक बन्ध्या हो गई। उसके शरीर में कफ-वात-पित्त आदि राग हो गये। उसे बुढ़ापा भी शीघ्र आ गया। उस पाप के शमन हेतु मैं पुण्य को कहता हूँ। हे सुन्दर मुख वाली ! उसे सुनो।१३-१४।

षडांशं च ततो दानं ब्राह्मणाय वरानने ! ।
गायत्रीमन्त्रजाप्यं च लक्षमेकं प्रयत्नतः ।।१५
हवनं विधिवत्कुर्यात्तत्तर्पणंमार्जनं तथा ।
गामेकां कपिलां दद्यात्स्वर्णश्रृङ्गीं सहाम्बराम् ।।१६

गृह स्थित धन का षडांश भाग ब्राह्मण को दान में दे। एक लाख गायत्री मन्त्र का जप प्रयत्न पूर्वक कराये। विधिवत हवन, तर्पण एवं मार्जन करे। वस्त्र आभूषणों से सज्जित कर, सोने के सींगों से युक्त एक गाय का दान करे।१५-१६।

दद्यात्प्रयत्नतो देवि ! ब्राह्मणाय महात्मने ।
तिलधेनुं ततो दद्यात्पात्रं वस्त्रं तथा प्रिये ! ।।१७
हरिवंशश्रुतिर्ब्रह्मदम्पत्योः पूजनं चरेत् ।
एवंकृते ततो देवि पुनः पुत्रः प्रजायते ।।१८
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति नात्रकार्या विचारणा ।।१९

प्रयत्न पूर्वक किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान में दे। तिल, धेनु पात्र भी, वस्त्र भी दान में दे। हरिवंश पुराण का श्रवण करे। ब्राह्मण-ब्राह्मणी को भोजन करावे। ऐसा करने से हे देवि ! पुनः पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। इसमें सन्देह एवं विचार नहीं करना चाहिए।१७-१८।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में माघा नक्षत्र के प्रथम चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक चालीसवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



एकचत्वारिंश अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यानगराद्देवि ! योजनोपरि वल्लभे ! ।
दक्षिणे नन्दिनीग्रामे वसति बह्वो जनाः ॥१

हे देवि ! अयोध्या नगरी से, एक योजन दूर, दक्षिण में नंदिनी नामक गाँव में बहुत से लोग रहा करते थे ।१।

द्विजस्तत्र वसत्येको मद्यवेश्यारतः सदा ।
परस्त्रीलम्पटो नित्यं मद्यमांसरतस्तदा ॥२

वहाँ एक ब्राह्मण मद्यपान एवं वेश्या गमन करने वाला, परस्त्री गामी, मद्य-मास सेवी रहा करता था ।२।

नामतो मित्रशर्मेति तस्य पत्नी तु कर्कशा ।
प्रत्यहं द्यूतकारणे व्ययं कुर्याद्दिने दिने ॥३
एवं बहुगते काले तस्य मृत्युर भूत्पुरा ।
पश्चान्मृता तु तत्पत्नी कर्कशा दुःखदायिनी ॥४

उसका नाम मित्र शर्मा था । उसकी पत्नी कर्कशा थी । जूआ रोजाना वह खेलता था । उसमें धन व्यय करता । इस प्रकार रहते, बहुत दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई । इसके उपरान्त कर्कशा, दुःखदायिनी पत्नी भी मर गई ।३–४।

यमस्य किङ्करैरेव निक्षिप्तो नरकार्णवे ।
सप्ततिर्वै सहस्राणि वर्षाणि सुरवल्लभे ! ॥५
भुक्तं दुःखं नरकजं दम्पतीभ्यां तदा शिवे ।
ततः पापक्षये द्देवि ! श्वान योनिरभूत्पुरा ॥६

यम के दूतों ने उसे नरक के समुद्र में डाल दिया । उसने पत्नी सहित सत्तर हजार वर्ष तक नरक की यातना भोगी फिर पापों के क्षय होने पर कुत्ते की योनि उन्हें प्राप्त हुई ।५–६।

श्वान योनिं ततो भुक्त्वा शूकरो निर्जने वने ।
मानुषस्य पुनर्योनि मध्यदेशे ततोऽलभत् ॥७

कुत्ते की योनि को भोगने के उपरान्त निर्जन बन में सूअर की योनि प्राप्त हुई फिर इसके उपरान्त मध्य देश में उसे मानव योनि मिली ।७।

नन्दिग्रामफलाद्देवि धनधान्यसमन्वितः ।
परस्त्रीलम्पटाद्देवि पादपीडा प्रजायते ।।८

नंदिग्राम में वे फल के कारण हे देवि ! वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ । पर स्त्री लम्पट होने के कारण उसके पैर में पीड़ा हुई ।

मद्यपानकलाद्देवि गर्भपातः पुनः पुनः ।
बह्वयः कन्याः प्रजाताश्च बहुस्त्रीगमनात्प्रिय । ।।९

मद्यपान के कारण पुनः पुनः गर्भपात हुये । अनेक स्त्रियों के साथ गमन करने के कारण अनेक कन्यायें उत्पन्न हुई ।९।

पुत्रस्य मरणं देवि जातं वेश्याऽतिसङ्गमात् ।
पूर्वजन्मकृतं पापं पुण्यं च गिरिजे वरे ! ।।१०
मानुषर्भुज्यते सर्वं मृत्युलोके सुरेश्वरि ! ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि याथार्थं श्रृणु भामिनि ! । ११

वैश्या के अति संग के कारण पुत्र मरण हुआ । हे सुरेश्वरी पूर्व जन्म के पाप एवं पुण्य इसी मृत्युलोक में मानवों के द्वारा भोगे जाते हैं । अब मैं हे प्रिये ! उसकी शान्ति आपसे कहता हूँ, उसे सुनो ।१०-११।

गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।।१२
वापीकूपतडागेषु जोर्णोद्धारः प्रयत्नतः ।
माघकार्त्तिकवैशाखे श्रावणे च विशेषतः ।।१३
प्रत्यहं भोजयेद्विप्राञ्छोत्रियान्वेदपारगान् ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां द्विलक्षजपमाचरेत् ।।१४

धर के धन में से आठवां भाग ब्राह्मण को दे । प्रयत्न पूर्वक बावड़ी, कुए और तालाबों का जर्णोद्धार कराये । माघ, कार्त्तिक, वैशाख एवं श्रावण मास में विशेषकर नित्य प्रति वेदज्ञ ब्राह्मण को रोजाना भोजन कराये । गायत्री मन्त्र एवं 'जात वेद से' मन्त्र के दो लाख जप कराये ।१२-१४।

जपतो हवनं तद्वत्तर्पणं मार्जनं तथा ।
महाभारतमाख्यानं श्रुत्वा पापं व्यपोहति ।।१५

जप से दशांश हवन, तर्पण एवं मार्जन विधिवत कराये। महाभारत का श्रवण करे तो पाप नष्ट होते हैं।१५।

दशवर्णाः प्रदातव्याः पूर्वपापविशुद्धये।
एवंकृते वरारोहे सर्वरोगः प्रणश्यति ॥१६
पुत्रो भवति भो देवि ! वन्ध्यात्वं प्रणश्यति।
काकवन्ध्या च या नारी पुनः पुत्रमवाप्नुयात् ॥१७

पूर्व पाप की शुद्धि हेतु दशवर्णी गाय दान में दे। ऐसा करने से हे पार्वती जी ! सभी रोग एवं पाप नष्ट हो जाते हैं। पुत्र की प्राप्ति होती है। बाँझपन छूट जाता हैं। जो नारी काक बन्ध्या भी होती है तो उसे भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।१६-१७।

कन्यका नैव जायन्ते धनवृद्धिर्भवेत्किल।
पूर्वजन्मकृतं पापं क्षयं याति न चान्यथा॥१८
इह जन्मनि सुखं भुंक्ते पुनः पापं न बाधते॥१९

ऐसा करने से कभी कन्या उत्पन्न नहीं होती, धन की वृद्धि होती है। पूर्व जन्म के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है। इस जन्म में सुख की प्राप्ति होती है तथा पुनः पाप बाधा नहीं करते।१८-१९।

।। इति श्री 'मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक इकतालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।



द्विचत्वारिंशो अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यायां विशालाक्षि ! कुलालो वसति प्रिये !।
मथुराग्राममध्ये वै स्वकर्मनिरतः सदा ॥१

शिवजी पार्वतीजी से बोले—हे विशालाक्षि ! अयोध्या में एक मथुरा नामक ग्राम में एक कुम्हार रहता था। वह सदैव अपने कर्म में रत रहता था।१।

पात्रं वै मृन्मयं देवि ! प्रकरोति तदा प्रिये !।
तस्य मित्रं समायातो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥२

तस्य स्त्री च महादुष्टा ब्राह्मणी व्यभिचारिणी ।
कुलालेनाभवत्प्रीतिर्मैथुनं प्रकरोति सा ॥३

वह मिट्टी के बर्तन बनाया करता था। उसका एक मित्र वेदों में पारङ्गत ब्राह्मण उसके घर आया। उस ब्राह्मण की स्त्री महान दुष्ट एवं व्यभिचारिणी थी। उसकी कुम्हार से प्रीति हो गई, उसके साथ मैथुन करती थी।२-३।

ब्राह्मण्यां गमनं नित्यं बहुवर्षं निरन्तरम् ।
एवं बहुगते काले समयातीते सुरेश्वरि ! ॥४

हे सुरेश्वरी ! ब्राह्मणी के साथ गमन करते उस कुम्हार का बहुत समय व्यतीत हो गया।४।

कुलालस्य ततो मृत्युर्वृद्धे जाते सुरेश्वरि ! ।
पश्चात्तस्य मृता पत्नी या पुरा व्यभिचारिणी ॥५

वृद्धावस्था आने पर कुम्हार की मृत्यु हो गई इसके उपरान्त उसकी व्यभिचारिणी ब्राह्मणी पत्नी भी मर गई।५।

यमदूतैर्महाघोरे कर्दमे नरके प्रिये ! ।
यमाज्ञया च निक्षिप्तो वर्षं लक्षत्रयं शुभे ! ॥६

हे प्रिये ! यम की आज्ञा से यम दूतों ने महाभयंकर कर्दम नामक नरक में तीन लाख वर्ष तक पटक दिया।६।

पतिव्रता समायाता लक्षत्रयगते सति ।
नरकाब्धे समुद्धृत्य स्वपतिं च ततः प्रिये ! ॥७
सत्यलोके समायाता स्वपत्न्या सह भामिनी ।
भुक्त्वा लक्षत्रयं देवि ! भोगाश्च विविधानपि ॥८

हे प्रिये ! तीन लाख वर्ष बीत जाने पर उसकी पतिव्रता पत्नी वहाँ आई। उसने अपने पति को नरक-समुद्र से निकाला। वह अपने पति के साथ सत्यलोक में आई। वहाँ तीन लाख वर्ष तक विविध सुखों को भोगा।७-८।

ततः पुण्यक्षये जाते धावतेन सह शोभने ! ।
मर्त्यलोके ततो जातो धनधान्ययुतस्तदा ॥९
पुत्रकन्याविहीनश्च मृतवत्सत्वमाप्नुवात् ।
ब्राह्मण्यां गमनाद्देवि ! बहुरोगाश्च जायते ॥१०

पुण्यों के क्षय होने पर वह अपने पति के साथ मृत्यु लोक में, धन-धान्य से सम्पन्न होकर उत्पन्न हुई । वह पुत्र एवं कन्या से विहीन तथा मृतवत्सा हुई । ब्राह्मणी गमन से उसके अनेक रोग उत्पन्न हुए ।९-१०।

अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं गिरिजे शुभे ! ।
सर्वस्वदानं कर्तव्यं रुद्रमंत्रजपं तथा ।।११

हे गिरजा ! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो ! उसे सर्वस्व दान कर देना चाहिये तथा रूद्र मन्त्र का जप करना चाहिये ।११।

पूजा कार्या पार्थिवानां वाटिकारोपणं तथा ।
हरिवंशश्रुतिः कार्या भूमिदानं तथैव च ।।१२

पार्थिवों की पूजा करनी चाहिये । बाग लगाने चाहिए । हरिवंश पुराण का श्रवण करना चाहिये तथा भूमि दान भी करना चाहिये ।१२।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं तथा प्रिये ! ।
होमं चकारयेद्देवि ! तिलधान्यादितंदुलैः ।।१३
कुण्डे कुर्याद् द्विजद्वारा चतुकोणे सुरेश्वरि ! ।
दशांशं हवनं देवि ! विधिवत्पापशुद्धये ।।१४

हे प्रिये ! गायत्री मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए । तिल-धान्य एवं तंडुल से हवन कराना चाहिये । ब्राह्मण से चतुष्कोणी हवन कुन्डी बनवानी चाहिये । पाप शुद्धि के हेतु दशांश का हवन कराना चाहिये ।१३-१४।

दशवर्णास्ततो दद्यात्स्वर्णनिष्कं चतुष्टयम् ।
ब्राह्मणान् भोजयेत्शुद्धान्षष्टिपायसलड्डुकैः ।।१५

इसके उपरान्त दशवर्णी गाय दान करे, चार निष्क स्वर्ण का दान करे । साठ शुद्ध ब्राह्मणों को खीर-लड्डुओं से ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये ।१५।

भूमिदानं ततः कुर्यात्तिलं दद्यात्प्रयत्नतः ।
एवंकृते न सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ।।१६
सर्वे रोगाः क्षयं यान्ति न च कन्यां प्रसूयते !
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा च पुत्रिणी ।।१७

फिर भूमिदान एवं प्रयत्न पूर्वक तिल दान भी करना चाहिये । ऐसा करने से निसन्देह वंश वृद्धि होती है । सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, कन्या उत्पन्न नहीं

होतीं। काक बन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है तथा मृतवत्सा भी पुत्र प्राप्त कर लेती है।१६-१७।

॥इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'मघा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक बयालीसवाँ अध्याय संपूर्ण॥



त्रयः चत्वारिंश अध्याय

शिव उवाच

काञ्चीपुर्यां महादेवि ! वैश्य एकोऽवसत्पुरा।
मेदसिंह इति ख्यातस्तस्य स्त्री पालिका शुभा॥१

शिवजी बोले—हे महादेवि ! कांचीपुरी में एक मेदसिंह नामक वैश्य प्राचीन काल में रहा करता था, उसकी स्त्री का नाम पालिका था।१।

अश्वादिविक्रयं देवि ! छागपक्ष्यादिकं तथा।
प्रत्यहं क्रियते देवि ! बहुद्रव्यस्य सञ्चयम्॥२
न देवान्मन्यते देवि ! पितॄन्नैव च मन्यते।
बहुष्वहस्सु गच्छत्सु प्रमृतौ पितरौ ततः॥३

हे देवि ! वह घोड़े आदि पशुओं का, बकरी एवं पक्षियों का नित्य प्रति क्रय-विक्रय करता था। इससे उसने बहुत धन एकत्रित किया। न वह देवताओं को, न पितरों को मानता था। बहुत समय बाद उसके माता-पिता मर गये।२-३।

स तयोर्नाकरोत्श्राद्धं यत्कर्त्तव्यं सुतैः प्रिये !।
ततो बहु दिने याते वृद्धे सति वरानने !॥४
मरणं तस्य वै जातं वैश्यस्य कृपणस्य च।
यमाज्ञया तु दूतेन कुम्भीपाके सुदारुणे॥५

हे प्रिये ! जो पुत्र का कार्य है श्राद्ध आदि, उसने नहीं किया। वृद्ध होने पर वह मर गया तब यमाज्ञा से यम दूतों ने उसे भयंकर कुम्भी-पाक नामक नरक में डाल दिया।४-५।

निक्षिप्तं शृंखलैर्बद्ध्वा युगपञ्चदशं समाः।
भुक्त्वा नरकजं दुःखं महाकृमिसमाकुलम्॥६

नरकान्निःसृतो देवि ! महिषत्वं ततोऽलभत् ।
पुनर्वै व्याघ्रयोनिश्च मूषकयोनिस्ततोऽभवत् ।।७

बेड़ियाँ बांध कर पन्द्रह युग तक उसे वहाँ रखा। भयंकर कीड़ों से युक्त उस नरक को भोग, नरक से बाहर आ भैंसे की योनि को प्राप्त किया, फिर व्याघ्र की योनि इसके बाद मूसे की योनि प्राप्त की।६-७।

काकयोनिं ततो भुक्त्वा गजयोनिस्ततोऽभवत् ।
शुभे दिने विशालाक्षि ! धनधान्यसमन्वितः ।।८

इसके बाद कौए की योनि फिर गज योनि उसे मिली। इसके बाद शुभे दिन आने पर धन धान्य से समन्वित मानव योनि उसे मिली।८।

व्याधिग्रस्तोऽभवद्देवि पुत्रकन्याविवर्जितः ।
काकवन्ध्या भवेन्नारी मृतवत्सा ह्यपुत्रिणी ।।९

वह रोगों से ग्रस्त, पुत्र एवं कन्याओं से रहित वह हुई। वह नारी काक वत्सा, मृतवत्सा एवं अपुत्रिणी हुई।९।

पूर्वजन्मकृतं पापं यतः शान्तिमवाप्नुयात् ।
तत्सर्वं श्रृणु मे देवि ! विस्तारेण समन्वितम् ।।१०

हे देवि ! इन पूर्व जन्म के पापों से जो शान्ति मिले उन सभी कार्यों को अब मैं विस्तार पूर्वक कहता हूँ।१०।

प्रयागे नियतः स्नायी प्रतिमाघं भवेद्यदाः ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां एकलक्षजपं तथा ।।११
भूमिदानं च वै कृत्वा ततः पुत्रः प्रजायते ।
वन्ध्यात्वं शमनं याति काकवन्ध्यात्वमप्यथ ।।१२

प्रत्येक माघ में नित्य प्रति प्रयाग में स्नान करे। गायत्री अथवा 'जातवेद से' इस मन्त्र का एक लाख जप कराये फिर भूमिदान करे तो निश्चय पुत्र होता है। बांझपन एवं काक वंध्यापन छूट जाता है।११-१२।

मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।
सर्वे रोगाः क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ।।१३

मृतवत्सा को चिरञ्जीवी उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है तथा सभी रोग समाप्त हो जाते हैं इसमें कुछ भी विचार नहीं करना चाहिये ।१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तेतालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



चतुः चत्वारिंशत अध्याय

शिव उवाच

सौराष्ट्रविषये देवि ! शोभनं नाम वै पुरम् ।
तत्र क्षत्री वसत्येको धनधान्यसमन्वितः ॥१
मोहनेति च विख्यातस्तस्य पत्नी सती शुभा ।
वैश्य वृत्तरतो नित्यं व्यापारं कुरुते सदा ॥२

शंकर जी बोले---हे पार्वती ! सौराष्ट्र देश में शोभन नामक नगर में, धन धान्य से सम्पन्न एक क्षत्री रहता था । उसका नाम मोहन था । उसकी पत्नी का नाम शुभा था । वह वैश्य वृत्ति में रत, व्यापार किया करता था ।१-२।

व्यापारार्थं ततो देवि ! वृषभा बहुपालिताः ।
द्वौ वृषौ योजितौ देवि ! कूपे वै पतितौ प्रिये ! ।।३

हे देवि ! व्यापार के हेतु उसने बहुत से बैल पाल रखे । दो बैल उसने जोड़ लिए थे । वे कूए में गिर पड़े ।३।

मृतौ तौ रात्रिकालेऽपि जगाम स तदा न च ।
पापं च स न जानाति गर्वद्वारा वरानने ! ।।४

वे दोनों बैल रात्रि को कूए में मर गये परन्तु वह वहाँ नहीं गया । हे सुन्दर मुख वाली ! वह गर्व द्वारा अपने पाप को भी नहीं जानता था ।४।

यत्किञ्चत्क्रियते कर्म शुभं तु कलुषं बहु ।
गुणाः स्वल्पा बह्वगुणाः मोहनं नाम क्षत्रिणः ।।५
ततो बहुगते काले मरणं तस्य चाभवत् ।
पश्चान्मृता तस्य पत्नी महालुब्धा वरानने ! ।।६

वह शुभ कर्म किया करता था, बहुत पाप करता था। उस मोहन में गुण थोड़े थे, अवगुण बहुत थे। बहुत समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। इसके उपरान्त उसकी लोभिन पत्नी भी मर गई ।५-६।

निक्षिप्तो नरके घोरे यमदूतैर्यमाज्ञया।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।।७
पुनः सरटयोनिश्च वृषयोनिस्ततोऽभवत्।
मानुषत्वं ततो देवि ! मध्यदेशे वरानने ।।८

यमाज्ञा से यमदूतों ने उसे महाघोर नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक यम यातना सह कर गिरगिट को योनि को प्राप्त हुआ। फिर वह बैल हुआ। इसके उपरान्त मध्यदेश में मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ।७-८।

वृषयोश्च पुरा मृत्युर्न कृतं पापमोचनम्।
तस्माद् व्याधिः समुत्पन्ना पूर्वकर्मप्रयत्नतः ।।९

पूर्व जन्म में बैलों की मृत्यु होने पर इसने पाप मोचन हेतु कुछ नहीं किया था। अतः पूर्व जन्म के प्रभाव से अनेक व्याधियाँ उसके शरीर में हो गई ।९।

मुखरा याऽभवत्पत्नी पुरा च प्रबला प्रिये !।
पुनर्विवाहिता देवि ! तद्रूपा मुखरा तथा ।।१०

हे प्रिये ! जो पूर्व में उसकी मुखर (अत्यन्त बोलने वाली) एवं प्रखर पत्नी थी पुनः इसके साथ विवाही गई और वैसी ही मुखर एवं प्रखर हुई।१०।

तत्पापशमनार्थाय षडशं दानमाचरेत्।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षजपं यदा ।।११

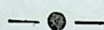
उस पाप के शमन हेतु गृह स्थिति धन का षडांश दान में दे। तथा गायत्री के मूल मन्त्र का पांच लाख जप करे।११।

ततः पापं क्षयं याति शीघ्रं पुत्रो भवेत्प्रिये !।
अपुत्रा मृतवत्सा च काकवन्ध्या च या शिवे ।।१२
पुत्रिण्यश्चैव ताः सर्वा नात्र कार्या विचारणा।
रोगाः सर्वे विनश्यन्ति शीघ्रमेव न संशयः ।।१३

हे प्रिये ! ऐसा करने से शीघ्र पाप नष्ट हो जाते हैं तथा पुत्र की प्राप्ति होती है। जो अपुत्री, मृतवत्सा और जो काक बन्ध्या होती है, ये सभी नारियां पुत्रवती

होती हैं, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये। सभी रोग शीघ्र नष्ट हो जाता हैं, इसमें लेश मात्र भी संशय नहीं है।१२-१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'पूर्वा नक्षत्र के प्रथम चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक चालीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



पंच चत्वारिंशत अध्याय

शिव उवाच

कर्णाटकविषये देवि ! काष्ठकारोऽवसत् पुरा।
छिन्नत्ति सर्वकाष्ठानि व्ययं कृत्वा दिनेदिने ॥१

शिवजी बोले—प्राचीन काल में कर्नाटक में एक बढ़ई रहता था। नित्य-प्रति लकड़ियाँ काटा करता था एवं धनार्जन कर व्यय करता था।१।

एका वै गोत्रजा कन्या तस्यां च मैथुनं कृतम्।
ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्पुरा ॥२

एक उसकी पत्नी सगोत्री कन्या थी, उसके साथ उसने मैथुन किया था। बहुत समय बाद उस लक्कड़हारे की मृत्यु हो गई।२।

पश्चात्तस्य मृता नारी कुलटाच व्यभिचारिणी।
यमदूतैर्महाघोरै नक्षिप्तो नरकार्णवे ॥३
यमाज्ञया महादेवि ! भुक्त्वा नरकयातनाम्।
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते च सः ॥४

बाद में उसकी कुलटा एवं व्यभिचारिणी पत्नी भी मर गई। यमदूतों ने उसे महान् घोर नरक-सागर में डाल दिया। यमाज्ञा से साठ हजार वर्ष तक उसने नरक के कष्ट सहे।३-४।

कुक्कुटत्वं ततो जातं चक्रवाकस्ततोऽभवत्।
मानुषत्वं ततो जातं देशे पूज्यतमे तथा ॥५

फिर उसे मुर्गा की योनि मिली, फिर वह चकवा हुआ फिर एक पूज्यतम देश में मानव योनि में उत्पन्न हुआ।५।

शूद्रसेवारतो नित्यं शूद्रस्नेहेन यन्त्रितः ।
पितुर्मातुर्भवेद्वैरं महिष्याः क्रयविक्रये ।।६
पूर्वजन्मनि भो देवि ! कृतं वृक्षस्य छेदनम् ।
तस्माद्रोगः समुत्पन्नः कटिशूलं निरन्तरम् ।।७

वह शूद्र सेवा में रत रहता था। उसका शूद्र से प्रेम हो गया था। उसका माता पिता से बैर हो गया। वह भैंसों का क्रय-विक्रय किया करता था। पूर्व जन्म में उसने वृक्षों का छेदन किया था, इस कारण उसके रोग हुए तथा कमर में निरन्तर दर्द रहता था।६-७।

गोत्रकन्याभिगमनं यत्कृतं पूर्वजन्मनि ।
तेन पापेन भो देवि ! पुत्रस्य मरणं भवेत् ।।८

पूर्व जन्म में जो गोत्र कन्या से मैथुन किया था, इस कारण पुत्र का मरण हो गया।८।

गर्भस्रावी ततो भार्या काकवन्ध्यात्वमाप्नुयात् ।
वह्वयः कन्यास्ततो जाताः कष्टं प्राप्नोत्यहर्निशम् ।।६

उसकी पत्नी का गर्भ स्राव हो गया। वह काक बन्ध्या हो गई। उसके अनेक कन्याएँ उत्पन्न हुईं एवं उसने रात दिन कष्ट पाये।६।

अतः शान्ति प्रवक्ष्यामि पूर्वपापविशुद्ध ।
गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।।१०
गायत्रीलक्षजाप्येन गोदानेन विशेषतः ।
वाटिकारोपणेनापि गृहदानेन वै शिवे ! ।।११
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ।
पूर्वजन्मकृतं पापं क्षयं याति न संशयः ।।१२
जायन्ते बहवः पुत्राः शूरा कीर्तिविवर्द्धनाः ।
कन्यका नैव जायन्ते काकवन्ध्या तु शाम्यति ।।१२

अब मैं उस पूर्व पाप की शान्ति का उपाय कहता हूँ। गृह स्थित धन का अष्टम भाग ब्राह्मण को दे दे। एक लाख गायत्री मन्त्र का जप कराये। विशेष रूप से गोदान करे वाटिका (उद्यान) लगावे। गृह दान करे इससे सभी रोग दूर हो जाते

हैं इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये। पूर्व जन्म के पाप भी नष्ट हो जाते हैं। वीर एवं कीर्तिवान अनेक पुत्र पैदा होते हैं, कन्या उत्पन्न नहीं होतीं तथा काक वंध्यापन भी छूट जाता है।१०-११।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद
में, पूर्वा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित
कथन' नामक पैंतालीसवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



षट् चत्वारिंशत अध्याय

शिव उवाच

सिंहले वै महाद्वीपे तत्र सिंहं पुरं शिवे ! ।
कायस्थो वैष्णवोप्येकष्टीकारामेति नामतः ॥१

शिवजी ने कहा—हे पार्वती जी ! सिंहल द्वीप में सिंहपुर नामक गाँव में, एक विष्णु भक्त टीकाराम नामक कायस्थ रहता था।१।

तस्य भार्या विशालाक्षि सूर्या नाम्नी शुभा सती ।
आतिथ्यकरणे शक्ति देवतात्यन्तपूजिका ॥२२

उसकी पत्नी बड़ी बड़ी आँखों की 'सूर्या' नाम वाली थी। वह सती थी, अतिथि पूजक थी, देवताओं की पूजक थी।२।

कार्त्तिके माघवैशाखे दीपदानं करोति सा ।
कदाचिद्दैवयोगेन तीर्थयात्रार्थमागता ॥३

वह कार्तिक मास में, माघ मास में एवं वैसाख में दीप दान किया करती थी। कभी दैव योग से वह तीर्थ यात्रा को गई।३।

स्वर्णकारो महादेवि ! बहुस्वर्णेन संयुतः ।
आगतः सिंहनगरे तत्र वासमकारयेत् ॥४
प्रीतिः परस्परं चैव कायस्थस्वर्णकारयोः ।
स्वर्णकारस्य कन्यैका सुन्दरी कमलानना ॥५
कायस्थस्याभवद्भार्या दैवयोगात्तदा शिवे ! ।
स्वर्णकारस्य यत्सर्वं स्थितं तेन हृतं धनम् ॥६

हे महा देवि ! उस सिंह नगर में बहुत सा धन लेकर एक स्वर्णकार वहाँ आया और वहाँ निवास किया। कायस्थ एवं स्वर्णकार में वहाँ परस्पर प्रीति हो गई। स्वर्णकार की एक कन्या सुन्दरी एवं कमल जैसे मुख की थी। वह भाग्य से कायस्थ को स्त्री हो गई स्वर्णकार के पास जो भी धन था वह उसने चुरा लिया।४-६।

द्रव्यक्षयमथो ज्ञात्वा स्वर्णकारो मृतः पुरा।
पुत्रदारादिकं त्यक्त्वा कायस्थश्च तदा शिवे ॥७
तया सार्द्धं रमत्येको पापात्मा कमलानने।
एवं बहुगते काले कायस्थोऽपि मृतः प्रिये ! ॥८

स्वर्णकार अपना धन नष्ट हुआ जान पहिले मर गया। पुत्र एवं पत्नी का त्याग कर वह पापी कायस्थ उसके साथ रमण करता रहता। इस प्रकार बहुत समय बीत गया और कायस्थ की मृत्यु हो गई।७-८।

कुम्भीपाकेऽभवेद्वासो वर्षलक्षत्रयं तथा।
पुनः कर्मवशाद्देवि ! मृगयोनिस्ततोऽभवेत् ॥९
मानुषत्वं वरारोहे ! पुनः प्राप्तो महीतले।
धनधान्यसमायुक्तो वंशो नैव प्रजायते ॥१०

हे देवि ! तीन लाख वर्ष तक उसका कुम्भीपाक नरक में वापस हुआ। फिर कर्मवश से वह मृग योनि को प्राप्त हुआ। फिर वह मनुष्य योनि में पृथ्वी तल पर प्रकट हुआ। उसके धन धान्य हुआ परन्तु उसका वंश नहीं चला।९-१०।

बहुरोगसमायुक्तो ज्वरोतीव्र मृतेः समः।
पुत्राणां मरणं देवि ! शीतलाद्यैरुपद्रवैः ॥११
पूर्वजन्मनि भो देवि ! परस्त्रीगमनं कृतम्।
त्यक्ता विवाहिता नारी पुत्रकन्यासमन्विता ॥१२
तत्पापेनैव भो देवि ! पुत्रादीनां विनाशनम्।
गर्भनाशो भवेद्देवि ! वन्ध्यात्वं जायते शिवे ॥१३

हे देवि ! वह बहुत से रोगों से युक्त हो गया, मृत्यु के समान भयंकर उसे ज्वर आता था। शीतला के प्रकोप थे उसके पुत्रों की भी मृत्यु हो गई। पूर्व जन्म में परस्त्री गमन करने के कारण, विवाहित पत्नी, पुत्र एवं कन्याओं के त्याग के कारण

उसी पाप के कारण उसके पुत्रादि का विनाश हो गया। गर्भनाश हो गया एवं स्त्री बांझ भी हो गई।११-१३।

काकवन्ध्या भवेन्नारी सुखं नैव प्रजायते।
स्वल्पयोनिः कृशाङ्गश्च कथाश्रवणतत्परः ॥१४

उसकी नारी काक वन्ध्या हो नई। सुख कभी नहीं हुआ। वह स्वल्प योनि, कृशांग एवं कथा श्रवण में रत रहती थी।१४।

विद्यादानविहीनश्च स्वकुले बहुनिष्ठुरः।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥१५

वह भी विद्या-दान से विहीन, अपने कुल में अत्यन्त निष्ठुर हुआ। जो इनसे पूर्व जन्म में किये उसकी शान्ति कहता हूँ।१५।

तत्सर्वं शृणु मे देवि! यतः शुद्धिमवाप्नुयात्।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने! ॥१६
हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा।
हरिवंशश्रुतं कुर्यात् त्रिवारावृत्तिसंख्यया ॥१७

हे देवि! अब मैं वह सब सुनाता हूँ, जिससे शुद्धि हो। गायत्री मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये। उसके दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करे। हरि वंश पुराण का श्रवण तीन बार करे।१६-१७।

दशवर्णी ततो दद्यात्स्वर्णदानं विशेषतः।
निष्कत्रयं प्रदद्याच्च ततः पापक्षयो भवेत् ॥१८
भोजयेद् ब्राह्मणान्षष्टितथा दद्याच्च दक्षिणाम्।
एवं कृते विधानं च पुत्रो भवति नान्यथा ॥१९

हे देवि! दशवर्णी गाय दान में दे। तीन निष्क स्वर्ण दान करे। इससे पाप नष्ट हो जाते हैं। साठ ब्राह्मणों को भोजन कराये उन्हें दक्षिणा दे, ऐसा करने से पुत्र होता है, इसमें कोई अन्य बात नहीं है।

रोगाःसर्वेक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा।
एवं यदा न कुर्यात्तु तदा रोगात् पुनः पुनः ॥२०
जायन्ते नात्र संदेहः पूर्वजन्मफलात्किल ॥२१

इस प्रकार सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। यदि ऐसा न करें तो फिर रोग हो जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है।२०-२१।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'पूर्वा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक छियालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

सप्त चत्वारिंशः अध्याय

शिव उवाच

नर्मदादक्षिणे कूले ब्राह्मणो वसति प्रिये !।
ब्रह्मकर्मकरोद् नित्यं सदा वेदपरायणः ॥१
शंकरस्य पुरे देवि ! प्रत्यहं वेदपाठनम् ।
अर्भकान्ब्रह्मजातीयान्पाठयामासा वै तदा ॥२

शिवजी बोले—नर्वदा के दक्षिणी किनारे पर एक वेद परायण ब्रह्म कर्म में रत एक ब्राह्मण रहता था। वह काशी में नित्य प्रति वेद पाठ करता था और वह ब्रह्म जातीय ब्राह्मणों को वेद पढ़ाया करता था।१-२।

तस्य भार्याद्वयं चासीदेका प्रीतिमतो सदा ।
विरोधिनी ततो ह्येका ज्येष्ठा भार्या तु तां त्यजेत् ॥२
एवं बहुगते काले ब्राह्मणस्य तदा शिवे !।
ततो मृत्युवशं यातस्तस्य भार्या गरीयसी ॥४

उसकी दो पत्नियां थीं। एक सदैव प्रेम करती थी। एक विरोधिनी थी। अतः उसने बड़ी पत्नी का त्याग कर दिया। इस प्रकार बहुत समय बीत जाने पर उसकी प्यारी पत्नी का देहान्त हो गया।३-४।

चितां कृत्वा प्रयत्नेन भर्त्तुः खलु वरानने !।
भर्ता सह च भो देवि सती जाता महामतिः ॥५

हे सुमुखी ! वह महा बुद्धिमान प्रयत्न पूर्वक चिता बना कर अपने पति के साथ सती हो गई।५।

सत्यलोकस्त्वभूत्तस्य जायया सहितस्य वै ।
बहुवर्षसहस्राणि सत्यलोकेऽवसत्तदा ॥६

वह अपनी पत्नी के साथ स्वर्ग लोक गया । हजारों वर्ष तक वे स्वर्ग में रहे ।६।

ततः पुण्यक्षये जाते मार्त्यलोकेऽभवत्पुनः ।
मानुषत्वं शुभे जन्म कुले महति पूजिते ॥७

पुण्यों के समाप्त होने पर वे पुनः मृत्यु लोक में आये तथा अत्यन्त पूज्य कुल में मानव योनि प्राप्त की ।७।

धनधान्यसमायुक्तो वंशहीनो विचक्षणः ।
पूर्वजन्मनि भो देवि भार्यात्यागः कृतस्तदा ॥८

वह धन धान्य से युक्त, एवं चतुर हुआ क्योंकि उसने पूर्व जन्म में अपनी पत्नी का त्याग किया था ।८।

तेन दोषेण भो देवि ! ततः पुत्रो न जीवति ।
दिने दिने कुक्षिपीडा तस्य चाभिनवा भवेत् ॥९

उस दोष से पुत्र भी जीवित नहीं रहते । दिन दिन में उसके पेट पीड़ा रहती थी ।९।

पुण्यं शृणु महादेवि ! यतः शान्तिर्भविष्यति ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥१०
वापीकूपतडागाश्च पथिमध्ये च कारयेत् ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां जपं कुर्याद्विचक्षणः ॥११

हे महा देवि ! अब तुम उसका पुण्य सुनो जिससे शान्ति हो । घर के षडांश का पुण्य कर दे । बावड़ी, कूआ और तालाब रास्ते में बनवाये । गायत्री एवं जातवेद से मन्त्र को बड़ी चतुराई से कराये ।१०-११।

होमं च तद्दशांशेन तिलतन्दुलपायसैः ।
दशवर्णाः प्रदातव्या विप्राणां भोजनं शतम् ॥१२
एवं कृते न सन्देहो वंशलाभो भवेदनु ।
व्याधिश्चैव प्रमुच्येत सत्यं सत्यं वरानने ॥१३

तिल, चावल, खीर से दशांश क्रम से हवन करे। दशवर्णीय गाय दे। सौ ब्राह्मण भोजन कराये। ऐसा करने से वंश लाभ होता है। इसमें सन्देह नहीं है। सभी व्याधियाँ ऐसा करने से नष्ट हो जाती हैं। ये बातें सत्य हैं।१२-१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'पूर्वा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सैंतालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

←○→

अष्टाचत्वारिंश अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यानगरे देवि ! वैश्योऽवात्सीत्सुरेश्वरि ।
स्वकर्मनिरतो दक्षो विष्णुभक्तिपरायणः ॥१

शिवजी बोले— हे सुरेश्वरि ! अयोध्या नगर में, विष्णु भक्ति परायण, अपने कर्म में निरत, एक वैश्य रहता था।१।

धनधान्यसमायुक्तो विप्रसेवासु तत्परः ।
पत्नी तस्य वरारोहे सुन्दरी च पतिव्रता ॥२

वह धन धान्य से युक्त, विप्र सेवा में रत रहता था। उसकी पत्नी सुन्दरी एवं पतिव्रता थी।१।

कश्चिन्मित्रं प्रियस्तस्य ब्राह्मणो वेदपारगः ।
प्रत्यहं निकटे तस्य बहुस्वर्णमुपार्जयेत् ।
ब्राह्मणोप्यात्मनः स्वर्णं ददौ वैश्या वै शिवे । ३

उसका एक मित्र था, वह जाति का ब्राह्मण एवं वेदज्ञ था। ब्राह्मण ने अपना उपार्जित बहुत सा स्वर्ण उस वैश्य के पास रख दिया।३।

तीर्थयात्राप्रसङ्गे न वाराणस्यां गतः स वै ।
गत्वा काश्यां वरारोहे शरीरं ब्राह्मणोऽत्यजत् ॥४
सर्वं वैश्येन तद् द्रव्यं भुक्तं बहुदिनोपरि ।
शरीरत्याजिनाद्देव पुण्यतीर्थे स्त्रिया सह ॥५

वह ब्राह्मण तीर्थ यात्रा हेतु बनारस गया, वहाँ ब्राह्मण ने शरीर त्याग कर दिया। उस धन को वैश्य ने बहुत दिन तक भोगा। स्त्री सहित उस पुण्य तीर्थ में शरीर त्याग किया।४-५।

अयोध्यायां विशालाक्षि स्वर्गवास तथाऽक्षयम् ।
दशपंचयुगं भुक्त्वा फलं चैव मनोहरम् ॥६
ततः पुण्यक्षये जाते मृत्युलोके सुरेश्वरि ।
कुले महति वै पूज्ये नरजन्म ततोऽभवत् ॥७

अयोध्या में शरीर त्याग के कारण अक्षय स्वर्ग की प्राप्ति उसे हुई। पन्द्रह युग तक सुन्दर फल भोगकर, पुण्यों के समाप्त होने पर, मृत्यु लोक में बहुत बड़े, पूजित परिवार में उसका मानव जन्म हुआ।६-७।

धनधान्यसमायुक्तो विष्णुपूजासु तत्परः ।
ब्राह्मणस्यैव स्वर्णादि न दत्तं वै गृहीतवान् ॥८
तस्मात्खलुः वरारोहे पुत्रस्तस्य न जायते ।
शरीरे च महाकष्टं मध्ये मध्ये प्रजायते ॥९

वह धन धान्य से युक्त, विष्णु पूजा में तत्पर हुआ। उसने ब्राह्मण के स्वर्णादि को ग्रहण कर लिया था और लौटाया न था इस कारण उसके पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। बीच-बीच में शरीर में महान कष्ट होता था।८-९।

तस्य चोत्तराफाल्गुन्याः प्रथमे चरणे शुभे ।
जन्मवै चाप्यभूद्देवि ! पुत्रकन्याविवर्जितः ॥१०

हे देवि ! उसका जन्म उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ था इस कारण पुत्र एवं कन्याओं निहित हुआ।१०।

अस्य पापस्य वै शान्ति पुण्यं शृणु वरानने ! ।
हरिवंशश्रुतं कुर्याद्वारमेकं च तत्परः ॥११

हे सुमुखि ! इस पाप की मैं शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो। एक बार हरिवंश पुराण का तत्परता से श्रवण करे ॥११॥

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्रीमूलमंत्रेण दशायुतजपं तथा ॥१२

होमं च तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ।
दशवर्णाः प्रदातव्या स्वर्णयुक्ताः सहाम्बराः ॥१३

गृह स्थित धन के षडांश को पुण्य कार्य में लगाये । गायत्री के मूल मंत्र का दश अयुत (हजार) जप करायें । दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करें । स्वर्ण अलंकृत, सवस्त्रा दशवर्णी गाय दान में दे ॥१२-१३।

भूमिदानं ततो देवि ! विप्राय विदुषे प्रिये ।
व्रतं सूर्यस्य वै कुर्यात्पत्न्या सह वरानने ! ॥१४

हे प्रिये ! विद्वान ब्राह्मण के लिए भूमि दान दे । पत्नी सहित सूर्य का व्रत करे ।१४।

कूष्माडं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ।
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं सुवर्णं दक्षिणां ततः ॥१५

पेठा और नारियल, पंचरत्न के साथ, गंगा में स्थित हों दान में देना चाहिये तथा स्वर्णमयी दक्षिणा ब्राह्मण को देनी चाहिए ।१५।

शय्यादानं प्रयत्नेन प्रकुर्यान्नियतेन्द्रियः ।
एवं कृते न संदेहः सर्वरोगो विनश्यति ॥१६
अपुत्रो लभते पुत्रं काकवन्ध्या सुतं लभेत् ।
मृतवत्सा सुतं सूते चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१७

इन्द्रियों को संयमित करके प्रयत्न पूर्वक शैय्या दान करना चाहिये । ऐसा करने से सारे रोग नष्ट हो जाते हैं । अपुत्री को पुत्र एवं काक बंध्या को पुत्र तथा मृतवत्सा को भी चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है ।१६-१७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में
'उत्तरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक अड़तालीसवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



एकोनपंचशत अध्याय

शिव उवाच

पुरुषोत्तमपुरे रम्ये स्वर्णकारोऽवसत् पुरा ।
स्वकर्मनिरतो नित्यं हेमकृत्ये विचक्षणः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! प्राचीन काल में सुन्दर पुरुषोत्तम पुर में एक स्वर्णकार रहता था । वह नित्य अपने कर्म निरत रहता था स्वर्ण कार्य (आभूषण निर्माण) में अति चतुर था ।१।

ब्राह्मणस्तस्य वै मित्रं धनाढ्यो वेदवर्जितः ।
तेन विप्रेण भो देवि ! स्वर्ण दत्तं शतं पलम् ॥२
स्वर्णकाराय मित्राय माल्यार्थं च विचक्षणः ।
ब्राह्मणाय न दत्तं हि माल्यं दिव्यं वरेऽनघे ॥३

एक धनवान, वेद विहीन ब्राह्मण उसका मित्र था । उसने सौ पल स्वर्ण स्वर्णकार को दिया । उसने वह स्वर्ण उसे माला निर्माण के हेतु दिया था लेकिन उस ने माला बनाकर ब्राह्मण को नहीं दी ।२-३।

ब्राह्मणस्याभवन्मृत्युः किंचित्काले गते सति ।
स्वर्णं तत्स्वेच्छया भुक्तं पुत्रदारयुतेन च ॥४

कुछ समय उपरान्त ब्राह्मण की मृत्यु हो गई । तब उस स्वर्ण का स्वेच्छा से सपरिवार उपभोग किया ।४।

ततो बहुगते काले स्वर्णकारस्य वै शिवे ।
मरणं वै तदा जातं पुत्रदारायुतस्य च ॥५
महाकटाहनरके दूतौ क्षिप्तो यमाज्ञया ।
युगमेकं वरारोहे ! भुक्तं नरकजं फलम् ॥६
नरकान्निर्गतो देवि ! व्याघ्रयोनिस्ततोऽभवत् ।
व्याघ्रयोनिं ततो भुक्त्वा शृगालत्वं ततोऽभवत् ॥७

बहुत समय उपरान्त सपरिवार स्वर्णकार की मृत्यु हो गई । यमदूतों ने यमाज्ञा से उसे महा घोर नरक के कढ़ाव में डाल दिया । एक युग तक नरक का फल भोग हे देवि ! वह नरक से निकल व्याघ्र योनि को प्राप्त हुआ । फिर इसे भोग स्यार की योनि को प्राप्त हुआ ।५-७।

ततः काकस्य वै योनिं भुक्त्वा नरकमाप्नुयात् ।
देशे पुण्यतरे देवि ! मानुषत्वं सुरेश्वरि ॥८

फिर कौए की योनि में नरक भोग हे सुरेश्वरी ! पुण्य देश में मानव योनि को प्राप्त हुआ ।८।

पूर्वजन्मनि यत्स्वर्णं ब्राह्मणस्य हृतं प्रिये ! ।
तेन पापेन भो देवि पुत्रो नैव प्रजायते ॥६

हे प्रिये ! पूर्व जन्म में इसने जो ब्राह्मण का स्वर्ण ग्रहण किया था उस पाप से इसके पुत्र उत्पन्न नहीं होता था ।९।

गर्भस्त्रावो भवेन्नार्याः काकवन्ध्या च जायते ।
अस्य पापस्य वै शान्ति श्रृणु देवि सुशोभने ॥१०

पत्नी का गर्भ सुख हो जाता था । वह काक बन्ध्या हो गई । हे सुन्दरी । अब इस पाप की शान्ति सुनो ।१०।

षडांशं च ततो देवि ! ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
दशायुतजपं कुर्यात्गायत्र्या नियमेन च ॥११
हरिवंशश्रुतिं देवि ! संकल्प्य श्रद्धया युतः ।
होमं वै कारयेद्देवि ! स्वर्णदानं शतं पलम् ॥१२

हे देवि ! गृह स्थित धन का षडाँश ब्राह्मण को दान में दे । नियम से एक लाख गायत्री जप कराये। संकल्प पूर्वक, श्रद्धा के साथ हरिवंश पुराण का श्रवण करे । फिर हवन कराये तथा सौ पल स्वर्ण दान करे ।११-१२।

गोदानं विधिवत्कुर्यात्शिवपूजनमेव च ।
एवं कृते न सन्देहः शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ॥१३
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।
काकवन्ध्या प्रसूयेत सत्यमेव न संशयः ॥१४
रोगात्प्रमुच्यते शीघ्रं ज्वरं सर्वं क्षयं व्रजेत् ॥१४

विधिवत गोदान करे, शिव पूजन करे । ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है । मृतवत्सा को चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । काक वत्सा भी सन्तान

युक्त होती है, इसमें संदेह नहीं है। रोग से मुक्ति होती है तथा सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।१३-१५।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में उत्तरा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक उड़नचासवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

पंञ्चाशत अध्याय

शिव उवाच

पुरे वै गहने देवि ! तैलकारोऽवसत्पुरा ।
महाधनाढ्यो वै देवि ! कोटिद्रव्येण संयुतः ॥१

शिवजी बोले--हे देवि पार्वती ! गहन पुर में प्राचीन काल में एक तेली निवास करता था। वह महान धनाढ्य था, करोड़ पति था।१।

तस्य च स्त्रीद्वयं चासीज्ज्येष्ठाया वै विषं ददौ ।
कनिष्ठा च गृहे तस्य गृहिणी धर्मचारिणी ॥२

उसकी दो पत्नियाँ थी बड़ी को उसने जहर दे दिया दूसरी छोटी उसकी धर्म चारिण थी।२।

एवं बहुगते काले तैलकारस्य वै शिवे ! ।
मरणं तस्य वै जातं यमदूतैर्यमाज्ञया ॥३
महाकटाहे नरके निक्षिप्तश्च सुदारुणे ।
तत्र च बहुधा पीडा नाना नरकयातना ॥४

हे पार्वती जी ! बहुत समय व्यतीत होने पर उस तैली की मृत्यु हो गई। यमदूतों ने यम की आज्ञा से भयंकर नरक में पटक दिया। वहाँ उसे बहुत पीड़ायें एवं नरक यातनायें मिलीं।३-४।

त्रिंशत्सहस्रं वै वर्षं तीव्रदुःखं च जायते ।
मुक्तं नरकजं दुःखं योनि सर्पस्य वै शिवे ॥५
गृध्रत्वं कुक्कुटत्वं वै द्वे योनी च तदागतः ।
मानुषस्य च वै योन्यां जातः खलु वरानने ! ॥६

तीस हजार वर्ष पर्यन्त उसने भयंकर दुःख प्राप्त किया। नरक की यातना को भोग उसे सर्प योनि प्राप्त हुई। इसके उपारान्तंणद्ध की फिर मुर्गे की योनि उसे प्राप्त हुई। इसके उपरान्त वह मनुष्य योनि में उत्पन्न हुआ।५—६।

धनधान्यसमायुक्तो गुणज्ञो ज्ञानवानपि ।
ततो वै तस्य मरणं गङ्गायां देव्यभूत्पुरा ॥७

हे पार्वती श्री! उसकी मृत्यु पूर्व काल में गंगा के पावन तट पर हुई थी इस पुण्य प्रभाव से वह धन धान्य से युक्त गुणवान एवं ज्ञानवान हुआ।७।

तत्पुण्येन महादेवि! मानुषो धनवानभूत् ।
तैलकारो यतः पूर्वं ज्येष्ठायै च विषं ददौ ॥८
तत्पापेन च भो देवि! पुत्रो नैव प्रजायते ।
बहुरोगेण संयुक्ता भार्या कष्टयुता सदा ॥९

हे महादेवि! उसे पुण्य तो तेली धनवान हुआ और प्राचीन काल में इस तेली ने जो ज्येष्ठ पत्नी को विष दिया था उस पाप के प्रभाव से पुत्र कभी नहीं हुआ इसकी पत्नी अनेक रोगों से ग्रसित एवं कष्टों से युक्त हुई।८—९।

अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि! सविस्तरम् ।
गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं करोतु सः ॥१०

हे देवि! अब मैं इस पाप की शान्ति कहता हूँ, उसे विस्तार पूर्वक सुनो। उसे गृह स्थित धन का अष्टमांश पुण्य कार्यों में लगा देना चाहिये।१०।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ॥११
त्र्यम्बकेति च मन्त्रेण दशायुतजपं पुनः ।
दशवर्णीं ततो दद्यात्कूष्माण्डं रत्नसंयतम् ॥१२

गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण कराये। यम्बक' इस मन्त्र से 'एक लाख जप कराये। दशवर्णी गाय पुण्य करे तथा रत्नों से पूरित कूष्मांड (पेठा) दान में दे।११-१२।

काश्यां वै ग्रहणे दद्यात्पत्न्या सार्द्धं महद्धनम् ।
कार्त्तिके माघवैशाखे प्रातःस्नानं समाचरेत् ॥१३

तिलधेनुं ततो दत्त्वा सद्यः पापात्प्रमुच्यते ।
एवं कृते न सन्देहो वंशलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥१४

ग्रहण काल में काशी में, पत्नी के साथ प्रचुर धन दान में दे। कार्तिक, माघ एवं वैसाख मास में प्रातः स्नान करे। तिल धेनु का फिर दान दे तो शीघ्र ही पापों से युक्त हो जाता है। ऐसा करने से निश्चय ही वंश लाभ होता है। इसमें सन्देह नहीं है।१३-१४।

कन्यकाजननी यापि सापि पुत्रवती भवेत् ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१५
रोगात्प्रमुच्यते शीघ्रं ज्वरो नैव प्रजायते ॥१६

जो नारी मात्र कन्याओं को जन्म देने वाली होती है वह पुत्रवती हो जाती है। मृतवत्सा नारी भी शीघ्र चिरंजीव एवं उत्तम पुत्र को प्राप्त करती है। वह रोग से मुक्त हो जाती है तथा उसे कभी ज्वर नहीं आता।१५-१६।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में उत्तरा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक पचासवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

एक पञ्चाशत अध्याय

शिव उवाच

गयापुर्यां पुरा देवि ! ब्राह्मणोऽध्यवसत्प्रिये ।
वेदकर्मपरिभ्रष्टो मद्यपानरतः सदा ॥१
स्तेयवेश्यासु संगामी स प्रतिग्रहवानपि ।
वयः सर्वं गतं चेत्थं वृद्धे जाते मृतः स वै ॥२

शिवजी बोले हे देवी ! प्राचीन काल में गया नामक नगरी में एक ब्राह्मण रहता था। जो वेद मार्ग से भ्रष्ट, शराबपान करने में रत, चोरी करने वाला, वेश्यागामी, दान लेने वाला था। इस प्रकार उसकी सारी आयु व्यतीत हो गई। वृद्ध होने पर उसकी मृत्यु हो गई।१-२।

यमदूतो महाघोरे कटाहनरकेऽक्षिपत् ।
लक्षत्रयमितं देवि ! भुक्तं नरकजं फलम् ॥३
चाणूरस्य कुले जन्म ततः प्रेतोऽगमत्पुरा ।
बिडालत्वं ततो यातः फल्गुतीर्थे मृतः सः वै ॥४

यमदूतों ने उसे महान घोर नरक के कढ़ाव में डालदिया तीन लाख वर्ष तक नरक का फल भोग उसका जन्म चाणूर कुल में हुआ। फिर वह प्रेत योनि को प्राप्त हुआ। फिर विलाव योनि को प्राप्त हुआ। और वह फल्गु तीर्थ में मृत्यु को प्राप्त हुआ।३—४।

पुनर्मानुषयोनित्वं मध्यदेशे सुरेश्वरि !।
कन्यकाजननी भार्या शरीरे सततं ज्वरः ॥५

हे सुरेश्वरि ! फिर वह मध्य देश में मानव योनि में उत्पन्न हुआ। उसकी पत्नी कन्याओं को ही जन्म देती तथा सदैव ज्वर रहता।५।

चिन्तोद्विग्नः सदा देवि ! बहुदुःखेन पीडितः ।
अस्य शान्ति शृणुष्वादौ यतः पापक्षयो भवेत् ॥६

हे देवि ! वह सदैव चिन्ताग्रस्त, उद्विग्न एवं दुःखी रहता। अब पहिले इसकी शान्ति सुनो जिससे पापों का नाश हो।६।

केशवस्यार्चनं आदौ साधूनां सेवनं सदा ।
ब्राह्मणे दृढभक्तिश्च दाने वै भोजने तथा ॥७

प्रारम्भ में केशव भगवान की अर्चना करे, सदैव साधुओं की सेवा करे। ब्राह्मणों में दृढ़ भक्ति रखे तथा दान करें एवं भोजन कराये।७।

गां सवत्सां ततो दद्याद्विप्राय प्रतिवत्सरम् ।
श्रवणं विष्णुशास्त्रस्य हरिवंशश्रुति तथा ॥८
एवं कृते न सन्देहो बहुपुत्रः प्रजायते ।
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति काकवन्ध्या च पुत्रिणी ॥९

प्रति वर्ष बछड़े वाली गाय ब्राह्मण को दान में दे। विष्णुपुराण एवं हरिवंश पुराण का श्रवण करे। ऐसा करने से निश्चय ही अनेक पुत्र होते हैं। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं एवं काक वन्ध्या नारी भी पुत्रवती हो जाती है।८-९।

॥ इति श्री 'उत्तरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक इक्यावनवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

द्वि पंचाशत अध्याय

शिव उवाच

स्वर्णकारोऽवसेद्देवि ! पुरे भोजकटे तथा ।
स्त्री तस्यासीन्महादुष्टा परपुंसिरता सदा ॥१

शिवजी बोले—हे देवि पार्वती ! भाजकट नामक पुर में एक स्वर्णकार रहता था । उसकी स्त्री महान दुष्ट एवं परपुरुष गामिनी थी ।१।

तद्‌गृहे वैश्य एकोऽपि ह्यागतो धनसंयुतः ।
तयोः प्रीतिरभूद्देवि ! स्वर्णकारकवैश्ययोः ॥२

हे देवि ! उस स्वर्णकार के घर में एक धन संपन्न वैश्य आया उस स्वर्णकार एवं वैश्य की दृढ़ प्रीति हो गई ।२।

व्यापारार्थं गृहीतं तु वैश्यस्वर्णं तदा प्रिये ।
पलं शतमितं देवि ! विक्रयं चाकरोत्किल ॥३
स्वर्णकारस्य या पत्नी सुन्दरी कुलटापरा ।
प्रीत्या तदाऽभजत्पत्नी वैश्याय धनिकाय वै ॥४

हे प्रिये ! तब उसने उस वैश्य का सौ पल सोना व्यापार हेतु ले लिया । स्वर्णकार की जो पत्नी सुन्दरी एवं कुलटा थी, वह धनिक वैश्य से प्रेम करने लगी ।३-४।

एवं बहुगते काले वैश्यस्य मरणे सति ।
पश्चान्मृतस्तदा सोऽपि स्वर्णकारो वरानने ! ॥५
उभौ च नरके प्राप्तौ बहुकालं तु दोषतः ।
युगैकसंमितं देवि ! भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥६

इस प्रकार बहुत समय बीत जाने पर उस वैश्य की मृत्यु हो गई । इसके उपरान्त वह स्वर्णकार भी मर गया । बहुत समय के संग दोष के कारण दोनों ही नरक में गये । एक युग तक उन्होंने नरक यातना को भोगा ।५-६।

नरकान्निःसृतौ तौ तु शुनो योनिं तदा गतौ ।
पुनर्वृषभयोनिं च नरयोनिस्ततोऽभवत् ॥७

वे दोनों नरक से निकल कर कुत्ते की योनि को प्राप्त हुए, फिर बैल की योनि को, इसके उपरान्त मानव योनि को प्राप्त हुए ।७।

महद्धनैः समायुक्तो देशे पुण्यतमे शुभे ।
पूर्वजन्मप्रसङ्गे न स वैश्यः पुत्रतां गतः ॥८

एक पुण्य देश में, धन धान्य से युक्त होकर उसने जन्म लिया । वह वैश्य पूर्व जन्म के प्रसंग से उसका पुत्र बना ।८।

भार्या तस्य तु भोदेवि ! या पुरा व्यभिचारिणी ।
पुत्रोत्पत्तिस्तदा तस्यां मरणं शीघ्रमाप्नुयात् ॥९

हे देवि ! प्राचीन काल में जो उसकी व्यभिचारिणी पत्नी थी उसके पुत्र तो होते थे परन्तु शीघ्र मर जाते थे ।९।

शरीरे महती पीडा सततं चिन्तया युतः ।
अस्य शान्ति प्रवक्षामि यथोक्तं शृणु वल्लभे ! १०

उसके शरीर में बहुत पीड़ा रहती थी । वह सदैव चिन्ता युक्त रहती । हे प्रिये ! अब से उसकी शान्ति कहता हूँ, उसे तुम सुनो ।१०।

गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
जातवेदेति मंत्रेण पंचायतजपं तथा ॥११
दशांशं हवनं कुर्याद्तर्पणं मार्जनं तथा ।
पापशांत्यै च भोदेवि ! भोजयेद्ब्राह्मणाद्शतम् ॥१२

गृह स्थित धन के अष्टमांश को पुण्य कार्य में लगाये । 'जात वेद से' इस मंत्र के पचास हजार जप कराये । दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करे और हे देवि ! पाप शान्ति के हेतु सौ ब्राह्मणों को भोजन कराये ।११-१२।

गोदानं च विशेषेण शय्यादानं तथा प्रिये ।
प्रतिमां कारयेद्देवि सुवर्णस्य तदा प्रिये ॥१३
एकादशपलेनैव रचितां वस्त्रभूषिताम् ।
पूजयेद्विधिवद्देवि ! मंत्रेणानेन वै शिवे ॥१४

विशेष रूप से गोदान करे, शैया दान करे । ग्यारह पल स्वर्ण की प्रतिमा का निर्माण कराये । वस्त्रालंकार से भूषित करे तथा हे पार्वती ! इस मन्त्र से उसकी पूजा करे ।१३-१४।

श्रीविष्णो पुण्डरीकाक्ष भुवनानां च पालक ।
चन्दनैः प्रतिमां दिव्यां पूजयामि गृहाण भो ॥१५

हे विष्णु देव, हे पुण्डारीकाक्ष, हे भुवनों के पालक, इस दिव्य प्रतिमा का मैं चन्दन से पूजन करता हूँ, आप स्वीकार करें।५।

नरसिंहाय नमः पादयोः। गोविन्दाय नमः उदरे।
विश्वजिते नमः काट्याम्। अनिरुद्धाय नमः उरसि।
शितिकण्ठाय नमः कण्ठे। वैनतेयाय नमः शिरसि।
असुरध्वंसनाय नामः चक्रे। तोयात्मने नमः शंखे।
वैकुण्ठाय नमः गदे। सर्वात्मने नमः पद्मे।
भो किरीटिन्महादेव शंखचक्रगदाधरः।
पापं मया कृतं पूर्वं तत्क्षमस्व दयानिधे ॥१६
ततः प्रदक्षिणां कुर्यात्पत्न्या सह वरानने।
प्रतिमां पूजितां चैव ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥१७

नरसिंहाय नमः 'कह कर पैरों पर, गोविंदाय नमः पेट पर, विश्वजिते नमः' कह कमर पर, अनिरुद्धाय नमः कह छाती पर, शितकण्ठाय नमः' कण्ठ पर, वैनतेय नमः कह शिर पर, असुरध्वस नाय नमः' कह चक्र पर तोयात्मने नमः' शख पर, बैकुण्ठाय नमः' गदा पर, सर्वात्मने नमः' कह कमल पर चन्दन चढ़ाये।

हे किरीटधारी, हे महादेव, हे शंख-चक्रधारी गदाधारी, हे दयानिधि ! मैंने पूर्व में जो पाप किये हैं उन्हें क्षमा करो। फिर पत्नो सहित परिक्रमा करे, प्रतिमा की पूजा करे एवं ब्राह्मण को दे।१६-१७।

एवं कृते तदा देवि ! पुत्रो भवति नान्यथा।
रोगाः सर्वेक्षयं यान्ति नातकार्य्या विचारणा ॥१८

हे देवि ! ऐसा करने से निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी रोगों की समाप्ति हो जाती है। इसमें विचार या शंका नहीं करनी चाहिए।१८।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक बावनवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

त्रिपंचाशत अध्याय

शिव उवाच

वंगदेशे महादेवि ! केशवं नाम वै पुरम् ।
खड्गनामेति विख्यातो नापितो वसति प्रिये ॥१
महाधनसमायुक्तो भाग्यवान् देवपूजकः ।
तस्य पत्नी विशालाक्षी लीलानाम्नीति विश्रुता ।२

शिवजी बोले—हे महादेवि ! बंगाल में केशव पुर में एक नाई रहता था जिसका कि नाम खड्ग था । वह धनी, भाग्यशाली एव देव पूजक था । उसकी स्त्री बड़ी आँखों वाली थी और उसका नाम लीला था ।१-२।

तस्यां पुत्रद्वयं जातं नापितस्य तदा प्रिये ।
एको द्यूतपरः पुत्रो द्वितीयश्चौरसंमतः ॥३

हे प्रिये । उस नाई के दो लड़के हुए एक जूआ खेलता था दूसरा चोरी करता था ।३।

परस्त्रीलम्पटो देवि ! नापितस्यै च वै सुतः ।
ज्येष्ठपुत्रस्य या भार्या पुंश्चली चातिसुन्दरी ॥४
नापितं प्राभजत्सा तु श्वशुरं खड्गनामकम् ।
एवं बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्तदा ॥५

हे देवि ! उस नाई के लड़के पर स्त्री लपट थे । बड़े बेटे की पत्नी अत्यत्त सुन्दरी थी एवं कुलटा थी । वह अपने श्वसुर खड्ग से फँसी हुई थी । बहुत समय बाद उस नाई की मृत्यु हो गई ।४-५।

तदा पत्नी सती जाता नापितस्य चिताग्निना ।
सत्यलोकमभूद्देवि ! भार्यया सहितस्य वै ॥६

हे देवि ! तब उस नाई की पत्नी उस खड्ग नाई के साथ सती हो गई । वह पति सहित स्वर्ग को चली गई ।६।

युगमेकायुतं देवि ! सत्यलोकेऽवसत्तदा ।
ततः पुण्यक्षये जाते पुनर्मानुषतां गतः ॥७

वे तब एक युग तक स्वर्ग लोक में रहे । फिर पुण्यों के क्षय होने पर मनुष्य योनि में उत्पन्न हुए ।७।

धनधान्यसमायुक्तो ह्यपुत्रश्च सुशोभने ।
पञ्च कन्याः प्रजायन्ते-व्याधिस्तस्य प्रजायते ॥८

वह नाई अब धन धान्य से युक्त तो हुआ परन्तु पुत्र रहित हुआ। उसके पाँच कन्याएं हुईं और रोगों से पीड़ित हुआ।८।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि पूर्वपापक्षयं यतः ।
गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥९
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ॥१०

अब मैं तुमसे वह शान्ति कहता हूँ जिससे इस पूर्व पाप की शान्ति हो। गृह में स्थित धन का अष्टमांश ब्राह्मण को दान में दे। गायत्री के मूलमन्त्र का एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं भोजन कराये।९-१०।

वाटिकाकूपमार्गश्च तडागं चैव कारयेत् ।
तुलसीसेवनं नित्यमेकादश्यां व्रतं ततः ॥११
भटा मूलिकां चैव न भोक्तव्यं कदाचन ।
दशवर्णां ततो दद्याद्धरिवंशश्रुतिं तथा ॥१२

मार्ग में कूए, तालाव एवं वाटिका बनाये। नित्य तुलसी पूजा करे एवं एकादशी का व्रत रखे। बैंगन एवं मूली कभी भी न खाये। दशपर्णी गाय का दान करे तथा हरिवंश पुराण का श्रवण करे।११-१२।

एवं कृते न सन्देहः पुत्रो भवति तस्य वै ।
कन्यका नैव जायन्ते वन्ध्यात्वं च प्रशाम्यति ॥१३
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥१४

ऐसा करने से उसके निश्चय पुत्र होता है, इसमें सन्देह नहीं है। कन्या भी उत्पन्न नहीं होतीं और बांझपन नष्ट हो जाता है। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं तथा काक वन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।१३-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक तिरेपनवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

←○→

चतुः पंचाशत अध्याय

शिव उवाच

कौशिक्या दक्षिणे कूले कारुको न्यवसत्प्रिये ।
विष्णुभक्तिरतो नित्यं कृषिकर्मसु तत्परः ॥१

शिवजी बोले—हे प्रिये । कौशिकी नदी के दक्षिणी किनारे पर एक कारूक (कारीगर) विष्णु भक्ति में रत एवं खेती के कार्य को करता हुआ रहता था ।१।

धनं तु सञ्चितं देवि ! कार्पण्यं पुण्यवर्जितम् ।
एकस्मिन्समये रात्रौ क्षेत्रे व्याघ्रेण वै हतः ॥२

उसने कंजूसी से, पुण्य न करके काफी धन अर्जित किया था । एक बार खेत में एक व्याघ्र (सिंह) ने रात्रि के समय उसे मार डाला ।२।

यमदूतैर्महाघोरे रौरवे पातितस्तदा ।
षष्ठिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥३

तब यम दूतों ने उसे रौरव नरक मे डाल दिया । साठ हजार वर्ष तक उसने नरक की यातना भोगी ।३।

ततः कर्मवाद्देवि ! विडालत्वं ततो गतः ।
पुनः कुक्कुटयोनिर्वै शृगालत्वं ततोऽभवत् ॥४
पुनर्मानुषयोनिश्च मध्यदेशे वरानने ! ।
पुत्रकन्याविहीनश्च गुदारोगेण पीडितः ॥५

हे देवि ! कर्मानुसार फिर उसे विडाल की योनि मिली । फिर मुर्गे की योनि फिर स्यार की योनि उसे मिली । फिर मध्य देश में उसे मनुष्य योनि मिली । वह पुत्र एवं कन्याओं से रहित हुआ तथा बवासीर रोग से पीड़ित हुआ ।४-५।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि पूर्वपापविशुद्धये ।
सूर्यमाराधयेन्नित्यं व्रतं सूर्यस्य वासरे ॥६
गायत्रीमूलमन्त्रेण दशायुतजपं तथा ।
प्रयागे नियतः स्नाने माघवैशाखकार्तिके ॥७

उस पूर्व पाप की शुद्धि के हेतु में उसकी शान्ति कहता हूँ । नित्य प्रति सूर्य

की आराधना करे तथा रविवार का व्रत रखे। गायत्री मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये। माघ, वैशाख एवं कार्तिक मास में प्रयाग में नित्य स्नान करे।६-७।

भूमिदानं ततो देवि ! वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।
गोमिथुनं ततो दद्यात्सर्वालङ्कारभूषितम् ॥८

हे देवि ! फिर भूमि दान करे इसमें धन की कंजूसी न करे। फिर सारे आभूषणों से अलंकृत कर गौ का जोड़ा दान में दे।८।

कूष्मांडं नारकेलञ्च पंचरत्नसमन्वितम् ।
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं तुलसीपत्रसंयुतम् ।
मालास्य रचना कार्या स्वर्णदशपलै शुभा ॥९
विधिपूर्वं विशेषेण विविधं गंधर्चाचिम् ।
आचार्याय ततो दद्यात् सर्वपापपविशुद्धये ॥१०

पेठा एवं नारियल में पंचरत्न रख कर, गंगा के मध्य में स्थित हो, तुलसी पत्र रख कर दान में देना चाहिये। दशपल स्वर्ण की माला बनवानी चाहिये फिर गंधादि से अर्चना करके विधि पूर्वक विशेष रूप से, सारे पापों की शुद्धि के लिए आचार्य को देनी चाहिए।९-१०।

पुत्रश्च जायते देवि ! कन्यका नव जायते ।
सर्वे रोगाः क्षयं यान्ति वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा च पुत्रिणी ॥११
अधनो धनमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥१२

हे देवि ! ऐसा करने से कभी कन्या उत्पन्न नहीं होती, पुत्र ही होते हैं। सारे रोग नष्ट हो जाते हैं, और बाँझपन नष्ट हो जाता है। काक बंध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है तथा जिसके बच्चे मर जाते हों वह भी पुत्रवती हो जाती है। गरीब को धन की प्राप्ति हो जाती है। इसमें किंचित मात्र भी सन्देह नहीं करना चाहिए।११-१२।

॥इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौउनवाँ अध्याय संपूर्ण ॥



पंच पंचाशत अध्याय

शिव उवाच

हस्तिनानगरे कश्चित्कायस्थो वसति प्रिये ।
केवलेति समाख्यातस्तस्य स्त्री कमला शुभे ॥१

शिवजी कहने लगे—हस्तिनापुर में एक कायस्थ रहता था । उसका नाम 'केवल' था और उसकी स्त्री का नाम 'कमला' था ।१।

महाधनसमायुक्तो मद्यपानरतः सदा ।
वेश्यासुरतसंतृप्तो ब्राह्मणस्य विदूषकः ॥२

वह महान धनी था । मद्य पान करने वाला था । वह वेश्या गामी था एवं ब्राह्मणों का निंदक था ।२।

एकस्मिन्समये देवि ! कश्चिद्विप्रः समागतः ।
गङ्गाजलसमायुक्तं याचितं तेन भोजनम् ॥३
तच्छ्रुत्वा देहजक्रोधाद् ब्राह्मणं निरभर्त्सयत् ।
ताडितो भर्त्सितस्तेन विषं पित्वा द्विजो मृतः ॥४

हे पार्वती ! एक बार उसके पास कोई ब्राह्मण आया । उसने गंगा जल से युक्त भोजन की कामना की । इसे सुन उसने ब्राह्मण की भर्तसना की । उसकी ताड़ना एवं भर्तसना से दुखी हो वह ब्राह्मण विष पीकर मर गया ।३-४।

ततो बहुगते काले मरणं तस्य चाभवत् ।
तस्य पत्नी सती जाता तद्दिने च वरानने ॥५

बहुत समय बाद उस कायस्थ का भी मरण हो गया । उस दिन उसकी पत्नी उस कायस्थ के साथ सती हो गई ।५।

बहून्यब्दसहस्राणि सत्यलोकेऽवसत्तदा ।
सौख्यानि बहुधा तत्र प्रभुक्तानि वरानने ॥६
ततः पुण्यक्षये जाते मानुषत्वं पुनर्गतः ।
धनधान्यसमायुक्तो विप्रवंशे प्रजायते ॥७

हजारों वर्ष तक वे स्वर्ग में रहे । वहाँ अनेक प्रकार के सुखों को बहुत समय

तक भोगा। फिर पुण्यों के नष्ट हो जाने पर मानव योनि को प्राप्त किया। वह धन धान्य से युक्त हो ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुआ।६-७।

जाताश्च बहवः पुत्रा गरङ्गप्रियदर्शनाः ।
गुणज्ञा रूपसम्पन्ना म्रियन्ते प्रीतिबर्द्धना ॥८

उसके बहुत पुत्र उत्पन्न हुये। वे सभी गौरोग, प्रिय दर्शी, गुणवान रूपवान एवं प्रीति करने वाले होकर मर जाते थे।८।

द्वौ पुत्रौ शीलसम्पन्नौ चोद्वाहेन समायुतौ ।
पितुः कर्मवशाद्देवि ! ब्रह्महत्या पुरा यतः ॥९
राजरोगसमायुक्तौ जायागर्भो विनश्यति ! ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! पतिव्रते ॥१०

हे देवि ! उसके दो पुत्र शलि वान हुए। उनका विवाह हुआ। पिता की पूर्व जन्म की हत्या के कारण वे राज रोग से युक्त हुए। उनकी पत्नी के गर्भ नष्ट हो जाते थे। हे पति व्रते ! अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ।९-१०।

विष्णोरराटमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
दशांशं हवनं कुर्यात्तर्पणं मार्जनं तथा ॥११
वित्तस्य च षडांशं च ब्राह्मणे दानमाचरेत् ।
वापीकूपतडागानि पथि मध्ये च कारयेत् ॥१२

'विष्णो रराट' मन्त्र का एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन कराये। वित्त का षडांश ब्राह्मण को दान में दे। रास्ते में बावड़ी, कूआ एवं तालाव बनवाये।११-१२।

गोमेकां कपिलां दद्यात्सवत्सां वस्त्रभूषिताम् ।
सुवर्णस्य कृतं विप्रं पलपञ्चदशस्य तु ॥१३
दद्याद्विप्राय विदुषे सर्वप्राणिरताय वै ।
हरिवंशश्रुतिं देवि ! विधिपूर्वं च कारयेत् ॥१४

एक वछड़े वाली, वस्त्रों से भूषित, अलंकृत कपिल गाय दान में दे तथा पन्द्रह पल स्वर्ण की ब्राह्मण की मूर्ति बनाये तथा सब प्राणियों से प्रेम करने वाले, विद्वान ब्राह्मण को इसे दान में दे। तथा विधि पूर्वक हरिवंश पुराण का श्रवण करे।१३-१४।

पुत्रश्च जायते देवि ! गर्भपातश्च शाम्यति ।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं निश्चयो नात्र संशयः ॥१५
पुत्राणां मरणं देवि ! पूर्वपापप्रसंगतः ।
प्रायश्चित्तं विना देवि ! कुतःशान्तिमवाप्नुयात् ॥१६

हे देवि ! ऐसा करने से पुत्रों की प्राप्ति होती है तथा गर्भ पात समाप्त हो जाते हैं। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है। इसमें सन्देह नहीं हैं। तथा सभी प्रकार के पापों के परिणाम स्वरूप ही पुत्रों का मरण होता है। बिना प्रायश्चित के उसकी शान्ति किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती।१५-१६।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में 'हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक पचपनवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



षठ् पंचाशत अध्याय

शिव उवाच

गयापुर्यां महादेवि ! क्षत्री ह्येकोऽवसत्पुरा ।
कुकर्मणि रतो नित्यं धनढ्यः कृपणः शठः ॥१

शिवजी बोले—हे महा देवि ! प्राचीन काल में गया में एक क्षत्री रहता था। वह कुकर्मों में रत था धनाढ्य, कृपण एवं शठ भी था।१।

स्त्री भवेत्चंचला तस्य द्वौ पुत्रौ च वरानने ! ।
कन्या चैका विशालाक्षी जाता तस्यां वरानने ! ॥२
उद्वाहिता तदा देवि ! कन्यकाव्यभिचारिणी ।
महिषीपुत्रघातं च प्रत्यब्दमकरोत्प्रिये ॥३

उसकी स्त्री चंचल स्वभाव की थी। उसके दो पुत्र हुए तथा एक बड़ी-बड़ी सुन्दर आंखों वाली कन्या हुई। विवाह हो जाने पर वह कन्या व्यभिचारिणी हो गई। और हे प्रिये वह क्षत्री नित्य प्रति भैंसे का बलिदान करता था।२-३।

अनेनैव प्रकारेण वयः सर्वं क्षयं गतम् ।
ततः सर्पेण वै दंष्ट्रस्तस्य मृत्युरभूत्तदा ॥४

यमदूतैर्महाघोरे निक्षिप्तो नरकार्णवे ।
त्रिसप्ततिसहस्राणि वर्षाणि च वरानने ! ॥५

इसी प्रकार उस क्षत्री की सारी आयु बीत गई । फिर साँप के काटने से उसको मृत्यु होगई । यमदूतों ने उसे घोर नरक में डाल दिया । तिहत्तर हजार वर्ष तक उन्होंने नरक यातना भोगी ।४-५।

भुक्त्वा कष्टं विशालाक्षि गर्भस्थं च ततो गतः ।
मध्यदेशे विशालाक्षि नरजन्मा च क्षत्रियः ॥६
पुत्रो न जायते देवि ! पूर्वपापानुसारतः ।
कन्यका रजसा युक्ता विधवा जायते प्रिये ॥७

हे विशालक्षि ! नरक के कष्टों को भोग फिर वह गर्भ में गिरा तथा मध्य देश में एक क्षत्री के यहाँ मानव योनि में उत्पन्न हुआ । पूर्व पाप के परिणाम स्वरूप उसके पुत्र नहीं होता था । युवावस्था को प्राप्त होने पर कन्या विधवा हो गई ।६-७।

महिषीपुत्रघातेन रोगोत्पत्तिश्च जायते ।
अस्य पापस्य शान्त्यर्थं पुण्यं शृणु वरानने ॥८

पूर्व जन्म में भैंसे का बलिदान देने के कारण उसे रोग हुए उस पाप की शान्ति का उपाय सुनो ।८।

स्ववित्तस्याष्टमं भागं ब्राह्मणाय ददेत वै ।
एकां कृष्णां च गां देवि ! स्वर्णशृङ्गीं सवत्सकाम् ॥९
सर्वलक्षसंपन्नां वस्त्रमुक्तादिभूषिताम् ।
ब्राह्मणाय तदा दद्यात्शय्यादानं विशेषतः ॥१०

अपने धन का अष्टम भाग ब्राह्मण को दे तथा स्वर्ण के सींग वाली, बछड़े वाली एक श्यामा गाय वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर ब्राह्मण के लिए दे तथा विशेष रूप से छाया दान करे ।९-१०।

गायत्रीजातवेदाभ्यामयुतं जपमाचरेत् ।
हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं ततः ॥११
पथिमध्ये वरारोहे पञ्चवृक्षस्य वाटिकाम् ।
कारयेद्विभवेचैव विष्णुवृक्षादिभिर्वृताम् ॥१२

गायत्री मन्त्र एवं जात वेद से मन्त्र का दश हजार जप करावे, दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करावे। मार्ग में पाँच वृक्षों की सुन्दर वाटिका लगावे उसमें पीपल का पेड़ भी हो।११-१२।

भोजयेद्देवि ! षट्षष्ठिब्राह्मणान्वेदपारगान् ।
निष्कत्रयसुवर्णस्य प्रतिमां वस्त्रभूषिताम् ।।१३
ब्राह्मणाय ततो दद्याद्विष्णुभक्ताय सुन्दरी ।
एव कृत्वा विशालाक्षि पूर्वजन्मकृतं च यत् ।।१४
पापं प्रणाशयेद्देवि ! नात्र कार्या विचारणा ।
काकवन्ध्या च या नारी लभते पुत्रमुत्तमम् ।।१५
पुत्रश्च जायते देवि ! सुरूपेण समन्वितः ।
रोगाःसर्वेक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणाः ।।१६
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।।१७

हे देवि ! छासठ वेद में पारंगत ब्राह्मणों को भोजन करावे। तीन निष्क वजन स्वर्ण की प्रतिमा बनावे, उसे वस्त्रों से भूषित करे फिर विष्णु भक्त ब्राह्मणों के लिये उसे दान में दे। ऐसा करने से पूर्व जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है। काक बन्ध्या नारी को सुन्दर पुत्र की प्राप्ति होती है। पुत्र भी सुन्दर होता है सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। मृतवत्सा को चिरंजीव पुत्र प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए ।१३-१७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद
में, चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित
कथन नामक छप्पनवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

सप्त पंचाशत अध्याय

शिव उवाच

पुण्येन जायते पुत्रः पुण्येन लभते श्रियम् ।
पुण्येन रोगनाशः स्यात् सर्वशास्त्रेण सम्मतः ।।१

शिवजी बोले—पुण्य से पुत्र होता है, पुण्य से ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। पुण्य से ही रोग नाश होता है, ऐसा सभी शास्त्रों का मत है।१।

मध्यदेशे वरारोहे ! ब्राह्मणो न्यवसत्प्रिये ।
सरयूं दक्षिणे कूले कालिकापुरशोभने ॥२
तत्र कालीपुरे शुभ्रे द्विजोऽतिष्ठन्महाशयः ।
तेन वेश्यापरस्त्रीणां रतिसंसर्गतत्परः ॥३

हे प्रिये ! मध्य देश में सरयू के दक्षिणी किनारे पर सुन्दर एक कालिका नामक नगर था। वहाँ एक ब्राह्मण रहता था। उस कालीपुर में रहते हुए भी ये ब्राह्मण वेश्यागामी, परस्त्री गामी एवं कामी था।२-३।

मद्यपानं विना देवि निद्रा तस्य न जायते ।
तस्य स्त्री सुभगानाम्नी पतिसेवापरायणा ॥४

हे देवि उस ब्राह्मण को बिना मद्यपान के निद्रा नहीं आती थी। उसकी स्त्री का नाम सुभगा था। वह पति सेवा में रत रहती थी।४।

प्रत्यहं पूजयेद्देवि ! स्वपतिं पापकारिणम् ।
ततो बहुगते काले मरणं व्याघ्रतोऽभवत् ॥५
तस्य पत्नी सती जाता चिताग्नौ च तदाहिता ।
सत्यलोके ततो देवि ! कल्पमेकं बुभोज सा ॥६

हे देवि ! वह नित्य प्रति अपने पापी पति की सेवा किया करती। बहुत समय बाद व्याघ्र के द्वारा उसकी मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी चिता अग्नि में जल कर सती हो गई। वह एक कल्प तक स्वर्ग लोक में रही।५-६।

पत्या सह वरारोहे ततः पुण्यक्षये सति ।
मृत्युलोकेऽभवज्जन्म कुले महति पूजिते ॥७
धनधान्यसमायुक्तो बाल्यतो रोगवानपि ।
पुण्यसम्बन्धयोगेन पुण्यस्त्री या च संस्थिता ॥८

पति के साथ पुण्यों के क्षय होने पर, उनका महान पूजित परिवार में मृत्यु लोक में जन्म हुआ। वह धन धान्य से युक्त होते हुए भी बचपन से रोगी हुआ। पुण्यों के सम्बन्ध के योग से उसे पुण्यवान स्त्री मिली।७-८।

पुनर्विवाहिता सैव पापात्पुत्रविवर्जिता ।
अस्य पापस्य शान्त्यर्थं पुण्यं शृणु वरानने ॥९

वही पत्नी पुनः विवाहित हुई। पूर्व पाप प्रभाव से वह पुत्र रहित हुई। अब इस पाप की शान्ति हेतु पुण्य कार्य सुनो।६।

गृहवित्तषडांशस्य पुण्यकार्यं च कारयेत्।
गायत्रीमूलमन्त्रेण त्रिलक्षं जपमाचरेत् ॥१०
हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा!
दशवर्णास्ततो दानं भूमिदानं विशेषतः ॥११

घर के षडांश धन को पुण्य कार्य में लगाये। गायत्री मूल मन्त्र का तीन लाख जप करे। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करे। दशवर्णी गाय दान में दे, विशेष रूप से भूमि दान में दे।१०-११।

गोविन्देति ततो नाम जपेन्नित्यं धरानने।
प्रातःस्नानं सदा कुर्याद्माघवैशाखकार्त्तिके ॥१२
कृष्णस्य शतकं देवि! भूर्जपत्रेण संयुतम्।
लेखयित्वा विधानेन स्थापयेत्स्वगृहं प्रति ॥१३

'गोविन्दाय नमो नमः इस मन्त्र का नित्य जप करायें। माघ, वैशाख एवं कार्तिक में सदैव प्रातः काल स्नान करे। कृष्ण शतक को भोज पत्र पर लिख कर विधान से उसकी घर में स्थापना करें।१२-१३।

हरिवंशश्रुतं कुर्यादेकादश्यां व्रतं चरेत्।
एवं कृत्वा वरारोहे सर्वरोगक्षयो भवेत् ॥१४
पुत्रश्च जायते देवि नात्र कार्या विचारणा ॥१५

हे देवि! वंश पुराण का श्रवण करे, एकादशी का व्रत रखें। ऐसा करने से सारे रोग नष्ट हो जाते हैं। पुत्र भी प्राप्त होते हैं, इसमें विचार नहीं करना चाहिये।१४-१५।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में
चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन
नामक सत्तावनवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

अष्ट पञ्चाशत अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यापुरतो देवि ! योजनत्रयदक्षिणे ।
सुधर्मपुरविख्यातो न्यवसन्बहवो जनः ॥१

शिवजी बोले—अयोध्यापुरी से तीन योजन दूर दक्षिण में सुधर्मपुर नामक एक प्रसिद्ध नगर था, उसमें बहुत से मनुष्य रहते थे ।१।

रतिदासेति विख्यातो बभूव वस्तुविक्रयी ।
दलाक्षीति समाख्याता तस्य पत्नी च स्वैरिणी ॥२

वहीं रतिदास नामक एक वस्तुओं का क्रय विक्रय करने वाला व्यापारी रहता था । उसकी पत्नी का नाम 'दलाक्षी' था । वह बड़ी व्यभिचारिणी थी ।२।

पतिं न पूजयेद्देवि ! रूपगर्ववशाद्तथा ।
महिष्यो बहुला आसन्गावो विक्रयकारणात् ॥३
महिषीपुत्रघातं च प्रत्यहं खलु जायते ।
छागस्य विक्रयो नित्यं छागानां वध एव च ॥४

वह रूप गर्व से गर्वित पति की पूजा नहीं करती थी । गाय भैसों के व्यापार के कारण भैसें बहुत थीं । वह भैंसे का वध कर देता था बकरियों का व्यापार करता था, बकरों को मार देता था ।३-४।

गोप एको महाप्राज्ञो धनार्थी स्वर्णसंयुतः ।
तदा जातो महादेवि ! वैश्यमित्रं हि बाल्यतः ॥५

हे महा देवि ! एक महान विद्वान, धनार्थी स्वर्ण युक्त एक गोप रहता था । उसका बचपन से ही वैश्य मित्र था ।५।

तस्य गेहे स्थितो देवि ! धनधान्यसमन्वितः ।
वैश्यपत्नी तदा देवि ! गोपं प्रति तदाऽभजत् ॥६

हे देवि ! उसके घर में धन धान्य वह रखता था । उस वैश्य पत्नी का प्रेम उस गोप से हो गया ।६।

एवं बहुगते काले तस्य गोपस्य वै मृतिः ।
वैश्यगेहे महादेवि ! धनं गोपस्य वै खलु ॥७

वैश्येनैव तु तत्सर्वं धनं तस्य व्ययं कृतम् ।
ततः सर्वं वयो यातं वैश्यमृत्युरभूत्तदा ॥८

बहुत समय बाद उस गोप की मृत्यु हो गई । उस गोप का धन उस वैश्य के घर में रह गया । वैश्य ने उस सारे धन का व्यय किया । सारी मृत्यु बीत गई और वैश्य की मृत्यु हो गई ।७—८।

गङ्गाया च विशालाक्षि पत्नी तस्य तथा मृता: ।
वैश्यस्याभूत्तथा स्वर्गो वर्षषष्ठिसहस्रकम् ॥९

हे विशालाक्षी ! गंगा के किनारे उस स्त्री की मृत्यु हो गई साठ हजार वर्ष तक वैश्य स्वर्ग में रहा ।९।

वैश्यपत्नी ततो देवि ! कर्दमे नरके गता ।
षष्ठिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥१०
नरकान्निःसृता सा तु सर्पयोनिं तथा गता ।
सर्पयोनिं ततो भुक्त्वा गङ्गायां मरणं खलु ॥११

हे देवि ! वह वैश्य कर्दम नरक में गिरी । साठ हजार वर्ष तक नरक यातना भोग वह सर्प योनि को प्राप्त हुआ । सर्प योनि को भोग उसका मरण गंगा में हुआ ।१०—११

शूद्रं प्रति पुरा स्नेहस्ततः शूद्रः स चाभवत् ।
वैश्यः स्वर्गफलं भुक्त्वा मानुषत्वं ततोऽगमत् ॥१२
धनधान्यसमायुक्तो रूपवान्तिथिर्हितः ।
बहुधनी गुणी ज्ञानी पुत्रकन्याविवर्जितः ॥१३

शूद्र के प्रति प्रेम के कारण उसका जन्म शूद्र कुल में हुआ । वैश्य ने स्वर्ग फल भोग मनुष्य योनि को प्राप्त किया । वह धन धान्य से युक्त, रूपवान, अतिथि पूजक, बहुधनी, गुणी, ज्ञानी हुआ एवं पुत्र तथा कन्याओं से रहित हुआ ।१२—१३

वैश्यस्य शूद्रजातित्वं पूर्वस्नेहफलं यतः ।
पत्नी सा च समायाता पूर्वसम्बन्धकारणात् ॥१४
यतो द्रव्यं समाभुक्तं सर्वं शूद्रस्य पापिना ।
ततश्चैव समुत्पन्नाः कन्या बाह्वयः सुरेश्वरि ॥१५

पूर्व स्नेह फल के कारण वैश्य शूद्र हुआ। पूर्व सम्बन्ध के कारण वही पत्नी प्राप्त हुई। क्योंकि उस पापी ने शूद्र के धन का भोग किया था इसी कारण उसके बहुत सी कन्याएं हुईं।१४-१५।

महिषीपुत्रघातित्वाद्वायुरोगादयस्तथा।
स्वपतेर्वञ्चनं कृत्वा परपुंसि रता यतः ॥१६
तस्मात्पुत्रस्य मरणं गर्भपातः पुनः पुनः।
अस्य शान्तिमहं वक्ष्ये शृगु देवि वरेऽनघे ॥१७

भैंसे मारे थे इस कारण वायु रोग हुआ। अपने पति को वंचित कर परपुरुष से प्रेम करने के कारण पुत्रों का मरना हुआ और बार-बार गर्भपात हुआ। हे देवि! अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ, सुनो।१६-१७।

गृहवित्तषडांशेषु पुण्यं कार्यं च यत्नतः।
वापीकूपतडागादि पथिमध्ये च कारयेत् ॥१८

गृह स्थित धन का षडांश पुण्य कार्यों में लगा दे। मार्ग में बावड़ी, कुआ, तालाब बनवावें।१८।

शिवस्य पूजनं चैव शिवभक्तिमहर्निशम्।
नमः शिवाय मन्त्रं च पञ्चलक्षं च जापयेत् ॥१९
पार्थिवाल्लक्षसंख्याकान्पूजयेच्च यथाविधिः।
ॐ नमः शिवाय मन्त्रस्तु सर्वपापप्रणाशनः ॥२०

रात दिन शिव भक्ति करें, शिव का पूजन करें। 'नमः शिवाय' इस मन्त्र का पांच लाख जप करावें। एक एक लाख पार्थिव पूजन यथाविधि करावें। ॐ नमः शिवाय मन्त्र' सारे पापों का नाश करने वाला है।१९-२०।

देहान्ते मुक्तिदश्चैव मर्त्यलोके च कामदा।
हवनं कारयेद्देवि कुण्डे चैव तु शोभने ॥२१
चतुरस्रे विशालाक्षि तिलधान्यादितन्दुलैः।
होमान्ते ततो देवि ! गां दद्याद्विदुषे प्रिये ॥२२

देहान्त में ये भक्ति दायक है, मृत्यु लोक में कामनाओं की पूर्ति करने वाला है। चतुष्कोणी हवन कुण्ड बनाकर तिल, जो, तंडुल (चावल) से हवन करे। लाल वर्ण की गौ को दान करे।२१-२२।

निष्कमात्रं तथा स्वर्णं ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
एवं कृते न सन्देहो व्याधिनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥२३
पुत्रश्च जायते देवि ! पुनर्गर्भो न नश्यति ।
काकवन्ध्या पुनः पुत्रं प्रसूयेत न संशयः ॥२४

एक निष्क प्रमाण स्वर्ण ब्राह्मण को दान में दे। ऐसा करने से व्याधियों का नाश होता है। पुत्र की प्राप्ति होती है। फिर गर्भ नष्ट नहीं होता काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है इसमें कोई सन्देह नहीं है।२३-२४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक अट्ठावनवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

एकोनषष्ठि अध्याय

शिव उवाच

देशे पुण्यतमे देवि ! प्रतिष्ठानपुरे तथा ।
ब्राह्मणो वेदविभ्रष्टस्तत्र वासमकारयेत् ॥१

शिवजी बोले- -पावन देश में, प्रतिष्ठानपुर में एक ब्राह्मण रहता था। वह वेद भ्रष्ट था।१।

सुरामांसस्य वै भोक्ता नित्यमत्स्यामिषस्य च ।
पापकार्ये विशालाक्षि व्ययकर्ता दिने दिने ॥२
तस्य स्त्री परमानाम्नी भ्रष्टा चातीव सुन्दरी ।
परपुंसि रता नित्यं निर्भया पतिवञ्चिका ॥३
एवं सर्वं वयो यातं तयोर्मृत्युभूत्किल ।
पुण्यक्षेत्रे च गङ्गायां देवगन्धर्वपूजिते ॥४

वह शराब पीता था, मांस खाता था। वह मछली आदि का मांस खाता था। वह पाप कार्य में सदैव व्यय करता था। उसकी स्त्री का नाम 'परमा' था वह अतीव सुन्दरी थी। वह नित्य परपुरुषों से रमण करती थी। वह निर्भय एवं पति

वंचक थी। इस प्रकार सारी उम्र व्यतीत हो गई। उनकी मृत्यु देव गंधर्व पूजित, पुण्य क्षेत्र गंगा के पास हुई।२—४।

तस्य विप्रस्य वै स्वर्गं कल्पमेकं वरानने !।
भुक्त्वा च विविधं सौख्यं देवकन्याभिरावृतः।५
ततः पुण्यक्षये जाते मृत्युलोके सुरेश्वरि।
महाढ्यकुलसम्पन्ने तस्य जन्मोऽभवत्तदा ॥६

हे वरानने ! उस ब्राह्मण को स्वर्ग की प्राप्ति हुई वहाँ देव कन्याओं से घिरे हुए, अनेक सुखों को भोग कर, पुण्यों के क्षय होने पर मृत्यु लोक में उसका जन्म एक धनी एवं सम्पन्न परिवार में हुआ।५—६।

जन्मोऽभवत्तस्य नरस्य शुद्धे।
महत्कुले पुण्यजने धनाढ्ये।
कान्ता तु सैव प्रबभूव या पुरा।
स्थिता तदीया व्यभिचारचित्ता ॥७

उस मनुष्य का जन्म बड़े सम्पन्न परिवार में, पुण्य जनों में हुआ। पत्नी भी उसकी वही हुई जो पूर्वकाल में व्यभिचारिणी थी।७।

मद्यपानादिकं पापं पूर्वजन्मनि यत्कृतम्।
तत्फलेन महादेवि ! व्याधिग्रस्तस्ततोऽभवत् ॥८

पूर्व जन्म में जो मद्य पान आदि पाप किये थे, उस पाप के कारण वह रोगों से पीड़ित हुआ।८।

अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि यतः पापक्षयो भवेत्।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्ष्यजाप्यं वरानने ॥९

हे वरानने ! अब मैं उसकी शान्ति के हेतु पुण्य कार्य कहता हूँ, गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप करावे।९।

हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा।
देवस्याराधनं नित्यं सूर्य्यस्य व्रतमाचरेत् ॥१०
प्रयागे नियतः स्नानं माघे मासि यथाविधि।
पत्न्या सह विशालक्षि ततः पापं प्रणश्यति ॥११

दशांश क्रम में हवन, तर्पण एवं मार्जन करे। नित्य देवताओं की आराधना करे तथा सूर्य का व्रत रखे। माघ मास यथाविधि प्रयाग में नित्य पत्नी सहित स्नान करे। ऐसा करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।१०—११।

षडांशं ततो देवि ! विप्रेभ्यो दान माचरेत् ।
ततो वर्षेण महतीं गां च दद्यात्पयस्विनीम् ।।१२
भूमिं वृत्तिकरीं दद्यात्पुत्रपौत्रानुजीविनीम् ।
एवं कृते न सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ।।१३
रोगार्तो मुच्यते रोगात्काकवन्ध्या सुतं लभेत् ।
गर्भभ्रष्टा लभेत् पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।१४

गृह स्थित धन का षडांग ब्राह्मणों को दान में दे। तथा वर्ष में एक दूध देने वाली गाय को दान में दे। उपजाऊ भूमि का दान करे जिससे उसके पुत्र पौत्रादि का पालन होता रहे। ऐसा करने से वंश वृद्धि होती है। रोगी रोग से छूट जाता है। काक वन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। जिसके गर्भ नष्ट हो जाते हैं उन्हें भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है। इसमें सन्देह नहीं है।१२—१४।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में प्रायश्चित कथन'
नामक उनसठवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

←०→

षष्ठितमः अध्याय

शिव उवाच

कान्यकुब्जे महादेवि ! राजात्येकोऽवसत्पुरा ।
राजधर्मरतः शान्तः प्रजापालनतत्परः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! कान्य कुब्ज देश में प्राचीन काल में एक राजा हुआ। वह राजधर्म में तत्पर, शान्त एवं प्रजा पालक था।१।

रुद्रवर्मेति विख्यातो भार्या तस्य प्रभावती ।
एकस्मिन्दिवसे देवि ! ब्राह्मणो भयपीडितः ।।२

शरणं श्रावयामास शरणार्थी द्विजोत्तमः ।
तस्य भार्या महादेवि ! सुरूपाप्यतिसुन्दरी ॥३

उसका नाम 'रुद्रवर्मा' था । उसकी पत्नी का नाम 'प्रभावती' था । एक दिन एक भय से पीड़ित ब्राह्मण उस राजा की शरण में आया । शरणार्थी उस ब्राह्मण की पत्नी अत्यन्त सुन्दर थी ।२-३।

राजपुत्रेण तस्यां तु गमनं मोहतः कृतम् ।
शरणं दत्तवान् राजा पुत्रस्नेहेन यन्त्रितः ॥४
एवं बहुगते काले नृपस्य मरणं यदा ।
तदा यमाज्ञाया दूतैः क्षिप्तो नरककर्दमे ॥५

मोहवश राजपुत्र ने उस ब्राह्मण पत्नी के साथ गमन किया । राजा ने पुत्र स्नेह के कारण उसे शरण दी । बहुत समय बाद राजा की मृत्यु हो गई । यम की आज्ञा से दूतों ने उसे कर्दम नामक नरक में डाल दिया ।४।

षष्टि वर्षसहस्राणि नरके परिपच्यते ।
नरकान्निःसृतो देवि ! शूकरत्वं ततोऽलभेत् ॥६

साठ हजार वर्ष तक उसने नरक यातना भोगी । नरक से निकल कर उसे शूकर की योनि प्राप्त हुई ।६।

पुनः शृगालयोनिं च मानुषत्वं ततोऽगमत् ।
धन-धान्यसमायुक्तो बहुशो गुणवानपि ॥७

फिर उसे स्यार की योनि मिली । इसके बाद मनुष्य योनि मिली । वह धन धान्य से सम्पन्न एवं गुणवान हुआ ।७।

पुनर्विवाहिता जाता पत्नी तस्य प्रभावती ।
पूर्वकर्मफलाद्देवि ! तस्य पुत्रो न जायते ॥८
शरीरं सततं देवि ! ज्वरेणैव प्रपीडितम् ।
वातपित्तकफानां च सम्भवः स्याद्वयोगते ॥९

पूर्व जन्म की उसको प्रभावती पुनः पत्नी हुई । पूर्व कर्म के फलानुसार उसके पुत्र जीवित नहीं रहता था । शरीर सदैव ज्वर से पीड़ित रहता था । अवस्थानुसार उसके वात-पित्त कफ का भी प्रकोप हुआ ।८-९।

अस्य दानं शृणु त्वं हि यथा पापक्षयस्तथा ।
गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥१०
वापीकूपतडागानां जीर्णोद्धारं यदा भवेत् ।
तदा पापं क्षयं याति पूर्वजन्मसमुद्भवम् ॥११

अब तुम उसका दान सुनो जिससे पापों का क्षय हो। गृह स्थित धन का अष्टमांश ब्राह्मणों को दान में दे। बावड़ी, कूए एवं तालाबों को जीर्णोद्धार कराये तो पूर्व जन्म के पापों का क्षय हो।१०-११।

विष्णोरराट्मन्त्रेण जपं कुर्याद्विचक्षणः ।
दद्याद्गां वेदविदुषे सवत्सां चैव शोभने ! ॥१२
वस्त्ररत्नसमायुक्तां घण्टाचमरभूषिताम् ।
ग्रहणेऽर्कहिमांशोश्च काश्यां स्नान समाचरेत् ॥१३

हे सुन्दरी पार्वती ! 'विष्णो रराट' मन्त्र का जप कराये। बछड़े वाली गाय वेदज्ञ ब्राह्मण को दान में दे। उस गाय को वस्त्रों से, रत्नों से एवं घन्टा आदि से सजाकर दान में दे। सूर्य एवं चन्द्र गृहण के अवसर पर काशी में स्नान करे।१२-१३।

निष्कत्रयसुवर्णस्य कमलं कारयेत्ततः ।
ब्राह्मणाय वरारोहे ! प्रदद्यात्कमलं शुभम् ॥१४
एवंकृते वरारोहे सर्वपापक्षयो भवेत् ।
अपि वन्ध्या लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥
सर्वे रोगाः क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥१५

इसके उपरान्त तीन निष्क स्वर्ण का एक कमल बनवाये। उस कमल को ब्राह्मण को दान में दे। ऐसा करने से हे सुन्दरी ! सभी पाप दूर जाते हैं। बांझ स्त्री को भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी प्रकार के रोगों का शयन हो जाता है। इसमें सन्देह या विचार नहीं करना चाहिये।१४-१५।

॥इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक साठवां अध्याय संपूर्ण ॥



एक षष्ठि अध्याय

शिव उवाच

गङ्गाया दक्षिणे कूले विन्ध्ये च नगरोत्तमे ।
द्विजोप्येकोऽवसद्देवि ! ब्रह्मकर्मविवर्जितः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! गंगा के दक्षिणी किनारे पर, विन्ध्याचल के पास एक सुन्दर नगर में एक ब्राह्मण रहता था । वह ब्रह्म कर्म से रहित था ।१।

अनाचाररतो नित्यं परस्त्रीलम्पटः शठः ।
व्यापारं कुरुते नित्यं गोहिरण्यगजादिकम् ।।२

वह ब्राह्मण अनाचारी, परस्त्री लंपट एवं शठ था । वह सदैव गायों, हाथी एवं स्वर्ण का व्यापार किया करता था ।२।

बहुद्रव्यमभूतस्य त्रिशत्कोटिप्रमाणकम् ।
द्रव्यस्य संग्रहं नित्यं न च किञ्चिद्ददाति सः ।।३

उसके पास लगभग तीन करोड़ का द्रव्य संचित हो गया । वह नित्य द्रव्य संग्रह में ही लगा रहता, किसी को भी अल्प मात्र भी नहीं देता था ।३।

स्वभार्यां च परित्यज्य परभार्यारतो द्विजः ।
धनेश्वर इति ख्यातं तस्य नाम पुराभवत् ।।४

वह ब्राह्मण अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरों की पत्नियों में रत रहता था । प्राचीन काल में वह 'धनेश्वर' नाम से विख्यात था ।४।

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल ।
यमदूतेन वै बद्ध्वा निक्षिप्तो नरकार्णवे ।।५
महाघोरे सुरश्रेष्ठ ! कल्पमेकं तदाऽवसत् ।
पुनर्व्याघ्रस्य योनिं च वृषयोनिं ततोऽलभेत् ।।६

बहुत समय, उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई । यमदूतों ने उसे पकड़ नरक में डाल दिया । वह एक कल्प तक नरक में रहा । फिर उसे व्याघ्र की योनि मिली । फिर उसे बैल की योनि मिली ।५—६।

पुनर्मानुषयोनिं च मृतवत्सत्वमाप्तवान् ।
महारोगसमायुक्तो न सुखं लभते क्वचित् ।।७

फिर उसे मनुष्य योनि मिली। उसकी सन्तानें मर जाती थीं। वह महान रोगी हुआ। उसे कभी सुख नहीं मिला।७।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि श्रृणु देवि वरानने !।
गायत्रीमूलमन्त्रेण दशलक्षजपं यदा ॥८

हे सुमुखी ! इसकी अब मैं शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो। गायत्री के मूल मन्त्र का दश लाख जप कराये।८।

दशांशहवनं चैव तदा पापक्षयो भवेत्।
गोविन्दस्य सदा ध्यानं सदा गोविन्दकीर्त्तनम् ॥९
नित्यं तु पूजयेद्देवं शखंचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरधरं श्यामं श्रीवत्सेन विराजितम् ॥१०

दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन करे तो पापों की शाति हो। गोन्विद का सदैव ध्यान करे, गोविन्द का कीर्तन करे। नित्य प्रति शंख, चक्र, ग ा, पद्म को धारण करने वाले, पीताम्बर धारी, श्याम सुन्दर श्री वत्सांकित श्री विष्णु का सदैव ध्यान करे।९—१०।

प्रत्यब्दं कार्तिके मासि तुलसी विष्णुरूपणिम्।
पूजयेद्दीपदानं च दद्याद्भार्यासमन्वितः ॥११
गोदानं शास्त्ररीत्या च गोदानाच्च वसुन्धराम्।
यथाशक्ति च भो देवि ! ब्राह्मणाय शिवात्मने ॥१२

प्रति वर्ष कार्तिक मास में विष्णु स्वरूपा तुलसी का पूजन एवं दीपदान पत्नी के साथ करे। शास्त्र रीति के अनुसार गोदान करे। इसके उपरान्त यथाशक्ति ब्राह्मण के लिये भूमि दान दे।११—१२।

एवंकृते न सन्देहः पूर्वजन्मकृतं च यत्।
तत्पापं नाशमायाति सर्वरोगक्षयो भवेत् ॥१३
वन्ध्यात्वं प्रशमं याति पुत्रलाभो भवेद् ध्रुवम्।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं नात्र कार्या विचारणा ॥१४

ऐसा करने से पूर्व जन्म में किये पाप नष्ट हो जाते हैं। सारे रोग दूर हो

जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं है बन्ध्यापन नष्ट हो जाता है। निश्चित रूप से पुत्र की प्राप्ति होती है। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। १३-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक इकसठवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

द्विषष्ठितम अध्याय

शिव उवाच

कुरुक्षेत्रे महातीर्थे वल्लभो न्यवसत्प्रिये।
कृषिकर्मरतो नित्यं क्रयविक्रयतत्परः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी! महान तीर्थ कुरूक्षेत्र में एक अहीर रहता था। वह खेती करता था तथा क्रय विक्रय करता था।१।

महिषीगोवृषाणां च सङ्ग्रहं चाकरोद्बहु।
तस्य भार्या वरारोहे परपुंसि रता सदा ॥२
स्वपतिं तर्जयेन्नित्यं सदा निष्ठुरभाषणात्।
सङ्ग्रहो बहुद्रव्याणां न दानं दत्तवान् क्वचित् ॥३

उसने भैंस, गाय एवं बैलों का अच्छा संग्रह किया था। उसकी पत्नी सदैव पर पुरुषों में रत रहती थी। वह सदैव अपने पति को कठोर वचनों से डांटती रहती थी। उसने बहुत धन का संग्रह किया था परन्तु कभी दान नहीं दिया।२-३।

एकस्मिन् दिवसे देवि! चन्द्रपर्वणि शोभने।
दशसंख्यं च गोदानं कृतं क्षेत्रे तदा किल ॥४

हे देवि! एक बार चन्द्र ग्रहण के अवसर पर उसने अपने क्षेत्र में दश गायों का दान किया।४।

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल।
यमदूतेन भो देवि! निक्षिप्तो नरके किले ॥५
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम्।
पुनर्महिषयोन्यां च जातः खलु वरानने! ॥६

वहुत समय वाद उसकी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने उसे नरक में डाल दिया। तीस हजार वर्ष तक नरक यातना भोगने के उपरान्त उसे भैंस की योनि मिली।५-६।

नरयोनिं पुनर्लेभे धन-धान्यसमन्वितः ।
जातः खलु वरारोहे ! पुत्रकन्याविवर्जितः ।।७

फिर उसे मानव योनि मिली। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ। तथा पुत्र कन्याओं रहित हुआ।७।

रोगवान्नात्र सन्देहो जंघापीडा ततोऽधिका ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणुत्वं च यथाकथम् ।।८

वह रोगों से पीड़ित हुआ, जंघा पीड़ा विशेष रूप से हुई। इसकी शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो।८।

षडांशं च ततो दानं विप्राय विदुषे तथा ।
गायत्रीलक्षजाप्यं च ततो होमं प्रकल्पयेत् ।।९
दशांशं तर्पणं कुर्याद्तद्दशांशं च मार्जनम् ।
गामेकां कपिलां दद्यात् स्वर्णश्रृङ्गीसहाम्बद्तराम् ।।१०

गृह स्थित धन का षडांश विद्वान ब्राह्मण को दे। एक लाख गायत्री जपाँ कराये तथा हवन कराये। दशांश क्रम से तर्पण एवं मार्जन करे। स्वर्ण सीगों वाली, शास्त्रों सहित एक कपिला गाय दान में दे।९-१०।

ब्राह्मणान्पञ्चाशत् पक्वान्नेन च भोजयेत् ।
पञ्चपात्राणि दद्याद्वै शय्यादानं यथाविधि ।।११
दशवर्णा प्रदातव्या ब्राह्मणेभ्यो यथाविधि ।
एवं कृते न सन्देहः शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ।।१२
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ।।१३

पचपन ब्राह्मणों को पक्वान्न खिलाये। पाँच पात्र एवं शैया दान यथा विधि करे। दश वर्णी गाय ब्राह्मणों को यथाविधि दें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इससे शीघ्र पुत्र उत्पन्न होता है। सभी रोगों का नाश भी हो जाता है।११-१३।

।। इति श्री 'स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक बासठवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।

त्रिषष्टितम अध्याय

शिव उवाच

हस्तिनानगरं ख्यातमासीत्जन्तुमनोहरम् ।
अवसंस्तत्र भो देवि ! नराः सर्वे विचक्षणाः ॥१

शिवजी बोले— हे पार्वती जी ! प्राचीन काल में हस्तिनापुर नामक नगर में बहुत से चतुर आदमी रहते थे अनेक सुन्दर जन्तु रहते थे ।१।

तन्मध्ये शूद्र एको हि धर्मात्मा ज्ञानवानपि ।
स्वधर्मकर्मणः कृत्वा व्ययकर्ता दिने दिने ॥२

उनमें एक शूद्र भी था जो धर्मात्मा एवं ज्ञानी था वह अपना संपूर्ण समय प्रति दिन धर्म कर्म में ही व्यतीत करता था ।२।

तस्य पुत्रद्वयं जातं शठं पापयुतं सदा ।
प्रत्यहं जीवघातेन मद्यवेश्यारतौ च तौ ॥३
द्यूतेनैव महादेवि ! राजा वह्निञ्च जक्षतः ।
किंच वारयितुं शक्यौ शूद्रेणेतौ तदा शिवे ॥४

उसके दो पुत्र हुए । वे शठ एवं पापी थे । नित्य प्रति जीव हिंसा करते, मद्य पान करते एवं वेश्या गमन करते । जूआ खेलते परन्तु वह शूद्र प्रयास करने पर भी रोकने में असमर्थ रहा ।३-४।

ततस्तु दैवयोगेन प्रयागें शूद्र आगतः ।
मासमेकं ततः स्थित्वा तस्य मृत्युरभूत्किल ॥५
विष्णुदासांस्तदा लब्ध्वा मृत्युलोके वरानने ।
विमानवरमारूढो गतः स्वर्गं वरानने ॥६

इसके उपरान्त दैव योग से वह शूद्र प्रयोग में आया । वहाँ वह एक माह तक रहा उसकी वहीं मृत्यु हो गई । विष्णु के दासों के साथ विमान पर चढ़ कर वह स्वर्ग गया ।५।

तस्य भार्या विशालाक्षि मृत्युलोके सुरेश्वरि ।
सा जाता विधवा नारी किञ्चित्काले गतेसति ॥७

परपुंसिरता जारे प्रत्यहं व्यभिचारिणी।
ततो बहुगते काले तस्या मृत्युरभूत्किल ॥८

उसकी पत्नी बड़े नेत्रों वाली थी। वह मृत्यु लोक में विधवा हो गई। वह परपुरुष में असक्त हो गई तथा व्यभिचारिणी हो गई। बहुत बाद समय उसकी मृत्यु हो गई।७-८।

यमदूतैर्महाघोरे निक्षिप्ता नरके तदा।
विंशत्यब्दसहस्राणि नरके संप्रपीडिता ॥९

यम दूतों ने उसे नरक में डाल दिया। बीस हजार वर्ष तक उसने नरक यातनायें सहीं।९।

शूद्रः पुण्यक्षये जाते मृत्युलोके सुरेश्वरि।
जन्म सम्प्राप्तवान्देवि मध्यदेशे सुरेश्वरि ॥१०

हे सुरेश्वरी ! पुण्यों के क्षय होने पर वह शूद्र भी इस मृत्यु लोक में आया। और उसने मध्य देश में जन्म लिया।१०।

तदा सा तु भवेन्नारी पुरा व्यभिचारिणी।
पूर्वजन्मप्रसङ्गाच्च वंशच्छेदो हि जायते ॥११
रोगश्च जायते देवि ! कष्टं चैव दिने दिने।
अस्य पापस्य वै शान्ति तत्समासेन मे शृणु ॥१२

पूर्व जन्म के प्रसंग से उसकी वही पूर्व व्यभिचारिणी नारी ही पत्नी बनी। वह सन्तान रहित हुई। वह रोगी हुई तथा प्रतिदिन उसे कष्ट रहते थे। इसकी शान्ति अब सूक्ष्म रूप से सुनो।११-१२।

स्वर्णवृक्षवरं कृत्वा स्वाङ्गुष्ठपरिमाणकम्।
फलपुष्पसमायुक्तं पलपञ्चदशस्य तु ॥१३
तस्य वृक्षस्य वै मूले शालिग्रामशिलां शुभाम्।
पूजयित्वा विधानेन विष्णुरूपं वरानने। ॥१४
ब्राह्मणाय ततो दद्याद् गां च दद्यात्पयस्विनीम्।
गायत्रीमन्त्रजाप्यं तु लक्षमेकं तु कारयेत् ॥१५

एक पन्द्रह पल स्वर्ण का फल, पुष्पों से युक्त, अपने ही अंगूठे के आकार का सुन्दर स्वर्ण वृक्ष बनावे। उस वृक्ष के नीचे सुन्दर शालिग्राम की प्रतिष्ठापना करे।

विधि विधान से विष्णु रूप उनकी पूजा करे तथा उसे ब्राह्मण को दे दे तथा एक दूध देने वाली गाय भी दान में दे। एक लाख गायत्री मन्त्र का जप कराये ।१३-१५।

ततः पापविशुद्धिःस्यात्पुत्रो भवति नान्यथा ।
सर्वे रोगाःक्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ।।१६

इसे पाप की शुद्धि होती है। पुत्र भी होता है। सभी रोगों का नाश होता है तथा काक बंध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है ।१६।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तिरेसठवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

चतुः षष्ठितमः अध्याय

शिव उवाच

कपिले नगरे देवि ! क्षत्री वै न्यवसत्पुरा ।
क्षत्रधर्मविहीनश्च वैश्यकर्मरतः सदा ।।१
प्रत्यहं वैश्यवृत्या तु व्ययं कुर्याद्दिने दिने ।
बहु द्रव्यं तदा तेन सञ्चितं त्यक्तमधर्मणा ।।२

शिवजी बोले--हे पार्वती जी ! कपिल नामक नगर में प्राचीन काल में एक क्षत्री रहता था। वह अपने क्षात्र धर्म से रहित वैश्य कर्म में सदैव रत रहता था वैश्य वृत्ति द्वारा उसने बहुत अधिक धन का संचय, स्वधर्म का परित्याग करके किया ।१-२।

महालोभेन संयुक्तो धर्मचर्चा न कुत्रचित् ।
पत्नीपुत्राय भोगार्थं नादात्कृपणकेशरी ।।३
एवं बहुगते काले मरणं सर्पतस्तथा ।।४

वह महान लोभी था। कभी धर्म चर्चा नहीं करता था। पत्नी एवं पुत्र के भोग के लिए वह कंजूस शिरोमिणी कुछ भी नहीं देता था। वहुत समय बाद सर्प दंश से उसकी मृत्यु हो गई ।३-४।

आसीद्तदीया प्रमदापि तादृक् ।
यतो जानो योग्यमुपैति सर्वम् ।।
यथार्थतः क्षिप्तमतीवदुःखे ।
यमस्यः दूतैः कृतपादश्रृंखलः ।।५

उस समय उसकी पत्नी भी वैसी ही थी क्योंकि जैसा मनुष्य होता है वैसी ही प्रवृत्ति होती है। मृत्युपरान्त यमदूतों ने पैरों में जंजीर डाल उन्हें भयंकर दुःखों में डाल दिया।५।

युगमेकं वरारोहे कष्टं भुक्त्वा सुदारुणम् ।
ततोऽभून्स ततो देवि ! महिषी वृषभो हयः ।।६

हे देवि ! एक युग तक दारुण कष्ट भोग वह भैंस फिर बैल एवं फिर घोड़े की योनि में हुआ।६।

पुनश्च मानुषो भूत्वा तस्य भार्या च या पुरा ।
विवाहिता च सा देवि ! तस्य पुत्रो न जायते ।।७

फिर उसे मनुष्य योनि मिली । उसे पूर्व काल वाली ही पत्नी प्राप्त हुई। परन्तु उसके पुत्र नहीं होता था।७।

पुरा ह्ये काभवत्कन्या पुनः सूतिविर्वजिता ।
रोगा भवति देहे च मध्ये मध्ये ज्वरो भवेत् ।।८

प्राचीन काल में उसके एक कन्या हुई फिर उसके कोई सन्तान नहीं हुई। उसके शरीर में रोग हुये। बीच-बीच में बुखार भी आ जाता था।८।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! वरानने ।
कल्पवृक्षवरं कुर्यात् स्वाङ्गुष्ठपरिमाणकम् ।।९

देवि ! अब मैं तुमसे इसकी शान्ति कहता हूँ। अपने अँगूठे के बराबर का एक कल्प वृक्ष बनवावे।९।

सुवर्णस्य महादेवि ! पलपञ्चदशस्य तु ।
वेदीं रौप्यमयीं कुर्यात् पलपञ्चदशस्य तु ।।१०
तत्र वृक्षं समारोप्य फलपुष्पेण संयुतम् ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च सुरेश्वरि ! ।११

तस्य वृक्षस्य वै मूले वृषकेतुं सुरेश्वरि ।
सगणं देवमीशानमर्चयित्वा यथाविधि ॥१२
यथाशक्ति वरारोहे गन्धधूपादिभिस्तथा ।
साष्टाङ्गदण्डवत्तत्र देवदेवं समापयेत् ॥१३

ये कल्प वृक्ष पन्द्रह पल स्वर्ण का हो । दश पल की चाँदी की वेदी बनवावे। फल पुष्पों से युक्त उस वृक्ष को उसमें आरोपित करे । अष्टमी नवमी या चतुर्दशी को उस वृक्ष के मूल में शंकर जी की स्थापना करे । गणों सहित शिवजी का पूजन गंध, धूप से यथाशक्ति करे । साष्टांग प्रणाम करे एवं पुजा समाप्त करे।१०-१३।

मन्त्रेणानेन भो देवि ! विसर्जनमथाचरेत् ।
ॐनमः शिवाय देवाय शिवायै सततं नमः ॥१४
मम पूर्वकृतं पापं जन्मजन्म-समुद्भवम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! देव्या सह महेश्वर ॥१५

हे देवि ! इस मन्त्र के द्वारा "ॐ नमः शिवाय देवाय शिवायै सततं नम" विसर्जन करे । जन्म जन्मान्तरों में किये गये मेरे सभी पूर्वकृत पापों को हे महेश्वर शंकर क्षमा करो ।१४-१५।

ततो वै पूजयेद्विप्रं वेदब्रह्मस्वरूपिणम् ।
पट्टावस्त्राद्यलङ्कारैर्विविधैर्मोदकैरपि ॥१६

फिर वेद, ब्रह्म स्वरूपी ब्राह्मणों की वस्त्र, अलंकार, अनेक प्रकार के मोदकों से उनकी पूजा करे ।१६।

ततो वृक्षं च वेदीं च कपिलां गां सवत्सकाम् ।
ब्राह्मणाय ततो दद्यात् पूर्वपापविशुद्धये ॥१७

फिर समस्त पापों की शुद्धि के हेतु वृक्ष को, वेदी को, बछड़े वाली कपिला गाय को ब्राह्मण के लिये दे दे ।१७।

भक्त्या मम महादेवि ! शिवरात्र्यां विशेषतः ।
आजन्ममरणाद्देवि व्रतं कुर्यात् प्रयत्नतः ॥१८
एवंकृते महादेवि ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ।
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति वन्ध्या च लभते सुतम् ॥१९

मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरजीवीनमुत्तमम् ॥२०

हे महादेवि ! भक्ति पूर्वक, विशेष रूप से शिवरात्रि का जीवन पर्यन्त व्रत रखे। ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं। बांझ स्त्री को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। तथा मृतवत्सा नारी को भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।१८-२०।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में 'पार्वती शिव सम्वाद में 'विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौंसठवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



पंच षष्ठितमः अध्याय

शिव उवाच

विष्णुकांच्यां महादेवि ! ब्राह्मणो वेदपारगः।
अत्याचाररतः शान्तो विष्णुभक्तिपरायणः ॥१

शिवजी बोले—हे महादेवि ! विष्णु कांची में एक वेदज्ञ, अत्यन्त आचारवान शान्त एवं विष्णु भक्ति परायण रहता था।१।

अलक्षितो विष्णुचक्रेण विप्रो विद्याविवर्जितः।
न वेदः पाठ्यते तेन न विप्रःस्पृश्यते क्वचित् ॥२

वह विष्णु चक्रों से रहित, विद्या से रहित ब्राह्मणों का स्पर्श भी नहीं करता था, न उन्हें वेद पढ़ाता था।२।

द्विजानां स्मार्त्तवृत्तीनां विद्वेषं च करोति सः।
शिवशक्तिरतानां च नाभिवादनशाचरेत् ॥३

वह स्मार्त वैष्णवों से भी द्वेष करता था। शिव एवं शक्ति के भक्तों को कभी प्रणाम नहीं करता था।३।

एवं वयोगते देवि ! वृद्धे जाते वरानने।
मरणं तस्य वै जातं ब्राह्मणस्य वरानने ॥४

हे देवि ! उम्र व्यतीत होने पर वह वृद्ध हुआ और उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई।४।

यमदूतैर्महाघोरे नरके पातितस्तदा ।
रौरवे च तदा देवि ! षष्टिवर्षसहस्रकम् ॥५
भुक्त्वा नरककष्टं च पुनर्जातः सरीसृपः ।
मानुषत्वं पुनर्जातः कष्टानि विविधानि च ॥६

यम दूतों ने उसे महा घोर रौरव नरक में डाल दिया । वह साठ हजार वर्ष तक वहाँ रहा । नरक का कष्ट भोग सर्प योनि को प्राप्त हुआ । फिर उसे मनुष्य योनि मिली तथा उसने अनेक कष्ट पाये ।५-६।

पुत्रस्य मरणं कान्ते ! प्रतिवर्षे महाव्यथा ।
पुनः स्त्री काकवन्ध्या स्यात्पूर्वजन्मप्रसंगतः ॥७
धन-धान्यसमायुक्तोऽप्येकं दुःखं महद्भवेत् ।
अथ वक्ष्ये महादेवि ! पूर्वपापस्य निष्कृतिम् ॥८

हे प्रिये ! उसके पुत्र का मरण हुआ । प्रति वर्ष उसे महान व्यथा होती थी । पूर्व जन्म के प्रसंग से उसकी स्त्री काक वन्ध्या हुई । धन धान्य से सम्पन्न होते हुए भी उसे महान दुःख हुआ । अब मैं उस पाप की शान्ति का उपाय कहता हूँ ।७-८।

गङ्गामध्ये प्रदातव्यं पूर्वपापविशुद्धये ।
निष्कत्रयसुवर्णस्य कमलं निर्मितं शुभम् ॥९

पूर्व पापों की शुद्धि के हेतु गंगा के बीच में तीन निष्क प्रमाण स्वर्ण का सुन्दर कमल बनवाकर देना चाहिये ।९।

दद्याद्वेदविदे देवि ! ब्राह्मणाय शुभार्थिने ।
अष्टांशं विभवं देवि ! ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥१०
गायत्रीजातवेदाभ्यां दशायुतजपं तथा ।
कूष्मांडं नारिकेलञ्च पंचरत्नसमन्वितम् ॥११

हे देवि ! इस स्वर्ण कमल को शुभचिन्तक ब्राह्मण को दे तथा गृह के अष्टमांश धन को ब्राह्मण के लिए समर्पित करे । गायत्री एवं जातवेद से मन्त्र का एक लाख जप कराये । तथा पेठा एवं नारियल को पंच रत्नों से पूरित कर दान में दे ।१०-११।

एवंकृते भवेद्देवि ! पूर्वपापविशुद्धता ।
पुत्रं चैव लभेद्देवि ! चिरंजीविनमुत्तमम् ॥१२

व्याधयः प्रशमं यान्ति ज्वराः सर्वे तथाविधाः ।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं चिरंजीविनमुत्तमम् ॥१३

हे देवि ! ऐसा करने से सभी पूर्व पापों की शुद्धि होती है। चिरञ्जीव उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं सभी ज्वर शान्त हो जाते हैं काक बंध्या को भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है।१२-१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक पैंसठवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



द्वि षष्ठितम अध्याय

शिव उवाच

विदर्भनगरे देवि ! क्षत्री ह्ये कोऽवसत्पुरा ।
तेजवर्मेति विख्यातो द्विजानां वृत्तिहारकः ॥१

श्री शंकर बोले—हे पार्वती जी ! विदर्भ नगर में प्राचीन काल में एक क्षत्री रहता था। उसका नाम तेज वर्मा था। वह ब्राह्मणों की जीविका का हरण करने वाला था।१।

प्रजानां दुःखदो नित्यं वेदानां चैव निन्दकः ।
तस्य त्रासवशात्सर्वाः प्रजा ग्रामात्पलायिताः ॥२

वह तेज वर्मा प्रजा को दुःख देता था, वेदों का निंदक था। उसके भय से सारी प्रजा ग्राम से पलायन कर गई थी।२।

एवं बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल ।
यमदूतैर्महाघोरे निक्षिप्तो नरके ततः ॥३

बहुत समय व्यतीत होने पर उसकी मृत्यु हो गई। तब उसे यमदूतों ने उसे घोर नरक में डाल दिया।३।

द्विसप्ततिसहस्राणि घोर नरककर्दमे ।
भुक्तां नरककष्टं च सूचीमुखसमुद्भवम् ॥४
नरकान्निर्गतो देवि ! गर्दभत्वं ततोऽगमत् ।
रासभत्वात्ततो देवि ! मानुषत्वं ततोऽभवत् ॥५

वह बहत्तर हजार वर्ष तक घोर कर्दम नरक में रहा। सुई के मुख जैसे नरक कष्टों को भोगा। नरक से निकल कर उसे गदहे की योनि मिली फिर मनुष्य योनि मिली।४-५।

तस्य भार्याऽभवद् वन्ध्या पूर्वजन्मफलाच्छिवे !
तस्माद्गात्रे भवेद्रोगो दद्रु रर्शादयस्तथा ॥६

हे पार्वती जी। पूर्व जन्म के फलस्वरूप उसकी पत्नी बांझ हुई। उसके शरीर में दाद, खाज एवं बबासीर आदि रोग उत्पन्न हो गये।६।

न सुखं लभते देवि चिन्तया व्याकुलेन्द्रियः।
शृणु सर्वं वरारोहे पूर्व पापस्य निग्रहम् ॥७
दशांशं विभवं देवि ! ब्राह्मणाय समर्पयेत्।
वापी-कूप-तडागादि पथिमध्ये च कारयेत् ॥८

हे देवि ! उसे सुख नहीं था। चित्त उसका व्याकुल रहता था। उसके पूर्व, पापों के निग्रह के सम्बन्ध में सुनो। अपने वैभव में से दशांश ब्राह्मण को दे। बावड़ी कूआ, तालाब रास्ते में बनवाये।७-८।

गृहबानं ततो देवि ! सर्ववस्तुसमन्वितम्।
प्रदद्याद्वेदविदुषे ब्राह्मणाय वराय च ॥९
आकृष्णेति जपं देवि ! लक्षमेकं च कारयेत्।
होमं कुर्यादद्रिसुते ! तिलाज्यमधुतण्डुलैः ॥१०

श्रेष्ठ ब्राह्मण को सारी वस्तुओं से युक्त घर को दान में दे। 'आकृष्णेन रजसा' इस मन्त्र का एक लाख जप कराये। तिल, घी, मधु एवं तडुलों से हवन कराये।९-१०।

ततो गां कपिलां देवि ! ब्राह्मणाय प्रपूजिताम्।
प्रदद्याद्विधिवच्चैव सर्वलङ्कारभूषिताम् ॥११
सुवर्णनिष्कमात्रं तु ब्राह्मणाय ततो ददेत्।
एवंकृते वरारोहे रोगनाशो भवेद् ध्रुवम् ॥११
पुत्रश्च जायते देवि ! वन्ध्यात्वं च प्रणस्यति।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं नात्र कार्या विचारणा ॥१३

सारे अलंकारों से सज्जित कर, पूजित ब्राह्मण के लिये कपिला गाय दान में दे। एक निष्क प्रमाण स्वर्ण भी दे तो सभी रोगों का विनाश होता है। पुत्र की प्राप्ति होती है। बांझपन समाप्त होता है। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है। इसमें कोई विचार या शंका नहीं करनी चाहिए।११-१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक छासठवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

शप्त षष्ठितमः अध्याय

शिव उवाच

मायापुर्यां महादेवि ! क्षत्रो ह्येकोऽवसत्पुरा।
स शूरश्च धनी मानी देवताऽतिथिपूजकः ॥१

शिवजी बोले—मायापुरी में प्राचीन काल में एक क्षत्री निवास करता था। वह वीर, धनी, मानी, देवता एवं अतिथि का पूजक था।१।

तस्य भार्या विशालाक्षी शतानाम्नी वराङ्गना।
ब्राह्मणातिथिवेदानां पूजने चातितत्परा ॥२

उसकी पत्नी विशाल आंखों वाली थी। उसका नाम 'शता' था। वह ब्राह्मणों एवं अतिथि देवों के पूजन में तत्पर रहती थी।२।

एकस्मिन् समये देवि ! हेमकारः समागतः।
धनाढ्यः स्वर्णसंयुक्तो गृहे तस्याऽवसत्स च ॥३
क्षत्रियाय स्वमित्राय शतं स्वर्णस्य वै पलम्।
प्रदत्तं हेमकारेण चान्यत्स्वर्णं समर्पितम् ॥४

एक बार उसके घर एक धनाड्य, स्वर्ण से युक्त एक स्वर्णकार आया। उस स्वर्णकार ने सौ पल स्वर्ण अपने क्षत्रिय मित्र को दिया। साथ ही अपना समस्त स्वर्ण भी उसके पास रख दिया।३-४।

अत्रान्तरे महादेवि ! स्वर्णकारस्ततो मृतः।
दष्टः सर्पेण तीव्रेण पुत्रहीनः सुवर्णकृत् ॥५

स्वर्णं सर्वं गृहीत्वा तु प्रभुक्तं क्षत्रियेण तत् ।
पुत्रदारयुते जाते न दत्तं तद्द्विजाय च ।।६

इसके उपरान्त हे महादेवि ! स्वर्णकार की सर्प, दंश से मृत्यु हो गई। वह पुत्रहीन था। उसके सभी स्वर्ण का उपयोग पुत्र, पत्नी के साथ किया। उसमें से किसी ब्राह्मण को दान नहीं दिया।५-६।

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल ।
क्षत्रियस्य महादेवि ! सुरलोकस्ततोऽभवत् ।।७

बहुत समय बाद उस क्षत्री की मृत्यु हो गई। वह स्वर्ग को गया।७।

सौख्यं सुराङ्गनार्द्धं च षष्टिवर्षप्रमाणकम् ।
ततः पुण्यक्षये जाते बभूव मनुजः क्षितौ ।।८
धनधान्ययुतस्तस्य भूयो भार्याऽभवत् किल ।
कन्यका चैव पुत्रौ च जातौ तस्यां वरानने ! ।।९

देवांगनाओं के साठ हजार वर्ष तक स्वर्ग सुख भोग, पुण्यों के क्षय होने पर वह पृथ्वी पर मनुष्य योनि में प्राप्ति हुई। उसके एक कन्या तथा दो पुत्र हुए।८-९।

गर्भश्च जायते देवि ! तद्गर्भपतनं भवेत् ।
रोगमुग्रं भवेद्देवि ! न सुखं जायते खलु ।।१०

इसके बाद उसके गर्भ रहता था और उसका पतन हो जाता था। उसके भयंकर रोग हुए। सुख उसे न मिल सका।१०।

शान्ति श्रृणु वरारोहे ! यतः पापक्षयो भवेत् ।
षडांशं च ततो देवि ! ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।।११

अब तुम इसकी शान्ति सुनो जिससे पापों का क्षय हो। घर के धन में से षडांश ब्राह्मण को दान में दे।११।

दशवर्णां ततो दद्याद्विप्राय ज्ञानिने प्रिये ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।।१२

हे प्रिये ! फिर किसी ब्राह्मण को दशवर्णी गौ को दान में दे। तथा गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये।१२।

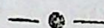
पक्वान्नेनैव भोदेवि ! ब्राह्मणान् भोजयेत् शतम् ।
वृक्षस्वर्णस्य वै देवि ! फलपुष्पसमन्वितम् ।।१३
दद्याद्विप्राय विदुषे पलं दशप्रमाणकम् ।
सूर्यस्य पूजनं चैव रविवारे विशेषतः ।।१४

हे पार्वती ! फिर सौ ब्राह्मणों को पक्वान्न खिलाये दश पल स्वर्ण का एक फल पुण्यों से युक्त वृक्ष बनवाये । उसे किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान में दे । रविवार को सूर्य का पूजन विशेष रूप से करे ।१३-१४।

एवंकृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रश्च जायते ।
ज्वरस्य वै भवेन्मुक्तिः काकवन्ध्या सुतंलभेत् ।।१५
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरजीविनमुत्तमम् ।।१६

हे सुमुखि पार्वती ! ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है । ज्वर से मुक्ति होती है । काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है तथा मृतवत्सा को भी उत्तम चिरंजीवी पुत्र की प्राप्ति होती है ।१५-१६।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सड़सठवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



अष्ट षष्ठितम अध्याय

शिव उवाच

कल्याणनगरे गौरी ! मायापुर्याः समीपतः ।
वणिक्जनोऽवसत्तत्र धनाढ्यो धनगर्वितः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! मायापुरी के पास कल्याण नामक नगर में, धनवान, धन से गर्वित एक वैश्य रहता था ।१।

क्रयकृत्सर्ववस्तूनां विक्रयं च सदाऽकरोत् ।
महालोभवशाद्देवि ! न दत्तं पापिना क्वचित् ।।२

वह सदैव वस्तुओं का क्रय एवं विक्रय किया करता था । उस पापी ने लोभ के वशीभूत हो कभी दान नहीं किया ।२।

तस्य भार्या विशालाक्षी पुश्चली कुलटाधमा ।
यमौ पुत्रौ वरारोहे ! पुंश्चल्यां जज्ञिरे तदा ॥३
एको द्यूतरतः पुत्रो द्वितीयो ब्राह्मणीरतः ।
वैश्येनैव विशालक्षि ! धनं बहु सञ्चितम् ॥४

उसकी पत्नी बड़े-बड़े नेत्र वाली थी, पुश्चली एवं कुलटा थी। इस व्यभिचारिणी के दो जुड़वा पुत्र हुए। एक जुआरी था दूसरा ब्राह्मणी से प्रेम करता था। उस वैश्य ने बहुत धन इकट्ठा किया था।३-४।

प्रत्यहं भुज्यते छागविक्रयं कुरुते सदा ।
वृद्धे सति महादेवि ! वैश्यस्य मरणं ह्यभूत ॥५

वे पुत्र प्रतिदिन उस धन का उपभोग करते, बकरियों का व्यापार करते थे। वृद्ध होने पर उस वैश्य की मृत्यु हो गई।५।

यमदूतैस्तदा बद्ध्वा निक्षिप्तो नरकार्णवे ।
स्वरूपं दर्शयामास तस्मै वैश्याय सूर्यजः ॥६
नवत्यब्दसहस्राणि घोरे नरकदारुणे ।
महाकष्टं तदा दत्तं कृमिभिर्घोररूपिभिः ॥७

यम दूतों ने उसे नरक में डाल दिया। यमराज ने उसे अपने दर्शन दिये। नब्बे हजार वर्ष तक दारुण नरक के कष्टों, भयंकर कीड़ों की पीड़ा को प्राप्त किया।६-७।

ततो व्याघ्रस्य वै योनिं काककुक्कुटयोः पुनः ।
मानुषत्वं ततो यातः पुत्रकन्याविवर्जितः ॥८

फिर उसे व्याघ्र की योनि मिली, फिर कौए की, इसके उपरान्त मुर्गे की योनि मिली। इसके उपरान्त पुत्र कन्याओं से रहित मनुष्य की योनि मिली।८।

पुनर्विवाहिता सा तु या पत्नी पूर्वजन्मनि ।
रोगवान् सोऽपि रोगार्त्ता मृत्तवत्सा पुनः पुनः ॥९

फिर उसे पूर्व जन्म की स्त्री ही पत्नी रूप में प्राप्त हुई। वह रोगी हुई। उसके बच्चे बार बार मर जाते थे।९।

एकापत्या भवेद् दुष्टा न स्यादन्यसुतः प्रिये ।
यदा सर्वस्वदानं वै सूर्यस्याऽऽराधनं तदा ॥१०

हरिवंशश्रुतिश्चैव दुर्गास्तोत्रजपस्तदा ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षञ्जाप्यं यदा भवेत् ॥११
तदा पुत्रो भवेद्देवि ! व्याधिनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥१२

उसके एक ही कन्या हुई, जो बड़ी दुष्टा थी। फिर उसके कोई पुत्र नहीं हुआ। इस पाप से मुक्ति तभी हो सकती है जब सर्वस्व का दान कर दे। सूर्य की आराधना करे। हरिवंश पुराण का श्रवण करे। दुर्गास्तोत्र का पाठ कराये, जप कराये। गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये तब उसको पुत्र की प्राप्ति हो तथा निश्चय ही सभी व्याधियों की समाप्ति हो।१०-१२।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक अरसठवाँ अध्याय संपूर्ण ॥



एकोनसप्ततितमः अध्याय

शिव उवाच

मगधे वै शुभे देशे काष्ठकारोऽवसत्प्रिये ।
पुत्रपौत्रसमायुक्तौ धनाढ्यो गुणवानपि ॥१
यदा चार्द्धं वयो यातं दरिद्रत्वं तदाऽगमत् ।
गृहीतं यतिनो द्रव्यं शतपञ्चपलं तथा ॥२
व्ययं कृत्वा तदा तेन न दत्तं यतिने शिवे ।
ततस्तस्य ह्यभून्मृत्युः काष्ठकारस्य मागधे ॥३

शिवजी बोले—हे प्रिये ! मगध देश में एक बढ़ई रहता था। वह पुत्र पौत्रादि से युक्त था। धनवान एवं गुणवान था। जब आधी उम्र बीत गई तो वह गरीब हो गया। उसने एक सो. पांच पल एक स्वर्ण यती से उधार ग्रहण किया। उसने सारे धन को समाप्त कर दिया। उसे यति को नहीं लौटाया। इसके बाद उस बढ़ई की मृत्यु हो गई।१-३।

द्वे दत्त्वा कपिले गावौ स्वर्णरौप्याविभूषिते ।
पुत्रेणापि कृत्तं श्राद्ध शास्त्ररीत्या गयादिकम् ॥४

उसके पुत्र ने उसका श्राद्ध किया। गया श्राद्ध किया तथा स्वर्ण एवं चाँदी से सजाकर दो कपिला गायों का भी दान किया।४।

यक्षलोकं तदा यातो वर्ष शतसहस्रकम्।
पुनः पुण्यक्षये जाते कपियोनिं ततोऽलभेत् ॥५
ऋक्षस्यैव पुनर्योनिं मानुषत्वं ततोऽगमत्।
धन-धान्यसमायुक्तो गुणज्ञोऽप्यतिसुन्दरः ॥६

वह बढ़ई एक लाख वर्ष तक यक्ष लोक में रहा। फिर पुण्यों के समाप्त होने पर वह बन्दर की योनि में प्रकट हुआ। फिर रीछ की योनि को प्राप्त हुआ। फिर वह मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ। वह धन धान्य से युक्त, गुणवान एवं सुन्दर हुआ।५-६।

पूर्वजन्मनि भो देवि ! काष्ठच्छेदः कृता सदा।
तेन पापेन भो देवि ! शरीरे महती व्यथा ॥७

हे देवि पार्वती ! उसने पूर्व जन्म में जो पेड़ काटे थे उस पाप के कारण उसके शरीर में भारी पीड़ा रहती थी।७।

यतिद्रव्यं गृहीतं च न दत्तं यतिने तदा।
तेन जातः सुतो देवि ! ऋणसम्बन्धकारणात् ॥८
द्यूतवेश्यारतो नित्यं पितृमात्रोर्विरोधकृत्।
युवारूपो यदा जातस्तदा मृत्युर्भवेद् ध्रुवम् ॥९

उसने जो यति का धन लेकर वापिस नहीं दिया था उस सम्बन्ध से वह यति उसके पुत्र रूप में हुआ। वह पुत्र जूआ खेलता, वेश्या गमन करता, पिता एवं माता का विरोध करता था। जब वह युवक हुआ तो उसकी मृत्यु हो गई।८-९।

पुनः पुत्रस्य सन्देहः काकवन्ध्यात्वमाप्नुयात्।
पत्नी तस्य वरारोहे ! मृतवत्सा पुनः पुनः ॥१०

फिर उसके पुत्र नहीं हुआ। वह काक बन्ध्या हो गई। उसकी पत्नी मृतवत्सा हो गई।१०।

अस्य शान्तिमहं वक्ष्ये शृणु देवि ! प्रयत्नतः।
गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥११

सूर्यमन्त्रस्य वै जाप्यं वैदिकस्य वरारोहे ! ।
आकृष्णेति महामन्त्रः सर्वव्याधिविनाशनः ।।१२

हे देवि पार्वती ! अब मैं इस पाप की शान्ति कहता हूँ । तुम प्रयत्न पूर्वक सुनो । गृह स्थित धन का अष्टमांश किसी ब्राह्मण को दान में दो । वैदिक मन्त्र 'आकृष्णेति' इस सूर्य मन्त्र का जप कराये । इस महामन्त्र से सारी व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं ।११-१२।

सर्वकामप्रदो देवि ! मोक्षदो मुक्तिकारणम् ।
सूर्यदेवस्य यो भक्तिं कुरुते नियतो नरः ।।१३
न किंचिद्दुर्लभं तस्य पुत्रश्चैव धनं बहु ।
ममाऽतीव प्रियो नित्यं सूर्यदेवे ह्युपासिते ।।१४

हे देवि सूर्य भगवान सभी कामनाओं के देने वाले हैं । मोक्ष के दाता एवं मुक्ति के कारण हैं जो मनुष्य सूर्य की भक्ति करता है उसके लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है । उसके पुत्र भी होते हैं, धन भी होता है । सूर्य देव की उपासना करने से व्यक्ति मुझे भी अत्यन्त प्रिय लगता है ।१३-१४।

मद्‌गणास्तं हि रक्षन्ति यतश्च मत्कलारविः ।
कमलं मुज्ज्वलं देवि ! वंशपात्रं सुशोभनम् ।।१५
तस्योपरि सुवर्णस्य सूर्य रत्नविभूषितम् ।
पलपञ्चार्भित देवि ! मन्त्रेणानेन पूजयेत् ।।१६

हे पार्वती जी ! उस सूर्योपासक की मेरे गण रक्षा करते हैं क्योंकि सूर्य मेरी कलाओं से ही है । हे देवि ! एक उज्जल कमल हो, उसे बाँस के पात्र में रखे उसके ऊपर पांच पल स्वर्ण का सूर्य, रत्नों से सज्जित कर स्थापित करे । और निम्नलिखित मन्त्र से उसकी पूजा करे ।१५-१६।

ॐनमः सूर्याय देवाय भद्राय भद्ररूपिणे ।
पूर्वजन्मकृतं सर्वं मम पापं व्यपोहतु ।।१७
प्रतिमां पात्रसंयुक्तां ब्राह्मणाय च दापयेत् ।
ततो गां कपिलां शुभ्रां सवत्सां स्वर्णभूषिताम् ।।१८

ब्राह्मणाय ततो दद्यात् पट्टवस्त्रेण संयुताम् ।
सप्तमी रविसंयुक्ता पोष्टव्याङ्गनया सह ।।१९

कल्याण रूप, कल्याण करने वाले सूर्य भगावन को हमारा प्रणाम है। मेरे पूर्व जन्म में किये गये सभी पापों को नष्ट करो। उस प्रतिभा को पात्र सहित ब्राह्मण को दे फिर बछड़े वाली, स्वर्णाभरण से अलंकृत एक सुन्दर कपिला गाय, वस्त्रों से भूषित कर ब्राह्मण को दान में दे। सप्तमी युत रविवार को पत्नी के सहित यह दान में दें ।१७-१९।

पूर्वजन्मकृतं पापं नश्यत्येवं कृते प्रिये ! ।
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति पुत्रलाभो भवेद्ध्रुवम् ।।२०
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा च पुत्रिणी ।।२१

हे प्रिये !-ऐसा करने से पूर्व जन्म के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं निश्चय रूप से पुत्र की प्राप्ति होती है काक वन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति एवं मृतवत्सा को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है ।२०-२१।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में
अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन
नामक उनहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

सप्ततमः अध्याय

शिव उवाच

सुकर्मनगरं ख्यातं सौराष्ट्रविषये शुभे ।
तत्राऽतिष्ठत्खलो विप्रो ब्रह्मकर्मविवर्जितः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! सौ राष्ट्र देश में एक सुकर्म नामक प्रसिद्ध नगर था। वहाँ एक दुष्ट ब्राह्मण रहता था। वह ब्रह्म कर्म से रहित था ।१।

विक्रेता सर्ववस्तूनां गोवाजि-वारिणां तथा ।
राजमृत्यु समालोक्य ग्रामदाहस्तथा कृतः ।।२

वह सभी वस्तुओं गौ, घोड़ा, हाथी सबको बेच देता था। राजा को मरा हुआ देखकर उसने गाँव में आग लगा दी ।२।

ब्राह्मणा बहवस्तत्र ब्राह्मण्यश्च तथा शिवे ।
मृता ग्रामस्यवै दाहे बह्वयो गावो मृताः खलुः ॥३

उस गांव में बहुत से ब्राह्मण तथा ब्राह्मणी थीं वे गांव के जलने से मर गये । उस अग्नि में बहुत सी गायें भी मर गईं ।३।

ततो बहुतिथे काले मृतः सोऽपि द्विजाधमः ।
ततस्तु यमदूतेन नरके घोरकर्दमे ॥४
यमाज्ञया च निक्षिप्तः कष्टं भुक्तं मुहुर्महुः ।
नरकान्निर्गतो देवि गजयोनिं ततोऽलभेत् ॥५

बहुत समय उपरान्त वह मध्यम ब्राह्मण भी मर गया । यम दूतों ने यम की आज्ञा से उसे घोर कर्दम नामक नरक में डाल दिया । वहाँ उसने बार-बार अनेक कष्ट भोगे । नरक से निकल कर फिर वह गज योनि को प्राप्त हुआ ।४-५।

कच्छपत्वं ततो यातः काकयोनिस्ततोऽभवेत् ।
मानुषत्वं ततो यातः कुले महति शोभने ॥६
सर्वसंपत्तिसंयुक्तो वंशस्तस्य न जायते ।
बहुकन्यासमायुक्तो रोगयुक्तो भवेन्नरः ॥७

फिर वह कछुए की फिर काक योनि में वह उत्पन्न हुआ । फिर सुन्दर मनुष्य कुल में उत्पन्न हुआ । वह सभी सम्पत्ति से युक्त हुआ । इसके पुत्र न थे । अनेक कन्याएँ थीं । वह रोगी हुआ ।६-७।

भार्या तस्य ज्वरग्रस्ता मासे वर्षे भवेज्ज्वरः ।
अतः शान्तिं प्रवक्ष्यामि यतः खलु सुखी भवेत् ॥८

उसकी पत्नी ज्वर ग्रस्त रहती थी । प्रतिवर्ष, मास उसे बुखार आ जाता था । अतः मैं शान्ति कहता हूँ जिससे सुख हो ।८।

चतुर्भागं गृहद्रव्यं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
प्रयागे मकरे मासि पत्न्या सह वरानने ! ॥९
स्नानं तु नियतः कुर्यात्सप्ताहं च ततः शिवे ।
हेमदानं ततः कुर्याद्भूमिदानं च पार्वति ॥१०

घर के धन में से चतुर्थांश ब्राह्मण को दे । प्रयाग में मकर के सूर्य होने

पर माघ मास में पत्नी के साथ सप्ताह तक स्नान नियमित रूप से करे। हे पार्वती जी ! इसके उपरान्त स्वर्ण दान एवं भूमि दान करे।९-१०।

गायत्रीजातवेदाभ्यां त्र्यम्बकेण तदा जपम्।
दशायुतप्रमाणेन हवनं मार्जनं तथा ॥११
ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या पक्वान्नैः पायसेन च।
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्याद्वस्त्ररत्नविभूषिताम् ॥१२

गायत्री मन्त्र, 'जातवेद से' मन्त्र तथा 'त्रयम्बकं यजामहे' मन्त्रों का एक लाख जप कराये। दशांश प्रमाण से हवन तथा मार्जन करे। ब्राह्मणों को पक्वान्न एवं खीर का भोजन भक्ति पूर्वक कराये। वस्त्र एवं रत्नों से सज्जित कर ब्राह्मणों को दक्षिणा भी दे।११-१२।

दशवर्णास्ततो दद्याद्हरि वंशश्रुतिस्तथा।
एवंकृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ॥१३
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं पुनर्देवि न संशयः।
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति मृतवत्सा लभेत् सुतम् ॥१४

दशवर्णी गाय को पुण्य करे। हरिवंश पुराण का श्रवण करे। ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है। काक वन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। मृतवत्सा को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।१३-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में, अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक सत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

एक सतप्तमः अध्याय

शिव उवाच

बन्दीजनोऽवसत्चैकः सौराष्ट्रविषये शुभे।
स कविर्भाग्यवान्देवि ! स्वधर्मनिरतः सदा ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! सौराष्ट्र देश में एक बन्दी यानी भाट रहता था। वह कवि था, भाग्यवान था, स्वधर्म में रत रहता था।१।

तस्य स्त्री सुन्दरी देवि ! पतिसेवासु तत्परा: ।
एकस्मिन् दिवसे देवि ! ब्रह्मचारी समागतः ॥२
आतिथ्यकरणे तस्य चाऽसमर्थ स्तथा शिवे ।
उपोषणं कृतं तेन द्वारे वन्दीजनस्य च ।

हे देवि ! उस भाट की स्त्री सुन्दर थी, पति सेवा में तत्पर थी। एक दिन एक ब्रह्मचारी उनके यहाँ आया परन्तु वह उसका अतिथि सत्कार करने में असमर्थ रहा। वह ब्रह्मचारी उस भाट के द्वार पर उपवास करके रहा।२।३।

प्रभाते स वरारोहे ! शापे दत्त्वा गतस्तु वै ।
ततस्तु दैवयोगेन मार्जारी तत्र सूतिका ॥४
पञ्चपुत्रा वरारोहे घातितास्तस्य च स्त्रिया ।
मार्जारी च तदा देवि क्षुधार्ता च तदा मृता ॥५

हे पार्वती जी ! वह ब्रह्मचारी उसे शाप देकर प्रातःकाल चला। तब भाग्य से वहाँ एक बिल्ली के प्रसव हुआ। उसके पाँच बच्चे हुए। उनको उस भाट की पत्नी ने मार डाला। वह बिल्ली भी भूखी-प्यासी तब मर गई।४-५।

ततो बहुतिथे काले तस्य मृत्युरभूत्पुरा ।
पत्नी पतिव्रता तस्य सती जाता च तत्क्षणात् ॥६

बहुत समय बाद उस भाट की मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी पति व्रता थी। वह पति के साथ सती हो गई।६।

सत्यलोके वरारोहे ! युगमेकमुवास सः ।
पत्न्य सह वरारोहे ! सौख्यं हि मानसेप्सितम् ॥७

हे पार्वती जी ! वह सत्य लोक में एक युग तक रहे। और मनोवांछित फल पत्नी के साथ प्राप्त किये।७।

भुक्त्वं देवाङ्गनासार्द्धं पुनः पुण्यक्षये सति ।
मानुषत्वं ततो लेभे सह पत्न्या वरानने ! ॥८
धन-धान्यसमायुक्तो वरा भार्य्या विवाहिता ।
पुत्राश्चा बहवो जातास्तेषां मृत्युरभूत्किल ॥९

उसने देवांगनाओं के साथ सुख भोग किया। पुण्यों के समाप्त होने पर

पत्नी के सहित मनुष्य योनि में आये। वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ एवं श्रेष्ठ पत्नी से उसका विवाह हुआ। उसके अनेक पुत्र हुए परन्तु सबकी मृत्यु हो गई।८-६।

सा ज्वरेण समुद्विग्ना मध्ये तापयुता पुनः।
तस्य पापस्य वै शान्तिं शृणु त्वं गिरिजे वरे।।१०

हे गिरजा! उसकी पत्नी ज्वर से पीड़ित रहती अब तुम इस पाप की शान्ति के उपाय सुनो।१०।

जातवेदस्य मन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत्।
विडालीप्रतिमां कृत्वा पञ्चबालेन संयुताम्।।११
स्वर्णस्यास्थ च रौप्यस्य पलपञ्चदशस्य तु।
सवस्त्रां वै तदा दद्याद्ब्राह्मणाय वरानने!।।१२

'जातवेद से' मन्त्र का एक लाख जप कराये। पाँच बच्चों के सहित पन्द्रह पल स्वर्ण एवं चाँदी की बिल्ली की प्रतिमा बनवाये। उसे वस्त्रों से अलंकृत कर ब्राह्मण को दे।११-१२।

गामेकां रक्तवर्णां च तां विप्राय प्रदापयेत्।
अमायां पिण्डदानं च सोमवारे तथा गुरौ।।१३
व्रतं च रविसप्तम्यां कुर्य्यादेवै भार्यया सह।
ततः पुत्रो भवेद्देवि! चिरंजीवी तथोत्तमः।।१४
व्याधितनाशो भवेद्देवि! वन्ध्यात्वं च प्रशाम्यति।।१५

हे देवि! एक लाल वर्ण की गाय भी ब्राह्मण को दे। अमावस्या सोमवार एवं गुरुवार को पिंड दान करे (ब्राह्मण भोजन करादे।) पत्नी सहित सप्त रविवार का व्रत रखे। ऐसा करने से चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। व्याधिय का विनाश हो जाता है तथा बांझपन भी समाप्त हो जाता है।१३-१५।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रायश्चित कथन'
नामक इकहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

←०→

द्वि सप्तितम अध्याय

शिव उवाच

ब्राह्मणो न्यवसत्‌चैको महाराष्ट्रपुरे शुभे ।
स वेदपाठतत्वज्ञो वेदपाठं सदाऽकरोत् ॥१

शिवजी बोले— हे पार्वती जी ! महाराष्ट्र में एक ब्राह्मण रहा करता था। वह वेद पाठी था, तत्वज्ञ था तथा सदैव वेद पाठ किया करता था ।१।

तडागं खानयामास तत्र द्रव्यं च लब्धवान् ।
द्रव्यस्यार्थं तदा देवि ! विग्रहो भ्रातरं प्रति ॥२

उसने एक तालाब खुदवाया । वहाँ उसे धन प्राप्त हुआ । तब धन के लिए भाई से उसका झगड़ा हो गया ।२।

भ्राता तस्य महादेवि ! द्रव्यार्थं भक्षितं विषम् ।
बहुकाले तदा देवि ! व्ययं सर्वधनं कृतम् ॥३

हे महादेवि ! धन के लिए उसके भाई ने विष खा लिया । उसने सारे धन का स्वयं ही व्यय किया ।३।

ततश्च पञ्चतां यातो ब्राह्मणश्च सुरेश्वरि ।
यमदूतैर्महाघोरे नरके देवि ! कर्दमे ॥४

हे सुरेश्वरि ! इसके कुछ समय बाद उस ब्राह्मण की भी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने उसे घोर कर्दम नरक में डाल दिया ।४।

षष्टिवर्षसहस्राणि निक्षिप्तश्च यमाज्ञया ।
भुक्त्वा नरकजं दुःखं काकयोनिरभूत्पुनः ॥५
पुनर्मानुषयोनिं च पुत्रकन्यायवतः ।
पूर्वजन्मनि भो देवि ! भ्रात्रांशं नैव दत्तवान् ॥६

यम की आज्ञा से दूतों ने साठ हजार वर्ष को नरक में पटक दिया । नरक के कष्टों को भोगने के उपरान्त वह कौए की योनि में उत्पन्न हुआ । फिर वह मनुष्य योनि में हुआ परन्तु उसके पुत्र कन्या नहीं हुए क्योंकि पूर्व जन्म में उसने भाई के भाग को नहीं दिया था ।५-६।

तेन पापेन भो देवि ! महारोगसमुद्भवः ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणुत्वं गिरजे वरे ॥७

उस पाप के परिणाम स्वरूप महान रोग उसके हुए । हे गिरिजा अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो ।७।

गृहवित्ताष्टमैर्भागैः पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
वापी-कूप-तडागादिजर्णोद्धारं प्रयत्नतः ॥८
प्रतिमां कारयेद्देवि स्वर्णं पलदशस्य तु ।
भ्रातुश्चित्रं तदा देवि ! पूजयित्वा यथाविधि ॥६

घर के अष्टमांश धन को पुण्य कार्यों में लगायें बावड़ी, कूए, तालाबों का प्रयत्न पूर्वक जीर्णोद्धार करायें । दश पल स्वर्ण की भाई की प्रतिमा बनवाये, उसकी विधि पूर्वक पूजा करें ।८-६।

गन्ध-धूपादिभिर्देवि भूषणैर्विविधैरपि ।
गायत्रीलक्षजाप्येन दशांशहवनेन तु ॥१०
प्रयागे मकरे स्नानं सर्वपापक्षयो भवेत् ।
ब्राह्मणाय ततो दद्याद्गां च दद्यात् पयस्विनीम् ॥११

उसकी मूर्ति की पूजा गन्ध, धूप आदि से करें । उसे भूषण आदि धारण करायें । एक लाख गायत्री जप करायें । दशांश क्रम से हवन करायें । मकर संक्रान्ति के अवसर पर माघ मास में प्रयाग में स्नान करे तो सभी पाप क्षय हो जाते हैं । फिर ब्राह्मण को एक दूध देने वाली गाय दान में दे ।१०-११।

भूमिं वृत्तिकरीं दद्यात् पुत्रपौत्रानुयायिनीम् ।
अश्वदानं ततो दद्याद्ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ॥१२

हे देवि ! ऐसी भूमि दान दे जिसमें खेती हो तथा दान ग्रहण करने वाले ब्राह्मण के पुत्र पौत्रादि उसकी वृत्ति प्राप्ति करें । फिर अश्व दान दे और ब्राह्मणों को भोजन करायें ।१२।

एवंकृते वरारोहे ! पुत्रो भवति नाऽन्यथा ।
व्याधिस्तस्य निवर्तेत काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥१३
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरंजीविनमुत्तमम् ॥१४

हे पार्वती जी ! ऐसा करने से पुत्र की प्राप्ति होती है । सभी व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं । काक वंध्या को भी पुत्र प्राप्त हो जाता है और चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है ।१३-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक बहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



त्रि सप्तितम अध्याय

शिव उवाच

पट्टने च पुरे शुभ्रे लोहकारोऽवसत्पुरा ।
गोवर्द्धनाभिधः पत्नीयुक्तोऽभूत्परमेश्वरि ! ॥१

शिवजी बोले--हे पार्वती जी ! प्राचीन काल में सुन्दर पट्टनपुर में एक लुहार रहता था । उसका नाम गोवर्धन था । वह पत्नी के साथ रहता था ।१।

धन-धान्यसमायुक्तो धर्मकर्मरतस्तथा ।
तस्य पुत्रद्वयं जातं लोहकारस्य पार्वति ॥२

वह लुहार धन धान्य से सम्पन्न था । यथा धर्म कर्म में रत था । हे पार्वती जी ! उस लुहार के दो लड़के हुये ।२।

ज्येष्ठपुत्रश्च भो देवि ! भार्यया तेन वै सह ।
निस्सारितो गृहाद्देवि ! दत्तं तस्मै न किञ्चन ॥३
एकोगृहे स्थितः पुत्रो द्रव्यं तस्मै प्रदत्तवान् ।
लोहकारेण भो देवि ! स्वभार्या पुत्रसंयुता ॥४

हे देवि ! उस लुहार ने अपने बड़े पुत्र को पत्नी सहित घर से निकाल दिया और उसे कुछ भी नहीं दिया । एक छोटा पुत्र घर में रह गया उसी को सारा धन दे दिया । उस लुहार ने अपनी पत्नी को उसी के पास रख दिया ।३-४।

त्यक्तां चैव महादेवि गोपालस्य तु कन्यकाः ।
भार्या कृता पुनस्तेन पत्न्यास्त्यागश्च वै कृतः ॥५

उस लुहार ने अपनी पत्नी का त्याग करके एक ग्वाला कन्या से विवाह कर लिया ।५।

ततो बहुगते काले लोहकारस्य वै शिवे ।
व्याघ्रेण मरणं जातं यमदूतैर्यमाज्ञया ॥६
निक्षिप्तो नरके घोरे कृमिविष्टादिसंयुतः ।
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥७

हे पार्वती जी ! बहुत समय उपरान्त उस लुहार की सिंह द्वारा मृत्यु हो गई । यम दूतों ने यम की आज्ञा से कीड़ों एवं विष्टा से भरे नरक में डाल दिया । तीस हजार वर्ष तक उम नरक यातना को भोगा ।६-७।

नरकान्निर्गतो देवि मानुषत्वं ततोऽलभेत् ।
पुनः सर्पश्य योनिश्च ततो नकुलतां गतः ॥८
मानुषत्वं ततो देवि ! धनधान्यसमाकुलः ।
शूरोऽभूत्किल विज्ञश्च ज्ञानवान् राजवल्लभः ॥९

नरक से निकाल कर उसे मनुष्य योनि मिली, फिर सर्प की योनि मिली फिर नकुल की इसके उपरान्त फिर मनुष्य योनि मिली । वह धन धान्य से युक्त हुआ । वह वीर, विद्वान, ज्ञानवान एवं राजा का प्यारा हुआ ।८-९।

पुरैव यत्कृतं सर्वं तत्प्राप्नोति न संशयः ।
पुरैव कार्तिके मासि पौर्णमास्यां सदाशिवे ॥१०
धेनुः प्रदत्ता युवती विधिवान्म वल्लभे ।
तेन दानफलेनेह धनाढ्यत्वं प्रलब्धवान् ॥११

पूर्व जन्म में उसने जो कर्म किये थे, उसका फल निश्चित रूप से प्राप्त हुआ । प्राचीन काल में कार्तिक मास में पूर्णिमा के दिन एक जवान गाय का उसने दान किया था । उसी दान के परिणाम स्वरूप वह धनाढ्य हुआ ।१०-११।

स्वभार्यां च परित्यज्य परकीया रतः स वै ।
अतः पुत्रस्य वै मृत्युः पुनः पुत्रो न जायते ॥१२

उस लुहार ने अपनी पत्नी का त्याग कर जो परस्त्रिया से प्रेम किया था इसी कारण उसके पुत्र की मृत्यु हुई और फिर पुत्र नहीं हुआ ।१२।

कन्यका जनयित्री च तस्य भार्या भवेत्खलु ।
पुत्रास्त्रियश्च कृतवान त्यागं परकलत्रवान् ॥१३

तत्पापेन महादेवि रोगग्रस्तकलेवरः ।
व्याधयश्च समुत्पन्ना दद्रु पामादयस्तदा ॥१४

उसकी पत्नी के मात्र कन्याएँ ही होती थीं। पुत्र एवं स्त्री को त्याग कर उसने दूसरी स्त्री से प्रेम किया था उस पाप के परिणाम स्वरूप हे महादेवि ! उसका शरीर रोग ग्रस्त हुआ। उसे व्याधियों ने घेर लिया, दाद एवं खुजली रोग हो गये ।१३-१४।

ख्यातवंशे समुत्पन्नो भूमिभागं न लब्धवान् ।
अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि पूर्व पापविशुद्धये ॥१५

वह प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न हुआ परन्तु भूमि प्राप्त नहीं हुई। अतः पूर्व पाप की शुद्धि हेतु मैं शान्ति कहता हूँ ।१५।

एकादशीव्रतं नित्यं षडांशं दानमाचरेत् ।
षडाङ्गं पाठयेन्नित्यं रुद्रपूजनपूर्वकम् ॥१६
हरिवंशश्रुतिं कुर्यात्चण्डीपाठं निरन्तरम् ।
तिलधेनुप्रदानं वै अमायांश्राद्धं विशेषतः ॥१७
एवंकृते महादेवि ! पुत्रस्तस्य भविष्यति ।
वन्ध्यात्वं प्रशमं याति सर्वरोगक्षयो भवेत् ॥१८

उसे एकादशी का व्रत करना चाहिए। घर के धन से षडांश का दान करना चाहिये। वेदांग का पाठ कराये, रुद्र का पूजन कराये। हरिवंश पुराण का श्रवण करे। चंडी पाठ निरन्तर कराये। तिल एवं धेनु (गाय) का दान करे, अमावस्या को श्राद्ध अवश्य करे। ऐसा करने से महादेवि ! उसके पुत्र अवश्य होगा। बांझपन छूट जायेगा तथा सभी रोग समाप्त हो जायेंगे।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक तिहत्तरवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

चतु सप्ततितमः अध्याय

शिव उवाच

बीजापुरमिति ख्यातं पुरं देवि ! मनोहरम् ।
न्यवसन् बहवो वर्णा ब्राह्मणाश्च वणिकाजनाः ॥१

शिवजी बोले— हे पार्वती जी ! एक बीजापुर नामक प्रसिद्ध एवं सुन्दर नगर था । उसमें सभी लोग, ब्राह्मण और वैश्य लोग रहते थे ।

तन्मध्ये शूद्र एको हि ताम्बूलं च करोति सः ।
सुरापी च स वै नित्यं ताम्बूलविक्रयी शिवे ॥२

उनमें एक शूद्र भी रहता था । वह पान तम्बाकू का काम करता था । वह शराबी था तथा पानों का क्रय-विक्रय करता था ।२।

तस्य पुत्रद्वयं जातं धनं च बहु सञ्चितम् ।
ततस्तद्दैवयोगेन महाधनमदेनच ॥३
ज्येष्ठपुत्रस्य हननं कृतं तेन वरानने ! ।
स्वभार्यार्थे तदा नीता पत्नी तस्य तु तेन हि ॥४

उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए । उसने धन भी बहुत सा संचित किया था । फिर दैव योग से एवं धन के मद से उसने अपने बड़े पुत्र का वध कर दिया । उस पुत्र बधू को उसने अपनी पत्नी बना लिया ।३-४।

पुत्राभ्यां च भवेद्वैरं पत्न्या सह विशेषत ।
प्रत्यहं भजते सोऽपि पुत्रपत्नीं तथाऽधमः ॥५

इससे पुत्र एवं पत्नी से उसका विशेष रूप से वैर हो गया । वह अधम नित्य प्रति अपनी पुत्र वधू का उपभोग किया करता था ।५।

एवं बहुदिने जाते तस्य मृत्युरभूच्छिवे ।
ततो वै नरके घोरे यमदूतैर्ममाज्ञया ॥६
निक्षिप्तो वै ततो देवि षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
कृमिभिर्घोरवक्त्रैश्च भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥७

हे पार्वती जी ! इस प्रकार बहुत दिन बीत जाने पर उसकी मृत्यु हो गई ।

तब यम की आज्ञा से यमदूतों ने उसे घोर नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक की कीड़ों एवं भयंकर जानवरों से युक्त नरक यातना को उसने भोगा।६-७।

नरकान्निर्गतो देवि श्वाँन योनि ततोऽलभेत् ।
ततो वृषभयोनिं च मानुषत्वं ततो गतः ।।८

नरक से निकल कर उसने कुत्ते की योनि प्राप्त की फिर बैल की योनि और इसके उपरान्त उसे मनुष्य की योनि मिली।८।

पूर्वजन्मनि भो देवि दशवर्णां ददौ बहु ।
तत्फलेनेह भो देवि धन-धान्ययुतस्तदा ।।९

हे देवि पार्वती ! उसने पूर्व जन्म में दशवर्णी गाय दान में दी थी, इसी कारण वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ।९।

पुत्रपत्न्यां च भोगार्थे पुत्रस्यैव वधः कृतः ।
तत्पापफलतो देवि ह्यपुत्रश्च ज्वरी तथा ।।१०

उसने पुत्र वधू का उपभोग किया था तथा पुत्र का वध किया था, इनके परिणाम स्वरूप वह अपुत्री एवं ज्वर से पीड़ित हुआ।१०।

व्याधिश्च बहुधा तस्य चाङ्गे च महती तथा ।
महाचिन्ता समापन्ना ह्यतः शान्ति शृणु प्रिये ! ।।११

उसके शरीर में प्रायः अनेक व्याधियाँ रहतीं थी। उसे महान चिन्तायें लगी रहती थीं। अब तुम उसकी हे प्रिये ! शान्ति सुनो।११।

स्ववित्तस्य तृतीयांशं प्रगृह्य हरवल्लभे ।
कूपं च खनयेत्कान्ते तडागं जीर्णमुद्धरेत् ।।१२
पौर्णमासीव्रतं देवि ! सकलत्रः समाचरेत् ।
शिवस्य पूजनं लक्षं ब्रह्मणेभ्यश्च कारयेत् ।।१३

अपने घर के तृतीय भाग को लेकर कूआ खुदवाये तथा तालाबों का जीर्णोद्धार कराये। पत्नी सहित पूर्णमासी का व्रत करे। ब्राह्मणों से एक लाख शिव पार्थिव पूजन कराये।१२-१३।

कृष्णां च गां च वृषभं ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण तथा लक्षप्रमाणतः ।।१४

जपं वै कारयेत्तत्र हवनं तद्दशांशतः ।
मार्जनं तर्पणं देवि दशांशं स च कारयेत् ॥१५

श्यामा गाय एवं बैल ब्राह्मण को दे । गायत्री मूल मन्त्र का एक जप कराये । जप कराने के उपरान्त दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण कराये ।१४-१५।

पुत्रस्य प्रतिमां तद्वत्स्वर्णवस्त्रसमन्विताम् ।
पलपञ्चदशस्यैव निर्मितां रत्नभूषिताम् ॥१६
पूजां कृत्वा विधानेन ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
एवं कृते न सन्देहः शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ॥१७

पन्द्रह पल स्वर्ण की पुत्र की प्रतिमा बनाये । उसे स्वर्ण एवं वस्त्रों से विभूषित करे, रत्नों से सज्जित करे । विधिवत पूजा कर ब्राह्मण को दे । ऐसा करने से शीघ्र ही पुत्र की प्राप्ति होती है ।१६-१७।

व्याधिश्च प्रशमं यायात्काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१८

ऐसा करने से सभी व्याधियाँ शान्त हो जाती हैं । काक बन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त हो जाता है । मृतवत्सा को भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है ।१८।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक चौहत्तरवां अध्याय संपूर्ण ॥



पंच सप्तत्तितम अध्याय

शिव उवाच

चतुर्भुजाभिधे क्षेत्रे वेणीश्चिमतः शिवे ।
पट्टकारोऽवसेद्देवि ! लक्ष्मणेति च संज्ञकः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! चतुर्भुज नामक क्षेत्र में, वेणी से पश्चिम की ओर, एक जुलाहा रहा करता था । उसका नाम लक्ष्मण था ।१।

तस्य पत्नी विशालाक्षी परपुंसि रता सदा ।
पुत्राश्च बहवो जाता धनं च बहु सञ्चितम् ॥२

उस जुलाहे की पत्नी वड़ी वड़ी आँखों वाली थी, परपुरुषों में रत रहती थी। उसके बहुत से पुत्र हुए उसने बहुत सा धन भी एकत्र किया ।२।

क्रय-विक्रयधर्मेण व्ययकारी दिने दिने ।
तस्य गेहेऽकरोद्वासं चटकानामपक्षिणी ॥३

वह क्रय-विक्रय का कार्य करता था । इसी से उसका व्यय चलता था । उसके घर में एक चटक चिड़िया रहती थी ।३।

एकस्मिन् समये देवि ! चाण्डान्सासूततत्र वै ।
बहून्वै पोषितांश्चाण्डान् सपक्षान्कृतवांस्तथा ॥४
फलं गृह्य सदा पक्षी मध्याह्ने बालकान्प्रति ।
भोजनं प्रददौ नित्यं स्वकुलाय तदा शिवे ॥५

हे पार्वती जी ! एक दिन उस चिड़िया ने वहाँ अण्डे दिये । उसने उन अंडों को पोषित किया और उसमें से पक्षी बन गये । वह चटक पक्षी सदैव बाहर से, मध्यान्ह के समय लाकर नित्य उन्हें खाने को देती थी ।४-५।

ततस्तु दैवयोगेन पट्टकारस्तु तद्गृहे ।
भोजनार्थं गतो देवि ! पत्नी चान्नं तदाऽप्यदात् ॥६

तभी दैव योग से वह जुलाहा उस घर में भोजन करने आया । उसकी पत्नी ने उसके लिए भोजन परोसा ।६।

भुक्तं च विविधं चान्नं तत्क्षणे पक्षिबालकः ।
विष्ठां चक्रुस्तथा दृष्ट्वा पट्टकारो रुषा खलु ॥७
कुलं तस्याकरोन्नष्टं बालानां हननेन सः ।
एवं बहुगते काले पट्टकारस्य सुव्रते ॥८

उसने विविध प्रकार के पकवान खाये तभी पक्षी बालक ने उसके ऊपर बीट कर दी । इसे देख जुलाहा बड़ा नाराज हुआ । उसने उसके कुल को नाश कर दिया, बच्चों को मार दिया । और फिर जुलाहे का बहुत समय व्यतीत हुआ ।७-८।

गङ्गायां मरणं जातं भार्यया सहितस्य वै ।
स्वर्गवासोऽभवेद्देवि पट्टकारस्य सुव्रते ॥९

सप्ततिर्वै सहस्राणि स्वयं भुक्त्वा फलं बहु ।
पुनः पुण्यक्षये जाते स्वर्गभ्रष्टो यदाऽभवेत् ।।१०

हे देवि ! उस जुलाहे की मृत्यु पत्नी सहित गंगा तट पर हुई । तब उन्हें स्वर्ग को प्राप्ति हुई । सत्तर हजार वर्ष तक स्वर्ग सुख को भोग फिर पुण्यों के नष्ट होने पर जब वह स्वर्ग से अलग हुआ ९-१०।

मनुष्यश्चाऽभवेद्देवि गङ्गागण्डकीमध्ययोः ।
धन-धान्यसमायुक्तो विवाहमकरोद्यदा ।।११
पूर्वजन्मस्थिता भार्या सा तस्य गृहमेधिनी ।
प्रेष्ययुक्ताऽभवेन्सा तु गर्भस्य पतनं मुहुः ।।१२

तब गंगा एवं गंडकी नदी के मध्य क्षेत्र में वह मनुष्य योनि में उत्पन्न हुआ। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ । फिर उसने विवाह किया । पूर्व कर्मानुसार वह पूर्व जन्म की पत्नी ही इस जन्म की उसकी पत्नी हुई । जब भी वह गर्भवती होती तो उसके गर्भ का पतन हो जाता ११।१२।

कन्यका नैव जायन्ते पुत्रस्यैव तु का कथा ।
ज्वरयुक्ता सदा नारी स्वशरीरेऽभवत्खलु ।।१३

उसके कन्या ही जब नहीं होती थीं तो फिर पुत्र की तो बात ही क्या है ? वह नारी सदैव ज्वर से पीड़ित रहती थी ।१३।

सुखं न लभते क्वापि दुःखं याति दिने दिने ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वं वरानने ।।१४

उसे कहीं भी सुख नहीं मिलता था । प्रति दिन दुःख ही मिलता था। इसकी शान्ति हे पार्वती जी सुनो ।१४।

चन्द्रार्कयोर्मन्त्र जपं गायत्रीजपमाचरेत् ।
लक्षमेकं वरारोहे पूर्वपापविशुद्धये ।।१५

चन्द्रमा एवं सूर्य से मन्त्रों का जप करायें तथा एक लाख गायत्री मन्त्र का जप, सभी पापों की शुद्धि के लिए करायें ।१५।

गृहवि त्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
कपिलां गां सवत्सां च ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।।१६

घर में स्थित धन के अष्टमांश को पुण्य कार्यों में लगायें। एक बछड़े सहित कपिला गाय को ब्राह्मण के लिए दान में दें ।१६।

दशवर्णास्ततो दद्याद्ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।
चटकस्याकृतिं कृत्वा सार्भकस्य वरानने ! ॥१७
रौप्यस्य ताम्रस्वर्णस्य पञ्चविंशपलस्य तु ।
ब्राह्मणाय ततो दद्याद् भूमिदानं विशेषतः ॥१८
हरिवंशश्रुतं कुर्याद्भार्यया सहितस्तु वै ।
हवनं तर्पण कुर्यान्मार्जनं तु ततः परम् ॥१९

दशवर्णी गाय दें फिर ब्राह्मणों को भोजन करायें । पच्चीस पल सोने, चाँदी एवं तांबे की बच्चों सहित चटक चिड़िया का निर्माण करायें उसे ब्राह्मण को दान में दें । फिर विशेष रूप से भूमिदान करें । फिर पत्नी सहित हरिवंश पुराण का श्रवण करें । फिर हवन, तर्पण एवं मार्जन विधि पूर्वक करें ।१७-१९।

जातवेदेति मन्त्रेण दशायुतजपं तथा ।
गोपालमन्त्रजपनात्पुत्रलाभो भवेदनु ॥२०
रोगनाशो भवेद्देवि ! काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥२१

'जातवेद' से इस मन्त्र का एक लाख जप करायें । तथा गोपाल मन्त्र का जप करायें । इससे पुत्र लाभ होगा । रोगों का विनाश होगा । काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होगी ।२०-२१।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में 'पार्वती शिव सम्वाद में
'ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक पिचहत्तरवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

●

षट् सप्ततितमः अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यानगरे देवि ! कायस्थोऽवसदद्विजे ।
रामदास इति ख्यातस्तस्य भार्या तु देविका ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! अयोध्या नगरी में एक कायस्थ रहता था । उसका नाम रामदास था । उसकी पत्नी का नाम देविका था ।१।

विष्णुभक्तिरतो नित्यं ब्राह्मणस्य च सेवकः ।
भार्या पतिव्रता तस्य पतिसेवासु तत्पराः ॥२

वह विष्णु भक्त था, ब्राह्मणों का सेवक था। भार्या पतिव्रता थी, सदैव वह पति सेवा में रत रहती थी।२।

भाग्यवान् सर्ववस्तूनां विक्रेता गज-वाजिनाम् ।
तस्य सखाऽभवद्विप्रो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥३

वह भाग्यशाली था। सभी वस्तुओं का हाथी एवं घोड़ों का क्रय-विक्रय किया करता था। उसका एक ब्राह्मण, वेदों का ज्ञाता मित्र था।३।

आगतो वै गृहे तस्य प्रेम्णा मित्रस्य भामिनि ।
चातुर्मास्ये स्थितेस्तत्र स्वर्णं शतपलं तदा ॥४
कायस्थस्य गृहे तत्तु स्थापितं ब्राह्मणेन वै ।
वाराणस्यां गतो देवि ! स्नानार्थं स द्विजोत्तमः ॥५

हे पार्वती ! वह ब्राह्मण प्रेम के कारण अपने मित्र (कायस्थ) के यहाँ आया। वर्षा ऋतु में वह उसके यहाँ रहा। उसके पास सौ पल स्वर्ण था। उस ब्राह्मण ने उसका धन, अपने मित्र कायस्थ के पास रख दिया। हे देवि ! फिर वह ब्राह्मण स्नान के लिए बनारस चला गया।४-५।

शरीरं त्यक्तवांस्तत्र ब्रह्मचारी द्विजस्तदा ।
ततो बहुगते काले कायस्थस्य दरिद्रता ॥६
तद्धनं ब्राह्मणस्यैव भुक्तं तेन वरानने ।
कालव्यालस्य कवलः कायस्थः कामिनीयुतः ॥७

वह ब्रह्मचारी ब्राह्मण वहीं काशी में मर गया। कुछ समय उपरान्त वह कायस्थ भी दरिद्र हो गया। हे सुमुखी ! उस ब्राह्मण के धन को इस कायस्थ ने खा लिया। फिर वह कायस्थ पत्नी सहित काल व्याल द्वारा डस लिया गया।६-७।

अथोऽभावमभूद्देवि तयोः स्वर्गो हुताशनः ।
नवत्यब्दसहस्राणि ब्रह्मलोके वरानने ॥८
भुक्त्वा सौख्यमनेकं तु विमानानामपि दुर्लभम् ।
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके सुरेश्वरि ॥९

वे पति-पत्नी अयोध्या में मरे थे । अतः स्वर्ग को चले गये । नब्बे हजार वर्ष तक उन्होंने ब्रह्म लोक में वास किया । देव दुर्लभ अनेक सुखों को भोगा फिर पुण्यों के क्षय होने पर हे सुरेश्वरि ! मृत्यु लोक में उनका जन्म हुआ ।८-९।

तत्पापेनाभवेद्देवि कन्यापुत्रभवरोधनम् ।
अस्य पापस्य वै शान्ति श्रृणु त्वं परमेश्वरि ॥१०

उसी पाप के प्रभाव से हे देवि ! उसके कन्या एवं पुत्रों का अवरोध हो गया । अब मैं इस पाप की शान्ति को कहता हूँ ।१०।

प्रायश्चितं महादेवि पूर्वजन्मसमुद्भवम् ।
गृहवित्तषडांशेन ततो दानं प्रकल्पयेत् ॥११

पूर्व जन्म के पापों की निवृत्ति हेतु प्रायश्चित स्वरूप घर के धन का षडांश दान में देना चाहिए ।११।

गायत्रीत्र्यम्बकाभ्यां च जातवेदेन चानघे ।
जपं वै कारयेत् कान्ते प्रतिमन्त्रं दशायुतम् ॥१२
ततो होमं दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ।
पलैर्दशमितैर्होमब्राह्मणस्य तदाकृतिम् ॥१३

गायत्री मन्त्र, त्रयम्बक यजामहे मन्त्र, जातवेद से मन्त्रों का एक-एक लाख जप कराये । दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन करे । पन्द्रह पल स्वर्ण की ब्राह्मण की प्रतिमा बनवाये ।१२-१३।

पूजयित्वा यथान्यायं ब्राह्मणाय ततो ददेत् ।
ततो गां कपिलां दद्यात्स्वर्णवस्त्रविभूषिताम् ॥१४
प्रतिवर्षं ततो देवि दशवर्णां ददेत्पुनः ।
एवंकृते न सन्देहो वंशो ह्यस्य भवेत् खलु ॥१५

विधिपूर्वक उसकी पूजा करके ब्राह्मण को देनी चाहिये । फिर स्वर्ण, वस्त्रों से विभूषित करके एक कपिला गाय दान में देनी चाहिये । प्रति वर्ष दशवर्णी गाय का दान करना चाहिये । ऐसा करने से निश्चय ही वंश की वृद्धि होती है ।१४-१५।

रोगः शरीरजन्यो यस्तस्य नाशः प्रजायते ।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा ततः प्रिये ॥१६
लभेत्तु सुसुतं चैव नात्र कार्या विचारणा ॥१७

विष्णुभक्तिरतो नित्यं ब्राह्मणस्य च सेवकः ।
भार्या पतिव्रता तस्य पतिसेवासु तत्पराः ॥२

वह विष्णु भक्त था, ब्राह्मणों का सेवक था । भार्या पतिव्रता थी, सदैव वह पति सेवा में रत रहती थी ।२।

भाग्यवान् सर्ववस्तूनां विक्रेता गज-वाजिनाम् ।
तस्य सखाऽभवद्विप्रो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥३

वह भाग्यशाली था । सभी वस्तुओं का हाथी एवं घोड़ों का क्रय-विक्रय किया करता था । उसका एक ब्राह्मण, वेदों का ज्ञाता मित्र था ।३।

आगतो वै गृहे तस्य प्रेम्णा मित्रस्य भामिनि ।
चातुर्मास्ये स्थितेस्तत्र स्वर्णं शतपलं तदा ॥४
कायस्थस्य गृहे तत्तु स्थापितं ब्राह्मणेन वै ।
वाराणस्यां गतो देवि ! स्नानार्थं स द्विजोत्तमः ॥५

हे पार्वती ! वह ब्राह्मण प्रेम के कारण अपने मित्र (कायस्थ) के यहाँ आया। वर्षा ऋतु में वह उसके यहाँ रहा । उसके पास सौ पल स्वर्ण था । उस ब्राह्मण ने अपना धन, अपने मित्र कायस्थ के पास रख दिया । हे देवि ! फिर वह ब्राह्मण स्नान के लिए बनारस चला गया ।४-५।

शरीरं त्यक्तवांस्तत्र ब्रह्मचारी द्विजस्तदा ।
ततो बहुगते काले कायस्थस्य दरिद्रता ॥६
तद्धनं ब्राह्मणस्यैव भुक्तं तेन वरानने ।
कालव्यालस्य कवलः कायस्थः कामिनीयुतः ॥७

वह ब्रह्मचारी ब्राह्मण वहीं काशी में मर गया । कुछ समय उपरान्त वह कायस्थ भी दरिद्र हो गया । हे सुमुखी ! उस ब्राह्मण के धन को इस कायस्थ ने खा लिया । फिर वह कायस्थ पत्नी सहित काल व्याल द्वारा ग्रस लिया गया ।६-७।

अयोध्यायामभूद्देवि तयोः स्वर्गो ह्यजायत ।
नवत्यब्दसहस्राणि ब्रह्मलोके वरानने ॥८
भुक्तं सौख्यमनेकं तु देवानामपि दुर्लभम् ।
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके सुरेश्वरि ॥९

वे पति-पत्नी अयोध्या में मरे थे । अतः स्वर्ग को चले गये । नब्बे हजार वर्ष तक उन्होंने ब्रह्म लोक में वास किया । देव दुर्लभ अनेक सुखों को भोगा फिर पुण्यों के क्षय होने पर हे सुरेश्वरि ! मृत्यु लोक में उनका जन्म हुआ ।८-९।

तत्पापेनाभवेद्देवि कन्यापुत्रभवरोधनम् ।
अस्य पापस्य वै शान्ति शृणु त्वं परमेश्वरि ॥१०

उसी पाप के प्रभाव से हे देवि ! उसके कन्या एवं पुत्रों का अवरोध हो गया । अब मैं इस पाप की शान्ति को कहता हूँ ।१०।

प्रायश्चितं महादेवि पूर्वजन्मसमुद्भवम् ।
गृहवित्तषडांशेन ततो दानं प्रकल्पयेत् ॥११

पूर्व जन्म के पापों की निवृत्ति हेतु प्रायश्चित स्वरूप घर के धन का षडांश दान में देना चाहिए ।११।

गायत्रीत्र्यम्बकाभ्यां च जातवेदेन चानघे ।
जपं वै कारयेत् कान्ते प्रतिमन्त्रं दशायुतम् ॥१२
ततो होमं दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ।
पलैर्दशभितैर्होमर्ब्राह्मणस्य तदाकृतिम् ॥१३

गायत्री मन्त्र, त्रयम्बक यजामहे मन्त्र, जातवेद से मन्त्रों का एक-एक लाख जप कराये । दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन करे । पन्द्रह पल स्वर्ण की ब्राह्मण की प्रतिमा बनवाये ।१२-१३।

पूजयित्वा यथान्यायं ब्राह्मणाय ततो ददेत् ।
ततो गां कपिलां दद्यात्स्वर्णवस्त्रविभूषिताम् ॥१४
प्रतिवर्ष ततो देवि दशवर्णां ददेत्पुनः ।
एवंकृते न सन्देहो वंशो ह्यस्य भवेत् खलु ॥१५

विधिपूर्वक उसकी पूजा करके ब्राह्मण को देनी चाहिये । फिर स्वर्ण, वस्त्रों से विभूषित करके एक कपिला गाय दान में देनी चाहिये । प्रति वर्ष दशवर्णी गाय का दान करना चाहिये । ऐसा करने से निश्चय ही वंश की वृद्धि होती है ।१४-१५।

रोगः शरीरजन्यो यस्तस्य नाशः प्रजायते ।
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा ततः प्रिये ॥१६
लभेत्तु सुसुतं चैव नात्र कार्या विचारणा ॥१७

शरीर जन्य रोग समाप्त हो जाते हैं। काक बन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त होता है। मृतवत्सा को भी पुत्र प्राप्त होता है। इसमें रंचक मात्र भी सन्देह नहीं है।१६-१७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक छिहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



सप्त सप्ततितम अध्याय

शिव उवाच

पश्चिमस्यामयोध्यायां योजनानां त्रयोपरि ।
राघवस्य पुरे देवि ! न्यवसन् बहवो जनाः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! अयोध्या के पश्चिम में तीन योजन दूर एक राघव पुर नामक स्थान था। वहाँ बहुत से आदमी रहते थे।१।

तन्मध्ये ब्राह्मणो ह्येको योगशर्माद्रिनन्दिनि ।
तस्य पत्नी समाख्याता गुणज्ञा परमा शुभा ॥२

हे पार्वती जी ! वहाँ एक ब्राह्मण भी रहता था। उसका नाम योग शर्मा था। उसकी पत्नी गुणवान एवं परम सुन्दरी थी।२।

तत्र वासो भवेद्देवि ज्ञाननिस्तस्य कामिनी ।
स पुरोधा महादेवि ! धनाढ्यः कृपणस्तथा ॥३

उसकी पत्नी बड़ी ज्ञानवान थी। वह ब्राह्मण पुरोहित धनाढ्य था एवं कृपण भी था।३।

प्रतिग्रहेण भो देवि ! व्ययकारी दिने दिने ।
तस्य भ्राता कनिष्ठश्च व्यापारकरणे रतः ॥४

हे देवि ! वह हर प्रकार का दान लिया करता था। उस धन का व्यय किया करता। उसका एक छोटा भाई था, वह व्यापार करता था।४।

उभौ द्वौ ब्राह्मणौ देवि ! शान्तिमन्तौ परस्परम् ।
ततो बहुगते काले वैरं जातं तदा शिवे ! ॥५

वे दोनों ब्राह्मण भाई बड़ी शान्ति से रहा करते थे। कुछ समय उपरान्त उन दोनों में परस्पर शत्रुता हो गई।५।

स्वधनस्य विभागार्थं युद्धं जातं सुदारुणम्।
तदुद्देशेन भो देवि मृतो भ्राता कनिष्ठकः।।६

अपने धन के विभाजन के प्रश्न को लेकर उनमें भयंकर लड़ाई हो गई। इस लड़ाई में छोटा भाई मारा गया।६।

तद्धनं गृहृय वै स्वर्णं सर्वं पुत्राय दत्तवान्।
दानं नैव कृतं तेन ततो वै मरणं खलु।।७

उस बड़े भाई ने छोटे भाई के सारे धन को लेकर अपने पुत्र के लिये दे दिया। उसने दान नहीं किया। बाद में उसका भी मरण हो गया।७।

यमदूतैर्महाघोरे निक्षिप्तो रक्तकर्दमे।
बहु वर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम्।।८
नरकान्निर्गतो देवि गर्दभत्वमजायत।
वृकयोनिस्ततो भूत्वा मानुषत्वं ततोऽभवेत्।।९
वेदविद्यारतो देवि कन्यावान् पुत्रवर्जितः।
रोगयुक्तो महादेवि सदा भिक्षारतो नरः।।१०

यमदूतों ने उसे रक्त भयंकर नरक में डाल दिया। हजारों वर्ष तक नरक की यातना भोगकर, नरक से निकल कर वह गदाह योनि में गया, फिर भेड़िया बना इसके उपरान्त मनुष्य योनि प्राप्त की वह वेदज्ञ-विद्वान हुआ। कन्याओं से युक्त हुआ, पुत्रों से रहित हुआ। रोग युक्त हुआ तथा सदैव भिक्षा वृत्ति करने वाला हुआ।१०।

पूर्वपापविशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं शृणुष्व मे।
हरिवंशश्रुतिं कुर्याद्शिवपूजनमेव च।।११

पूर्व पाप की शुद्धि हेतु प्रायश्चित सुनो। हरिवंश पुराण का श्रवण करना चाहिये तथा शिवजी का पूजन करना चाहिये।११।

अमायां पिण्डदानं च गोदानं च विशेषतः।
षडाक्षरं तथा मन्त्रं शुद्धं मम सुरेश्वरि।।१२

अमावस्या को पिण्ड दान करना चाहिये। ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। गोदान करना चाहिये। षडाक्षर (ॐनमः शिवाय) का शुद्ध जप कराना चाहिये।१२।

जपं वै कारयेत्सत्यं दशलक्षं वरानने ।
होमं वै कारयेत्कान्ते कुण्डे चित्रे वरानने ॥१३
चतुरस्त्रे वरारोहे तिल-धान्यादि-तन्दलैः ।
प्रतिमां कारयेत् कान्ते भ्रातुः स्वर्णस्य वैशिवे ॥१४
पलैर्द्विपञ्चसंख्याकैर्मन्त्रेणानेन पूजयेत् ।
ॐ नमः सवित्रे देवाय वेदवेदाङ्गधारिणे ॥१५
पूर्वजन्मकृतं सर्वं मम पापं व्यपोहतु ।
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा भ्रातुरंशापहारतः ॥१६

इस मन्त्र का दश लाख जप करना चाहिये । चतुस्र हवन कुण्ड बना कर हवन करना चाहिये । हवन तिल, जौ एवं चावल से करना चाहिये । भाई की बावन पल की स्वर्ण की प्रतिमा बनवानी चाहिये । तथा उस की पूजा इस मन्त्र से करनी चाहिये ''ॐनमो सवित्रे देवाय वेद वेदांग धारिणे पूर्व जन्म कृतं सर्वंमम पापं व्यपोहतु । अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा भ्रातुरं शापहारत:' अर्थात् हे सूर्यदेव ! मेरे सभी पूर्व जन्म के पापों को दूर करो जो मैंने ज्ञान से या अज्ञान से भाई के धन का हरण किया था ।१३-१६।

त्वददं गौर्मया दत्ता सूर्यदेवाय ते नमः ।
प्रतिमां पूजयित्वा तु ब्राह्मणाय ददेत्ततः ॥१७
एवंकृते विधाने च शी शीघ्रं पुत्रमवाप्नुयात् ।
काकवन्ध्या पुनः पुत्रजनयित्री भवेद्ध्रुवम् ॥१८
व्याधिनो नाशमायान्ति तूलराशिर्यथाऽनले ॥१९

तुम्हारे लिये मैंने ये गाय दी हैं, हे सूर्य देव तुम्हें नमस्कार है । प्रतिमा का पूजन कर उसे ब्राह्मण को दे दे । ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है । काक बन्ध्या शीघ्र पुत्र को जन्म देती है । उसकी समस्त व्याधियाँ विपत्तियाँ ऐसे नष्ट हो जाती हैं जैसे अग्नि से रुई ।१७-१९।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सत्तहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



अष्ट सप्ततितमः अध्याय

शिव उवाच

सरयूश्चोत्तरे कूले मङ्गलं नाम वै पुरम् ।
तत्र क्षत्र्यवसद्चैको मद्यमांसस्य भोगकृत् ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! सरयू नदी के उत्तरी किनारे पर एक मंगलपुर नामक स्थान था। वहाँ एक क्षत्री रहता था। वह मद्य-मांस का भक्षण किया करता था ।१।

भावसेनश्च नाम्ना स तस्य पत्नी मनोहरा ।
वेश्या-द्यु तरतश्चासौ लुब्धश्चौरेषु सम्मतः ।।२

उसका नाम भावसेम था। उसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दर थी। वह भावसेन वेश्या गामी, जुआरी लोभी एवं चोर कर्म भी करता था ।२।

प्रत्यहं चौरकृत्येन धनसञ्चयसंमुखः ।
ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल ।।३
सर्पेणापि महादेवि ! यमदूतैर्यमाज्ञया ।
रौरवे नरके क्षिप्तः षष्टिवर्षसहस्रकम् ।।४

उसने चोरी के द्वारा बहुत अधिक धन अर्जित किया। बहुत समय उपरान्त उसकी मृत्यु सर्प द्वारा डसने से हो गई। यमदूतों ने यम की आज्ञा से उसे साठ हजार वर्ष के लिये घोर रौरव नरक में डाल दिया ।३-४।

नारकान्निर्गतो देवि व्याघ्रयोनिं ततोऽलभत् ।
मानुषत्वं ततो लेभे कुले महति पूजिते ।।५

हे देवि ! नरक से निकलने के बाद व्याघ्र की योनि मिली। इसके उपरान्त एक पूजित, महान कुल में, मनुष्य योनि में उसका जन्म हुआ ।५।

पूर्वजन्मनि भो देवि ! दीपदानं कृतं यतः ।
तत्फलेन महादेवि ! धनाढ्यत्वमजायते ।।६

पूर्व जन्म में उसने जो दीपदान किया था उसी के फलस्वरूप वह धनवान हुआ ।६।

मद्यपानफलाद्देवि ! नानाज्वरसमुद्भवः ।
वेश्यासुरतसंयुक्तो यतोऽभूत्पूर्वजन्मनि ।।७

तेन पापेन भो देवि ! पुत्राणां मरणं खलु ।
मनस्युद्विग्नता नित्यं जातो द्यूतरतः पुरा ।।८

उसने जो मद्यपान किया था उसके कारण अनेक प्रकार के ज्वर से वह पीड़ित हुआ। उसने जो वेश्या गमन किया था उस पाप के कारण उसके पुत्रों का मरण हुआ। पूर्व जन्म में जूआ खेलने के कारण नित्य प्रति उनके मन में उद्विग्नता रही।७-८।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि सर्वपापविशुद्धये ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।।९
वापी-कूप-तडागांश्च पथिमध्ये च कारयेत् ।
गायत्रींमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ! ।।१०

सभी पापों की शान्ति के हेतु मैं अब इसकी शान्ति कहता हूँ। गृहस्थित धन का षडांश पुण्य कार्यों में लगा दें। बावड़ी, कूआ एवं तालाब रास्ते में बनवाये। गायत्री के मूल मंत्र का एक लाख जप करायें।९-१०।

दशांशं हवनं तद्वत्तर्पणं मार्जनं तथा ।
दशवर्णीं ततो दद्याद्वृषभेण समन्विताम् ।।११

दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें। दशवर्णीय गाय व एक बैल भी दान में दें।११।

एवं पापविशुद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
पुत्रश्च जायते देवि ! वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ।।१२
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।
रोगाःविनाशमायान्ति व्याधिश्च तथा शिवे ।।१३

ऐसा करने से सभी पापों की शुद्धि होती है, इसमें सन्देह नहीं है। पुत्र की प्राप्ति होती है तथा बांझपन समाप्त हो जाता है। मृतवत्सा को चिरंजीव एवं उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है। रोग एवं व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं।१२-१३।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का 'प्रायश्चित कथन' नामक अठहत्तरवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



एकोनाशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

मध्यदेशे विशालाक्षि हिडम्बं नाम वै पुरम् ।
लवणकारोऽवसत्तत्र भीमो गुणविचक्षणः ॥१

शिवजी बोले—हे विशालाक्षि ! मध्यदेश में एक हिडम्व नामक पुर था । वहाँ एक नमक निर्माता रहता था । उसका नाम भीम था । वह बड़ा चतुर था ।१।

प्रत्यहं लवणं कृत्वा विक्रयं चाकरोत् सदा ।
तस्य भार्या पुण्यवती पुत्रत्रयमजीजनत् ॥२

वह नित्य प्रति नमक का निर्माण करता था । उसकी पत्नी पुण्यवती थी । उसके तीन पुत्र थे ।२।

धन-धान्य-वृष-च्छाग गोमहिष्यादिकं तथा ।
बहूनि सञ्चितानि स्युर्लवणस्यालयः प्रिये ॥३

उसके पास धन-धान्य बहुत था । बैल, बकरी, गाय, भैंस उसने बहुत कुछ संचित किये थे तथा उसके पास नमक भंडार था ।३।

तस्य ज्येष्ठः सुतो देवि वेश्यासुरततत्परः ।
एकस्मिन्समये देवि लवणाब्धौ निशामुखे ॥४
स्त्रियां सहाद्रितनये वृषभौ पतितौ तदा ।
श्रुत्वा तत्र तदा देवि निशायां न गतोऽपि सः ॥५

उस भीम का बड़ा लड़का वेश्यागामी था । एक बार रात्रि के समय दो बैलों के सहित उसकी स्त्री नमक के समुद्र में गिर गई । इसे सुनकर भी वह रात्रि के समय वहां नहीं गया ।४।

त्रयाणां वै भवेन्मृत्युः स्वकाले ज्ञातिना सह ।
भार्या निःसारिता तेन वृषभौ मृत्युसंयुतौ ॥६

तब उन तीनों की मृत्यु हो गई । तब प्रातः होने पर जाति बन्धुओं के साथ उन दोनों बैलों एवं पत्नी को उसमें से निकाला ।६।

ततः सर्वं वयो जातं वृद्धे सति वरानने ।
मरणं तस्य वै जातं लवणकारस्य पार्वति ! ॥७

हे पार्वती जी ! तब सारी उम्र उसकी वीत गई। उस लवणकार (नौनिया, नमक निर्माता) की मृत्यु हो गई।७।

यमदूतैर्महाघोरैर्नरके घोरसंज्ञके ।
पातितस्तत्र देवेशि द्वाविंशतिसहस्रकम् ॥८
वर्षं सुभुज्यते देवि कृमिसूचिमुखैर्युतम् ।
नरकान्निःसृतो देवि व्याघ्रयोनिर्वैजायत ॥९

हे देवि ! यमदूतों ने उसे बाईस हजार वर्ष तक घोर महान नरक में उसे डाल दिया। कीड़ों एवं सूई के से मुख वाले कष्ट पूर्ण नरक की भयंकर यातनाओं को भोग वह व्याघ्र की योनि में उत्पन्न हुआ।८-९।

पुनश्चागस्य वै योनिं बिडालस्य ततोऽगमत् ।
मानुषत्वं ततो लेभे देशे पुण्यतमे शुभे ॥१०

फिर वह बकरा बना फिर बिडाल (विलाव) की योनि को प्राप्त हुआ। फिर पवित्र देश में मनुष्य योनि में उत्पन्न हुआ।१०।

स्वकर्मवशगो नित्यं धन-धान्यसमन्वितः ।
गुणज्ञः सर्वविद्यानां कन्यापुत्रैश्च वर्जितः ॥११

वह अपने कर्मवशात् धन धान्य से युक्त हुआ। वह गुणवान हुआ, समस्त विद्याओं में निपुण हुआ तथा कन्या एवं पुत्रों से रहित हुआ।११।

लवणकारस्य मरणं गङ्गायां पूर्वजन्मतः ।
तत्फलेन महादेवि ! धनाढ्यत्वं प्रजायते ॥१२

हे महादेवि ! उस लवणकार की मृत्यु गंगा के तट पर पूर्व जन्म में हुई थी उसके प्रभाव से वह धनवान हुआ।१२।

स्वभार्या पतिता देवि ! लवणकूपे निशामुखे ।
नैव निःसरिता तेन ततः कन्या प्रजायते ॥१३

हे देवि ! उसकी पत्नी उस लवण कूप में गिर गई थी और उसने उसे नहीं निकाला था इसी कारण उसके कन्याएँ ही उत्पन्न हुई।१३।

वृषभौ पतितौ कूपे पातितौ मृत्युमागतौ ।
तेन दोषेण देवेशि पुत्रो नैव प्रजायते ॥१४

दो बैल उस लवण कूप में गिर गये थे और मृत्यु को प्राप्त हो गये थे, उसी दोष के कारण उनके पुत्र नहीं होता था।१४।

परस्त्रीरतिसंयोगं यत्कृतं पूर्वजन्मनि ।
तेन पापेन भो देवि ! शरीरे रोगसम्भवः ॥१५

पूर्व जन्म में उसने पर स्त्री संगम किया था, उस पाप से शरीर में रोग हुए ।१५।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ।
गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥१६

हे सुन्दरी ! मैं इस पाप की शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो । घर के अष्टमांश ब्राह्मण को समर्पित करदे ।१६।

गायत्रीलक्षजाप्यं च विप्रद्वारा च कारयेत् ।
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ॥१७
सुवर्णप्रतिमां कृत्वा लक्ष्म्याः पञ्चपलेन वै ।
रौप्यस्यैव वरारोहे वृषभौ द्वौ सुनिर्मलौ ॥१८
पलैर्दशमितैः कुर्यात्पूजयित्वा यथाविधिः ।
मन्त्रेणानेन देवेशि पूजोपचारैः पृथक् पृथक् ॥१९

ब्राह्मण से एक लाख गायत्री जप कराये । दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण कराये । पाँच पल सोने की लक्ष्मी की स्वर्ण प्रतिमा का निर्माण कराये । दश पल चाँदी के दो सुन्दर बैल बनवाये । उनकी यथा विधि पूजा करे । तथा निम्न लिखित मन्त्र से विधिवत पूजा करे ।१७-१९।

ॐलक्ष्मी देवि ! महालक्ष्मी कमले सर्वसिद्धिदे ।
मम पूर्वकृतं पापं तत्क्षमस्व दयानिधे ! ॥२०

ॐ लक्ष्मी देवी, हे महालक्ष्मी, हे कमला, हे सर्व सिद्धि दानी, हे दयानिधे ! मेरे पूर्व जन्म के पापों को क्षमा करो ।२०।

मन्त्रः–ॐलक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि ॐ महालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं० ॥ॐदेव्यै नमः स्नानं० ॥ॐ कमलायै नमः गन्धं० ॥ सर्वायै नमः धूपं० ॥ॐ सिद्धिदायै नमः दीपं० ॥ एवं ॐपाद्यादीनि सर्वाणि दापयेत् ॥

ॐनन्दिकेश्वर भूतेश ! गणनामधिपो-भवात् ।
मम पूर्वकृतं पापं क्षम्यतां परमेश्वर ! ॥२१
इति मन्त्रेण वृषभौ पूजितौ शुभ्ररूपिणौ ।
पूजयित्वा यथान्यायं ब्राह्मणाय ददेत्ततः ॥२२

ॐ 'लक्ष्म्यै नमः,' पाद्य समर्पण करें, 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' अर्घ्य समर्पण करें, 'ॐ देव्यै नमः' स्नान करायें, ॐ कमलायै नमः, गन्ध समर्पण, 'सर्वायै नमः' धूप समर्पण, ॐ सिद्धिदायै नमः 'दीप समर्पण । इस प्रकार पाद्य आदि सब समर्पित करे ।"

ॐ नंदिकेश्वर, हे भूतेश, आप गुणों के अधिपति हैं, हे परमेश्वर ! मेरे पूर्व कृत पापों को क्षमा करो ।" इन मन्त्रों से सुन्दर बैलों की पूजा करे । यथाविधि उनकी पूजा करके ब्राह्मण के लिये उन्हें दे ।२१-२२।

ततो गां कपिलां दद्यात्स्वर्णश्रृङ्गी सुभूषिताम् ।
एवं कृते वरारोहे ! यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥२३
तत्सर्वं नाशमायाति शीघ्रमेव न संशयः ।
पुत्रोऽपि जायते देवि ! वन्ध्यात्वं च प्रशाम्यति ॥२४

इसके बाद कपिला गाय को, उसके सींगों को सोने से सजा कर दान में दे । ऐसा करने से पूर्व जन्म में किये सभी पाप शीघ्र नष्ट हो जाते हैं । पुत्र भी उत्पन्न होता है तथा बांझपन भी नष्ट हो जाता है ।२३-२४।

रोगाः सर्वं क्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ।
मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥२५
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं पुनर्देवि न संशय ॥२६

सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इन कार्यों में विचार नहीं करना चाहिये । मृतवत्सा को चिरंजीव उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है । तथा करक बन्ध्या को भी पुनः पुत्र की प्राप्ति हो जाती है । इसमें संशय नहीं है ।२५-२६।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक उनासीयवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

अशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यायां महादेवि ! वशिष्ठयैव आश्रमे ।
श्रीधनेश्वरशर्म्मेति ब्राह्मणो न्यवसत् प्रिये ! ॥१

शिवजी कहने लगे—हे पार्वती जी ! अयोध्या में महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में एक ब्राह्मण रहता था । उसका नाम धनेश्वर शर्मा था ।१।

स पण्डितो गुणज्ञश्च धनी मानी विचक्षणः ।
स्त्री च पतिव्रता तस्य पयिसेवासु तत्पराः ॥२

वह धनेश्वर पण्डित था, गुणी था, धनी, मानी एवं चतुर था । उसकी स्त्री पति व्रता थी एवं पति सेवा में तत्पर रहती थी ।२।

पुत्रद्वयं तथा जातं विद्यावृत्तिर्वभूव सः ।
भागिनेयस्ततो देवि तद्धनेश्वरशर्मणः ॥३
तत्र वासार्थमायातः सपत्नीको वरानने ! ।
तीर्थयात्राप्रसङ्गे न गृहे तस्याऽवसद्द्विजः ॥४

उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए । वह विद्या वृत्ति करता था । उस धनेश्बर शर्मा का एक भानजा था । वह पत्नी सहित वहाँ रहने के लिए आया तथा तीर्थ यात्रा के प्रसंग से वह ब्राह्मण वहाँ रहा ।३-४।

मासमेकं स्थितस्तत्र भागिनेयस्ततो मृतः ।
द्रष्टः सर्पेण देवेशि कालपाशावृतो द्विजः ॥५

वह भानजा वहाँ एक माह तक रहा तथा सर्प देश से उसकी मृत्यु हो गई ।५।

वर्षमात्रे ततो जाते भागिनेयस्य या वधूः ।
धनेश्वरे महाप्रीतिमकरोत्सा मम प्रिये ॥६

हे प्रिये पार्वती ! एक वर्ष के उपरान्त वह भानजे की वहू उस धनेश्वर से विशेष प्रेम करने लगी ।६।

पुत्राणां मरणं देवि जातं तस्याघरूपिणः ।
गृहे स्वर्णं च रौप्यं च सर्वं तस्यै न्यवेदयेत् ॥७

उसी पाप के स्वरूप धनेश्वर पुत्र मर गये। घर में सोना चाँदी था वह सब धनेश्वर ने उस भानजे की बहू को दे दिया।७।

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्किल।
यमदूतैर्महाघोरे नरके पातितः शिवे ॥८
यमाज्ञया वरारोहे षष्टिवर्षसहस्रकम्।
अन्यत्रापि कृतं पापं प्रयागे च विनश्यति ॥९

बहुत समय बाद उस धनेश्वर की मृत्यु हो गई। यमदूतों ने उसे भयंकर नरक में यम की आज्ञा से साठ हजार वर्ष तक के लिये डाल दिया।

हे पार्वती जी! सभी स्थानों पर किये गये पाप प्रयाग में नष्ट हो जाते हैं।८-९।

प्रयागे यत्कृतं पापं रामपुर्यां विनश्यति।
अयोध्यां कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥१०

प्रयाग में किये गये पाप अयोध्या में नष्ट हो जाते हैं लेकिन अयोध्या में किये गये पाप वज्रलेप हो जाते हैं।१०।

नरकान्निःसृतो देवि बकयोनिर्वैजायते।
पुनर्दर्दुरयोनिर्वै काकयोनिं ततोऽगमत् ॥११
पुनर्मानुषयोन्यां वै धन-धान्यसमन्वितः।
जातः पुण्यत्तमे देशे देवेगन्धर्वसेविते ॥१२

नरक से निकलकर हे देवि! वह बगुले की योनि में गया। फिर मेंढ़क की योनि में फिर कौए की योनि में गया। फिर मनुष्य योनि में प्रकट हुआ। धन धान्य से समन्वित घुल में, पुण्य देश में देवगन्धर्वों से सेवित स्थान में उसका जन्म हुआ।११-१२।

सर्वविद्यासु विख्यातो गुणज्ञो रूपवांस्तथा।
पूर्वजन्मनि देवेशि भागिनेयवधूं प्रति ॥१३
सम्भोगं कृतवान् विप्रः कुक्षिपीडा ततः परम्।
वंशच्छेदो विशालाक्षि कन्या वै बहवस्तथा ॥१४

वह सभी विद्याओं में निपुण हुआ, गुणवान एवं रूपवान हुआ। पूर्व जन्म में जो उसने भानजे की बहू से संभोग किया था उस पाप के फल स्वरूप उसके पेट में पीड़ा हुई। उसके वंश का छेदन हुआ, अनेक कन्याएं उत्पन्न हुई।१३-१४।

भागिनेयस्य वै द्रव्यं भुक्तं पूर्वमनेन वै।
शरीरे बहुधा पीडा परस्त्रीगमनादनु ॥१५

पूर्व जन्म में इसने भानजे का जो धन खाया था और परस्त्री गमन किया था, इस पाप के कारण प्रायः शरीर में पीड़ा रहती थी ।१५।

अस्य शान्तिं प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं मम वल्लभे ! ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यञ्च कारयेत् ॥१६

हे मेरी प्रिया ! इस पाप की मैं शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो। घर के षडांश धन को पुण्य कार्य में लगाना चाहिये ।१६।

गायत्रीजातवेदाभ्यां जापं वै कारयेत्ततः।
दशांशं पवनं कृत्वा तर्पणं मार्जनं तथा ॥१७

गायत्री मन्त्र एवं जातवेद से मन्त्र का जप कराना चाहिये तथा दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन कराना चाहिये ।१७।

जीर्णोद्धार वरारोहे कूपं चैव तडागकम्।
तद्वदेव च वै कुर्य्यात् षष्टि वृक्षप्ररोपणम् ॥१८
प्रयागे माघमासे तु तुलादानं प्रयत्नतः ।
धूम्रवर्णां तथा गां वै दद्याद्विप्राय सत्कृताम् ॥१९

कूए एवं तालाब का जीर्णोद्धार कराना चाहिये। साठ वृक्षों का आरोपण कराना चाहिए। प्रयाग में माघ मास में प्रयत्न पूर्वक तुला दान कराना चाहिए। योग्य ब्राह्मण को धूम्रवर्णी गाय दान में देनी चाहिए ।१८-१९।

एवंकृते वरारोहे ! पूर्वपापं विशुद्धयति।
पुत्रोऽपि जायते देवि ! वन्ध्यात्वञ्च प्रशाम्यति ॥२०
काकवन्ध्यात्वशान्त्यर्थं रवियुक्तां तु सप्तम् ।
कृत्वा व्रतं वरारोहे ! सुवर्णं दानमाचरेत् ॥२१

हे पार्वती जी ! ऐसा करने से पूर्व पापों की शुद्धि हो जाती है। पुत्र भी होता है, बाँझपन समाप्ति हो जाता है। काक बांझपन की समाप्ति हेतु रवि युक्ता सप्तमी का व्रत रखना चाहिए तथा स्वर्ण का दान करना चाहिए ।२०-२१।

शय्यादानं ततो दद्यान्मृतवत्सा सुपुत्रिणी ।
सर्वे रोगाः क्षयं यान्ति नात्रकार्या विचारणा ।।२२

इसके उपरान्त शैया दान करना चाहिए । इससे मृतवत्सा को भी पुत्र की प्राप्ति होती है । सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है ।२२।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण में प्रायश्चित कथन'
नामक अस्सीवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



एक अशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

कर्णाटे वै ततो देवि पुरं च शिवसंज्ञकम् ।
वसन्ति तत्र बहवो वैश्याः पाण्योपजीविनः ।।१

शिवजी बोले--हे देवि ! कर्नाटक में एक शिवपुर नामक नगर था । वहाँ बहुत से व्यापारी वैश्य रहते थे ।१।

तन्मध्ये वैश्य एको हि धरणीकरत्वश्रुतः ।
तस्य रूपवती भार्या सुन्दरी बहुसंयुता ।।२

उनमें एक वैश्य था उसका धरणीकर नाम था । उसकी पत्नी रूपवती थी ।२।

व्यापारेण महादेवि ! धनं च बहु सञ्चितम् ।
ततो बहुदिने काले तस्य मित्रं द्विजोऽप्यभूत् ।।३

हे महादेवि ! उसने व्यापार से बहुत सा धन एकत्र किया था । बहुत दिन बाद उसकी मित्रता एक ब्राह्मण से हो गई ।३।

ब्राह्मणः सोऽपि वै भ्रष्टः कष्टं भुक्त्वा दिने दिने ।
स्वर्णं शतमलं देवि ! हीरकं मौक्तिकं तथा ।।४
स्थापितं ब्राह्मद्रव्यं स्वगृहे मित्रकारणात् ।
ततो वृद्धे तु सञ्जाते वैश्यमृत्युरभूत्पुरा ।।५

वह ब्राह्मण भी भ्रष्ट हो, दिन प्रति दिन कष्ट भोग, सौपल सोना, हीरे एवं मोती सभी ब्रह्म धन का मित्र के कारण से अपने घर में वह धन रख लिया। फिर वृद्ध होने पर वैश्य की मृत्यु पहले हो गई।५।

पश्चात्पत्नी मृता तस्य व्रतिनी गर्ववर्जिता।
वैश्यस्य चाऽभवत्स्वर्गं दिव्यवर्षसहस्रकम् ॥६

बाद में उसकी व्रतिनी, गर्वरहिता पत्नी मर गई। हजारों वर्ष तक वैश्य को स्वर्ग हुआ।६।

पत्न्या सह वरारोहे! भुक्त्वा स्वर्गफलं ततः।
बकयोनिं ततो लेभे चक्रवाकस्ततोऽभवेत् ॥७

हे पार्वती जी! पत्नी के साथ स्वर्गफल भोग उसे बगुले की योनि मिली फिर चकवे की योनि मिली।७।

हंसयोन्यां ततो जातो मानुषत्वं ततोऽगमत्।
पूर्वसम्बन्धतः पूर्वपुण्यात्पातिव्रतादपि ॥८
पुनर्विवाहिता देवि! ब्राह्मणस्वापहारतः।
वन्ध्या जाता तु सा नारी दुःखिता साऽप्यहर्निशम् ॥९

फिर उसे हंस की योनि मिली बाद में मनुष्य योनि उसे मिली। पूर्व सम्बन्ध के कारण एवं पतिव्रत धर्म के कारण उसे मानव तन मिला। पूर्व फलस्वरूप उसी पूर्व पत्नी से विवाह हुआ। ब्राह्मण के धन का हरण करने के कारण वह पत्नी बांझ हुई और वह नारी रात दिन दुःखी रहती थी।८-९।

तस्य देहेऽभवेद्व्याधिः कफ-वातसमन्वितः।
धनाढ्यो बहुधा कन्या जायन्ते च पुनः पुनः ॥१०

उसके शरीर में व्याधियाँ हुईं। कफ-बात की पीड़ा हुई। धनवान वह हुआ और बार-बार कन्याएँ हुईं।१०।

अस्य निग्रहहेत्वर्थं शृणु सर्वं वरानने!।
यद्गृहे वित्तमर्द्धं तद् ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥११

अब इसका पार्वती जी निग्रह सुनो। जो घर में धन हो उसका आधा ब्राह्मण को समर्पित कर देना चाहिये।११।

ॐलक्ष्म्यै नमोऽथ मन्त्रेण दशायुतजपं ततः ।
दशांशहवनं तद्वैत्तर्पणं मार्जनं तथा ॥१२
गामेकां कृष्णवर्णां वै स्वर्णयुक्तां सवत्सकाम् ।
ब्राह्मणाय ततो दद्यात्मुक्तालाङ्गूलसंयुताम् ॥१३

'ॐ लक्ष्म्यै नमः' मन्त्र का एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें। एक गाय कृष्ण वर्ण की, स्वर्ण युक्त एवं बछड़े के सहित मोतियों से पूंछ सजाकर ब्राह्मण को देनी चाहिए ।१२-१३।

भोजनं कारयेत्पूज्यान् ब्राह्मणान् वेदपारगान् ।
शतं वा द्विशतं देवि ! त्रिशतं वा विशेषतः ॥१४
पलैः शतैः सुवर्णस्य वेदीं कृत्वा विचक्षणः ।
तन्मध्ये च द्विजस्यैव रौप्यस्यैव चाकृतिम् ॥१५

सौ, दो सौ, तीन सौ या विशेष वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन कराये। सौ पल स्वर्ण की वेदी बनाये। उसके बीच चांदी की ब्राह्मण की आकृति बनवाकर स्थापित करें ।१४-१५।

पूजयेत्श्रद्धया देवि ! मन्त्रेणवं पुनः पुनः ।
ब्रह्मंस्तव कपिलो विष्णुः सर्वसाक्षी जगन्मयः ॥१६
ममापराधं देवेश ! क्षम्यतां पूर्वजन्मनः ।
द्रव्यं मित्रस्य भो देव ! स्थापितं स्वगृहे मया ॥१७
न दत्तं वै मयाऽज्ञानात् क्षम्यतां परमेश्वर ! ।
मन्त्रेणानेन देवेशि पूजनं विधिपूर्वकम् ॥१८

हे देवि ! श्रद्धा से, मन्त्रों से इस प्रकार पुनः पुनः पूजा करे। हे ब्रह्म ! तुम कपिल हो, विष्णु हो, सर्वसाक्षी हो, जगत में व्याप्त हो। मेरे पूर्व जन्म के अपराधों को क्षमा करो। मैंने अपने मित्र का धन घर में रख लिया। अज्ञानवश मैंने उसे नहीं दिया, हे परमेश्वर मेरे उस अपराध को क्षमा करो । हे देवि ! इस मन्त्र से विधि पूर्वक पूजा करे ।१६।

पूजयित्वा ततो देवि ! ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
एवं कृत्वा वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ॥१९

उसका पूजन करके ब्राह्मण को दे दें। ऐसा करने से शीघ्र पुत्र पैदा होता है।१९।

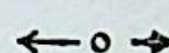
काकवन्ध्या पुनर्देवि ! कन्यका जननी तथा।
पुत्रं प्रसूयते देवि ! न च कन्यां प्रसूयते ॥२०

काक बन्ध्या एवं कन्याओं की माता भी पुत्र उत्पन्न करती हैं तथा कन्याओं को जन्म नहीं देती।२०।

मृतवत्सा लभेत्पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम्।
व्याधयः संक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥२१

मृतवत्सा को चिरजीव उत्तम पुत्र प्राप्त हो जाता है। सभी व्याधियां शान्त हो जाती हैं, इसमें संशय नहीं करना चाहिये।२१।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के द्वितीय चरण में प्रायश्चित कथन' नामक इक्यासीवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



द्वयशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

अन्तर्वेदे विशालाक्षि लोध्रोऽवात्सीत् स पुण्यकृत्।
गन्धर्वाख्ये पुरे देवि ! विख्याते यमुनान्तरे ॥१

शिवजी बोले—हे विशालाक्षि ! गंगा यमुना की मध्य भूमि में, यमुना के बीच की भूमि में एक गंधर्व नामक पुर था। उसमें एक लोधा रहता था।१।

सुभाग्यवान् गुणज्ञो हि बहुभृत्यैः सुपूजितः।
भूपतिस्तस्य देशस्य दाता भोक्ता विचक्षणः ॥२

वह लोधा भाग्यवान, गुणवान, अनेक नौकर से युक्त, पूजित उस देश का वह राजा था। वह दाता, भोक्ता एवं चतुर था।२।

ब्राह्मणस्य हृता भूमिरज्ञानाद्वै सुरेश्वरि !।
ब्राह्मणोऽपि विषं भुक्त्वा मृतस्तस्योपरि प्रिये ! ॥१३

हे पार्वती जी ! उस लोधे ने आज्ञान से ब्राह्मण की भूमि का हरण कर लिया था। उसके ऊपर ब्राह्मण भी जहर खा कर मर गया।३।

ततो बहुगते काले तस्य मृत्युरभूत्पुरा ।
यमदूतैर्महाघोरे कुम्भीपाके निपातितः ॥४
यमाज्ञया वरारोहे ! युगमेकं च पातितः ।
महादुःखेन संतप्तो बहु कष्टं प्रलब्धवान् ॥५

बहुत समय बाद उस लोधे की मृत्यु हो गई । यम दूतों ने उसे कुम्भीपाक नरक में डाल दिया । यम की आज्ञा से एक युग तक नरक में महान दुःख और कष्टों को भोगा ।४-५।

नरकान्निःसृतो देवि ! सूकरत्वं ह्यजायत ।
ऋक्षयोनिं ततो भुक्त्वा शुकयोनिं ततोऽगमेत् ॥६
पुनर्मानुषयोनिर्वै मध्यदेशे वरानने ! ।
धन-धान्यसमायुक्तो वंशहीनोऽभवेत्तदा ॥७

हे देवि ! नरक से निकल कर उसे सूअर की योनि मिली । फिर रीछ की योनि भोग कर उसे तोते की योनि मिली । फिर मध्य देश में मनुष्य योनि मिली । वह धन धान्य से युक्त हुआ । परन्तु वंशहीन हुआ ।६-७।

पूर्वजन्मनि देवेशि हृता भूमिर्वरानने ! ।
ब्राह्मणो वै मृतः पूर्वं तदुद्देशेन वै शिवे ! ॥८
अतः पुत्रविहीनोऽयं कन्यको बहु जायते ।
महारोगेण संतप्तो मृतपुत्रः पुनः पुनः ॥६

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने ब्राह्मण की भूमि का हरण किया और इस कारण वह ब्राह्मण मर गया था । उसी पाप के कारण वह पुत्रहीन हुआ । इसके बहुत सी कन्याएँ हुई थीं । वह महारोग से संतप्त हुआ । बार-बार उसके पुत्र मर जाते थे ।८-६।

अस्य शान्तिमहं वक्ष्ये पूर्वपापस्य शान्तये ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां त्र्यम्बकेण वरानने ॥१०

हे देवि ! उस पूर्व पाप की शान्ति हेतु मैं उपाय बतलाता हूँ । गायत्री, जातवेद से, एवं त्र्यम्बकेण यजामहे' मन्त्रों का जप कराये ।१०।

दशायुतं जपं कार्यं प्रतिमन्त्रैः सुरेश्वरि ।
दशांशं हवनं तद्वत् तर्पणं मार्जनं तथा ॥११

दशवर्णां ततो दद्यात्शतब्राह्मणभोजनम् ।
भूमिदानं ततो कुर्याद्शतविग्रहमानकम् ॥१२

हे सुरेश्वरि ! प्रति मन्त्र का एक लाख जप कराये । दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन कराये । दशवर्णी गाय को दान में दे, सौ ब्राह्मणों को भोजन कराये । सौ बीघे जमीन का दान करे ।११-१२।

पञ्चपञ्चसुवर्णस्य ब्राह्मणस्य तथाकृतिम् ।
पूजयित्वा यथान्यायं ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥१३
प्रयागे मकरे मासि पत्न्या सह वरानने ! ।
स्नानं कुर्याच्च देवेशि पूर्वपापस्य शुद्धये ॥१४

पांच पल स्वर्ण की ब्राह्मण की प्रतिमा बनवाये । विधि पूर्वक पूजा करके उसे ब्राह्मण को दे । प्रयाग में मकर मास में पत्नी के सहित पूर्व पाप प्रक्षालन हेतु स्नान करे ।१३-१४।

एवं कृत्वा वरारोहे ! पुत्रोत्पत्तिर्भवेत्शिवे ।
वन्ध्यात्वं नाशमायाति काकबन्ध्या च गर्भिणी ॥१५
मृतवत्सा लभेत् पुत्रं चिरञ्जीविनमुत्तमम् ।
रोगाः सर्वेक्षयं यान्ति नात्र कार्य विचारणा ॥१६

ऐसा करने से हे देवि ! पुत्रोत्पति होती है । बांझपन नष्ट हो जाता है । काक बन्ध्या भी गर्भिणी हो जाती है । मृतवत्सा को भी चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है । सभी रोग नष्ट हो जाते हैं । इसमें कोई संशय नहीं है ।१५-१६।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद
में, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित
कथन नामक ब्यासीवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—o—

त्र्यशीतितम: अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यायां विशालक्षि मालाकारोऽवसत्पुरा ।
साधुवृत्तिरतः श्रीमान् ब्राह्मणानां च सेवकः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! अयोध्या में प्राचीन काल में एक माली रहता था । वह साधुवृत्ति वाला था तथा ब्राह्मणों का सेवक था ।१।

तस्य पत्नी महादुष्टा कुलटा च व्यभिचारिणी ।
माल्यं कृत्वा विशालाक्षि जीवयामास बान्धवान् ।।२

उसकी पत्नी महान दुष्टा, कुल्टा एवं व्यभिचारिणी थी । वह माली माला बनाकर बन्धु बांधवों का पालन करता था ।२।

तस्य मित्रं द्विजोऽप्येकः स्वर्णं लक्षद्वयं तथा ।
स्थापितं स्वगृहे तस्य गताश्च बहुवासराः ।।३

उसका मित्र एक ब्राह्मण था । वह दो लाख स्वर्ण मुद्रा लेकर आया । उसने माली के घर में उन्हें रख दिया । बहुत समय व्यतीत होने के उपरान्त ।३।

याचितं तेन स्वं द्रव्यमर्धं प्राप्तं तदा प्रिये ।
तदर्धं च व्ययं जातं मालाकारस्य वै गृहे ।।४
एवं बहुगते काले मालाकारो मृतः पुरा ।
अयोध्यायां विशालाक्षि स्वर्गंस्तस्याऽभवेत्किल ।।५

उसने अपना धन मांगा । तब उसे आधा ही मिला । माली ने उसमें से आधा समाप्त कर दिया था । बहुत समय व्यतीत होने पर माली मर गया । अयोध्या में उसकी मृत्यु हुई अतः वह स्वर्ग गया ।४-५।

लक्षवर्षं वरारोहे ! भुक्तं स्वर्गं फलं शुभम् ।
ततः पुण्यक्षये जाते मानुषत्वेऽभवत्पुनः ।।६

हे पार्वती जी ! एक लाख वर्ष तक स्वर्ग फल को भोग, पुण्यों के क्षय होने पर वह मनुष्य योनि में उत्पन्न हुआ ।६।

तस्य पत्नी पुनर्देवि ! या स्थिता पूर्वजन्मनि ।
मध्यदेशे च देवेशि पुत्रकन्याविवर्जितः ।।७
विवाहिता च सा देवि ! व्याधियुक्ता ज्वरातुरा ।
अस्य शान्ति वरारोहे ! शृणु मे परमेश्वरि ।।८

हे देवी जी ! पर्व जन्म में उसकी पत्नी थी, वही अब उसकी पत्नी बनी । मध्य देश में उनका जन्म हुआ । वे पुत्र कन्या से रहित हुए । विवाह होने के उपरान्त

उसकी पत्नी व्याधि युक्त एवं ज्वर से पीड़ित रहती थी। अब तुम उसकी सुनो ।७-८।

षडांगं जापयेत्प्राज्ञैः शिवपूजनपूर्वकम् ।
षडाक्षरेण मन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ॥९
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ।
श्रवणं मासमेकं तु चण्डिकाचरितत्रयम् ॥१०

षडांग का पाठ करायें, शिव पूजन करायें, षडाक्षर मन्त्र का एक लाख जप करायें। दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण करायें। एक माह तक चंडी के तीनों चरित्रों का श्रवण करें ।९-१०।

ततः षडांशं देवेशि ! ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
ततो गां कपिलां दद्यात्तिल-धेनुसुपूजिताम् ॥११
अश्वं दद्याद्विशालाक्षि महिषीं दुग्धसंयुताम् ।
सुवर्णस्य कृतं वृक्षं फल-पुष्पसमन्वितम् ॥१२

घर मे स्थित धन का षडांश ब्राह्मण को समर्पित करें। तिल धेनु एवं कपिला गाय की पूजा कर पुण्य करें। एक घोड़े का दान करें, एक दूध देने वाली भैंस दें। स्वर्ण का एक वृक्ष फल फूलों से लदा हुआ बनवावें ।११-१२।

दद्याद्दशपलै देवि ! ततः पुत्रः प्रजायते ।
मृतवत्सा चयानारी काकवन्ध्या च रोगिणी ॥१३
सर्वासां वाञ्छितं कार्यं जायते नात्र संशयः ॥१४

दश पल स्वर्ण का वृक्ष बनाकर दें तो पुत्र की प्राप्ति हो। जो मृतवत्सा नारी हो या काकवन्ध्या हो या रोगी हो तो सभी व्याधा नष्ट होती हैं, सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। इसमें संशय नहीं है ।१३-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में
'पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक तिरासीयवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

चतुः अशीतितम अध्याय

शिव उवाच

श्वेतपर्वे महातीर्थे रामपुर्यें वरानने ।
कान्यकुब्जोऽवसद्विप्रो व्यापारकरणे रतः ॥१

शिव जी बोले– हे सुमुखी ! श्वेत पर्व नामक महान तीर्थ में रामपुरी नामक स्थान में एक ब्राह्मण रहता था । वह व्यापार किया करता था ।1।

अश्वादिकं वरारोहे वृषचर्माऽजिनाम्बरम् ।
प्रत्यहं गृह्यते देवि ! विक्रयं क्रियते सदा ॥२
द्यूतवेश्यारतो नित्यं परस्त्रीगमनं तथा ।
प्राकरोच्च सुरापानं गुरुदेवोऽपमानकृत् ॥३

हे पार्वती जी ! वह घोड़े, बैल एवं हिरनों के चमड़ों को खरीदा करता था एवं बेचा करता था । जूआ खेलता, वेश्या गमन करता, परस्त्री गमन करता था । सुरापान किया करता था, गुरु एवं देवता का अपमान करता था ।२-३।

एवं बहुगते काले मरणं प्रबभूव हि ।
यमदूतैर्महाघोरे लब्ध्वा क्षिप्तः सुदारुणे ॥४

इस प्रकार उसका बहुत समय बीत गया फिर उसका मरण हुआ । यमदूतों ने उसे पकड़कर महान घोर नरक में डाल दिया ।४।

षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।
नरकान्निःसृतो देवि ! वानरस्य गतिं गतः ॥५
ततो रासभयोन्यां वै तुरगस्य ततोऽगमत् ।
मानुषत्वं ततो लेभे पूर्वजन्मफलाच्च सः ॥६

हे देवि ! साठ हजार वर्ष तक नरक की यातना भोगकर, नरक से निकल कर उसे बन्दर की योनि मिली फिह वह गदहे की योनि में फिर घोड़े की योनि में गया । फिर पूर्वजन्म के फल से उसे मनुष्य की योनि मिली ।५।६।

धन-धान्यसमायुक्तो रोगयुक्तोऽप्यपुत्रकः ।
कदाचिद् दैवयोगेन पुत्रो भवति भामिनि ! ॥७

मरणं तस्य वै शीघ्रं ततः कन्या प्रजायते ।
अस्य शान्ति शृणुष्वादौ यथापापं निवर्तते ।।८

वह धन धान्य से युक्त हुआ, रोग से युक्त हुआ, तथा अपुत्री हुआ। कभी दैवयोग से उसके पुत्र हुआ भी तो उसका शीघ्र मरण हो गया। फिर कन्या हुई। इसकी शान्ति सुनो जिससे पाप समाप्त हो जाँय ।७-८।

गृहवित्तषडांशं च पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
पूर्वजन्मनि देवेशि ! कनिष्टं भ्रातरं निजम् ।।९
रात्रौ खड्गेन हतवान् तत्पाच्च सुतक्षयः ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षं वरानने ।।१०

घर के षडांश भाग को पुण्य कार्यं में लगाना चाहिये। हे देवि ! पूर्वं जन्म में इसने छोटे भाई को रात्रि को तलवार से मार दिया था, उस पाप के कारण उसके पुत्र की मृत्यु हुई। गायत्री के मूल मन्त्र का पांच लाख जप करायें ९-१०।

जपं वै कारयेत्प्रज्ञैर्नित्यं गोविन्दकीर्तनम् ।
होमं वै कारयेत्कान्ते कुण्डे षट्कोणसंयुते ।।११

विद्वान ब्राह्मण से जप कराना चाहिए तथा नित्य गोविन्द का कीर्तन कराना चाहिए। षट्कोण वेदी बनाकर हवन कराना चाहिए ।११।

पायसेन विशालाक्षि तिलसर्पियुतेन च ।
दशवर्णां ततो दद्याद् ब्राह्मणाय शिवात्मने ।।१२

हे विशालाक्षि ! खीर, तिल, घी से भी हवन हो, दशवर्णी गाय ब्राह्मण को दान में दें ।१२।

भूमिदानं ततो दद्याद्छायादानं विशेषतः ।
भ्रातुश्चैवाकृतिं कृत्वा रोप्येणैव वरानने ।।१३
पलसप्तप्रमाणेन पूजां कृत्वा प्रसन्नधीः ।
"देवदेव ! महादेव ! चर्मभस्मविभूषणम् ! ।।१४
पूर्वजन्मनि देवेशि भ्रातृनाशः कृतो मया ।
तत्पापं क्षम्यतां देव ! प्रवद्ये शरणं तव ।।१५

इसके उपरान्त भूमिदान करें, छाया दान विशेष रूप से करें। सात पल

चांदी की भाई की मूर्ति बनवावे, प्रसन्न चित्त से उसकी पूजा करे एवं प्रार्थना करे— "हे देव देव, हे महादेव, चर्माम्बर धारण करने वाले, हे प्रभो ! पूर्व जन्म में जो मैंने भाई का विनाश किया था उस मेरे पाप को क्षमा करो। मैं आपकी शरण में हूँ ॥१३-१५॥

प्रतिमां पूजितां देवि ! मन्त्रेणानेन वै शिवे ।
दद्याद्विप्राय विदुषे श्रोत्रियाय द्विजात्मने ॥१६

हे देवि ! इस मन्त्र से उस प्रतिमा की पूजाकर किसी विद्वान वेदज्ञ, ब्राह्मण को देनी चाहिये ॥१६॥

ततो वै भोजयेद्भक्त्या ब्राह्मणान् वेदपारगस् ।
एकाधिकशतं देवि ! पायसैर्मोदकेन च ॥१७

इसके उपरान्त एक सौ एक वेदज्ञ ब्राह्मणों को भक्ति पूर्वक खीर एवं लड्डू का भोजन करायें ॥१७॥

एवं कृत्वा वरारोहे पूर्वपापस्य संक्षयः ।
वन्ध्यात्वं प्रशमं याति पुत्रः सत्यं प्रजायते ॥१८
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा सुपुत्रिणी ।
व्याधयः संक्षयं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥१९

हे देवि ! ऐसा करने से सारे पापों का नाश हो जाता है। बांझपन भी समाप्त हो जाता है और यथार्थ में पुत्र प्राप्त होता है। काकबन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त होता है। मृतवत्सा भी सुपुत्रों से युक्त होती है। सभी व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं, इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥१८–१९॥

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'उत्तरा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौरासीवाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥



पंचाशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

शंकेश्वरपुरे देव्यवात्सीच्चैको द्विजो वरः ।
म्लेच्छवाणीं वदेन्नित्यं म्लेच्छसेवारतः सदा ॥१

हे देवि ! शंकेश्वर पुर में एक ब्राह्मण रहा करता था । वह सदैव म्लेच्छ वाणी बोला करता था तथा म्लेच्छ लोगों की सेवा में रत रहता था ॥१॥

अतिष्ठन् म्लेच्छनिकटे म्लेच्छविद्या सु पण्डितः ।
मत्स्यं मांसं च मद्यं च भोजनं चाकरोत्सदा ॥२

वह सदैव म्लेच्छों के पास बैठा करता था वह म्लेच्छ विद्या का पंडित था । मछली, मांस शराब आदि का वह सदैव भोजन किया करता था ॥२॥

एवं सर्वं वयो जातं बहु सुसञ्चितम् ।
तद्धनं भूमिमध्ये हि स्थापितं तु गृहे शुभे ॥३

इस प्रकार सारी उम्र बीत गई । उसने बहुत सा धन एकत्र किया । उस धन को उसने भूमि में गाढ़ दिया था ॥३॥

एकस्मिन्समये देवि ! भ्रातुः पुत्रः समागतः ।
रत्नव्यापारकरणे स दक्षश्चतुरस्तथा ॥४

हे देवि ! एक दिन उसका भतीजा आया । वह रत्नों के व्यापार करने में अत्यन्त दक्ष था ॥४॥

ततो गेह स्थितो नित्यं रत्नं बहु सुसञ्चितम् ।
रत्नलोभेन भो देवि ! रात्रौ छुरिकया तदा ॥५
कृत्वा शिरश्छेदनं च सुप्तं निशि समारतम् ।
तत्सर्वं भूमिमध्ये तु स्थापितं रत्नसञ्चितम् ॥६

उसने घर में रहकर नित्य प्रति काफी रत्नों का संचय किया था । रात्रि को रत्न के लोभ से एक समय छुरी से उसका शिर सोते समय काट लिया उसे मार डाला । उस सभी रत्नादि को पृथ्वी में गाढ़ दिया ॥५-६॥

भ्रातृजस्य धनं गृह्य व्ययं कृत्वा दिने दिने ।
ततो बहुदिने याते द्विजः पूर्वं मृतः स च ॥७

पश्चात्पत्नी मृता तस्य तौ गतौ नरकार्णवे ।
षष्टिवर्षसहस्राणि महाकष्टेन पीडितौ ॥८

अपने भतीजे का सारा धन लेकर दिन प्रति दिन उसका व्यय करता था। बहुत समय बीतने पर वह ब्राह्मण पहले मर गया। बाद में उसकी पत्नी भी मर गई। वे दोनों भयंकर नरक में गये। वहाँ साठ हजार वर्ष तक महान कष्टों को भोगा, पीड़ा प्राप्त की।७-८।

नरकान्निःसृतौ द्वौ तु गजयोनिं बभूवतुः ।
पुनः कच्छपयोनिं वै गोधायोनिं बभूवतुः ॥६

नरक से निकलकर उन दोनों को हाथी की योनि मिली, फिर कछुए की योनि, इसके उपरान्त गोह की योनि उन्हें मिली।६।

एवं योनित्रयं भुक्त्वा सरयू उत्तरे तटे ।
मानुषत्वं ततो लेभे भाग्यवान् साधुसंज्ञितः ॥१०
सुशीलः सुमतिर्दक्षः स्वल्पविद्यायुतो नरः ।
अपुत्रो रोगवान् देवि ! भूपतिर्नरपूजितः ॥११

इस प्रकार तीनों योनियों को भोगकर, सरयू के उत्तरी तट पर मानव योनि में प्रकटे, वे भाग्यवान हुए। उसका नाम साधु हुआ। वह सुशील, सुमति, दक्ष, स्वल्प विद्यावान् व्यक्ति हुआ। वह अपुत्री, रोगी एवं राजा एवं मानवों द्वारा पूजित हुआ।१०-११।

पूर्वजन्मनि देवेशि भ्रातृपुत्रवधः कृतः ।
निशानां च पुरा देवि ! तेन दोषेण नो सुतः ॥१२

हे देवि ! इसने पहिले जो रात्रि के समय भतीजे का वध किया था, उसी दोष के कारण इसके कोई पुत्र नहीं हुआ।१२।

म्लेच्छस्य सेवानाद्देवि ! म्लेच्छस्याऽशुचिभाषणात् ।
तेन पापेन भो देवि ! शरीरे रोगसम्भवः ॥१३

हे देवि ! पूर्व में म्लेच्छों की सेवा करने के कारण, म्लेच्छ एवं अपवित्र भाषण के कारण, इसके शरीर में रोग उत्पन्न हुये।१३।

यत्तु दानं कृतं पूर्वं दत्ता शय्या सुरेश्वरि ।
तत्फलेन महादेवि ! धनाढ्यत्वमजायते ॥१४

हे सुरेश्वरि ! पूर्व में इसने जो शैय्या दान आदि किये थे उस फल के कारण धन सम्पन्न हुआ ।१४।

अनाचारः कृतः पूर्वं पुत्रदारायुतेन च ।
तेन पापेन भो देवि ! नरः कन्याप्रजो भवेत् ।।१५

हे देवि ! स्त्री-पुत्रों सहित पूर्व में इसने जो अनाचार किये थे, उसी पाप के कारण कन्यायें उत्पन्न हुई ।१५।

अथ शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देवि ! सुशोभने ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पंचलक्षं वरानने ! ।।१६
जपंच कारयेद्देवि ! षडांशं दानमाचरेत् ।
होमंच कारयेत्कान्ते कुण्डे चैव सुसंस्कृते ।।१७

हे देवि ! उस पाप की अब मैं तुमसे शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो । गायत्री मूल मन्त्र का पांच लाख जप करायें षडांश गृह वित्त का दान करे । सुन्दर हवन कुंड बनवाकर हवन कराये ।१६-१७।

दशांशं तर्पणं देवि ! मार्जनं तद्दशांशतः ।
भ्रातृपुत्रस्य प्रतिमां कारयेदद्रिनन्दिनि ।।१८

दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन कराये । तथा भतीजे की प्रतिमा बनवाये ।१८।

पलं दशसुवर्णस्य विधिवत्पूजये ततः ।
मन्त्रेणानेन देवेशि गन्धधूपादिभिस्तथा ।।१९
गणाधिप ! सुराध्यक्ष ! सर्वसिद्धिप्रदायक ! ।
मम पूर्वकृतं पापं तत्क्षमस्व दयानिधे ! ।।२०
रौप्यपात्रे स्थितां तां तु प्रतिमां प्रार्थयेत्ततः ।
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा पापं मम पुरा कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रपद्ये शरणं तव ।।२१

यह प्रतिमा दश पल स्वर्ण की हो । इसकी विधिवत इस मन्त्र से पूजा गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से करे--

'हे गणेश जी, हे देवाध्यक्ष, हे सर्वसिद्धि प्रदाता, हे दया सागर, मेरे सभी पूर्व पापों को क्षमा करो ।' उस प्रतिमा को चांदी के वर्तन में रखकर प्रार्थना करे—

"अज्ञान से, या प्रमाद से जो पाप मैंने पहिले कर दिया है, हे देव, उस सबको आप क्षमा करो, मैं आपकी शरण हूँ ॥१९—२१॥

ॐगणपतये नमः । ॐलक्ष्म्यै नमः । ॐसू-
र्याय नमः । ॐशिवाय नमः । ॐविश्वयोनये
नमः । ॐगरुडाय नमः । ॐनंदिकेश्वराय नमः
एभिर्मन्त्रैस्तु सर्वाणि वस्तूनि दापयेत्ततः ।
कलशं पूजयेद्देवि ! गणाधिपस्वरूपिणम् ॥२२

श्री गणेश जी को प्रणाम है, लक्ष्मी जी को नमस्कार है, सूर्य देव को, शिव जी को नमस्कार है । विश्व योनि को, गरुड़ को, नंदिकेश्वर को प्रणाम है ।' इन मंत्रों से पूजाकर, सभी वस्तुओं को दे दे । गणपति स्वरूप कलश की पूजा करे ॥२२॥

गन्धपुष्पैश्च ताम्बूलैर्वस्त्रैर्नानाविधैरपि ।
प्रतिमां पूजितां देवि ! ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥२३

हे देवि ! गंध, पुष्प, ताम्बूल, वस्त्र एवं अनेक प्रकार से उस प्रतिमा की पूजा कर ब्राह्मण को दे दे ॥२३॥

दशवर्णास्ततो दद्यात्वृषमेकं वरानने ! ।
पंचपात्रं ततो दद्याद् ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ॥२४

फिर दश वर्णी गाय तथा बैल तथा पांच पात्र (वर्तन) ब्राह्मण को दें और उसे भोजन करायें ॥२४॥

रविवारेण संयुक्तसप्तम्यां विधिपूर्वकम् ।
उपोषणं नियमतः पत्न्या सह वरानने ! ॥२५
सप्तवत्सरपर्यन्तं प्रकुर्याद्वै सुरेश्वरि ।
ततउद्यापनं कुर्याद्यथाशक्ति सदाशिवे ॥२६

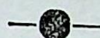
हे वरानने ! रवि वासरीय सप्तमी का विधि पूर्वक पत्नी सहित नियमित व्रत करे । सात वर्ष तक इस व्रत को करे, फिर यथाशक्ति इसका उद्यापन करे ॥२५-२६॥

दद्याद्विप्राय विदुषे श्रोत्रियाय तपस्विने ।
कूष्माण्डं नारिकेलं च पंचरत्नसमन्वितम् ॥२७

गङ्गामध्ये प्रदातव्यं पूर्वं पापविशुद्धये ।
एवंकृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ।।२८
सर्वे रोगः क्षयं यान्ति नीहारा भास्कराद्यथा ।।२९

पेठा, नारियल, पंचरत्नों से युक्त, गंगा के मध्य, पाप की शुद्धि के हेतु वेदज्ञ, विद्वान, तपस्वी ब्राह्मण को दान में दे । ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है । तथा जैसे सूर्य से कुहरा शीघ्र नष्ट हो जाता है उसी प्रकार उपर्युक्त कार्य करने से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं ।।२७—२९।।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में उत्तराषाढ़ नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक पिच्यासीवां अध्याय संपूर्ण ।।



षडशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

मध्यदेशे महादेवि ! ब्राह्मणो वेदपारगः ।
जयदेवाभिधो विप्रो विख्यातश्चातिशीलवान् ।।१

शिवजी बोले – हे पार्वती ! मध्य देश में एक वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण रहता था । उसका नाम जयदेव था । वह बड़ा ही प्रसिद्ध एवं चरित्रवान था ।।१।।

तस्य भार्याशीलवती सुशीला शीलरूपिणी ।
तस्याः पुत्रत्रयं जातं गुणज्ञं वेदपारगम् ।।२

उसकी पत्नी शीलवती, शील रूप सुशीला थी । उसके तीन पुत्र हुए । तीनों ही गुणज्ञ एवं वेदों के ज्ञाता थे ।।२।।

पुत्राः सर्वे गुणज्ञाश्च वेदवेदाङ्गपारगाः ।
ज्येष्ठपुत्रस्य चोद्वाहे स्वसा तस्य समागताः ।।३

सभी पुत्र गुणवान थे, वेद वेदांग के पंडित थे । उसके बड़े लड़के का विवाह हुआ तो ब्राह्मण की बहिन उसमें आई ।।३।।

भगिन्याश्चादरं कृत्वा बहुमानेन पार्वति ।
विवाहे च समाप्तो तु ज्ञातयः स्वेषु वेश्मसु ।।४

हे पार्वती ! ब्राह्मण ने उसका बहुत आदर किया । विवाह की समाप्ति पर सभी बन्धु बांधन अपने अपने घर गये ।४।

गताः सर्वे विशालाक्षय्याचयद्भगिनी च सा ।
ताटङ्कं स्वर्णरत्नाढ्यं भ्रातृपत्नी प्रकोपिता ।।५
श्रुत्वेर्ष्यया सवत्सा तु तदाऽऽययाया स्वश्वेमनि ।
स्त्रीस्वभावाच्च देवेशि ! मृता सा भगिनी गृहे ।।६

जब सभी चले गये तो बहिन ने अपना रत्न जटित ताटङ्क (कर्णा-भूषण) मांगा । इस पर भावी नाराज हो उठी । उसके इस व्यापार को देख, अपने पुत्र सहित वह बहिन अपने घर आ गई । वह बहिन स्त्री स्वभाव के कारण मर गई ।५-६।

तदुद्देशेन देवेशि ! शरीरं निशि साऽत्यजत् ।
ततो बहुदिने याते तस्य मृत्युर भूत्तदा ।।७

उसी ताटङ्क के वियोग दुःख से पीड़ित हो उसने रात्रि को अपना शरीर छोड़ दिया । । बहुत दिन के बाद उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई ।७।

पत्नी तस्य सती जाता सत्यलोकभूत्तदा ।
वर्षकोटित्रयं देवि ! सत्यलोकेऽवसत्पुनः ।।८

उस ब्राह्मण की पत्नी सती हो गई । वे सत्य लोक गये । तीन करोड़ वर्ष तक सत्य लोक सुख का उन्होंने भोग किया ।८।

मर्त्यलोके मनुष्यत्वं लब्धं पुण्यक्षये सति ।
धन-धान्यसमायुक्तो विद्यावाञ्छास्त्रपारगः ।।९

पुण्यों के क्षय होने पर मृत्युलोक में मनुष्य का जन्म मिला । वह धन धान्य से सम्पन्न, विद्यवान एवं शास्त्रों में पारंगत हुआ ।९।

कृतं तेन पुन पापं भगिन्या दाराकारणात् ।
पुत्रो न जायते देवि ! कन्योत्पन्ना विनश्यति ।।१०

उसने अपनी पत्नी के कारण बहिन का पाप किया था । इस कारण उसके पुत्र नहीं होता था । कन्या पैदा होती थीं और मर जातीं थीं ।१०।

शरीरे सततं दुःखं मध्ये तस्य प्रजायते ।
काकवन्ध्या भवेद्भार्या मृतवत्सा सुदुःखिता ॥११

उसके शरीर में सदा पीड़ा रहती थी । पत्नी काक वन्ध्या एवं मृतवासा अत्यन्त दुःखी हुई ।११।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि तत्सर्वं शृणु पार्वति ।
गृहवित्तडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥१२

हे पार्वती जी ! अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो गृह स्थित धन के षडांश से पुण्य कार्य करे ।१२।

वापी-कूप-तडागानां जीर्णोद्धारं प्रयत्नतः ।
वाटिकां मार्गमध्ये तु सहितां शीतवारिणाः ॥१३
गायत्री-जातवेदाभ्यां जपं वै कारयेत्ततः ।
लक्षद्वयं विशालाक्षि हवनं तद्दशांशतः ॥१४
तर्पणं मार्जनं तद्वद्गोदानं विधिवत्ततः ।
एवं कृते वरारोहे तस्य पुत्रः प्रजायते ॥१५

बावड़ी, कूए एवं तालाबों का प्रयत्न पूर्वक जीर्णोद्धार कराये । ठण्डे जल वाली, वाटिका मार्ग के मध्य में निर्माण कराये । गायत्री एवं 'जातवेद' से' इस मन्त्र के दो लाख जप कराये । दशांश का हवन कराये । तर्पण एवं मार्जन कराये । विधिवत गोदान करे । ऐसा करने से हे पार्वती जी, अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है ।१३-१५।

गुणज्ञः सर्ववस्तूनां साधूनां सम्मतस्तथा ।
स्वर्णदानं विशालाक्षि पलपञ्चमितं तथा ॥१६
ब्राह्मणाय ततो दद्यात् पूजयेद्युवतिं ततः ।
वस्त्राऽलङ्कारसिन्दूरैर्गन्धवाद्यैः सुमनोहरैः ॥१७

गुणवान, साधू, सबके द्वारा पूजित ब्राह्मण को पांच पल स्वर्ण का दान करे, वस्त्र अलंकार, सिन्दूर गंध आदि मनोहर पदार्थों से युवती स्त्री का पूजन करे ।१६-१७।

ताटङ्कैर्मुद्रिकाभिश्च गन्ध-माल्यैस्तथैव च ।
सर्वपापं क्षयं याति व्याधिनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥१८

ताटङ्क (कर्णाभूषण) अंगूठी गंध, माला उस युवती को प्रदान करे, ऐसा करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। समस्त व्याधियां नष्ट हो जाती हैं, इसमें संशय नहीं हैं ॥१८॥

ब्राह्मणीं पार्वतीरूपां ब्राह्मणं शिवरूपिणम् ।
भोजयेद्विविधैश्चान्नैर्मोदकैः शतसंख्यकैः ॥१९

पार्वती रूप ब्राह्मण को, शिव रूप ब्राह्मणी को, विविध पक्वान एवं लड्डुओं का भोजन कराये ॥१९॥

काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा च पुत्रिणी ।
कन्यकाजननी या तु पुत्रवत्यापि जायते ॥२०
एवं न जायते चेत्तु सप्तजन्मस्वपुत्रकः ॥२१

ऐसा करने से काक बन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है, मृतवत्सा भी पुत्रवती होती है। कन्याओं की मां को भी पुत्र प्राप्त हो जाता हे, यदि ऐसा नहीं करे तो सात जन्म तक पुत्र प्रात नहीं होता ॥२०-२१॥

इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में
उत्ताराषाढ़ नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन
नामक छियासीवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

सप्तशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

गुर्जरे नगरे देवि ! वसते ज्ञानवान् द्विजः ।
बलभद्रः समाख्यातो वेदानां पाठकः सुधीः ॥१

शिवजी बोले—हे देवि पार्वती ! गुर्जर नगर में एक ज्ञानवान ब्राह्मण रहता था। उसका नाम बलभद्र था। वेदों का पढ़ने वाला एवं विद्वान था। ॥१॥

ऋग्वेदं च यजुर्वेदं सामवेदमथर्वणम् ।
पठनं चैव कुरुते चतुर्वेदी द्विजोत्तमः ॥२

वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का पठन करता था। वह द्विज श्रेष्ठ चतुर्वेदी था ॥२॥

एकस्मिन् दिवसे देवि ! देशे कश्चिन्मृतः खलु ।
भोजनं तेन संस्कारं बिना तत्र कृतं प्रिये ।।३

एक दिन उस देश में कोई व्यक्ति मर गया था । उस ब्राह्मण ने, उस व्यक्ति के संस्कार हुए बिना ही, उसके यहां भोजन कर लिया ।।३।।

म्लेच्छद्रव्यं गृहीतं च भुक्तं पुत्रयुतेन च ।
पत्न्या सह वरारोहे ! ततो वृद्धावयो गतः ।।४

उसने म्लेच्छ द्रव्य को ग्रहण किया, उसका पुत्र सहित उपभोग किया । पत्नी के साथ साथ वह वृद्धत्व को प्राप्त हुआ ।।४।।

मरणं तस्य वै जातं शङ्केश्वरपुरे यदा ।
यमाज्ञया तदा देवि ! यमदूतैरितस्ततः ।।५
नरके पातितं पश्चान्मर्त्यलोके ततोऽगमत् ।
कुक्कुटत्वं विशालाक्षि ! काकं पारावतं ततः ।।६

उसकी मृत्यु शंकेश्वर पुर में हुई । यमदूतों ने यम की आज्ञा से उन्हें नरक में डाल दिया । इसके उपरान्त मृत्यु लोक में मुर्गा की योनि फिर कौआ की योनि, फिर कबूतर की योनि मिली ।५-६।

मानुषत्वं पुनर्लेभे शुभे देवि ! कुले महत् ।
स पण्डितो महाविद्वान् जातिधर्मविचक्षण ।।७

हे देवि ! इसके उपरान्त महान कुल में मनुष्य योनि मिली । वह पण्डित, महान विद्वान एवं जाति धर्म में बड़ा निपुण हुआ ।७।

पूर्वजन्मनि देवेशि ! म्लेच्छान्नं भोजनं कृतम् ।
तेन पापेन भो देवि पुत्रः कन्या न जायते ।।८

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने म्लेच्छ के अन्न का भोजन किया । उसी पाप के परिणाम स्वरूप उसके पुत्र न कन्या हुई ।८।

प्रेतान्नं भोजनं कृत्वा संस्कारो न कृतः पुरा ।
तेन पापेन भो देवि ! शरीरे रोगसम्भवः ।।९

बिना संस्कार हुए उसने प्रेतान्न का भोजन किया था, उसी पाप के फल स्वरूप उसके शरीर में रोग हुए ।९।

अस्य शान्तिं शृणुष्वादौ पूर्वपापप्रणाशिनीम् ।
गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय प्रकल्पयेत् ॥१०
गायत्रीमूलमन्त्रेण दशायुतजपं ततः ।
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ॥११

इसकी शान्ति कहता हूँ। घर के अष्टमांश धन को ब्राह्मण को दें। गायत्री मन्त्र का एक लाख जप करायें। दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण करायें।१०-११।

दशवर्णां ततो दद्याद्द्छायादानं विशेषतः ।
कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ॥१२
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं पूर्वपापप्रणाशनम् ।
एवं कृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ॥१३
व्याधयः संक्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥१४

दशवर्णी गाय दें, छाया दान करें। पेठा, नारियल पन्च रत्नों सहित गंगा के बीच पूर्व पाप विनाश हेतु दान में दें। इससे पुत्र उत्पन्न होता है, व्याधियाँ नष्ट होती हैं, काक बन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त होता है।१२-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'उत्तराषाढ़ नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सत्तासीयवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—•—

अष्टाशीतितमः अध्याय

शिव उवाच

यवनस्य महादेशे मारुते नगरे शुभे ।
गौतमो नाम विख्यातो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! यवनों के देश में, मारुति नामक नगर में एक गौतम नामक, वेदों का ज्ञाता, ब्राह्मण रहा करता था।१।

तस्य भार्या विशालाक्षि मालिनी मातृपालिनी ।
धनञ्च बहु संगृह्य म्लेच्छसेवारतो हि सः ॥२

उसकी पत्नी बड़े नेत्रों वाली, माता का पालन करने वाली थी । उसका नाम मालिनी था । वह गौतम बहुत से संग्रहीत धन से म्लेच्छों की सेवा करता था ।२।

तस्य मित्रो द्विजः कश्चित् तपस्वी सत्यवाक्शुचिः ।
आगतस्तस्य निकटे प्रेम्णा तत्र तपोऽकरोत् ॥३

उसका एक मित्र था, वह वह तपस्वी एवं सत्यवादी था । वह प्रेम से उस गौतम के पास आया । वहाँ तप करने लगा ।३।

अब्दे चैके ततो जाते पुनः काश्यांगतोऽपि सः ।
स्वर्णरत्नं महादेवि गौतमाय समर्पितम् ॥४

वह एक वर्ष वहाँ रहा । फिर वह काशी चला गया । उसने अपना स्वर्ण, रत्न गौतम के लिए दे दिया ।४।

रक्षार्थं तेन द्रव्यं च गृहीतं गौतमेन च ।
वाराणस्यां ततो गत्वा तपस्वी प्राणमत्यजत् ॥५

गौतम ने उस धन को रक्षा करने के लिए रखा था । बनारस जाकर तपस्वी की मृत्यु हो गई ।५।

गौतमेन तु स्वद्रव्यं स्थापितं भूमिमध्यके ।
तद्द्रव्यं ब्राह्मणस्यैव पुत्रदारयुतेन च ॥६
भक्षितं तेन विक्रीय बहुवर्षे गते शिवे ।
गौतमस्य ततो मृत्युर्बृद्धे जाते वरानने ॥७

गौतम ने उस धन को पृथ्वी में गाढ़ दिया था । उस धन को ब्राह्मण ने पुत्र एवं स्त्री के साथ खाया । बहुत वर्ष बीत जाने के बाद, बुढ़ापा आने पर गौतम की मृत्यु हो गई ।६-७।

गन्धर्वस्य ततो लोकं विंशतिर्वै सहस्रकम् ।
तेन भुक्तं विशालाक्षि गन्धर्वैः सह किन्नरैः ॥८

बीस वर्ष तक गंधर्व लोक में, गंधर्व एवं किन्नरों के साथ उसने सुख भोग किया ।८।

ततः पुण्यक्षये जाते हंसयोनिं ततोऽमथत् ।
मृगयोनिं ततो भुक्त्वा मानुषत्वं ततोऽलभेत् ।।९
स भाग्यवान् महाधीरः पुण्याचारे सदा मतिः ।
पूर्वंजन्मनि देवेशि ! मित्रद्रव्यं विनाशितम् ।।१०

पुण्यों के नष्ट हो जाने पर वह हंस की योनि में उत्पन्न हुआ। फिर मृग योनि को भोग, मनुष्य योनि को उसने प्राप्त किया। वह भाग्यवान, धैर्यवान, पुण्यवान था। उसने पूर्व जन्म में अपने मित्र के धन का उपभोग किया था।९-१०।

अदत्तं यद्विशालाक्षि तेन पापेन तत्प्रिया ।
वन्ध्या भवति वै नारी काकवन्ध्या च चायते ।।११

क्योंकि उसने वह धन दिया नहीं था, इसी पाप के कारण उसकी पत्नी बांझ एवं काक बन्ध्या हो गई।११।

रोगयुक्तोऽभवेद्देहो ज्वराश्च विविधास्तथा ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु देविसुशोभने ।।१२

हे देवि ! वह रोगों से पीड़ित एवं अनेक प्रकार के ज्वरों से पीड़ित हुआ। अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ। हे देवि तुम सुनो।१२।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
वापी-कूप-तडागानि जीर्णोद्धारं च कारयेत् ।।१३
गायत्रीमूलमन्त्रेण दशायुतजपं शिवे ! ।
हवनं तद्दशांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।।१४

घर के षडांश धन से पुण्य कार्य करे। बावड़ी, कूआ तालाब का जीर्णोद्धार कराये। गायत्री मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये। दशांश का हवन कराये तथा पुण्य कार्य कराने चाहिये।१३-१४।

गामेकां तरुणीं शुभ्रां कांस्यदोहां सवत्सकाम् ।
सतीं स-वस्त्रां विप्राय दद्याद्वेदविदे ततः ।।१५
ब्राह्मणान्भोजयेद्दत्वा यथाशक्त्या तु दक्षिणाम् ।
ज्ञातिभिः सह भुञ्जीत ततो नृत्यं तु कारयेत् ।।१६

एक सुन्दर जवान गाय, बछड़े सहित, कांसे की दोहनी के साथ, वस्त्रों से युक्त किसी वेदज्ञ ब्राह्मण को दान में दें। ब्राह्मण भोजन कराये, यथा शक्ति दक्षिणा दे, जाति के लोगों को भी भोजन कराये, फिर नृत्य गीत (कीर्तन) कराये।१५-१६।

पुराणश्रवणं देवि ! चण्डिकाचरणार्चनम् ।
अन्नदानं च भो देवि ! घृतदानं विशेषतः ।।१७
एवंकृते न सन्देहो वंशवृद्धिर्भविष्यति ।
रोगाः सर्वे क्षयं यान्ति सुखानि विविधानि च ।।१८

पुराणों का श्रवण करे, चण्डिका की अर्चना करे, अन्न दान एवं घृत दान करे। ऐसा करने से वंश वृद्धि होगी, सभी रोग नष्ट होंगे, अनेक सुख होंगे।१७-१८।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्बाद में
श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित
कथन नामक अट्ठासीवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।

--:०:--

एकोन नवतितमो अध्याय

शिव उवाच

गान्धारदेशे वै शुभ्रे गान्धारस्य पुरे शुभे ।
बसन्ति तत्र बहवो जनाः पुण्योपजीविनः ।।१
तन्मध्ये ब्राह्मणोऽप्येको लक्ष्मीवान् गुणवर्जित ।
यवनानां महन्मित्रं सार्द्धं म्लेच्छेन तिष्ठति ।।२

शंकर जी बोले—हे पार्वती ! गांधार देश में, गांधार नामक पुर में, पुण्यवान अनेक मनुष्य रहते थे। उनमें एक ब्राह्मण भी था। वह लक्ष्मीवान एवं गुणों से रहित था। वह यवनों का मित्र था, म्लेच्छों के साथ रहता था।१-२।

ऊर्णादिकं वरारोहे विक्रयं कुरुते सदा ।
म्लेच्छान्नं भुज्यते नित्यं म्लेच्छभार्याविहारकृत् ।।३

वह सदैव ऊन बेचा करता था। म्लेच्छों का अन्न खाता था, म्लेच्छों की पत्नी के साथ विहार करता था ।३।

एवं बहु वयो जातं ततो वै मरणं खलु।
यमदूतैर्महाघोरे नरकेऽत्यन्तदारुणे ॥४
निक्षिप्तं तेन वै देवि षष्टिवर्षसहस्रकम्।
भुक्तं सुदुःसहं कर्म विविधं ररकं फलम् ॥५

इस प्रकार रहते बहुत समय बीत गया। उसकी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने उसे अत्यन्त दारुण नरक में डाल दिया। साठ हजार वर्ष तक उसने नरक के भयंकर दुःखों को भोगा ।४-५।

नरकान्निःसृतो देवि ! वृकयोनिरभूत्पुरा।
रासभस्य ततो योनिऋक्षत्वेऽभूत्पुनः प्रिये ॥६

हे देवि ! नरक से निकल कर उसे भेड़िया की योनि मिली फिर गदहे की इसके बाद उसे रीछ की योनि मिली ।६।

मानुषत्वं पुनर्लेभे मध्यदेशे सुरेश्वरि।
पूर्वजन्मनि म्लेचछान्नं भुक्तं पुत्रेण वै शिवे ! ॥७

हे सुरेश्वरि ! फिर उसे मध्य देश में मनुष्य की योनि मिली। उसने पूर्व जन्म में पुत्र सहित म्लेच्छों का अन्न खाया था ।७।

अतो वंशस्य विच्छेदो व्याधिनां चोद्भवेस्तथा।
अस्य दोषस्य वै शान्ति शृणु मे परमेश्वरि ॥८

इसीकारण उसका वंश छेद हुआ। व्याधियों का प्रारम्भ हुआ। हे परमेश्वरि इस दोष की शान्ति सुनो ।८।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने !।
हवनं तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं तथा ॥९
सवृषं पञ्च गोदानं वस्त्रदानं विशेषतः।
सहस्रघटदानं च गोदानं च सुरेश्वरि ॥१०
एवं कृते न सन्देहो वंशवृद्धिर्भविष्यति।
रोगा विनाशमायान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥११

गायत्री मूल मन्त्र का एक लाख जप करायें। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें। बैल का दान करें, वस्त्र दान करें, हजारों घर दान करें, कपिला गो दान करें। ऐसा करने से हे देवि ! वंश वृद्धि निश्चित होगी। रोगों का विनाश होगा, इसमें सन्देह नहीं है।९-१०।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक नवासीयवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

नवतितमः अध्याय

शिव उवाच

काश्मीरेनगरे देवि ! ब्राह्मणोऽध्यवसत्पुरा।
खण्डशर्मेति विख्यातो गङ्गाख्या स्त्री तु कर्कशा ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! काश्मीर नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम खंड शर्मा था। उनकी पत्नी का नाम गंगा था। वह बड़ी कर्कशा थी।१।

पतिवाक्यं न साऽकार्षीद्विक्रयं कुरुते सदा।
घृतं तैलं च देवेशि ! दधि तक्रं पुनर्गुडम् ॥२
अश्वं च वृषभं चैव चामरं धातुवस्तु च।
प्रत्यहं विक्रयं कर्त्री व्ययकर्त्री दिने दिने ॥३

वह पति की बात नहीं सुनती थी। स्वयं बेचने का कार्य करती थी। घी, तेल, दही, मठा, गुड़, घोड़ा, बैल, चामर एवं धातुओं की वस्तुओं को प्रति दिन बेचा करती थी।२-३।

एवं सर्वं वयो जातं वृद्धे सति वरानने !।
मरणं तस्य वै जातं ब्राह्मणस्य सदा शिवे ॥४

इस प्रकार सारी उम्र बीत गयी। बुढ़ापा आ गया। उस ब्राह्मण की तब मृत्यु हो गई।४।

यमराजाज्ञया दूतैर्नरके कर्दमे तथा।
निक्षिप्तः षष्टिसहस्रं भुक्त्वा वै यातनां तथा ॥५

यम की आज्ञा से दूतों ने उसे कर्दम नामक घोर नरक में डाल दिया उसने साठ हजार वर्ष तक नरक यातना को भोगा ।५।

नरकान्निःसृतो देवि ! वृकयोनिस्ततोऽभवेत् ।
रासभस्य पुनर्योनिर्मेषयोनिस्ततोऽभवेत् ॥६

नरक से निकलने के बाद उसे भेड़िया की योनि मिली फिर गदेह की योनि मिली, फिर उसे मेंढ़े की योनि मिली ।६।

मानुषत्वं पुनर्लेभे मध्यदेशे वरानने ! ।
धन-धान्यसमायुक्तः पुत्रकन्याविवर्जितः ॥७

फिर मध्य देश में मनुष्य की योनि उसे मिली । वह धन धान्य से युक्त हुआ परन्तु पुत्र-कन्याओं से रहित हुआ ।७।

पर्नाविवाहिता सा तु पूर्वजन्मफलादशुभे ।
शरीरे सततं रोगो वायोः सञ्जायते शिवे ! ॥८

हे पार्वती ! पूर्व जन्म के फल के कारण उसे वह पत्नी प्राप्त हुई । उसके शरीर में सदैव रोग, वायु-विकार रहते ।८।

ब्राह्मणस्य स्वयं धर्मं यतस्त्यक्तं पुरा शुभे ।
अतः पुत्रविहीनेयं मृतवत्सात्वमाप्नुयात् ॥९

पूर्व ब्राह्मण ने जो धर्म का परित्याग किया था इस कारण पुत्र हीन एवं मृतवत्सा हुई ।९।

अस्य शान्तिमहं वक्ष्ये शृणु देवि ! सुशोभने ।
गृहवित्तषडांशं च ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥१०
गायत्री चायुतं जप्त्वा मूलमन्त्रं शिवस्य तु ।
षडाक्षरं सप्रणवं लक्षमेकं वरानने ! ॥११

अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ, हे देवि सुनो । घर को ब्राह्मण को समर्पित करदे । दश हजार गायत्री मूल मन्त्र, तथा शिवजी के षडाक्षरी मूल मन्त्र का एक लाख जप कराये ।१०।

हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ।
ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या हविषा पायसेन च ॥१२

पञ्चशतसंख्यया देवि ! यथाशक्त्या तु दक्षिणाम् ।
प्रयागे माघमासे तु स्नानं भार्यासमन्वितः ।।१३

दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन कराये । भक्ति पूर्वक पचास ब्राह्मणों को खीर एवं घी का भोजन कराये, यथा शक्ति उन्हें दक्षिणा दे । पत्नी सहित प्रयाग में, माघ मास में स्नान करे ।१२-१३।

कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ।
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं विधिपूर्वं वरानने ! ।।१४
एवं कृते न सन्देहो वंशवृद्धिर्भवेदनु ।
रोगा सर्वे क्षयं यान्ति बन्ध्या भवति पुत्रिणी ।।१५

पेठा, नारियल, पंच रत्नों से पूरित कर गंगा के बीच विधि पूर्वक ब्राह्मण को दान में दे । ऐसा करने से वंश वृद्धि होगी, रोग नष्ट होंगे, बांझ को भी पुत्र प्राप्त होगा ।१४-१५।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद
में श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित
कथन नामक नब्बवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

एकनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

अटकस्य प्रतीच्यां तु यादवं नाम वै पुरम् ।
वसन्ति बहवो देवि ! जनाः कर्मविचक्षणाः ।।१

शिवजी बोले— हे पार्वती जी ! अटक के पश्चिम में यादव नामक एक नगर था । वहाँ कर्मों में चतुर अनेक लोग रहा करते थे ।१।

तन्मध्ये ब्राह्मोऽप्येकः सिद्धलाल इति श्रुतः ।
तस्य भार्या विशालाक्षि देवीनाम्नी सदा शिवे ।।२

उनमें एक सिद्ध लाल नामक ब्राह्मण भी रहता था । उसकी पत्नी सुन्दर थी उसका नाम देवी था ।२।

पतिव्रता गुणोपेता मिष्टवाक्यप्रवादिनी ।
सिद्धलालो महाचौरश्चौर्यवृत्तिरतः सदा ।।३

वह देबी पतिव्रता, गुणों से युक्त, मीठा बोलने बाली थी। सिद्धिलाल महान चोर वृत्ति में लीन था।३।

दारपुत्रादिभृत्यानां चौर्येण पोषणं कृतम् ।
एवं सर्वं वयो जातं ततौ मृत्युमुपागतम् ।।४

वह अपने स्त्री, पुत्र, नौकरों का पालन चोरी से किया करता था। इसी प्रकार सारी उम्र बीत गई और मृत्यु भी आ गई।४।

तस्य भार्या सती जाता तत्प्रभावाद्गतो द्विजः ।
सत्यलोके वरारोहे सततं विविधं सुखम् ।।५

उसकी पत्नी उसके साथ सती हो गई। इसके प्रभाव से ब्राह्मण सत्य लोक चला गया। वह निरन्तर अनेक सुखों का उपभोग किया करता।५।

भुक्तं पूर्वकृतात्पुण्यात्ततः पुण्यक्षये सति ।
मानुषत्वे पुनर्जन्म दुर्लभं सर्वदेहिनाम् ।।६

पूर्व पुण्यों के फल को भोग, पुण्य के नष्ट होने पर, दुर्लभ मानव शरीर को प्राप्त किया।६।

धनधान्येन संयुक्तः कन्यापुत्रविवर्जितः ।
ब्राह्मण्यं च यतस्त्यक्त्वा शूद्रकर्म समाचरेत् ।।७
परद्रव्यं हृतं देवि ! तस्माद् व्याधिरजायते ।
तस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि यत्कृतं पूर्वजन्मनि ।।८

वह धन-धान्य से युक्त एवं कन्या-पुत्रों से रहित हुआ। क्योंकि उसने ब्राह्मण कर्म का परित्याग उर शूद्र कर्म किया था। उसने दूसरों के धन का अपहरण किया था इस कारण उसके व्याधियां हुई। पूर्व पापों की शुद्धि हेतु अब मैं उसकी शान्ति बतलाता हूँ।७-८।

गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
दशवर्णप्रदानं च पूर्वपापविशुद्धये ।।९
शय्यादानं ततः कुर्यादएकादश्यां व्रतं शुभम् ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण विष्णुमन्त्रेण सुन्दरि ।।१०

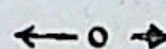
लक्षजाप्यं प्रयत्नेनाऽश्वत्थबिल्वतलेऽबले ।
दशांशं हवनं कुर्याद्तर्पणं मार्जनं तथा ।।११

घर के अष्टमांश धन को पुण्य कार्यों में लगायें । दशवर्णी गाय पाप शोधनार्थं दें । शय्या दान करें, एकादशी का व्रत करें गायत्री के मूल मन्त्र एवं विष्णु मन्त्र का एक लाख जप करायें । ये जप पीपल या बेल के वृक्ष के नीचे करायें । दशांश क्रम से हवन करायें, तथा मार्जन भी करायें ।९-११।

विप्राणां भोजनं देवि ! घटदानं विशेषतः ।
एवंकृते न सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ।।१२
व्याधयः संक्षयं यान्ति मम वाक्यं न चान्यथा ।।१३

हे देवि पार्वती ! ब्राह्मणों को भोजन करायें तथा विशेष रूप से घट दान करें । इस प्रकार उपर्युक्त विधि से कार्य करने से वंश वृद्धि होती है, इसमें सन्देह नहीं है । सभी व्याधियां नष्ट हो जाती हैं । मेरे वाक्य हे पार्वती जी कभी अन्यथा अर्थात् झूंठे नहीं होते ।१२-१३।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में प्रायश्चित कथन'
नामक इक्यानवेवां अध्याय सम्पूर्ण ।।



द्विनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

देशे पञ्चनदे देवि गङ्गानाम्नी पुरी शुभा ।
वसन्ति सर्वे वर्णा ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! पंजाब-में एक गंगा नामक पुरी थी । वहां सभी वर्ण ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदि रहा करते थे ।१।

स्वकर्मनिरताः सर्वे वर्णाचारसमाश्रिताः ।
तन्मध्ये ब्राह्मणोऽप्येकः कृषिकर्मरतः सदा ।।२

सभी लोग अपने कर्मों में रत, वर्णाश्रम धर्म में रत थे । उनमें एक ब्राह्मण था जो खेती करता था ।२।

एकस्मिन् समये तदीयभगिनीपुत्रो गृहे भिक्षुकः ।
प्राप्तस्तस्य बुभुक्षितो निशि तदा यष्टयाऽहनत्तं खलुः
प्राप्तःकालकरालदन्तदलनं पुत्रः स्वसुस्तस्य तत्--
पापात् सत्वरमाजगाम मरणं दुष्टः स्वयं चान्धधीः ॥३

एक बार उसका भानजा घर पर भिक्षा के हेतु आया। वह बहुत भूखा था। इस कृषक ब्राह्मण ने उस भानजे का ऐसा लाठियों से मारा कि वह मर गया। इस कारण पाप के कारण वह अन्ध बुद्धि स्वयं भी काल कवलित हो गया।३।

यमदूतंर्महादेवि निक्षिप्ता नरकार्णवे ।
अष्टाशीतिसहस्राणि वर्षाणि च तदा शिवे ॥४
भुज्यते विविधं कष्टं नरकं चैव दारुणम् ।
नरकान्निःसृतो देवि मार्जरत्वे भवेत्किल ॥५

यमदूतों ने उसे नरक समुद्र में डाल दिया । अट्ठासी हजार वर्ष तक यम लोक में अनेक कष्टों को भोगा। नरक से निकल कर उसे बिल्ली की योनि मिली।४-५।

व्याघ्रस्य च पुनर्योनिं कुक्कुटत्वं ततोऽभवेत् ।
पुनर्मानुषयोनिं च धन-धान्यसमन्वितम् ॥६

फिर व्याघ्र की योनि, फिर मुर्गा की योनि मिली। फिर उसे मनुष्य की योंनि मिली। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ।६।

स प्रवीणो महावक्ता कुलाचाररतः सदा ।
पूर्वजन्मनि भो देवि भागिनेयस्य वै वधः ॥७
कृतो वै मन्दमतिना तत्पापेन हि दुःखभुक् ।
पुत्रो न जायते देवि व्याधिश्चैव पुनः पुनः ॥८

वह अत्यन्त प्रवीण, महान वक्ता, कुलाचार रत हुआ। परन्तु पूर्व जन्म में उसने भानजे का जो वध किया था उस पाप के कारण वह दुःखों का भाजन हुआ। पुत्र उसके नहीं हुआ, तथा अनेक व्याधियाँ उसे पीड़ित करती रहीं।७-८।

अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु मत्तो वरानने ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥९

हे वरानने ! अब तुम इसकी शान्ति सुनो । घर के षडांश धन से पुण्य कार्य करे ।९।

गायत्रीत्र्यम्बकाभ्यां च द्यौःशान्ति मनुत्रयम् ।
लक्षत्रयं वरारोह ! जपं वै कारयेत्सुधीः ॥१०
दशांशहवनं देवि ! तर्पणं मार्जनं तथा ।
ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या पञ्चाशत् वरानने ! ॥११
हविषा पायसेनापि खण्डेन मोदकेन वै ।
दशवर्णीं ततो दानं तिलधेनुं प्रदापयेत् ॥१२

गायत्री मन्त्र त्रयम्ब के यजामहे, द्यौः शान्ती इन तीन मन्त्रों के एक-एक लाख जप विद्वान ब्राह्मणों से कराये, दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन, करें । पचास ब्राह्मणों को लड्डू एवं खीर घी से भोजन करायें । दशवर्णी गाय का दान करें तथा तिल, धेनु का भी दान करावें ।१०-१२।

पञ्चपात्रं च संदाय पिण्डदानं च कारयेत् ।
भागिनेयस्य वै मूर्त्तिः सुवर्णरजतान्विता ॥१३
दशपलवर्णेन सवत्सां पीठसंयुताम् ।
पूजयामास विधिवत्मन्त्रेणणानेन वै शिवे ! ॥१४

पञ्च पात्र दें फिर पिंड दान करायें । भानजे की दश पल स्वर्ण की मूर्ति बनवावें, वह बालक सहित हो तथा आसन पर हो । उसकी विविध मन्त्रों से पूजा करें ।१३-१४।

सुराराध्य जगत्स्वामिन् चराचरगुरो हरे ।
मम पूर्वकृतं पापं तत्क्षमस्व दयानिधे ॥१५
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा भागिनेयवधः कृतः ।
तत् क्षमस्व दयापूर्ण त्र्यम्बकं त्रिपुरान्तकं ॥१६

हे देवों द्वारा पूजित जगत के स्वामी, चराचर के गुरु, मेरे पूर्वकृत पापों को क्षमा करो । अज्ञान से या प्रमाद से मैंने जो भानजे का वध किया था, उस सबको हे त्र्यम्बक, त्रिपुरान्तक, हे दया पूरित, क्षमा करो ।१५-१६।

ततो वै पूजयामास लोकपालान् पृथक् पृथक् ।
पश्चान्मांषबलिं दद्यात्प्रतिमां दापयेत्ततः ॥१७

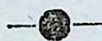
ब्राह्मणाय तदा देवि ! पूर्वपापविशुद्धये ।
एवंकृते वरारोहे ! पुत्रः सञ्जायते खलु ॥१८

फिर लोक पालों की अलग-अलग पूजा करे। फिर मांस (उड़द) बलि दे, फिर पूर्व पापों की शुद्धि हेतु प्रतिमा की ब्राह्मण के लिए दान दे। ऐसा करने से पुत्र की प्राप्ति होती है।१७-१८।

व्याधयःसङ् क्षयं यान्ति न कन्या जायते खलु ।
यदा न क्रियते देवि ! सप्तजन्मस्वपुत्रकः ॥१९

सभी व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं, फिर कन्या उत्पन्न नहीं होती। यदि ये शान्ति न की जाय तो सात जन्म तक पुत्र नहीं होता।१९।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में 'धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन नामक बानवेवां अध्याय संपूर्ण ॥



त्रिनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

पश्चिमायां महादेवि ! यवनस्य पुरं महत् ।
महानन्द इति ख्यातः सर्व देशे सुरेश्वरि ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! पश्चिम में यवनों का एक महान नगर था। वहाँ महानन्द नामक एक व्यक्ति रहता था।१।

वसन्ति बहवो म्लेच्छाः स्वविद्यायां विचक्षणाः ।
ब्राह्मणास्तत्र वै देवि ! विद्यायां निपुणास्तथा ॥२

वहाँ अनेक म्लेच्छ रहते थे, वे सभी समस्त विद्याओं में निपुण थे। वहाँ वह महानन्द ब्राह्मण सारी विद्याओं में निपुण रहा करता था।२।

तिष्ठन्निःशङ्कया नित्यं म्लेच्छान्नं भुज्यते सदा ।
स सन्ध्यारहितो विप्रः पिशुनो दुर्मतिः शठः ॥३

वह ब्राह्मण वहाँ निःशंक होकर रहता था। सदैव म्लेच्छों का अन्न खाता था। वह सन्ध्या वन्दन नहीं करता था, वह चुगलखोर, दुष्ट बुद्धि एवं शठ था।३।

सञ्चितं बहुसहस्रं स्वर्णरत्नगजादिकम् ।
ततो बहुदिने जाते तस्य मृत्युरभूत्पुरा ॥४
सर्पेण दंष्ट्रो देवेशि पञ्चके निर्जलेऽपि वा ।
यमदूतैर्महादेवि ! यमाज्ञां गृह्य वै द्विजम् ॥५
रौरवे क्षिप्तवान्शीघ्रं महाकष्टं प्रभुज्यते ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ॥६

उसने हजारों की सम्पत्ति एकत्र की थी । स्वर्ण, रत्न, गज आदि एकत्र किये । बहुत दिन बाद उसकी मृत्यु सर्प के काटने से, पंचकों में, निर्जन प्रदेश में हो गई । यमदूतों ने यम की आज्ञा से उस ब्राह्मण को शीघ्र रौरव नरक में डाल दिया । उसने वहाँ साठ हजार वर्ष तक अनेक कष्टों को भोगा ।४-६।

नरकान्निःसृतो देवि ! ग्राहयोनिरभूत्पुरा ।
पुनः कच्छपयोनिश्च मानुषत्वं ततोऽभवेत् ॥७

हे देवि ! नरक से निकलने के बाद उसे मगर की योनि मिली । फिर कछुए की योनि मिली । फिर उसे मनुष्य योनि प्राप्त हुई ।७।

पूर्वजन्मनि भो देवि ! ब्राह्मणत्वं यतोऽत्यजेत् ।
अपुत्रत्वं ततो देवि ! कन्यका नैव जायते ॥८

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने ब्राह्मणत्व का त्याग किया था इसी कारण वह पुत्र रहित हुआ, कन्या भी उत्पन्न नहीं हुई ।८।

म्लेच्छान्नं भुज्यते देवि ! संध्यां च तर्पणं विना ।
अतो व्याधियुतो नित्यं न सुखं लभते क्वचित् ॥९

वह ब्राह्मण म्लेच्छों का अन्न खाता था । न संध्या करता था, न तर्पण करता था । इसी कारण वह व्याधियों से पीड़ित रहता था और कभी सुख प्राप्त नहीं किया ।९।

शान्ति शृणु वरारोहे पूर्वपापप्रणाशिनीम् ।
गृहं शुभ्रं वरारोहे धनधान्यसमन्वितम् ॥१०
सञ्चितान्नं वरारोहे ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ॥११

हे देवि ! पूर्व पाप के विनाश करने वाली शान्ति मैं तुमसे कहता हूँ। एक घर, धन धान्य से युक्त ब्राह्मण को दान में दे। गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप करायें।१०-११

हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं तथा ।
त्रैमासिकव्रतं कुर्याद् व्रतं च रविसप्तमी ।।१२

दशांश क्रम से हवन, मार्जन एवं तर्पण करायें। त्रैमासिक व्रत करें, रवि मुक्ता सप्तमी का व्रत करें।१२।

जातवेदेति मन्त्रेण लक्षजाप्यन्तु कारयेत् ।
ततो गां कपिलां देवि स्वर्णवस्त्रविभूषिताम् ।।१३
दद्यात्सवस्त्रां विधिवद्ब्राह्मणाय शिवात्मने ।
अश्वदानं च कर्तव्यं चमरं छत्रमेव च ।।१४

'जातवेद से' इस मन्त्र का एक लाख जप करायें। फिर कपिला गाय को स्वर्ण एवं आभूषणों से भूषित कर, वस्त्रों से सज्जित कर विधिवत ब्राह्मण को दे। फिर अश्व दान एवं चमर-छत्र का भी दान करे।१३-१४।

एवंकृते न सन्देहो व्याधिनाशो भवेद्ध्रुवम् ।
पुत्रोऽपि जायते देवि वन्ध्यात्वं च प्रणश्यति ।।१५

उपर्युक्त उपाय करने से निश्चय ही समस्त व्याधियों का विनाश हो गया। पुत्र की भी प्राप्ति होती है तथा बांझपन भी समाप्त हो जाता है।१५।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में 'धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक तिरानवेवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

चतुर्नवतितमः अध्याय

शिव उवाच

यत्किञ्चित्क्रियते कर्म वैदिकं चापि लौकिकम् ।
तत्कर्मफलं भोग्यइह लोके परत्र च ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! इस संसार में वैदिक अथवा भौतिक जो भी

कर्म किया जाता है, उसका फल इस लोक में तथा परलोक में भोगना ही पड़ता है ।१।

सौराष्ट्रनगरे देवि क्षत्रियो वसति प्रिये ।
क्षत्रधर्मरतो नित्यं मृगपक्षिप्रहारकः ।।२

हे प्रिये ! सौराष्ट्र नगर में एक क्षत्रिय रहा करता था । वह क्षात्र धर्म में रत था तथा नित्य प्रति मृग एवं पक्षियों को मारा करता था ।२।

एकस्मिन् समये काले वनं यातः स दुर्मतिः ।
मृगी सगर्भां हतवान् बालद्वयसंयुताम् ।।३

एक दिन वह दुष्ट बुद्धि जब वन में गया तो उसने एक गर्भिणी हिरनी को जो दो बच्चों सहित थी, मार डाला ।३।

पुत्रेण भार्यया सार्धं भुक्तं तेन दुरात्मना ।
ततो वृद्धे तु सञ्जाते तस्य मृत्युरभूत्किल ।।४

उस दुष्ट ने हिरनी एवं बच्चों को पुत्र एवं पत्नी के साथ खाया । फिर बुढ़ापा आने पर उसकी मृत्यु हो गई ।४।

यमदूतैर्महादेवि ! नरके क्षिप्त एव सः ।
षष्टिवर्षसहस्राणि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।।५
नरकान्निःसृतो देवि ! महिषो जायते खलु ।
वराहत्वं पुनर्जातं मानुषत्वं पुनर्भवेत् ।।६

हे महादेवि ! यमदूतों ने उसे नरक में फेंक दिया । साठ हजार वर्ष तक उसने नरक की यातना भोगी । नरक से निकल कर वह भैंसा बना, फिर सूअर बना फिर इसके बाद उसे मनुष्य योनि प्राप्त हुई ।५-६।

देशे पुण्यतमे देवि ! धनधान्यसमन्वितः ।
विद्यावान् गुणवान् वक्ता राजसेवासु तत्परः ।।७

हे देवि ! तब एक पुण्यदेश में, धन-धान्य से सम्पन्न परिवार में उत्पन्न हुआ । वह विद्वान, गुणवान, वक्ता एवं राज सेवा तत्पर हुआ ।७।

पूर्वजन्मनि देवेशि ! हत्वा मृगगणान्बहून् ।
प्रसवोन्मुखी मृगी हत्वा मृगवृन्दसमन्विताम् ।।८

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने अनेक मृगों का वध किया था प्रसवोन्मुखी मृगी की हत्या की, मृग परिवार को मारा ।८।

तत्पापेन महादेवि ! मृतवत्सत्वमाप्नुयात् ।
शरीरे बहवो रोगा ज्वराश्चातुर्थिकास्तथा ।।९
शान्ति शृणु वरारोहे ! मृतवत्सत्वशान्तये ।
गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ।।१०

हे महादेवि ! उसी पाप के फलस्वरूप उसकी पत्नी मृगवत्सा हुई । शरीर में अनेक रोग हुए । चौथैया बुखार आया । मृतवत्सापन की शान्ति हे प्रिये ! मैं तुमसे कहता हूँ उसे सुनो ! गृह स्थित धन के अष्टम भाग को पुण्य कार्य में लगा देना चाहिये ।९ १०।

गायत्रीमूलमन्त्रेण लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
हवनं तद्दशांशेन मार्जनं तर्पणं ततः ।।११

गायत्री के मूल मन्त्र का एक लाख जप करायें । दशांश विधि से उसका हवन, मार्जन एवं तर्पण करायें ।११।

पलपंचसुवर्णस्य मृगीं वत्ससमन्विताम् ।
कृत्वा समर्पयामास ब्राह्मणाय शिवात्मने ।।१२

पांच पल सोने की बच्चों सहित हिरनी बनवावें । फिर उसे ब्राह्मण को दान में दें ।१२।

दशवर्णां ततो दद्याद्छायादानं विशेषतः ।
वाटिकारोपणं कुर्यात् पथि कूपं तथा शिवे ! ।।१३

दशवर्णी गाय दें, विशेष रूप से छाया दान करें । मार्ग में बगीचा लगवायें, कूआ बनवावें ।१३।

ब्राह्मणान् भोजयामास शतसङ्ख्यान्समोदकैः ।
एवंकृते वरारोहे ! पुत्रः संजायते खलु ।।१४
व्याधयः सङ्क्षयं यान्ति बन्ध्यात्वं च प्रशाम्यति ।
मृतवत्सा तु या नारी सुतं सानुग्रहं लभेत् ।।१५
काकवन्ध्या पुनः पुत्रं लभते नात्र संशयः ।।१६

सौ ब्राह्मणों को लड्डुओं से भोजन कराये। ऐसा करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। समस्त व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं, बांझपन समाप्त हो जाता है। मृतवत्सा नारी को पुत्र की प्राप्ति होती है तथा काक बन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त हो जाता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।१४-१६।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में 'धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक चौरानवेवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



पंचनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

मथुरादक्षिणे भागे योजने व त्रयो यदि।
पुरं सिद्धमिति ख्यातं बसन्ति बहवो जनाः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! मथुरा से दक्षिण की ओर तीन योजन की दूरी पर एक नगर था। उसका नाम सिद्धपुर था। वहाँ बहुत से मनुष्य रहा करते थे।१।

क्षिप्रकारो वसत्येको धनधान्यसमन्वितः।
वलभद्र इति ख्यातो वैष्णवो ज्ञानवल्लभः ॥२

वहाँ एक क्षिप्रकार रहता था जो धन-धान्य से युक्त था। उसका नाम वलभद्र था। वह वैष्णव था तथा ज्ञान सम्पन्न था।२।

तस्य पुत्रत्रयं जातं कनिष्ठस्य आदरः।
नआदरो ज्येष्ठपुत्रस्य मध्यमस्य तथैव च ॥३

उसके तीन पुत्र थे। छोटे पर उसका विशेष प्रेम था। बड़े एवं मध्यम पुत्रों का इतना आदर नहीं था अर्थात् उनसे विशेष प्रेम नहीं था।३।

धनं च संचितं तेन महाशूद्रेण चानघे।
भ्रातृणां विग्रहो जातो विभागार्थं धनस्य तु ॥४

हे देवि ! उस शूद्र ने काफी धन का संग्रह किया था। उस धन के विभाजन हेतु भाइयों में झगड़ा हो गया।४।

ब्राह्मणस्तस्य वै मित्रं विग्रहस्तेन वै श्रुतः ।
आगतस्तस्य निकटे क्षिप्रकारस्य वै शिवे ।।५
ब्राह्मणस्य वधो जातः शूद्राणां विग्रहे सति ।
सर्वद्रव्यं कनिष्ठाय क्षिप्रकारो ददौ स्वयम् ।।६

उस क्षिप्रकार का एक ब्राह्मण मित्र था। वह मित्र के यहाँ झगड़ा सुनकर वहाँ आया। उन शूद्रों की लड़ाई में वह ब्राह्मण मारा गया। उस क्षिप्रकार ने अपना सारा धन उस छोटे लड़के को दे दिया।५-६।

एवं बहुगते काले शूद्रस्य मरणं भवेत् ।
रौरवं नरकं यातः क्षिप्रकारोऽपि वै स्वयम् ।।७

बहुत समय बाद उस शूद्र की मृत्यु हो गई। वह क्षिप्रकार रौरव नरक में गया।७।

लक्षवर्षं वरारोहे भुक्त्वा नरकयातनाम् ।
नरकान्निःसृतो देवि व्याघ्रयोनिस्ततोऽभवेत् ।।८

हे पार्वती जी ! एक लाख वर्ष तक रौरव नरक की भयंकर यातनायें भोग नरक से निकाल उसे व्याघ्र योनि प्राप्त हुई।८।

भुक्त्वा व्याघ्रस्य योनिं स काकयोनिस्ततोऽभवेत् ।
मानुषत्वं पुनर्जात मध्यदेशे सुरेश्वरि ।।९

व्याघ्र योनि को भोग, उसने काक योनि भोगी। फिर मध्य देश में उसे मनुष्य योनि मिली।९।

धनधान्यसमायुक्तो रोगवान् पुत्रवर्जितः ।
अस्य शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणु मे परमेश्वरि ।।१०

वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ, रोगी हुआ, पुत्रों से रहित हुआ। हे परमेश्वरि ! इसकी मैं अब शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो।१०।

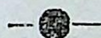
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
पूर्वपापविशुद्ध्यर्थं दशवर्णात् ददेत्ततः ।।११
गायत्रीसूर्यमन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ।
दशांशं हवनं देवि मार्जनं तर्पण तथा ।।१२

घर के धन का छठवाँ भाग पुण्य कार्यों में खर्च करे। पूर्व पापों की शुद्धि हेतु दशवर्णी गाय दान में दे। गायत्री मन्त्र एवं सूर्य मन्त्र का एक लाख जप कराये दशांश विधि से हवन, मार्जन एवं तर्पण कराये।११-१२।

दशांशं भोजयेद्विप्रान् ब्राह्मणान्वेदपारगान् ।
कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ।।१३
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं देवि सत्यव्रताय च ।
एवंकृते वरारोहे सर्वरोगक्षयो भवेत् ।।१४
वंशवृद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ।।१५

उसके दशांश ब्राह्मण वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन कराये। पेठा, नारियल, पंच रत्नों से पूरित कर, गंगा के बीच में सत्य व्रत के लिए प्रदान करे। ऐसा करने से सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है। इससे वंश वृद्धि भी होती है। इस में विचार नहीं करना चाहिए।१३-१५।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक पिच्यानवेंवां अध्याय संपूर्ण ।।



षड् नवतितमः अध्याय

शिव उवाच

मथुरायां विशालाक्षि आभीरस्तत्र तिष्ठति ।
गोपालेति समाख्यातो सदा गोधनजीवितः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! मथुरा में एक अहीर रहता था। उसका नाम गोपाल था। गायों से ही उसकी जीविका चलती थी।१।

तस्य भार्या विशालाक्षी सती नामातिसुन्दरी ।
गोधनं बहुसाहस्रं गोपालस्य सुरेश्वरि ।।२

उसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका नाम सती था। उस ग्वाले के पास हजारों गायें थीं।२।

वत्सानां वृषभानां च पालनं क्रियते सदा ।
शीतकाले महादेवि वृष्टिर्ज्ञाता वरानने ॥३
गौः सवत्सा महादेवि ! पीडिता भोजनं बिना ।
गृहाभावे मृता बाह्ये वत्सनैव च संयुता ॥४

वह बछड़ों एवं बैलों का सदैव पालन करता था । एक बार शीत ऋतु में भयंकर वर्षा हुई । गाय, बछड़े भोजन के बिना अत्यन्त दुःखी हो गये । स्थान के अभाव में, बाहर वर्षा में गाय एवं वछड़े अनेक मर गये ।३-४।

ततो बहुगते काले गोपालस्य मृतिस्तदा ।
यमदूतैर्महाघोरे नरके नामकर्दमे ॥५
क्षिप्तं यमाज्ञया देवि ! षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
नरकान्निःसृतो देवि मेढायोनिस्ततोऽभवेत् ॥६

बहुत समय उपरान्त उस ग्वाले की मृत्यु हो गई । यमदूतों ने यमाज्ञा से उसे भयंकर कर्दम नामक नरक में डाल दिया । साठ हजार वर्ष तक उसने नरक यातना भोगी । नरक से निकलने पर उसे मेढ़े की योनि प्राप्त हुई ।५-६।

सरटस्य ततो देवि मानुषत्वं ततोऽभवेत् ।
धनधान्यसमायुक्तो व्याधिना पीडितः सदा ॥७

इसके उपरान्त उसे गिरकिट की योनि मिली फिर उसे मनुष्य योनि मिली । वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ तथा वह सदैव व्याधियों से पीड़ित रहता था ।७।

अपुत्रत्वं ततो लेभे कन्यका जायते खलु ।
तस्य शान्तिमहं वक्ष्ये श्रृणु देवि सुशोभने ॥८

वह पुत्र रहित हुआ । उसके मात्र कन्यायें ही होती थीं । उसकी मैं शान्ति कहता हूँ, उसे सुनो ।८।

निर्बीजं वृषभं तेन कृतं योगेन वै शिवे ।
तेन पापेन भो देवि गर्भपातः पुनः पुनः ॥९

हे पार्वती जी ! उस ग्वाले ने बैलों को बधिया करवाया था उसी पाप के कारण उसकी पत्नी का गर्भपात होता था ।९।

वसन्ते मासि वै कुर्याद्घटदानं सहस्रशः ।
एकादशीव्रतं नित्यं वेण्याः स्नानं समाचरेत् ।।१०

पापों की शान्ति हेतु उसे हजारों घट दान करने चाहिए। एकादशी व्रत करना चाहिए । त्रिवेणी में स्नान करना चाहिए ।१०।

दशवर्णगवां दानं शय्यादानं तथैव च ।
आकृष्णेति जपं कुर्याद्लक्षसङ्ख्यं वरानने ।।११

दशवर्णी गाय का दान करें। शैय्या दान करें। 'आकृष्णेति' इस मन्त्र का एक लाख जप करायें ।११।

दशांशं हवनं तद्वन्मार्जनं तर्पणं तथा ।
भोजयेद्विविधैश्चान्नैर्ब्राह्मणान्शोत्रियान्शतम् ।।१२
पायसान्नेन खण्डेन घृतेन दधिना तथा ।
एवं कृते न सन्देहो ज्वरमोक्षः प्रजायते ।।१३
वंशवृद्धिर्भवेत्तस्य मृतवत्सा च पुत्रिणी ।
काकवन्ध्या पुनः पुत्रं लभते नात्र संशयः ।।१४

दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें । सौ वेदज्ञ, विद्वान ब्राह्मणों को विविध पक्वान्नों से भोजन करायें । खीर, घी,. खांड एवं दही का भोजन कराये। ऐसा करने से ज्वर से मुक्ति होती है। वंश की वृद्धि इससे होगी, मृत्वत्सा को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। इसमें कोई भी संशय नहीं है ।१२-१४।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में
शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित कथन
नामक छियानवेंवाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।



सप्तनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

मध्यदेशे महेशानि लुब्धको वसति प्रिये ।
मृगारिर्नाम विख्यातो मृगमांसेन जीवति ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! मध्य देश में एक शिकारी रहता था । उसका नाम मृगारि था । वह मृग मांस से ही जीवन व्यतीत करता था ।१।

प्रत्यहं मृगयां याति पक्षिणां मारणे रतः ।
मांसक्रयं च कुरुते कलत्रं पोषयेत्सदा ॥२

वह रोजाना शिकार खेलने जाता था । वह पक्षियों को मारने में रत रहता था । वह मांस बेचा करता और स्त्री आदि का पालन किया करता था ।२।

एवं वयो गतं सर्वं वृद्धे सति वरानने ! ।
मरणं तस्य वै जातं यमदूतैर्यमाज्ञता ॥३
रौरवे नरके क्षिप्तं तत्र कष्टं मुहुर्मुहुः ।
सप्ततिर्वै सहस्राणि नरके परिपच्यते ॥४

इस प्रकार सारी उम्र बीत गई, बुढ़ापा आ गया । उसकी मृत्यु हो गई । यम की आज्ञा से यमदूतों ने रौरव नरक में पटक दिया । वहाँ अनेक कष्ट भोगे । सत्तर हजार वर्ष तक नरक यातना भोगी ।३-४।

नरकान्निःसृतो देवि ! श्येनयोनिं प्रजायते ।
उष्ट्रस्य च पुनर्योनिं शृगालत्वं ततः पुनः ॥५

हे देवि ! वह नरक से निकल कर बाज की योनि उसे मिली । फिर ऊँट की योनि मिली फिर स्यार की ।५।

मानुषत्वं ततो जातो धनधान्येन संयुतः ।
पूर्वजन्मनि देवेशि पक्षिणो बहवो हताः ॥६

फिर उसे मनुष्य योनि मिली । वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ । उसने पूर्व जन्म में बहुत से पक्षी मारे थे ।६।

तेन पापेन भो देवि ! व्याधिना पीडितो हि सः ।
मृगं हत्वा वरारोहे हतं च मृगशावकम् ॥७

एतद्दोषेण भो देवि ! पुत्राणां मरणं खलु ।
काकवन्ध्या भवेन्नारी कन्यका जायते सदा ॥८

हे देवि ! उसी पाप के कारण वह रोगों से पीड़ित हुआ । उसने हिरन मारे, हिरन के बच्चे मारे। इसी पाप के कारण पुत्रों का मरण हुआ । उसकी नारी काक वन्ध्या हुई । कन्यायें ही सदा उत्पन्न होतीं ।७-८।

वन्ध्या भवित वै नारी शांति श्रृणु वरानने ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥९

उसकी नारी बांझ हो गई । हे देवि ! अब तुम उसकी शान्ति सुनो। घर के षडांश भाग से पुण्य कार्य करने चाहिये ।९।

गायत्रीजालवेदाभ्यां लक्षजाप्यं वरानने ।
दशांशं हवनं तद्वैत्तर्पणं मार्जनं तथा ॥१०
दशधेनूस्ततो दद्यात्स्वर्णदानं विशेषतः ।
हरिवंशश्रुति देवि ! व्रतं च हरिवासरम् ॥११

गायत्री मन्त्र एवं 'जातवेद से' इस मन्त्र के एक-एक लाख जप करायें । दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें । दश गायें दान में दें । स्वर्ण दान विशेष रूप से करें । हरिवंश पुराण का श्रवण करें, एकादशी का व्रत करें ।१०-११।

ब्राह्मणान् भोजयामास यथाशक्तिस्तु दक्षिणा ।
एवंकृते वरारोहे वंशस्तस्य भविष्यति ॥१२
वन्ध्यात्वं प्रशमं याति काकवन्ध्या पुनः सुतम् ।
मृतवत्सा सुतं लेभे चिरञ्जीविनमुत्तमम् ॥१३
व्याधयः संक्षयं यान्ति ज्ञानं च लभते क्वचित् ॥१४

ब्राह्मणों को भोजन करायें, यथाशक्ति दक्षिणा दें । ऐसा करने से वंश की वृद्धि होती है । बांझपन समाप्त हो जाता है । काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है । मृतवत्सा को भी चिरञ्जीव पुत्र की प्राप्ति होती है । सभी व्याधियां नष्ट हो जाती हैं तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है ।१२-१४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन' नामक सत्तानवेंवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—●—

अष्टनवतितमः अध्याय

शिव उवाच

गोमतीनिकटे देवि ! पुरमस्ति धुरंधरम् ।
वसन्ति बहवो देवि ! जना धर्मविचक्षणाः ॥१

शिवजी बोले— हे पार्वती ! गोमती नदी के किनारे धुरंधर नामक एक पुरी थी। वहाँ धर्म में रत अनेक मनुष्य रहते थे।१।

तन्मध्ये ब्राह्मणोऽप्येको ब्रह्मकर्मविवर्जितः ।
द्यूतकर्मरतः सोऽपि वेश्यासुरतत्परः ॥२

उनमें एक ब्राह्मण भी था जो ब्रह्म कर्म से रहित था। वह जूआ खेला करता था तथा वेश्या गमन करता था।२।

मद्यपानरतो नित्यं वेदशास्त्रविनिन्दकः ।
ततो बहुदिने देवि ! तस्य मृत्युरभूत्पुरा ॥३

वह मद्यपान में रत था। वेद-शास्त्रों की निन्दा किया करता था। बहुत दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।३।

यमदूतैर्महाघोरैर्नरके तु निपातितः ।
क्षिप्तः स नरके घोरे लक्षवर्षं महेश्वरि ॥४
नरकान्निःसृतो देवि वृकयोनिरभूत्पुरा ।
वराहस्य पुनर्योनिर्गर्दभत्वं ततोऽभवेत् ॥५

यम दूतों ने उस ब्राह्मण को महा घोर नरक में डाल दिया। वह एक लाख वर्ष तक नरक में पड़ा रहा। नरक से निकल कर उसे भेड़िया की योनि मिली। फिर सूअर की इसके बाद गदहे को योनि मिली।४-५।

मानुषत्वं ततो लेभे देशे पुण्यतमे शुभे ।
पूर्वजन्मनि देवेशि ! मद्यपानरतस्तदा ॥६
तेन पापेन भो देवि ! शरीरे रोगसम्भवः ।
द्यूतवेश्यारतो नित्यं यत्कृतं पूर्वजन्मनि ॥७
तत्पापेन महादेवि ! वंशच्छेदश्च जायते ।
शान्तिं शृणु वरारोहे ! पूर्वपापप्रणाशिनीम् ॥८

फिर पुण्यतम प्रदेश में मनुष्य योनि उसे प्राप्त हुई। पूर्व जन्म में वह जो मद्यपान में रत रहता था, इस कारण उसके शरीर में रोग हुए। जूआ एवं वेश्या में रत रहने के पाप के कारण उसका वंश छेद हुआ। अब हे देवि ! पूर्व पापों के विनाश करने के हेतु शान्ति सुनो।६-८।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
विष्णोरराट्मन्त्रेण लक्षजाप्यं वरानने ! ॥९

घर के धन से षडांष से पुण्य कार्य करने चाहिये। 'विष्णो रराट' इस मन्त्र का एक लाख जप कराना चाहिए।९।

दशांशं हवनं तद्वैमार्जनं तर्पणं तथा।
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्पञ्चाशत्वरानने ! ॥१०

दशांश क्रम से हवन; मार्जन एवं तर्पण करना चाहिए। फिर पचास ब्राह्मणों को उसे भोजन कराना चाहिए।१०।

ततो गां कृष्णवर्णां च स्वर्णशृङ्गीं विभूषिताम् ।
वस्त्रयुक्तां सवत्सां च दद्याद्द्विजवराय च ॥११

इसके उपरान्त श्यामा गाय, जिसके सीगों को स्वर्ण से मढकर, वस्त्रों से युक्त कर, बछड़े के साथ किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को देनी चाहिए।११।

प्रतिमां तु ततः कुर्याद्विष्णोः साम्बस्य वा शिवे ! ।
पलं दशसुवर्णस्य विष्णोर्मुक्ताविभूषिताम् ॥१२
तद्वदेव शिवस्यैव रजतस्य वरानने ! ।
नानावस्त्रैरलङ्कारैः पूजयित्वा यथाविधिः ॥१३

फिर विष्णु जी की दशपल स्वर्ण की बनवायें। उसे मोतियों से सजायें। एक मूर्ति चांदी की शिवजी की बनायें, उसे भी नाना वस्त्रों एवं अलंकारों से भूषित करें तथा यथाविधि उसकी पूजा करें।१२-१३।

मन्त्रेणानेन देवेशि ! तद्वदेव गणं नमेत् ।
गरुडध्वजं देवेश भूतनाथ दयानिधे ॥१४
मम पूर्वकृतं पापं तत् क्षमस्व दयानिधे ।
गन्धधूपादिभिर्देवि ! पूजियित्वा पृथक्-पृथक् ॥१५

इन मन्त्रों से देवगण की पूजा करें, उन्हें नमन करें। हे गरुड़ध्वज, देवेश,

हे भूतनाथ, हे दयानिधे ! मेरे पूर्वकृत पापों को क्षमा करो । फिर गंध, धूप, दीप आदि से पृथक्-पृथक् पूजा करे ।१४-१५।

ॐ सुदर्शनाय नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः ।
ॐ गरुडाय नमः । ॐ भैरवाय नमः ।
ॐ जयाय नमः । ॐ विजयाय नमः ।
ॐ वटुकाय नमः ॐ कालभैरवाय नमः ।
प्रतिमां पूजयित्वा तु विप्राय प्रददौ स्वयम् ।
ततो विष्णु नमस्कृत्यं शिवं सर्वसुखप्रदम् ।।१६

ॐ सुदर्शन भगवान को प्रमाण है, त्रिशूल को, गरुड़ को, भैरव को प्रणाम है । जय को, विजय को, वटुक को, काल भैरव को प्रणाम हैं । इस प्रकार प्रतिमा पूजन कर, विष्णु, शंकर जी को सब सुख प्रदान करने वालों को प्रणाम कर, स्वयं उसे ब्राह्मण को दे दें ।१६।

एवंकृते न सन्देहः सर्वपापक्षयो भवेत् ।
वंशवृद्धिर्भवेत्तस्य व्याधिनाशस्तथैव च ।।१७

ऐसा करने से निःसन्देह सभी पापों का विनाश होता है । वंश की वृद्धि होती है तथा व्याधियों का विनाश होता है ।१७।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव संवाद में
'शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में प्रायश्चित कथन'
नामक अट्ठानवेंवां अध्याय सम्पूर्ण ।।

←०→

एकोनशततमः अध्याय

शिव उवाच

पञ्चकोशमिते देवि ! मथुरा उत्तरे तथा ।
हेमन्तपुरसद्ग्रामे वसन्ति बहवो जनाः ।।१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! मथुरा से पाँच कोस दूरी पर उत्तर की तरफ एक हेमन्त पुर नामक अच्छा सा गाँव था । वहाँ बहुत से मनुष्य रहते थे ।१।

तन्मध्ये वैश्य एको हि क्रयविक्रयतत्परः।
स सुकर्मा इति ख्यातो धनं च बहु संचितम् ॥२

उनमें एक वैश्य था, जो क्रय-विक्रय किया करता था। उसका नाम सुकर्मा था। उसने बहुत धन एकत्र किया था।२।

तस्य स्त्री पार्वती नाम रूपयौवनसंयुता।
वैश्यश्चैव महादेवि ! प्रौढ़िं यातः सुरेश्वरि ! ॥३
दरिद्रत्वं भवेद्देवि ! दरिद्रत्वात्सुपीडितः।
शतपंचऋणं नीतं ब्राह्मणस्य सुरेश्वरि ॥४
व्यापारार्थं विशालाक्षि न दत्तं ब्राह्मणाय वै।
सर्वं भुक्तं महादेवि बहुकाले गते सति ॥५
वैश्यस्यैव भवेन्मृत्युः सभार्यस्य वरानने।
मथुरायां विशालाक्षि लब्धं स्वर्गं वरं शुभम् ॥६

उस वैश्य की स्त्री का नाम पार्वती था। वह रूप यौवन से सम्पन्न थी। वैश्य भी वृद्ध हो गया। वह गरीब हो गया। दरिद्रता से वह अति पीड़ित हुआ। उसने ब्राह्मण से पांच सौ मुद्रा उधार लीं। ये धन उसने व्यापार के लिए लिया था परन्तु ब्राह्मण को फिर उसने वापिस नहीं दिया था। उसने उस सारे धन का उपभोग लिया। बहुत समय बाद पत्नी सहित उस वैश्य की मृत्यु हो गई। मृत्यु मथुरा में हुई अतः उसे उत्तम स्वर्ग की प्राप्ति हुई।३-६।

दशलक्षमितं स्वर्गं फलं भुक्त्वा वरानने।
ततः सह कलत्रेण पुनः पुण्यक्षये सति ॥७
मानुषत्वं पुनर्लेभे देशे शुभ्रे मनोहरे।
धनधान्यसमायुक्तो जायते वै सुरेश्वरि ॥८

दश लाख वर्ष तक स्वर्ग फल को भोग, पुण्यों के क्षय होने पर स्त्री सहित, उसे सुन्दर, मनोहर देश में योनि मिली। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ।७-८।

पूर्वजन्मनि देवेशि ब्राह्मणस्य धनं हृतम्।
न दत्तं वै ततो देवि ततः पुत्रो न जायते ॥९

पूर्व जन्म में उसने ब्राह्मण का जो धन हरण किया था, लेकर नहीं दिया था, इसी कारण उसे पुत्र नहीं होता था।९।

ततः शान्ति प्रवक्ष्यामि यतः पापस्य सङ्क्षयः ।
गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ॥१०

अब मैं शान्ति कहता हूँ जिससे पापों की शान्ति हो । घर के षडांश धन से पुण्य कार्य कराने चाहिए ।१०।

आकृष्णेति ततो मन्त्रं लक्षजाप्यं च कारयेत् ।
दशांशं हवनं कुर्याद्दशांशं तर्पणं तथा ॥११

'आकृष्णेति' इस मन्त्र का एक लाख जप करायें । दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें ।११।

हरिवंशश्रुतं देवि चण्डीपाठशिवार्चनम् ।
विधिवत्कारयामास ब्राह्मणाञ्च भोजनम् ॥१२

हरिवंश पुराण का श्रवण करें, चंडी पाठ करायें, शिवजी का अर्चन करें । सभी कार्य विधिवत करे ब्राह्मणों को भोजन करायें ।१२।

दशवर्णां तु गौर्देया शय्यादानं विशेषतः ।
एवंकृते वरारोहे वंशो भवति नान्यथा ॥
व्याधिनाशः समायाति मम वाक्यामृतं भवेत् ॥१३

दशवर्णी गाय का दान करना चाहिये । शैय्या दान विशेष रूप से करनी चाहिये । समस्त व्याधियों का नाश होता है । मेरे वाक्य हे पार्वती जी अमृत के समान हैं ।१३।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में, शिव पार्वती सम्वाद में
शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित
कथन नामक निन्यानवेंवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

शततमः अध्याय

शिव उवाच

मथुरापुरीमध्ये तु शूद्र एको हि तिष्ठति ।
शाकादीनां च सततं विक्रयन्तु सदाकरोत् ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी ! मथुरा पुरी में एक शुद्र रहा करता था। वह सदैव शांकादि का विक्रय करता था।१।

विष्णुभक्तिरत:शान्त: पुण्यात्मासाधुसम्मत: ।
सेवादास इति ख्यातस्यस्य पत्नी तु राधिका: ।।२

वह शूद्र विष्णु भक्ति में रत था। पुण्यात्मा एवं साधु था। उसका नाम सेवादास था। उसकी पत्नी कामना राधिका था।२।

कुलाचारे रत: साधुर्द्विजसेवासु तत्पर: ।
वाणिज्यं कुरुते साधु: पुरोहितधनेन: च ।।३

वह कुलाचार में रत रहता था। साधुओं एवं ब्राह्मणों की सेवा में रत रहता था। वह पुरोहित के धन से व्यापार किया करता था।३।

बहुवर्षगते देवि ! ब्राह्मणोऽपि तदागत: ।
आदरं बहुधा कृत्वा कलत्रेण तदा शिवे ! ।।४
विषं दत्तं चतुर्थेऽह्नि भोजनान्तर्विधानत: ।
न जानाति तदा साधुस्तद्वृत्तं ब्राह्मणस्य तु ।।५

हे देवि ! बहुत वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद एक बार वह ब्राह्मण वहाँ आया। उसकी पत्नी ने उस ब्राह्मण का खूब सत्कार किया। बड़े विधान से चौथे दिन उस ब्राह्मण को इस शूद्राणी ने भोजन में उसे विष दे दिया। इस ब्राह्मण के वृतान्त को शूद्र नहीं जानता था।४—५।

मरणं वै ततो जातं ब्राह्मणस्य सुरेश्वरि ।
ब्राह्मणस्य बधे जाते हाहाकारो गृहे गृहे ।।६
श्रुत्वा मथुरा पुरीं त्यक्त्वा प्रयागे साधुआगत: ।
देहं त्यक्त्वा तदा साधुर्हठं कृत्वा वरानने ! ।।७

हे सुरेश्वरि ! विष से उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई तब घर-घर में हाहाकर मच गया। इसे सुन वह सेवादास मथुरापुरी को छोड़ प्रयाग में आ गया। वह उसने बलात् अपने देह का त्याग कर दिया।६—७।

पश्चात्तदैव सा गत्वा पत्नी प्राणस्ततोऽत्यजेत् ।
प्रयागे मथुरां त्यक्त्वा तदुद्देशेन शोभने ।।८

इसके उपरान्त उसी प्रकार मथुरा से प्रयाग जाकर उसकी पत्नी ने भी, उसी उद्देश्य से अपने प्राणों को त्याग दिया ।८।

बहुवर्षसहस्राणां स्वर्गवासस्ततोऽभवेत् ।
ततः पुण्यक्षये जाते मानुषत्वं ततोऽभवेत् ।।९

हजारों वर्ष तक उन्होंने स्वर्ग सुख को भोगा फिर पुण्यों के क्षय होने पर मनुष्य योनि को प्राप्त किया ।९।

शूद्रयोनिं विशालाक्षि देहजस्य कुले तदा ।
पुनर्विवाहिता पत्नी पूर्वजन्मप्रसङ्गतः ।।१०

हे विशालक्षि ! उसने फिर शूद्र योनि में ही अपने पुत्र के कुल में ही जन्म लिया और पूर्व जन्म के प्रसंग से उसी पत्नी से उसकी शादी हुई ।१०।

धनधान्यसमायुक्तो विद्यावान् कुलपूजितः ।
गौराङ्गो नीचजातीनां मतज्ञो लब्धवान् स्वयम् ।।११

वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ, विद्यावान एवं कुल में पूजित हुआ । वह गोरे रंग वाला एवं नीच जाति में सबसे विद्वान एवं पूजित हुआ ।११।

पूर्वजन्मनि भो देवि ! ब्राह्मणाय विषं ददौ ।
भार्या तस्य विशालाक्षि तत्पापेनैव पातकी ।।१२
मासि पुष्पं ततस्तस्याः सन्तानं नैव जायते ।
अस्य पापस्य वै शान्तिं शृणु देवि सुशोभने ।।१३

हे देवि ! उसने पूर्व जन्म में ब्राह्मण को जो विष दिया था इस पाप से उसकी पत्नी पापिन रही । उसके मासिक धर्म तो होता था परन्तु सन्तान नहीं होती थी । अब तुम हे देवि पार्वती ! इस पाप की शान्ति को सुनो ।१२—१३।

गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्रीजातवेदाभ्यां त्र्यम्बकेन वरानने ।।१४
लक्षत्रयं जपं देवि ! कारयामास यत्नतः ।
हरिवंशश्रुतं देवि ! भार्यया सहितस्तदा ।।१५

घर के अष्टमांश धन को पुण्य कार्य में लगाये । गायत्री मन्त्र 'जातवेदसे' मन्त्र एवं 'त्र्यम्बकं यजामहे' इन तीनों मन्त्रों के तीन लाख जप कराये । फिर पत्नी सहित हरिवंश पुराण का श्रवण करे ।१४—१५।

होमं वै कारयामास कुण्डे शुद्धे सुदारुणे ।
चतुष्कोणे विशालाक्षि योनिपल्लवशोभिते ॥१६

दशांशं विधिवद्देवि ! तर्पणं मार्जनं ततः ।
ब्राह्मणस्य ततो मूर्ति दशपञ्चपलात्मिकाम् ॥१७

एक चतुष्कोण, सुन्दर योनि आकार के हवन कुण्ड का निर्माण कराये उसमें हवन कराये । दशांश विधि से तर्पण एवं मार्जन कराये । फिर ब्राह्मण की पन्द्रह पल स्वर्ण की मूर्ति बनवाये ।१६—१७।

विधिवत्कारयेद्देवि ! पूजयेत्तचैव बुद्धिमान् ।
वस्त्रालङ्कारशय्याभिभूंषणैर्विविधैस्तथा ॥१८

मन्त्रेणानेन देवेशि ! गन्धपुष्पैः पृथक् पृथक् ।
सर्वकारणकर्ता त्वं साक्षीभूतो जगत्त्रये ।
पापं ब्रह्मवधं घोरं हर मे भुवनाधिपः ॥१९

मूर्ति विधवत् बनवाये तथा उसकी विधिवत् वस्त्र, अलंकार, शैय्या, भूषण एवं विविध सामग्री सहित उसकी पूजा कराये । गन्ध-पुष्पों से अलग-अलग इन मन्त्रों से पूजा कराये । 'हे प्रभो ! तुम सबके कारण हो, कर्त्ता हो, तीनों लोकों के साक्षी-भूत हो, मेरे ब्रह्मवध के भयंकर पाप को हरण करो ।१८—१९।

मंत्र—ॐचक्रधराय नमः । ॐत्र्यम्बकाय नमः ।
ॐशखंहस्ताय नमः । ॐसनकसनत्कुमारसनन्दनसनात-
नेभ्यो नमः ॥२०

ॐ चक्रधर को प्रणाम है त्र्यम्बक को प्रणाम है । शंखहस्त वाले को, सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमारों को प्रणाम है ।२०।

पूजयामासा विविधैर्मोदकैश्च फलैरपि ।
प्रतिमां पूजितां यान्तु सुविप्राय प्रदापयेत् ॥१२

अनेक प्रकार से लड्डुओं एवं फलों से उस प्रतिमा की पूजा करके उसे ब्राह्मण को दे दे ।२१।

दशवर्णा सवृषभां पट्टवस्त्रविभूषिताम् ।
दद्याद्विप्राय विदुषे श्रोत्रियाय तपस्विने ॥२२

वस्त्रों से सजाकर एक बैल, दशवर्णी गाय किसी विद्वान, वेदज्ञ, कर्मनिष्ठ ब्राह्मण को दान में दे ।२२।

सप्तम्यां रविवारे च व्रतं-कुर्याद्विधानत, ।
एवं करोति देवेशि ! पुत्रयुग्मं प्रजायते ॥२३
कन्या नैव वरारोहे ! रोग सर्वं विनश्यति ॥२४

सप्तमी रविवार का विधि विधान से व्रत करे। ऐसा करने से दो पुत्रों की प्राप्ति होती है। कन्या कभी नहीं होती तथा सभी रोगों का विनाश हो जाता है।२३--२४।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चरण प्रथम का प्रायश्चित कथन नामक सौ वां अध्याय सम्पूर्ण ॥



एकोत्तर शततमः अध्याय

शिव उवाच

धर्मेण जायते पुत्रो धर्मेण लभते श्रियम् ।
धर्मेण व्याधिनाशः स्यात्तस्माद्धर्मपरो भव ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! धर्म से पुत्र होता है धर्म से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। धर्म से व्याधियों का नाश होता है। इसलिये मानव को धर्मपरायण होना चाहिये ।१।

काम्पिल्ये नगरे देवि ब्राह्मणस्तत्र तिष्ठति ।
स वेदपाठनिरतो धनाढ्याश्च बहूद्यमी ॥२

हे देवि ! काम्पिल्य नामक नगर में एक ब्राह्मण रहता था। वह वेदपाठी था, धनाढ्य था एवं उद्यमी था ।२।

तस्य पत्नी वरारोहे ! पतिसेवासु तत्परा ।
एकदा आगता कन्या ब्राह्मणस्य किलानघे ! ॥३
पुत्रेण सह देवेशि ! आदरस्तेन वै कृतः ।
ततो बहुदिने जाते तस्य स्वर्णं च चोरितम् ॥४

कन्यापुत्रेण स्वर्णं हि हृतं चेति तदा शिवे ! ।
वदन्ति बहवस्तत्र जनास्तु ब्राह्मणं प्रति ॥५
ततो रोषपरीतात्मा पौत्रो भवति वै शिवे ।
विषं भुक्तं तदा तेन बहुरोषाकुलेन नु ॥६
मरणं तस्य वै जातं पौत्रस्यैव वरानने ।
ततो बहुदिने जाते ब्राह्मणस्य तदा मृतिः ॥७

हे पार्वती जी ! उस ब्राह्मण की पत्नी पति सेवा में तत्पर थी । एक बार उस ब्रह्मण की कन्या उसके घर पुत्र सहित आई । ब्राह्मण ने उसका अत्यन्त आदर किया । बहुत दिन बाद उसके धन की चोरी हो गई । लोगों ने कहा कि धन को कन्या के पुत्र ने ही चुराया है । तब क्रोध से उस ब्राह्मण के नाती ने जहर खा लिया । फिर उस पौत्र की मृत्यु हो गई । बहुत दिन बाद उस ब्राह्मण की भी मृत्यु हो गई ।३—७।

तस्य पत्नी सती जाता सत्यलोकेवसेत्तदा ।
ततः पुण्यक्षये जाते मर्त्यलोके सुरेश्वरि ॥८
मानुषत्वं ततो जातअयोध्यानगरे शिव ।
धनधान्यसमायुतो राजमन्त्री विद्वक्षणः ॥९
पौत्रस्तस्य मृतो देवि तदुद्देशेन भो शिवे ॥१०

उस ब्राह्मण की पत्नी उसके साथ सती हो गई । वे स्वर्ग लोक गये । पुण्यों के क्षय होने पर उनका जन्म मृत्यु लोक में हुआ । उनका जन्म मनुष्य योनि में अयोध्या नगर में हुआ । वह धन-धान्य से पूर्ण हुआ । वह राजमन्त्री हुआ । उसके पौत्र की पूर्व काल में मृत्यु हुई थी ।८—१०।

अतः पुत्रो न जायेत कन्या चैव प्रजायते ।
शरीरे शततं चोग्रो ज्वरो जातः सुदारुणः ॥११

इस कारण उसके पुत्र नहीं होता था, कन्या ही उत्पन्न होती थीं । उसके शरीर में निरन्तर भयंकर ज्वर रहता था ।११।

शत्रवो बहवः सन्ति न सौख्यं लभते क्वचित् ।
पुण्यं शृणु वरारोहे पूर्वपापस्य संज्ञयः ॥१२

उसके बहुत से शत्रु हो गये थे। उसको कहीं भी सुख नहीं मिलता था। पूर्व पापों को क्षय करने वाला अब पुण्य कार्य सुनो।१२।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्रीत्र्यम्बकं चेति श्रीश्चते इति ऋक्त्रयम् ।।१३
प्रतिमन्त्रं जपेत्लक्षं दशांशं हवनं ततः ।
दशांशंतर्पणं देवि ! मार्जनं तद्दशांशतः ।।१४
गोदानं तद्दशांशं च तद्दशांशं च भोजयेत् ।
ब्राह्मणांश्चैव देवेशि श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।।१५

घर के धन में से षडांश से पुण्य कार्य कराने चाहिये। गायत्री, त्रयम्बकं यजामहे, श्रीश्चते लक्ष्मी' इन तीनों मन्त्रों का एक २ लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन करायें। मार्जन के दशांश का गोदान और इसके दशांश का ब्राह्मण भोजन भक्ति श्रद्धा के साथ करायें।१३-१५।

कूष्माण्डं नारिकेलं च पञ्चरत्नसमन्वितम् ।
गङ्गामध्ये प्रदातव्यं पूर्वपापविशुद्धये ।।१६

पेठा; नारियल, पंच रत्न सहित गंगा के बीच में पूर्व पाप की शुद्धि के हेतु देना चाहिए।१६।

वृषभस्तरुणः शुभ्रो घण्टाचमरशोभितः ।
ब्राह्मणाय प्रदातव्यः शय्यादानं विशेषतः ।।१७

एक जवान सांड, श्वेत वर्णी, घण्टा एवं चमर सहित ब्राह्मण को देना चाहिये और विशेष रूप से शैय्या दान करना चाहिए।१७।

एवं कृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ।
रोगस्यैव निवृत्तिः स्यात्ज्वरस्तस्य न जायते ।।१८

हे पार्वती जी ! ऐसा करने से शीघ्र पुत्र पैदा होता है। रोग की निवृत्ति होती है तथा ज्वर नहीं होता।१८।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, शिव पार्वती सम्वाद में पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ एक वां अध्याय सम्पूर्ण ।।



द्वि उत्तर शततमः अध्याय

शिव उवाच

गांधारनगरे देवि ! ब्राह्मणो वसति प्रिये ।
दयाशर्मा इति ख्यातो मद्यपानरतः सदा ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! गांधार नगर में एक ब्राह्मण रहा करता था। उसका नाम दया शर्मा था। वह सदैव मद्यपान किया करता था।१।

वेश्यासुरतसंतृप्तश्चौरकर्मरतः सदा ।
म्लेच्छाचाररतःसोऽपि म्लेच्छान्नं भुज्यते सदा ॥२

वह वेश्या गमन करता, चोरी का काम करता था। म्लेच्छों का सा आचरण करता एवं म्लेच्छान्न का भोजन करता था।२।

धनं तु सञ्चितं तेन म्लेच्छभार्यासु तत्परः ।
श्राद्धकर्मविहीनश्च पितुर्मातुश्च निन्दकः ॥३

उसने धन भी बहुत सा इकट्ठा किया था। वह म्लेच्छों की स्त्रियों में रमण करता था। श्राद्ध कर्म से वह विहीन था तथा वह पिता एवं माता का निंदक था।

एवं बहुगते काले मरणं तस्य जायते ।
महारौद्रं च नामानं नरकं नाम दारुणम् ॥४
निक्षिप्तः श्रृङ्खलैर्बद्ध्वा यमदूतैर्यमाज्ञया ॥५

इस प्रकार बहुत समय बीत जाने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने यम की आज्ञा से उसे बेड़ियों से बाँधकर महारौद्र नामक भयंकर नरक में डाल दिया।४—५।

नरकान्निःसृतो देवि ! गोधायोनिरभूत्पुरा ।
सरटस्य पुनर्योनिं चटकत्वं ततोऽभवेत् ॥६

हे देवि ! नरक से निकलने के बाद वह गोह की योनि में पहले गया। फिर सरट (गिरगिट) की योनि फिर चटक (पक्षी) की योनि में गया।६।

मानुषत्वं ततो लेभे मध्यदेशे वरानने ! ।
धनधान्यसमायुक्तो वंशहीनो महेश्वरि ॥७

इसके उपरान्त वह मध्य देश में मनुष्य की योनि में उत्पन्न हुआ। वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ। तथा साथ ही वह वंशहीन हुआ।७।

पूर्वजन्मनि देवेशि ! ब्राह्मणत्वं यतोत्यजेत् ।
तत्पापेनैव भो देवि ! पुत्रस्य मरणं मुहुः ।।८

हे देवि ! पूर्व जन्म में उसने ब्राह्मण का परित्याग किया था, उसी पाप के कारण बार-बार उसके पुत्रों की मृत्यु हो जाती थी।८।

अनेन पितरौ वृद्धौ त्यक्तौ दुर्मतिना यतः ।
अतः शरीरे वै रोगः काकबन्ध्या सहस्रणां ।।९

क्योंकि इस दुष्ट बुद्धि ने अपने बूढ़े माता-पिता का परित्याग कर दिया था, इस कारण से उसके शरीर में रोग हुए वह काक-बन्ध्या हुई तथा फोड़े-फुंसियाँ से पीड़ित हुई।९।

शान्ति शृणु वरारोहे यतः पुत्रो हि जायते ।
गृहवित्ताष्टमं भागं पुण्यकार्ये च कारयेत् ।।१०
पलस्पञ्चसुवर्णस्य गणाध्यक्षस्य आकृतिम् ।
कृत्वा वै पूजयेद्देवि ! मन्त्रेणानेन सुव्रते ।।११

हे पार्वती जी ! इसकी शान्ति सुनो, जिससे पुत्र की प्राप्ति हो। घर के अष्टमांश धन से पुण्य कार्य करने चाहिये। पांच पल सोने की गणेश जी की प्रतिमा बनवानी चाहिये। और इस मन्त्र से उसकी पूजा करनी चाहिये।१०—११।

गणाध्यक्ष सुरेशान सर्वोपद्रवनाशनः ।
मम पूर्वं कृतं पापं हर दुःखनिवारण ।।१२

हे गणों के अध्यक्ष, देवों में श्रेष्ठ, सारे उपद्रवों के नष्ट करने वाले, दुखों को दूर करने वाले प्रभु ! मेरे पूर्व कृत पापों को दूर करो।१२।

एवं कृत्वा विधानं च ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
ततो भवति वंशश्च व्याधिनाशश्च जायते ।।१३

सम्पूर्ण विधान को कर प्रतिमा को ब्राह्मण के लिये समर्पित कर दे। इससे वंश की वृद्धि होती है व्याधियों का विनाश हो जाता है।१३।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव संवाद में श्री पूर्व भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ दो वाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।

त्र्याधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

वैदंडे च पुरे देवि ! लुब्धको वसति प्रिये ।
सेमानाम्ना स विख्यातस्यस्य भार्यातिनिष्ठुराः ।।१

शिवजी बोले--हे पार्वती जी ! वैदण्ड नामक पुर में एक शिकारी रहता था । उसका नाम सेमा था । उसकी पत्नी अत्यन्त निष्ठुर थी ।१।

प्रत्यहं मृगमांसेन व्ययं कुर्याद्दिने दिने ।
एवं सर्वं वयो जातं लुब्धकस्य सदा प्रिये ।।२
मरणं तस्य वै जातं यमदूतैर्यमाज्ञया ।
निक्षिप्तो नरके घोरे षष्टिवर्षसहस्रकम् ।।३

नित्य प्रति मृगमांस में ही अपना सारा दिन व्यतीत कर देता । इसी प्रकार सम्पूर्ण जिन्दगी व्यतीत हो गई । फिर उसकी मृत्यु हो गई यमदूतों ने यमाज्ञा से साठ हजार वर्ष के लिए घोर नरक में उसे डाल दिया ।२-३।

भुक्तं च विविधं दुःखं कृमिसूचिमुखैर्युतम् ।
मानुषत्वं ततो जातं धनधान्यसमन्वितम् ।।४

सूई के से मुख वाले कीड़ों से पीड़ित हो एवं अनेक दुखों को भोग फिर उसे मनुष्य योनि मिली । वह धन धान्य से सम्पन्न हुआ ।४।

पुत्राणां मरणं देवि जायते हि विपाकतः ।
पलपञ्चसुवर्णस्य माल्यं मेरुयुतं तु वै ।।५

हे देवि ! उसी पूर्व जन्म के पापों के फल स्वरूप उसके पुत्रों की मृत्यु हो जाती थी । इसके प्रायश्चित हेतु पांच पल स्वर्ण की मेरू सहित (मुख्य बड़े दाने सहित) माला बनवानी चाहिये ।५।

ब्राह्मणाय ततो दद्याच्छायादानं विशेषतः ।
एवंकृते वरारोहे पुत्रस्तस्य च जीवति ।।६
व्याधयः संक्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ।।७

उस माला को ब्राह्मण को देना चाहिये। विशेष रूप से छाया दान करना चाहिए। ऐसा करने से उसके पुत्र जीवित रहेंगे। उसकी समस्त व्याधायें नष्ट हो जायेंगी। काक वन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होगी।६-७।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में, पार्वती शिव सम्वाद में पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ तीन वां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

चत्वारोधिक शततमः अध्याय्

शिव उवाच

श्रीपुरे नगरे देवि द्विज एकोऽवसत्पुरा ।
एकदा तस्य वै गेहे गुरुपुत्रः समागतः ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती जी! श्रीपुर नामक नगर में एक ब्राह्मण प्राचीन काल में रहा करता था। एक दिन उसके घर गुरु पुत्र आया।१।

आदरं बहुधा कृत्वा मासमेकं तदा खलु ।
गुरुपुत्रस्य घातं हि कृत्वा द्रव्यस्य लोभतः ॥२

उसने गुरु पुत्र का अत्यन्त आदर किया। वह एक माह तक उसके घर रहा। द्रव्य के लोभ से उस ब्राह्मण ने गुरु पुत्र की हत्या कर दी।२।

तेन पापेन भो देवि! महापापयुतो नरः ।
पुत्रहीनश्च देवेशि जायते धनवर्जितः ॥३

हे देवि! इस पाप के कारण वह बहुत पापी हुआ। वह पुत्रहीन हुआ, धन हीन हुआ।३।

वंशगोपालमन्त्रं वै गायत्रीमन्त्रमेव च ।
हरिवंशश्रवणं देवि कुर्यात्च विधिपूर्वकम् ॥४

इस पाप की शान्ति के हेतु वंशगोपाल मन्त्र का एवं गायत्री मन्त्र का जप करायें तथा विधिपूर्वक हरिवंश पुराण का श्रवण करें।४।

तुलसीवाटिकां कृत्वा तन्मूले विष्णुपूजनम् ।
दशवर्णां ततो दद्यात्पूर्वपापप्रणाशिनीम् ॥५

तुलसी को लगावें, उसकी जड़ में विष्णु की स्थापना कर उनका पूजन करें। पूर्व पाप प्रक्षालन हेतु दशवर्णी गाय प्रदान करें।५।

स्वर्णनिष्कस्ततो दद्याद्दशगोदानमेव च।
एवंकृते वरारोहे ! वंशो भवति नान्यथा ॥६
व्याधिनाशो भवेद्देवि ! सत्यं न संशयः ॥७

एक निष्क स्वर्ण का दान करें। गोदान करें। ऐसा करने से अवश्य वंश की वृद्धि होगी। इसमें सन्देह नहीं है। सम्पूर्ण व्याधियों का नाश हो जायेगा। ये सत्य हैं, इसमें संशय नहीं है।६-७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्बाद में
उत्तारा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण का प्रायश्चित
कथन नामक एक सौ चार वाँ अध्याय सम्पूर्ण ॥

—:०:—

पञ्चाधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

मणिकाख्यपुरे रम्ये वसन्ति बहवो जनाः।
लवणकारो वसत्येको नित्यं लवणविक्रयी ॥१

शिवजी बोले--हे पार्वती जी ! मणिकापुर नामक नगर में बहुत से आदमी रहते थे। उनमें एक लवणकार (नमक बनाने वाला) भी रहा करता था। वह नित्य प्रति नमक बेचा करता था।१।

ब्राह्मणीगमनं तेन कृतं शूद्रेण वै शिवे !।
तेन पापेन भो देवि ! वंशहीनश्च जायते ॥२

उस शूद्र ने एक ब्राह्मणी के साथ गमन (भोग) किया था। उसी पाप के कारण वह वंशहीन हुआ।२।

व्याधियुक्तो महेशानि ! पीडा चाङ्गेषु जायते।
शान्ति शृणु महेशानि ! येन पापनिवर्तनम् ॥३

हे पार्वती जी ! वह व्याधियों से पीड़ित हुआ। उसके अंगों में पीड़ा रहती थी। अब तुम उसकी शान्ति सुनो, जिससे पाप की निवृत्ति हो जाय।३।

गृहवित्ताष्टमैभोगर्ब्राह्मणं तोषयेद्यदि ।
हरिवंशश्रवणं देवि ! विधिवद्यदि पार्वति ।।४

घर में स्थित धन के अष्टम भाग से ब्राह्मणों को प्रसन्न करे। विधिवत हरिवंश पुराण का श्रवण करे।४।

ब्राह्मणान्भोजयेद्देवि ! कूष्माण्डं चैव दापयेत् ।
एवंकृते वरारोहे ! पुत्रो भवति नान्यथा ।।५

हे देवि ! ब्राह्मणों को भोजन कराये। पेठा दान में दे। ऐसा करे तो निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होगी।५।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में, शिव पार्वती सम्वाद में उत्तरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ पाँच वाँ अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

षडाधिक शततम: अध्याय

शिव उवाच

अलर्काख्यपुरे देवि क्षत्रियो वसति प्रिये ।
चन्द्रवर्मेति विख्यातो भार्या देवीतिसंज्ञिका ।।१

शिवजी बोले— हे पार्वती जी ! अलर्क नामक पुरी में एक क्षत्री रहा करता था। उसका नाम चन्द्रवर्मा था। उसकी पत्नी का नाम देवी था।१।

क्षत्रधर्मरतो नित्यं धनाढ्य: शूरसम्मत: ।
कृष्णदास इति ख्यातो विप्रस्तस्य पुरोहित: ।।२

वह क्षात्र धर्म में रत था। वह धनाढ्य था। शूरवीर था। उसका एक पुरोहित ब्राह्मण था, उसका नाम कृष्णदास था।२।

क्रोधित: क्षत्रियस्यापि बभूव मरणं यत: ।
पुरोहितस्य विप्रस्थ सप्ताहाच्च सुतक्षय: ।।३

क्रोध में क्षत्री एवं पुरोहित का झगड़ा हो गया, पुरोहित का मरण हो गया। सात दिन में उसका बेटा भी मर गया ।३।

व्याधिपीडा गुल्मजालैः पीड्यते सततं हि सः ।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षजपन्चरेत् ।।४

उसे व्याधि हो गई, पीड़ा हो गई, फोड़े हो गये, वह सदैव पीड़ित रहता। गायत्री मूल मन्त्र का पांच लाख जप करायें ।४।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यथार्यं च कारयेत् ।
ब्राह्मणास्य ततो देवि प्रतिमां कारयेद् बुधः ।।५

घर के धन में से षडांश भाग को पुण्य कार्य में लगाना चाहिए। ब्राह्मण की प्रतिमा बनवायें ।५।

पूजयित्वा ब्राह्मणाय दत्वा पापनिवृत्तये ।
पलपञ्चसुवर्णस्य दद्याद्वै ब्राह्मणाय च ।।६
काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं मृतवत्सा सुपुत्रिणी ।।७

मूर्ति की पूजा कर पाप निवृत्ति हेतु ब्राह्मण को दें। पांच पल सोना भी ब्राह्मण को दे। इससे काक वन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है, मृतवत्सा भी सुपुत्र वाली हो जाती है ।६-७।

।। इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में
उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित
कथन नामक एक सौ छः वां अध्याय सम्पूर्ण ।।

—०—

सप्ताधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

अयोध्यानिकटे देवि ! विप्रश्चैकोवसत्पुरा ।
वैष्णवोक्तकारेण दीक्षां प्राप्तो हि गर्वितः ।।१

अयोध्या के पास एक स्थान पर एक ब्राह्मण रहा करता था। उसे वैष्णव रीति से दीक्षा प्राप्त की थी। इसका उसे बहुत गर्व था ।१।

वेदनिन्दारतोऽसाधुः श्राद्धादिविधिवर्जितः ।
शिवभक्तिरतानां च नाभिवादं समाचरेत् ॥२

वह वेदों का निन्दक था, असाधु था, श्राद्धादि विधि से रहित था । शैवों को कभी भी प्रणाम नहीं करता था ।२।

विप्रद्रोहरतश्चैव हरिमन्दिरशोभितः ।
एकदा तस्य गेहे तु चागतः पथिकः प्रिये ॥३
रुद्राक्षालङ्कृतोवान्तस्तस्मै क्रूरमभाषत ।
विषमाहारपानादौ दत्तं तेन द्विजन्मने ॥४

वह विप्रों से द्रोह करता था था । उसने अपने घर में हरि मन्दिर बनवा रखा था । एक बार उसके यहाँ एक पथिक आया वह पथिक रुद्राक्ष की माला पहने था । उससे वह ब्राह्मण बहुत ही क्रूर बोला । उसे भोजन-पानादि में इस ब्राह्मण ने विष दे दिया ।३-४।

रात्रौ तद्द्रव्यलोभेन घटं कृत्वा त्वपाहरत् ।
कूपमध्ये तु तं विप्रं पापीयान् वैष्णवोधमः ॥५

उस पापी, अधम वैष्णव ने, रात्री के समय धन के लोभ से, घड़े की भाँति फांस कर उस पथिक को कूए में डाल दिया ।५।

कालान्तरे मृतिर्जाता तस्य साधुर्दुरात्मनः ।
विष्णुनाम स्मरेन्नित्यं वैकुण्ठे वासमाप्तवान् ॥६

कुछ समय वाद उस दुरात्मा साधु की मृत्यु हो गई । क्योंकि वह सदैव विष्णु का नाम लेता था, इस कारण उसको बैकुण्ठ की प्राप्ति हुई ।६।

क्षीणे पुण्ये ततो देवि विड्भक्षो ग्रामशूकरः ।
ततो मनुष्ययोनिश्च दृश्यते पुत्रवर्जितः ॥७
रोगवान्भल्पकीर्तिश्च स एव सुरसुन्दरि ।
अतः शान्ति प्रवक्ष्यामि शृणुष्व हरवल्लभे ॥८

पुण्यों के समाप्त हो जाने पर वह विष्टा खाने वाला ग्रमा का सूअर हुआ । फिर उसे मनुष्य योनि मिली । परन्तु वह पुत्र रहित हुआ । वह रोगी हुआ, अल्प कीर्ति वाला हुआ । अब मैं उसकी शान्ति कहता हूँ ।७-८।

लक्षमुद्रां ब्राह्मणाय दत्त्वा काश्यास्तु सेवनम् ।
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं ततो मुच्येत् पातकात् ॥९

एक लाख मुद्रा ब्राह्मण को दान में दे, काशी में निवास करे, नित्य ब्रह्मचर्य व्रत धारण करें तो सभी पापों से छूट जायेंगे ।९।

इति श्री कर्म विपाक संहिता में श्री उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ सातवां अध्याय सम्पूर्ण ॥



अष्टाधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

मगधे विषये देवि लुब्धको वसति प्रिये ।
प्रत्यहं मृगमांसेन व्ययं कुर्याद्दिने दिने ॥१

शिवजी बोले—हे प्रिये ! मगध देश में एक शिकारी रहा करता था । रोजाना मृगमांस में अपना सारा दिन समाप्त कर देता था ।१।

एवं सर्वं वयो जातं वृद्धे सति वरानने ।
मरणं तस्य वै यातं यमदूतैर्यमाज्ञया ॥२
निःक्षिप्तो नरके घोरे षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
भुक्तं विविधवत् दुःखं कृमिसूचिमुखैर्युतम् ॥३

इस प्रकार सारी उम्र व्यतीत हो गई, उसकी मृत्यु हो गई तब यमदूतों ने यम की आज्ञा से उसे घोर नरक में डाल दिया । साठ हजार वर्ष तक सुई जैसे कीड़ों की पीड़ा भोगी, अनेक दुःख भोगे ।२-३।

नरकान्निःसृतो देवि ! मृगत्वं जायते खलु ।
शृगालस्य ततो योनिं छागयोनिस्ततोऽभवेत् ॥४

हे देवि ! नरक से निकल कर उसे मृग योनि मिली । इसके उपरान्त स्यार की योनि मिली फिर उसे बकरे की योनि मिली ।४।

पूर्वजन्मनि देवेशि जलदानं च वै कृतम् ।
मानुषत्वं ततो जातं धनधान्यसमन्वितम् ॥५

धनाढ्यत्वं पुनर्जातो ह्यपुत्रो मृगताडनात् ।
पुत्राश्च बहवो जातास्तेषां मृत्युः प्रजायते ॥६

पूर्व जन्म में उसने जल दान किया था, इससे उसे मनुष्य योनि मिली। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ। उसने जानवरों को मारा था, इस कारण वह अपुत्रवान हुआ। उसके पुत्र तो बहुत हुए परन्तु उनकी मृत्यु हो गई।५-६।

रोगाणां च तथोत्पत्तिर्ज्वरश्चैव पुनः पुनः ।
शान्तिं श्रृणु वरारोहे पूर्वपापप्रणाशिनीम् ॥७

उसके रोग अनेक हो गये, ज्वर हो गया। हे पार्वती जी ! पूर्व पापों को नष्ट करने के हेतु तुम उसकी शान्ति सुनो।७।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्री वा शिवायेति जातवेदेति वै पुनः ॥८
दशायुतजपं कुर्याद्दशांशंहवनं ततः ।
दशांशं तर्पणं देवि ! मार्जनं तद्दशांशतः ॥९

घर के धन में से षडांश से पुण्य कार्य करने चाहिए। गायत्री मन्त्र, शिव मन्त्र एवं जातवेद से इन मन्त्रों का एक-एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन तर्पण एवं मार्जन कराये।८-९।

ततो वै भोजयेद्भक्त्या द्विजान् देवि ! दशांशतः ।
दशवर्णीं ततो दद्याद् वृषभं भूषितं शुभम् ॥१०

दशांश क्रम से भक्ति पूर्वक ब्राह्मणों को भोजन कराये। दशवर्णी गाय दे, सुसज्जित बैल का दान करे।१०।

पलपञ्चसुवर्णस्य माल्यं मेरुयुतं तु वै ।
ब्राह्मणाय ततो दद्यात्छायादानमनन्तरम् ॥११
एवंकृते वरारोहे पुत्रः खलु प्रजायते ।
व्याधयः सङ्क्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥१२

पांच पल सोने की मेरु सहित माला बनवाये। उसे ब्राह्मण को दान में दे। इसके उपरान्त छाया दान करे। ऐसा करने से हे पार्वती ! निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।११-१२।

नवाधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

श्रीपुरे नगरे देवि ! एकोऽवसत्पुरा ।
पुत्रपौत्रयुता देवि ! धन-धान्यसमन्वितः ।।१

शिवजी बोले—श्रीपुर नामक नगर में हे देवि ! एक ब्राह्मण रहा करता था । वह पुत्र पौत्रों से युक्त एवं धन-धान्य से भी सम्पन्न था ।१।

वैश्यकर्मरतो नित्यं क्रयविक्रयतत्परः ।
महिषीं वृषभं वस्त्रं चामरं गजवाजिनौ ।।२

वह वैश्य कर्म में तत्पर था । सदैव क्रय विक्रय किया करता था । भैंस, बैल, वस्त्र, चामर गाय, हाथी, घोड़े आदि का व्यापार करता था ।२।

प्रत्यहं विक्रयं कृत्वा कृतश्च धनसङ्ग्रहः ।
एकदा तस्य वै गेहे गुरुपुत्रः समागतः ।।३
आदरं बहुधा कृत्वा मासे याते ततः शिवे ।
गमनं च हरिद्वारे स्नानार्थं कृतवांस्तथा ।।४

इस क्रय-विक्रय के द्वारा उसने बहुत सा धन एकत्र कर लिया । एक दिन उसके घर पर गुरु पुत्र आया । उस ब्राह्मण ने उस गुरु पुत्र का खूब सम्मान किया । वह एक माह तक वहाँ रहा । इसके बाद वह स्नानार्थ हरिद्वार के लिए चला गया ।३-४।

गुरुपुत्रेण भो देवि ! स्वर्णमूर्त्तिद्वयं तथा ।
ब्राह्मणाय तु दत्तं वै ततो वै गमनं कृतम् ।।५
हरिद्वारं ततो गत्वा तत्र प्राणमथोत्यजेत् ।
मूर्तियां गुरोश्चै विक्रीतं तद्व्ययः कृतः ।।६

जाते समय गुरु पुत्र ने उस ब्राह्मण के लिए धरने के हेतु (धरोहर के रूप में) दो स्वर्ण मूर्तियाँ दीं । वह हरिद्वार चला गया । वहां उसकी मृत्यु हो गई । उस ब्राह्मण ने उन गुरु की मूर्तियों को बेच दिया तथा उस धन को स्वकार्य में व्यय भी कर दिया ।५-६।

एवं बहुगते काले मरणं ब्राह्मणस्य ।
यमाज्ञया महार्तैर्नरके, नामकर्दमे ।।७

धनाढ्यत्वं पुनर्जातो ह्यपुत्रो मृगताडनात् ।
पुत्राश्च बहवो जातास्तेषां मृत्युः प्रजायते ॥६

पूर्व जन्म में उसने जल दान किया था, इससे उसे मनुष्य योनि मिली। वह धन-धान्य से सम्पन्न हुआ। उसने जानवरों को मारा था, इस कारण वह अपुत्रवान हुआ। उसके पुत्र तो बहुत हुए परन्तु उनकी मृत्यु हो गई।५-६।

रोगाणां च तथोत्पत्तिर्ज्वरश्चैव पुनः पुनः ।
शान्ति शृणु वरारोहे पूर्वपापप्रणाशिनीम् ॥७

उसके रोग अनेक हो गये, ज्वर हो गया। हे पार्वती जी ! पूर्व पापों को नष्ट करने के हेतु तुम उसकी शान्ति सुनो।७।

गृहवित्तषडांशेन पुण्यकार्यं च कारयेत् ।
गायत्री वा शिवायेति जातवेदेति वै पुनः ॥८
दशायुतजपं कुर्याद्दशांशंहवनं ततः ।
दशाशं तर्पणं देवि ! मार्जनं तद्दशांशतः ॥९

घर के धन में से षडांश से पुण्य कार्य करने चाहिए। गायत्री मन्त्र, शिव मन्त्र एवं जातवेद से इन मन्त्रों का एक-एक लाख जप कराये। दशांश क्रम से हवन तर्पण एवं मार्जन कराये।८-९।

ततो वै भोजयेद्भक्त्या द्विजान् देवि ! दशांशतः ।
दशवर्णां ततो दद्याद् वृषभं भूषितं शुभम् ॥१०

दशांश क्रम से भक्ति पूर्वक ब्राह्मणों को भोजन कराये। दशवर्णी गाय दे, सुसज्जित बैल का दान करे।१०।

पलपञ्चसुवर्णस्य माल्यं मेरुयुतं तु वै ।
ब्राह्मणाय ततो दद्यात्छायादानमनन्तरम् ॥११
एवंकृते वरारोहे पुत्रः खलु प्रजायते ।
व्याधयः सङ्क्षयं यान्ति काकवन्ध्या लभेत्सुतम् ॥१२

पांच पल सोने की मेरु सहित माला बनवाये। उसे ब्राह्मण को दान में दे। इसके उपरान्त छाया दान करे। ऐसा करने से हे पार्वती ! निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है। सभी व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं। काक बन्ध्या को भी पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।११-१२।

नवाधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

श्रीपुरे नगरे देवि ! एकोऽवसत्पुरा ।
पुत्रपौत्रयुता देवि ! धन-धान्यसमन्वितः ॥१

शिवजी बोले—श्रीपुर नामक नगर में हे देवि ! एक ब्राह्मण रहा करता था। वह पुत्र पौत्रों से युक्त एवं धन-धान्य से भी सम्पन्न था।१।

वैश्यकर्मरतो नित्यं क्रयविक्रयतत्परः ।
महिषीं वृषभं वस्त्रं चामरं गजवाजिनौ ॥२

वह वैश्य कर्म में तत्पर था। सदैव क्रय विक्रय किया करता था। भैंस, बैल, वस्त्र, चामर गाय, हाथी, घोड़े आदि का व्यापार करता था।२।

प्रत्यहं विक्रयं कृत्वा कृतश्च्च धनसङ्ग्रहः ।
एकदा तस्य वै गेहे गुरुपुत्रः समागतः ॥३
आदरं बहुधा कृत्वा मासे याते ततः शिवे ।
गमनं च हरिद्वारे स्नानार्थं कृतवांस्तथा ॥४

इस क्रय-विक्रय के द्वारा उसने बहुत सा धन एकत्र कर लिया। एक दिन उसके घर पर गुरु पुत्र आया। उस ब्राह्मण ने उस गुरु पुत्र का खूब सम्मान किया। वह एक माह तक वहाँ रहा। इसके बाद वह स्नानार्थ हरिद्वार के लिए चला गया।३-४।

गुरुपुत्रेण भो देवि ! स्वर्णमूर्त्तिद्वयं तथा ।
ब्राह्मणाय तु दत्तं वै ततो वै गमनं कृतम् ॥५
हरिद्वारं ततो गत्वा तत्र प्राणमथोत्यजेत् ।
मूर्तियां गुरोश्चै विक्रीतं तद्व्ययः कृतः ॥६

जाते समय गुरु पुत्र ने उस ब्राह्मण के लिए धरने के हेतु (धरोहर के रूप में) दो स्वर्ण मूर्तियाँ दीं। वह हरिद्वार चला गया। वहां उसकी मृत्यु हो गई। उस ब्राह्मण ने उन गुरु की मूर्तियों को बेच दिया तथा उस धन को स्वकार्य में व्यय भी कर दिया।५-६।

एवं बहुगते काले मरणं ब्राह्मणस्य ।
यमाज्ञया महातैर्नरके, नामकर्दमे ॥७

बहुत समय बाद उस ब्राह्मण की भी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने यमाज्ञा से उसे कर्दम नामक नरक में डाल दिया।७।

निःक्षिप्तो वै ततो देवि षष्टिवर्षसहस्रकम् ।
नरकान्निःसृतो देवि व्याघ्रयोनिस्ततोऽभवेत् ॥८

उसे नरक में साठ हजार वर्ष के लिये पटक दिया। हे देवि ! नरक से निकलने के बाद उसे व्याघ्र की योनि मिली।८।

तीर्थे पुण्यतमे देवि कौशलायां सुरेश्वरि ।
बिडालस्य ततो योनिं मानुषत्वं ततोऽभवेत् ॥९

हे देवि ! इसके उपरान्त पुण्यतम तीर्थ कौशल पुरी अयोध्या में उसे बिलाव (बिल्ली) की योनि मिली। इसके उपरान्त मनुष्य योनि मिली।९।

ब्राह्मणस्य कुले जन्त ज्ञानवान् प्रियदर्शनः ।
देवताराधने प्रीतिः परस्त्रीलम्पटस्तथा ॥१०

उसका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। वह ज्ञानवान एवं प्रियदर्शी हुआ। देवता आराधना में उसकी प्रीति थी। साथ ही वह परस्त्री लंपट (पराई स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला) था।१०।

तस्यापत्नीत्रयं देवि ! कन्यका पुत्रकौ तथा ।
तेषां वै मरणं जातं पुनः पुत्रो न जायते ॥११

हे पार्वती जी ! उसके तीन सन्तानें थीं। एक कन्या एवं दो पुत्र। उन पुत्रों की मृत्यु हो गई, फिर कोई पुत्र हुआ ही नहीं।११।

काकवन्ध्या भवेद्भार्या गौरांगी सुन्दरी तु सा ।
कृशाङ्गी दीर्घकेशी च स्वपतौ प्रियभाषिणी ॥१२

उसकी पत्नी काक बन्ध्या हो गई। वह गौर वर्ण की थी, अत्यन्त सुन्दर थी। पतली थी, बड़े-बड़े केश वाली थी तथा अपने पति से मधुर आलाप करने वाली थी।१२।

तस्य पापक्षयं वक्ष्ये पुनः पुत्रो यतो भवेत् ।
हरिवंशश्रुतं कुर्याद् गोपालस्य तु कीर्तनम् ॥१३

हे देवि ! अब मैं तुम्हें वह उपाय बतलाता हूँ जिससे उसके पापों का क्षय हो। उसे हरिवंश पुराण का श्रवण करना चाहिए। तथा गोपाल का कीर्तन कराना चाहिए।१३।

वंशगोपालमन्त्रस्य गायत्रीमन्त्रकस्य च।
लक्षद्वयं वरारोहे जपं वै कारयेत्सुधीः ॥१४
हवनं तद्दशांशेन तपर्णं मार्जनं तथा।
तुलसीवाटिकां कृत्वा तन्मूले विष्णुपूजनम् ॥१५

वंश गोपाल मन्त्र का एवं गायत्री मन्त्र का दो लाख जप करना चाहिये। दशांश क्रम से हवन, तर्पण एवं मार्जन कराना चाहिये। तुलसी की वाटिका लगानी चाहिए उसके नीचे विष्णु का पूजन करना चाहिए।१४-१५।

दशवर्णगवां दानं शय्यादानं विशेषतः।
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्शतसंख्यान्द्विजोत्तमान् ॥१६
विष्णोश्च प्रतिमां कृत्वा सौवर्णी दशभिः पलैः।
पूजयित्वा विधानेन ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ॥१७
एवं कृते न सन्देहो वंशो भवति नान्यथा ॥१८

दशवर्णी गाय का दान करना चाहिये। विशेष रूप से शय्या दान करना चाहिये। फिर सौ उत्तम ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। विष्णु भगवान की दश पल की स्वर्ण प्रतिमा बनवानी चाहिये। उसकी विधि विधान से पूजा करके उसे ब्राह्मण को देनी चाहिए। ऐसा करने से निश्चय ही वंश की वृद्धि होगी, इसमें सन्देह नहीं है।१६-१८।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती संवाद में 'रेवती
नक्षत्र के द्वितीय चरण का प्रायश्चित कथन'
नामक एक सौ नौवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—●—

दशाधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

माणिक्ये च पुरे देवि ! वसन्ति बहवो जनाः।
लवणकृद्वसत्येको प्रत्यहं लवणं कृतम् ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! माणिक्य पुर में अनेक आदमी रहते थे। वहाँ एक नमक बनाने वाला रहता था। वह रोजाना नमक बनाता था।१।

लवणं विक्रयेन्नित्यं व्ययं कृत्वा दिने दिने ।
तस्य मित्रं द्विजः कश्चिदागतस्तस्य वै गृहे ।।२
धनाढ्यो रत्नसंयुक्तस्तत्र वासमकारयेत् ।
आदरं बहु सन्मानं कृत्वा मित्रेण वै शिवे ।।३

वह नमक बेचकर अपना हाथ खर्च चलता था। उसका कोई ब्राह्मण मित्र था। एक बार वह उसके घर आया। वह ब्राह्मण धनाढ्य था। उसने अपने रत्नों सहित उसके यहाँ निवास किया। उस नौनिया ने अपने उस मित्र का बहुत सम्मान किया।२-३।

पत्नी शूद्रस्य वै हृष्टा पुंश्चली चपला तु सा ।
मासमेकं वरारोहे तस्य मित्रस्य वै स्थितिः ।।४
मित्रपत्न्या विषं दत्तं ब्राह्मणाय तदा शिवे ।
ब्राह्मणेन च न ज्ञातं भोजनाभ्यन्तरे तथा ।।५

उसकी पत्नी पुष्ट थी। वह चरित्रहीन एवं चपल थी। वह अपने मित्र के यहाँ एक माह तक रहा। फिर उस मित्र की पत्नी ने उस ब्राह्मण को जहर दे दिया। भोजन के समय वह ब्राह्मण इस बात को न जान सका।४-५।

ब्राह्मणस्याभवेन्मृत्युरर्द्धरात्रे गते सति ।
नद्यां शवं ततस्त्यक्त्वा समगृह्णाच्च तद्धनम् ।।६

अर्द्ध रात्रि के समय उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई। उस नौनिये ने उस ब्राह्मण के शव को नदी में बहा दिया तथा सारे धन को ले लिया।६।

ब्राह्मणार्थं च संगृह्य कृतं व्ययमहर्निशम् ।
भार्यया सह पुत्राभ्यां भुक्त्वा द्रव्यं वरानने ।।७
ततो वृद्धे च वयसि मरणं समजायते ।
पश्चान्मृता तु सा भार्या कुलटा व्यभिचारिणी ।।८

हे देवि ! उस नौनिये ने ब्राह्मण के धन को लेकर नित्य प्रति उसका उपभोग (व्यय) किया। पत्नी-पुत्रों सहित उस द्रव्य को खाया। बुढ़ापा आया, मृत्यु हुई। इसके बाद उसकी कुलटा एवं व्यभिचारिणी पत्नी भी मर गई।७-८।

यमदूतैर्महाघोरे नरके पंकसंज्ञके ।
कुम्भीपाके तदा देवि ! निःक्षिप्तश्च यमाज्ञया ।।९

फिर यमदूतों ने यम की आज्ञा से उसे महान घोर नरक पंक कुम्भी पाक में डाल दिया ।९।

युगमेकं विशालाक्षि भुक्त्वा नरकयातनाम् ।
नरकान्निःसृतो देवि ! शूकरत्वं प्रजायते ।।१०

एक युग तक उसने वह नरक यातना भोगी। नरक से निकलकर वह सूअर की योनि में उत्पन्न हुआ ।१०।

पुनः काकस्य वै योनिं विडालत्वं ततोऽभवेत् ।
मानुषत्वं ततो देवि ! देशे शुभ्रे तदाभवेत् ।।११

हे देवि ! फिर उसे कौए की योनि मिली, फिर बिलाव की। फिर उसे सुन्दर देश में मनुष्य की योनि मिली ।११।

पूर्वजन्मनि देवेशि कुरुक्षेत्रे यतो मृतः ।
अतो धनं भवेत्तस्य नापत्य द्विजहत्ययो ।।१२

पूर्व जन्म में उसकी मृत्यु कुरुक्षेत्र में हुई थी इस कारण उसके खूब धन हुआ। द्विज की हत्या की थी इस कारण उसके कोई सन्तान नहीं हुई ।१२।

शरीरे जायते व्याधिभार्या तस्य मृतप्रजा ।
अस्य पापस्य शमनीं शान्तिं शृणु वरानने ।।१३

उसके शरीर में रोग हुए, पत्नी के कोई सन्तान जीवित नहीं रहती थी। इस पाप की शान्ति का उपाय सुनो ।१३।

गृहवित्ताष्टमं भागं ब्राह्मणाय समर्पयेत् ।
हवनं कारयेद्देवि कुण्डे योनिसुशोभिते ।।१४
चतुरस्रे वरारोहे दशांशं विधिपूर्वकम् ।
तर्पणं तद्दशांशेन तद्दशांशेन मार्जनम् ।।१५

गृह स्थिस धन में से अष्टमांस ब्राह्मण को दान में दे। योनि कुण्ड बना या चतुष्कोणी बना, उसमें हवन करें। दशांश क्रम से हवन, तर्पण, मार्जन विधि पूर्वक करें ।१४-१५।

गां सवत्सां ततो दद्यात्स्वर्णरत्नविभूषिताम् ।
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्कूष्माण्डं प्रददेत्सुधीः ।।१६
एवंकृते वरारोहे ! पुत्रो भवति नान्यथा ।।१७

स्वर्ण एवं रत्नों से सजाकर, बछड़े सहित गाय का दान करे। फिर ब्राह्मण

भोजन कराये तथा पेठा का दान करे। ऐसा करने से हे पार्वती जी ! निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है।१६-१७।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का प्रायश्चित कथन नामक एक सौ दशवां अध्याय सम्पूर्ण ॥

—०—

एकादशअधिक शततमः अध्याय

शिव उवाच

अलर्कस्य पुरे देवि क्षत्रियो वसति प्रिये ।
चन्द्रवर्मेति विख्यातः पत्नी देवी ततोऽभवेत् ॥१

शिवजी बोले—हे पार्वती ! अलर्क पुरी में एक क्षत्री रहता था। उसका नाम चन्द्र वर्मा था। उसकी पत्नी का नाम देवी था।१।

क्षत्रीधर्मरतो नित्यं धनाढ्यः शूरसम्मतः ।
कृष्णदास इति ख्यातो विप्रस्तस्य पुरोहितः ॥२

वह क्षत्रीय धर्म में तत्पर था। वह धनाढ्य एवं वीर था। कृष्ण दास नामक ब्राह्मण उसका पुरोहित था।२।

विप्राय प्रददौ भूमिं गिरिजे विग्रहे सति ।
ततो बहुदिने जाते दण्डस्तस्माच्च याचितः ॥३

किसी प्रकार का विग्रह आने पर क्षत्री से ब्राह्मण को भूमि दान में दी। फिर बहुत दिन बाद क्षत्री ने उस ब्राह्मण से दण्ड मांगा।३।

ब्राह्मणोऽथावदद्देवि नाहं दण्ड्यः कदाचने ।
ततो रोषपरीतात्मा क्षत्रियो ब्राह्मणं प्रति ॥४
दुर्वचश्चावदद्देवि ब्राह्मणं साधुसम्मतम् ।
मरणं ब्राह्मणस्यैव भूम्युद्देशेन वै शिवे ॥५

ब्राह्मण ने क्षत्री से कहा कि मैं तो दण्डनीय नहीं हूँ। तब क्रोध से युक्त हो क्षत्री ने उस सज्जन ब्राह्मण को बड़े दुर्वचन कहे। उस अपमान के कारण उस ब्राह्मण की मृत्यु हो गई।४-५।

ततो बहुगते वर्षे मरणं क्षत्रियस्य तु ।
यमदूतैर्महाघोरे नरके नामदारुणे ॥६
कुम्भीपाके तदा घोरे क्षिप्तवान्यमशासनात् ।
युगानां त्रयसङ्ख्यानां नरके पास एव च ॥७

बहुत दिन बाद उस क्षत्री की भी मृत्यु हो गई। यमदूतों ने उसे महान घोर

कुम्भीपाक नामक नरक में डाल दिया। तीन युगों तक उसका वहां नरक में वास रहा।

नरकान्निःसृतो देवि प्रेतत्वं समजायते।
शूकरस्य पुनर्योनिं ततो भवति मानुषः ॥८

हे देवि ! नरक से निकलने के बाद वह प्रेत बना। फिर उसे सूअर की योनि मिली फिर उसे मनुष्य योनि मिली।८।

मध्यदेशे विशालाक्षि हिमविन्ध्याद्रिमध्यमे।
धनधान्यसमायुक्तो ब्राह्मणानां च सेवकः ॥९

वह हिमाचल एवं विन्ध्याचल के मध्य देश में मनुष्य योनि में उत्पन्न हुआ। वह धन धान्य से सम्पन्न एवं ब्राह्मणों का सेवक हुआ।९।

इह जन्मनि देवेशि मरणं सन्ततेर्ध्रुवम्।
काकवन्ध्या भवेन्नारी मृतवत्सा पुनः पुनः ॥१०

हे देवि ! इस जन्म में उसकी सन्तानें नष्ट हुईं। पत्नी काक बन्ध्या हुई मृतवत्सा हुई।१०।

शरीरे व्याधिरुत्पन्नो ज्वरश्चैव मुहुर्मुहुः।
अस्य शान्तिं प्रवक्ष्यामि श्रृणु देवि ! वरानने ॥११

शरीर में उसके व्याधि हुई। बार-बार ज्वर की पीड़ा होती। अब मैं इसकी शान्ति कहता हूँ, हे पार्वती जी सुनो।११।

गृहवित्तषडांशं तु ब्राह्मणाय प्रकल्पयेत्।
गायत्रीमूलमन्त्रेण पञ्चलक्षजपं तथा ॥१२
दशांशं कारयेद्देवि ! हवनं विधिपूर्वकम्।
तर्पणं मार्जनं तद्वद्गोदानं च विशेषतः ॥१३

गृह स्थित धन का षडांश ब्राह्मण को समर्पित करे। गायत्री मूल मन्त्र का पांच लाख जप कराये। क्रम से विधि पूर्वक हवन, तर्पण एवं मार्जन कराये। फिर उसी प्रकार गोदान भी कराये।१२-१३।

ब्राह्मणस्य ततो देवि ! प्रतिमां कारयेद् बुधः।
पलपञ्चसुवर्णस्य वस्त्ररत्नविभूषिताम् ॥१४
ततो निर्माय प्रतिमां पूजयित्व यथाविधि।
मन्त्रेणानेन देवेशि ! पाद्यं गन्धादिकं पृथक् ॥१५

ब्राह्मण की प्रतिमा का निर्माण कराये। ये पांच पल सोने की हो। इसे वस्त्रों एवं रत्नों से सजाये। विधिवत पूजा कराये। इस मन्त्र से पाद्य, गन्ध आदि द्वारा अलग-अलग पूजा करे।१४-१५।

वासुदेव जगन्नाथ शरणागतवत्सले ।
ब्रह्महत्या कृता पूर्वं तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥१६
वाल्मीकमृत्तिकां गृह्य वेदीं वै कारयेत्ततः ।
तन्मध्ये सर्वतोभद्रं रचितं दिव्यमण्डले ॥१७

हे वासुदेव, हे जगन्नाथ हे शरणागत वत्सल ! मैंने पूर्व में ब्रह्म हत्या की थी, उस पाप को आप क्षमा करो । ववई (साँप का बिल) की मिट्टी लाकर वेदी बनाये उसके बीच दिव्य सर्वतोभद्र मण्डल बनाये ।१६-१७।

तन्मध्ये प्रतिमां स्थाप्यै ततः पूजां तु कारयेत् ।
मंत्र-ॐवासुदेवाय नमः । ॐजगन्नाथाय नमः ।
ॐविष्णवे नमः । ॐशार्ङ्गिणे नमः ।
आचार्यं च ततो नत्वा शिवविष्णुस्वरूपिणम् ॥१८
प्रभोजयेत्ततो विप्रान् दक्षिणांप्रदापयेत्ततः ।
एवं कृते वरारोहे ! शीघ्रं पुत्रः प्रजायते ॥१९

उसके बीच प्रतिमा की स्थापना करे, फिर पूजा करनी चाहिए । ॐवासुदेव को प्रणाम है, ॐ जगन्नाथ को प्रणाम है । ॐ विष्णु देव को नमस्कार है । ॐधनुष धारी नमस्कार है । "फिर शिव-विष्णु स्वरूप आचार्य को प्रणाम करे । विद्वान ब्राह्णों को भोजन कराये, फिर उन्हें दक्षिणा दे । फिर विसर्जन करे । वाचक को प्रणाम करे । हे पार्वती जी ऐसा करने से शीघ्र पुत्र की प्राप्ति होती है ।१८-१९।

काकवन्ध्या लभेत्पुत्रं सर्वव्याधि-प्रणाशनम् ।
मृतवत्सा च या नारी जीवित्पुत्रा च जायते ॥२०
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
अतः परतरं नास्ति सत्यं सत्यं वरानने ॥२१

काक बन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है । सारी व्याधियों का नाश होता है । मृतवत्सा नारी के पुत्र जीवित रहने लगते हैं । जो इस ग्रन्थ का श्रवण करते हैं या पढ़ते हैं, वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं । इससे बढ़कर है पार्वती अन्य कोई ग्रन्थ या उपाय नहीं है, ये सत्य है ।२०-२१।

॥ इति श्री कर्म विपाक संहिता में पार्वती शिव सम्वाद में सभी प्रायश्चित कथन के उपरान्त रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रायश्चित कथन नामक एक सौ ग्यारहवां अध्याय भाषाटीका ज्यों चन्द्रप्रकाश आचार्य कृत सम्पूर्ण ॥

॥ इति श्री ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh